रिसाले-ए-नूर संग्रह:
भाग 6

मूसा की लाठी

इस्लामी आस्था, ईश्वरीय अस्तित्व और एकता पर चिन्तन

बदीउज़्ज़माँ सईद नुर्सी

हुसैन अकार्सू द्वारा अनुवादित

रिसाले-ए-नूर संग्रहः
भाग 6

मूसा की लाठी

इस्लामी आस्था, ईश्वरीय अस्तित्व और एकता पर चिन्तन

बदीउज़्ज़माँ सईद नुर्सी

हुसैन अकार्सू द्वारा अनुवादित

The Light

न्यु जर्सी

14 13 12 11 1 2 3 4

द लाइट, इंक. द्वारा प्रकाशित.
345 क्लिफ्टन एवेन्यू, क्लिफ्टन, एनजे, 07011,
यूएसए

www.thelightpublishing.com

लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस कैटलॉगिंग-इन-पब्लिकेशन डेटा उपलब्ध है

आईएसबीएन 978-1-59784-254-9 (हार्डकवर)

द्वारा मुद्रित
Çağlayan A.Ş., इज़मिर - तुर्की

विषयसूची

प्रस्तावना

Bएदिउज़्ज़मान सईद नूरसी (1877-1960), जो सबसे अधिक में से एक है इस्लाम की बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक शक्तियों के प्रभावी और प्रखर प्रतिनिधि, ने अपना अधिकांश जीवन इस्लाम के प्रति प्रेम और उत्साह से ओतप्रोत रहते हुए, ठोस तर्क पर आधारित बुद्धिमत्तापूर्ण और संतुलित सक्रियता को आगे बढ़ाते हुए, तथा कुरान और पैगम्बर के उदाहरण का अनुसरण करते हुए बिताया।

सईद नूरसी संक्रमण के दौर में रहते थे - ओटोमन राज्य के अंतिम वर्ष और तुर्की गणराज्य के प्रारंभिक वर्ष। उन्होंने व्यापक रूप से यात्रा की, और अनातोलिया और व्यापक मुस्लिम दुनिया में व्याप्त अज्ञानता, गरीबी और आंतरिक संघर्ष को प्रत्यक्ष रूप से देखा। मार्च 1911 में उमय्यद मस्जिद (दमिश्क) में 100 उच्च श्रेणी के विद्वानों सहित लगभग 10,000 लोगों को दिए गए उपदेश में उन्होंने विश्लेषण किया कि मुस्लिम दुनिया "मध्य युग" में क्यों फंसी हुई है: बढ़ती निराशा, सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में सच्चाई का नुकसान, युद्धप्रियता का प्यार और विश्वासियों के बीच उचित बंधनों की अज्ञानता, व्यापक निरंकुशता और अहंकार।

इसी विषय पर तथा भारतीय जनता पार्टी की पराजय और पतन के विषय में
प्रथम विश्व युद्ध में ओटोमन राज्य के खिलाफ विद्रोह के बारे में उन्होंने अपनी पुस्तक सुनुहाट ("युद्ध की घटनाएं") में लिखा है।
हार्ट”) और लेमीट (“ग्लेम्स”) के गीत इस प्रकार हैं:

> मानव जाति की गलत सोच, निम्रोद जैसी हठधर्मिता, फिरौन जैसी अहंकारिता धरती पर बढ़ती गई और तब तक बढ़ती गई जब तक कि वे स्वर्ग तक नहीं पहुंच गईं। मानवता ने सृष्टि के संवेदनशील रहस्य का भी अपमान किया।
> इसने पिछले युद्ध की थरथराहटों को स्वर्ग से प्लेग और जल प्रलय की तरह बरसने के लिए प्रेरित किया; इसने काफिरों को एक स्वर्गीय आघात पहुँचाया। इसलिए यह विपत्ति समस्त मानवजाति की विपत्ति थी।
> इसका सामान्य कारण, समस्त मानव जाति को शामिल करते हुए, गुमराह होना था।

भौतिकवाद, पाशविक स्वतंत्रता और शारीरिक इच्छाओं और कल्पनाओं की निरंकुशता से उत्पन्न सोच। इसमें हमारा हिस्सा इस्लाम के स्तंभों की उपेक्षा और त्याग के कारण हुआ। सृष्टिकर्ता सर्वशक्तिमान को चौबीस में से एक घंटा चाहिए था। उसने हमें आदेश दिया, इच्छा व्यक्त की कि हम अपने भले के लिए पाँच दैनिक प्रार्थनाओं के लिए एक घंटा निर्धारित करें। लेकिन आलस्य के कारण हमने उन्हें छोड़ दिया, असावधानी में उनकी उपेक्षा की। इसलिए हमें निम्नलिखित दंड मिला: उसने हमें इन अंतिम पाँच वर्षों के दौरान एक प्रकार की प्रार्थनाएँ करने के लिए मजबूर किया, लगातार चौबीस घंटे की कवायद और कठिनाई के माध्यम से, हमें निरंतर चलते और प्रयास करते हुए। उसने हमसे साल में एक महीना उपवास करने की भी माँग की, लेकिन हमें अपनी सांसारिक आत्माओं पर दया आई, इसलिए प्रायश्चित के लिए उसने हमें पाँच साल तक उपवास करने के लिए मजबूर किया। वह चाहता था कि हम अपनी दी हुई संपत्ति का चालीसवाँ या दसवाँ हिस्सा ज़कात के रूप में अदा करें, लेकिन कंजूसी के कारण हमने गलत किया: हमने अपनी संपत्ति में अवैध चीज़ों को मिलाया और स्वेच्छा से ज़कात नहीं दी । इसलिए उसने हमारी जमा की हुई ज़कात हमसे छीन ली और हमें हमारी संपत्ति में मौजूद अवैध चीज़ों से बचा लिया। कर्म अपनी तरह की सज़ा का कारण बनता है। सज़ा कर्म के समान ही होती है। (सत्य की झलक: स्वस्थ सामाजिक जीवन के लिए नुस्खे [अनुवाद], तुगरा बुक्स, न्यू जर्सी, 2010, पृष्ठ, 47-48)

सर्वशक्तिमान ईश्वर की पूर्णता के दो गुण दो प्रकार के कानूनों को जन्म देते हैं। एक है जीवन या ब्रह्मांड के निर्माण और संचालन का कानून, जो इच्छा के गुण से आगे बढ़ता है, और दूसरा, प्रसिद्ध शरिया, जो वाणी के गुण से आगे बढ़ता है। जिस तरह प्रसिद्ध शरिया के आदेशों या कानूनों का पालन या अवज्ञा की जाती है, उसी तरह लोग जीवन के कानून का पालन या अवज्ञा करते हैं।

पहले वाले का पुरस्कार और दंड अधिकतर परलोक में मिलता है, जबकि दूसरे वाले का दंड और पुरस्कार अधिकतर इसी संसार में भुगतना पड़ता है। उदाहरण के लिए, धैर्य का पुरस्कार सफलता है, जबकि आलस्य का दंड अभाव है; और श्रम का पुरस्कार धन है। दृढ़ता का पुरस्कार विजय है। विष का दंड रोग है और उसके मारक का पुरस्कार स्वास्थ्य है। (हमने इन दोनों नियमों की उपेक्षा की और अपने पुण्य प्राप्त किए।) (ibid, पृ., 69-70)

यह संकट वैश्विक संकट था और इस संकट का मूल कारण अविश्वास था। इंग्लैंड के डरहम विश्वविद्यालय के कोलिन टर्नर ने कहा, "सईद नूरसी ने देखा कि आधुनिक अविश्वास अज्ञानता से नहीं, बल्कि विज्ञान और दर्शन से उत्पन्न हुआ है। विडंबना यह है कि मुसलमानों द्वारा विज्ञान और प्रौद्योगिकी की उपेक्षा के कारण वे आर्थिक और सैन्य रूप से पश्चिम से पिछड़ गए। लेकिन वही विज्ञान और प्रौद्योगिकी जिसने पश्चिम को वैश्विक सैन्य और आर्थिक श्रेष्ठता हासिल करने में सक्षम बनाया, उसने पश्चिमी लोगों को अपना विश्वास और पारंपरिक नैतिक और आध्यात्मिक मूल्य खोने और निराशावाद, नाखुशी और आध्यात्मिक संकट में पड़ने का कारण बना। यह स्वाभाविक था,

क्योंकि यद्यपि प्रकृति के दिव्य नियम (विज्ञान का विषय) दिव्य शास्त्र या धर्म के समकक्ष हैं, लेकिन पश्चिम में वे एक दूसरे से अलग थे। धर्मनिरपेक्ष नैतिकता और आर्थिक स्वार्थ ने तब धार्मिक और अन्य पारंपरिक मूल्यों की जगह ले ली। सईद नूरसी ने प्रकृति को दिव्य संकेतों के संग्रह के रूप में देखा। इस प्रकार विज्ञान और धर्म में संघर्ष नहीं हो सकता, क्योंकि वे एक ही सत्य की दो (स्पष्टतः) अलग-अलग अभिव्यक्तियाँ हैं। मन को विज्ञान से प्रबुद्ध किया जाना चाहिए, और हृदय को धर्म से प्रकाशित किया जाना चाहिए।"

मानवता की मुख्य समस्या की खोज करने के बाद, सैद नूरसी ने विश्वास, उपासना, नैतिकता और अच्छे आचरण पर ध्यान केंद्रित किया। जबकि, टर्नर के अनुसार, पिछले 150 वर्षों के कई इस्लामी आंदोलनों का धार्मिक आस्था के पुनरुत्थान से कोई लेना-देना नहीं है और इनमें से अधिकांश वास्तव में राजनीतिक आंदोलन रहे हैं, जिनके नेताओं का अंतर्निहित लक्ष्य एक विशिष्ट समस्या को हल करना रहा है: मुस्लिम लोगों की कथित पिछड़ेपन की समस्या और राजनीतिक और सांस्कृतिक रूप से पश्चिम के प्रति उनकी अधीनता, सैद नूरसी ने मानवता के मुख्य मुद्दे के रूप में निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान आकर्षित किया:

> सृष्टि का सर्वोच्च लक्ष्य और सबसे उत्कृष्ट परिणाम ईश्वर में विश्वास है। मानवता का सबसे ऊंचा पद ईश्वर का ज्ञान है। जिन्न और मानवता के लिए सबसे उज्ज्वल खुशी और सबसे मधुर उपहार ईश्वर के ज्ञान में निहित ईश्वर का प्रेम है; आत्मा का सबसे शुद्ध आनंद और हृदय का सबसे शुद्ध आनंद ईश्वर के प्रेम में निहित आध्यात्मिक परमानंद है। सभी सच्ची खुशियाँ, शुद्ध आनंद, मधुर उपहार और निर्मल आनंद ईश्वर के ज्ञान और प्रेम में निहित हैं। (पत्र, [अनुवाद], तुगरा बुक्स, न्यू जर्सी, 2005, पृष्ठ, 239-240)

> विश्वास केवल नकल पर आधारित संक्षिप्त पुष्टि तक सीमित नहीं है; बल्कि, इसके विकास की डिग्री और चरण हैं। यह एक बीज की तरह है जो एक पूर्ण विकसित, फल देने वाले पेड़ में विकसित होता है; जैसे दर्पण में या पानी की एक बूंद में सूर्य की छवि समुद्र की सतह पर और सूर्य की छवियों के समान है। विश्वास में ईश्वर के नामों और ब्रह्मांड में निहित वास्तविकताओं से संबंधित इतने सारे सत्य शामिल हैं कि सबसे सही विज्ञान, ज्ञान और गुण ईश्वर के बारे में विश्वास और ज्ञान है जो तर्क और जांच पर आधारित विश्वास में उत्पन्न होता है। जबकि नकल पर आधारित विश्वास को आधुनिक विचारों द्वारा उठाए गए संदेह और सवालों के माध्यम से खारिज किया जा सकता है, तर्क और जांच पर आधारित विश्वास में ईश्वर के नामों की संख्या जितनी ही डिग्री और स्तर होते हैं। जो लोग विश्वास के आधार पर सत्य के प्रत्यक्ष अवलोकन से विश्वास की निश्चितता प्राप्त करते हैं वे ब्रह्मांड का एक प्रकार के कुरान के रूप में अध्ययन करते हैं। (एमिरदाग लाहिकासी [एमिरदाग का परिशिष्ट], इस्तांबुल, 1959, खंड, 1, पृ., 102-103)

उन्होंने अपना इलाज बताया - आशा, सच्चाई और विश्वसनीयता, आपसी प्रेम, परामर्श, एकजुटता और इस्लाम के अनुसार स्वतंत्रता - और निम्नलिखित बातों पर जोर दिया:

> इतिहास से पता चलता है कि मुसलमानों की सभ्यता और प्रगति इस बात पर निर्भर करती है कि वे इस्लाम पर कितनी दृढ़ता से कायम रहे। दूसरे शब्दों में, इस्लाम की सच्चाई से उन्हें जितनी ताकत मिली, वह इस्लाम के प्रति उनकी निष्ठा के अनुपात में ही थी।
>
> हम मुसलमान, कुरान के विद्यार्थी, प्रमाण का अनुसरण करते हैं। हम पादरी की अंधी आज्ञाकारिता और नकल के लिए प्रमाण का त्याग नहीं करते, जैसा कि अन्य धर्मों के कुछ अनुयायी करते हैं। विज्ञान, ज्ञान और सच्ची सभ्यता के गुणों से लैस, मानव स्वभाव में सत्य, निष्पक्षता और न्याय की भावना की तलाश करने की मानवीय प्रवृत्ति, साथ ही मानवता के प्रति प्रेम, मुसलमानों और पूरी मानवता के सामने आने वाली बाधाओं को हराने और हटाने लगे हैं।
>
> चूंकि पूर्णता की ओर झुकाव मानव स्वभाव में निहित है, इसलिए यदि मानवता को अपने दोषों और अन्यायों के कारण पूर्ण विनाश का सामना नहीं करना पड़ता है, तो इस्लाम की सच्चाई विशेष रूप से मुस्लिम जगत और सामान्य रूप से पूरे विश्व में खुशी लाएगी, और इस प्रकार मानवता के अतीत और वर्तमान के दोषों के लिए प्रायश्चित का काम करेगी।
>
> देखो, समय एक सीधी रेखा में नहीं चलता है ताकि इसकी शुरुआत और अंत एक दूसरे से दूर हो जाएँ। बल्कि, पृथ्वी की गति की तरह, समय एक वृत्त खींचकर चलता है। यह कभी-कभी वसंत और गर्मियों के अवतार के रूप में प्रगति को प्रदर्शित करता है और कभी-कभी सर्दियों और तूफानों के मौसम के रूप में गिरावट को प्रदर्शित करता है। इसलिए, जिस तरह हर सर्दी के बाद वसंत और हर रात की सुबह होती है, उसी तरह मानव जाति भी, ईश्वर की इच्छा से, एक नई सुबह और वसंत का अनुभव करेगी।
>
> ईश्वरीय दया से हम इस्लाम की सच्चाई के सूर्य में सामान्य शांति द्वारा चिह्नित सच्ची सभ्यता को देखने की उम्मीद कर सकते हैं। (सत्य की झलक, 125-128)

हालाँकि बाहरी तौर पर सरल, सईद नूरसी के कई विचार और गतिविधियाँ पूरी तरह से मौलिक थीं। उन्होंने मानवता को अपनाया; अविश्वास, अन्याय और (धार्मिक) विचलन का विरोध किया; और सभी प्रकार के अत्याचारों के खिलाफ संघर्ष किया - यहाँ तक कि अपने जीवन की कीमत पर भी। उनके गहरे विश्वास और भावना, जब उनके बुद्धिमान और तर्कसंगत विचारों और समस्या-समाधान विधियों के साथ संयुक्त होते हैं, तो प्रेम, उत्साह और भावना का एक उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। उनके संतुलित विचार, कार्य और कार्य करने के तरीकों ने उन्हें एक दूरदर्शी व्यक्ति बनाया जो आसपास की स्थितियों का आकलन और न्याय करता था और समस्याओं का समाधान करता था।

सैद नूरसी की मृत्यु 23 मार्च, 1960 को उरफा में हुई, जो संभवतः रमज़ान की शक्ति की रात थी। कोरोनर ने उनकी संपत्ति को पगड़ी, एक पगड़ी के रूप में तय किया।

गाउन और 20 लीरा। इस्लाम के इस नायक की असली विरासत 6,000 पन्नों का रिसाले-ए नूर संग्रह था। यह संग्रह तुर्की में कुरान के बाद सबसे ज़्यादा पढ़ा जाने वाला संग्रह है और अब तक कई भाषाओं में इसका अनुवाद किया जा चुका है।

रिसाले-ए-नूर और मूसा की लाठी

सार्वजनिक जीवन से पूरी तरह से अलग होकर, सईद नूरसी ने लेखन के माध्यम से इस्लाम के मुख्य सिद्धांतों, विचार, विश्वास, उपासना, नैतिकता और जीवन शैली की रक्षा और व्याख्या करने के लिए खुद को समर्पित कर दिया। उनकी पुस्तकों को रिसाले-ए नूर ("प्रकाश के ग्रंथ") के रूप में जाना जाता है। इसमें 130 भाग हैं, जिन्हें लगभग दस पुस्तकों में संग्रहित किया गया था। तुर्की धार्मिक साहित्य के एक क्लासिक माने जाने वाले अपने रिसाले-ए नूर में , उन्होंने मुस्लिम दुनिया के पतन का कारण पहचाना: विश्वास की नींव का कमजोर होना। जब वैज्ञानिक भौतिकवाद, नास्तिकता और भौतिक प्रगति के निरंतर हमलों के साथ जुड़ गए, तो उन्होंने मुस्लिम दुनिया पर इनकार और संदेह का एक बड़ा बादल मंडराता हुआ देखा।

इसे बेअसर करने के लिए, उन्होंने " इस्लाम के हीरे जैसे सिद्धांतों के साथ शब्द का जिहाद " किया, जिसका उद्देश्य इस्लाम को उसके विश्वास के आधार से पुनर्निर्मित करके विश्वास को मजबूत करना - यहां तक कि बचाना - था।

रिसाले -ए-नूर आधुनिक लोगों को उनके अपने शब्दों में और उनके अपने विश्वदृष्टिकोण के अनुसार इस्लाम और आस्था की व्याख्या करता है। आस्था और अविश्वास दोनों का विश्लेषण करते हुए, उन्होंने स्पष्ट रूप से तर्कपूर्ण तर्कों का उपयोग करके यह साबित किया कि ईश्वर और उनकी एकता, पैगंबरी और शारीरिक पुनरुत्थान और अन्य सभी के बारे में कुरान की अवधारणा ही अस्तित्व, मानवता और ब्रह्मांड के लिए एकमात्र तर्कसंगत व्याख्या है।

आसानी से समझ में आने वाली कहानियों, तुलनाओं और स्पष्टीकरणों का उपयोग करते हुए, सैद नूरसी ने स्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत किए, जो दर्शाते हैं कि आधुनिक वैज्ञानिक खोजें वास्तव में धर्म की सच्चाईयों का समर्थन और सुदृढ़ीकरण करती हैं। उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति की बुद्धि और सभी आंतरिक और बाहरी सुविधाओं को संबोधित करने की कुरानिक पद्धति का उपयोग किया, ताकि लोगों को सृष्टि की वास्तविक प्रकृति और उद्देश्यों को समझने के लिए ब्रह्मांड और उसके कामकाज का अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके। यह बदले में, एक निर्माता के गुणों और भगवान के सेवकों के रूप में उनके अपने कर्तव्यों को सीखने की ओर ले जाता है।

सईद नूरसी ने ब्रह्माण्ड की वास्तविक प्रकृति को उसके रचयिता के व्यापक संकेत के रूप में समझाया, तथा स्पष्ट तर्कों के माध्यम से दिखाया कि जब ब्रह्माण्ड को इस प्रकार पढ़ा जाए तो विश्वास के सभी मूल सिद्धांतों को तर्कसंगत रूप से सिद्ध किया जा सकता है।

चूंकि विश्वास आधुनिक विज्ञान पर आधारित है, इसलिए यह भौतिकवाद, प्रकृतिवाद और नास्तिकता से अछूता और दृढ़ रहता है।

ऐसे विश्वासी सभी वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति को ब्रह्मांड के कामकाज को उजागर करने के रूप में देखते हैं। ब्रह्मांड को एक विशाल और असीम रूप से जटिल और सार्थक एकीकृत पुस्तक के रूप में देखते हुए, जो इसके एकल लेखक का वर्णन करती है, सभी खोजें और प्रगति विश्वास को मजबूत, गहरा और विस्तारित करती हैं। इस प्रकार उनकी सबसे बुनियादी ज़रूरतें - उनके सबसे सुंदर नामों और गुणों को पहचानकर भगवान की पूजा करना और उनके नियमों का पालन करना - पूरी हो जाती हैं।

खुद सईद नूरसी ने रिसाले-ए-नूर को बुद्धिमानी भरे कुरान की सच्ची व्याख्या के रूप में वर्णित किया है जो इसकी चमत्कारिकता से उत्पन्न होती है। ठोस और तर्कसंगत तर्कों के माध्यम से इस्लामी विश्वास के छह स्तंभों को साबित करने और मानवीय विवेक और मूल प्रकृति को गवाह के रूप में पेश करने के अलावा, विशेष रूप से तुलनाओं के माध्यम से यह विश्वास और अविश्वास के बीच के अंतर और वास्तविक प्रकृति को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है। यह दर्शाता है कि गुमराही में इस दुनिया में एक तरह का नर्क है, जबकि विश्वास में एक तरह का स्वर्ग है। यह पापों, बुरे कामों और निषिद्ध सुखों में गंभीर पीड़ाओं को दर्शाता है, और साबित करता है कि स्वर्ग के समान सुख अच्छे कर्मों और सद्गुणों और धर्म की सच्चाइयों में पाए जाते हैं।

'असा-यी मूसा (मूसा की छड़ी) उनके लेखों का एक संग्रह है, जो विश्वास, उपासना और अच्छे आचरण के कई लाभों और ईश्वरीय सत्ता के अस्तित्व और एकता से संबंधित है। सईद नूरसी ने इसका नाम मूसा की छड़ी के नाम पर रखा, जिसने मूसा के चमत्कार के रूप में जादूगरों के जादू को तोड़ दिया और नष्ट कर दिया (देखें, कुरान, 7:111-122; 20:57-70), क्योंकि यह अविश्वास के "जादू" को तोड़ता और नष्ट करता है, जिसे विशेष रूप से वैज्ञानिक भौतिकवाद विश्वास पर डालता है। इसमें दो अध्याय हैं। पहला अध्याय विश्वास के फलों से बना है, और दूसरा, जिसे सईद नूरसी ने कुरान की आयत के आधार पर ईश्वर के अंतिम, निर्णायक तर्क पर ग्रंथ नाम दिया है, कहो, "(तुम जो तर्क करते हो उसके खिलाफ) ईश्वर का अंतिम, निर्णायक तर्क है।" (6:149) में ईश्वर के अस्तित्व और एकता तथा इस्लामी आस्था के अन्य स्तंभों के लिए निर्णायक तर्क दिए गए हैं।

प्रकाशक

पहला अध्याय

पहला अध्याय

विश्वास के फल

यह रिसाले-ए-नूर का विधर्म और पूर्ण अविश्वास के प्रति जवाब है । यह हमारी इस कैद में हमारी सच्ची रक्षा है, क्योंकि यह और केवल यही है जो हमें यहाँ रखता है। यह ग्रंथ डेनिज़ली जेल से एक फल और स्मृति चिन्ह है, और दो शुक्रवारों का उत्पाद है।

नर्सी ने कहा

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

इसलिए वह कुछ और वर्षों तक जेल में रहा (12:42)।

A इस आयत के अर्थ के अनुसार, भविष्यद्वक्ता यूसुफ ने शांति हो, कैदियों का संरक्षक-संत या मार्गदर्शक है: जेल को एक तरह का "जोसेफ का स्कूल" माना जा सकता है। चूंकि यह दूसरी बार है कि रिसाले -ए-नूर के छात्रों को जेल भेजा गया है ।

जेल भेजे जाने के बाद, इस विद्यालय में कारावास से संबंधित कई मामलों का अध्ययन और अध्यापन करना आवश्यक है, जिनकी व्याख्या रिसाले-ए-नूर द्वारा की गई है। इस आशा में कि हम उनसे पूरी तरह लाभ उठा सकें, हम उनमें से पाँच या छह मामलों को संक्षेप में समझाएँगे।

पहला मामला

जैसा कि चौथे वचन में बताया गया है, हमारा सृष्टिकर्ता हमें हर दिन चौबीस घंटे का जीवन एक तरह की पूंजी के रूप में देता है, जिससे हम इस दुनिया और अगले जीवन में अपने जीवन के लिए जो कुछ भी आवश्यक है, उसे प्राप्त कर सकते हैं।

यदि हम इनमें से तेईस घंटे इस अत्यंत क्षणभंगुर सांसारिक जीवन पर खर्च करते हैं और शेष एक घंटा - जो कि पाँच अनिवार्य विहित प्रार्थनाओं के लिए पर्याप्त है - परलोक के अत्यंत लंबे जीवन पर खर्च करने में विफल रहते हैं, तो यह स्पष्ट है कि हमने बहुत बड़ी गलती की है। कोई कल्पना भी नहीं कर सकता कि यह कितना बड़ा नुकसान होगा या हमारे अदूरदर्शी व्यवहार के परिणामस्वरूप हमारे मन और आत्मा को कितना कष्ट होगा। न केवल हमारे भविष्य के कार्य हमारे कष्ट से बर्बाद हो जाएँगे, बल्कि हम उस निराशा के कारण अपने आचरण को सुधारने में भी असमर्थ होंगे जो हमें घेर लेगी।

हालाँकि, अगर हम उस एक घंटे को पाँच अनिवार्य प्रार्थनाओं पर खर्च करते हैं, तो इससे होने वाला लाभ अतुलनीय है। कारावास की इस विपत्तिपूर्ण अवधि का प्रत्येक घंटा कभी-कभी पूरे दिन की पूजा के बराबर होगा, जबकि विहित प्रार्थनाओं के लिए समर्पित एक घंटा कई स्थायी घंटों में बदल जाएगा। इसके अलावा, हमारे दिल और आत्मा में जो निराशा और परेशानी हम महसूस करते हैं, वह फीकी पड़ने लगेगी और एक घंटे की प्रार्थना उन गलतियों के लिए प्रायश्चित का काम करेगी, जिनके कारण हमें पहली बार कारावास हुआ था, इस प्रकार उन्हें क्षमा किया जा सकेगा। इसके अलावा, यह हमें प्रशिक्षण और सुधार प्राप्त करने में भी मदद करेगा, जो कारावास का उद्देश्य है। यह कितना फायदेमंद है और यह हमारे और हमारे साथियों के लिए कठिनाई में कितनी सुखद सांत्वना है!

जैसा कि चौथे वचन में लिखा गया है, मान लीजिए कि कोई व्यक्ति अपनी चौबीस लीरा में से पाँच या दस लीरा एक लॉटरी में दे देता है, जिसमें एक हजार लोग भाग ले रहे हैं, ताकि वह एक हजार लीरा का पुरस्कार जीत सके, लेकिन रत्नों के अनन्त खजाने के लिए टिकट खरीदने के लिए एक भी लीरा नहीं दे पाता। देखिए कि वह किस तरह पहले वाले की ओर भागता है, यद्यपि उस सांसारिक लॉटरी में उसके हजार लीरा जीतने की संभावना एक हजार में से एक से अधिक नहीं है। और देखिए कि वह दूसरे वाले से कैसे भागता है, यद्यपि एक लाख चौबीस हजार पैगम्बरों द्वारा दी गई रिपोर्टों और संतों और शुद्ध संत विद्वानों में से असंख्य सत्यवादी मुखबिरों द्वारा दी गई पुष्टि के अनुसार, एक सच्चे आस्तिक के उस 'लॉटरी' को जीतने की संभावना, जिसका पुरस्कार परलोक में अनन्त सुख है, एक हजार में से नौ सौ निन्यानवे है।

अब सोचिए कि यह कितना अतार्किक है कि पहले की ओर तो दौड़ना है, लेकिन दूसरे से भागना है!

जेल के गवर्नर और वार्डन, और वास्तव में देश के प्रशासक और सार्वजनिक व्यवस्था के रखवाले, रिसाले-ए-नूर द्वारा प्रदान की गई इस शिक्षा से प्रसन्न होंगे , क्योंकि इसे देखा और अनुभव किया गया है।

अनेक अवसरों पर मैंने देखा है कि एक हजार धार्मिक लोगों का प्रबंधन और अनुशासन, जो हमेशा नरक की जेल को ध्यान में रखते हैं, उन दस लोगों की तुलना में कहीं अधिक आसान है, जिनका कोई विश्वास नहीं है, जो अनिवार्य नमाज़ नहीं करते हैं, जो केवल सांसारिक कारावास की परवाह करते हैं, जो वैध और अवैध के बारे में कुछ नहीं सोचते हैं, और जो अनुशासनहीन जीवन जीने के आदी हो गए हैं।

दूसरा मामला

जैसा कि रिसाले-ए-नूर में जेनक्लिक रेहबेरी ("युवाओं के लिए एक मार्गदर्शिका") नामक ग्रंथ में बताया गया है , मृत्यु उतनी ही अपरिहार्य है, जितनी दिन के बाद रात या पतझड़ के बाद सर्दी। जिस तरह यह जेल उन लोगों के लिए एक अस्थायी गेस्टहाउस है, जो एक के बाद एक इसमें प्रवेश करते हैं और बाहर निकलते हैं, उसी तरह पृथ्वी भी एक लंबी सड़क पर एक कारवां सराय की तरह है; यहाँ कारवां, अपने गंतव्य तक पहुँचने के लिए दौड़ते हुए, आगे बढ़ने से पहले रात भर रुकते हैं। निश्चित रूप से मृत्यु, जिसने पृथ्वी के सभी शहरों को सौ बार पृथ्वी की आंतों में खाली कर दिया है, हमसे जीवन की माँगों से कहीं अधिक माँगें रखती है। रिसाले -ए-नूर ने इस भयानक सत्य की व्याख्या की है, जिसका संक्षिप्त सारांश इस प्रकार है: चूँकि मृत्यु को समाप्त नहीं किया जा सकता है और चूँकि कब्र का द्वार बंद नहीं किया जा सकता है, इसलिए हमें एक ऐसा रास्ता ढूँढ़ना चाहिए जो हमें मृत्यु के जल्लाद द्वारा कब्र के एकांत कारावास और आने वाली दुनिया में अनंत काल के विनाश की निंदा से बचा सके; निश्चय ही

यह मानव जाति की सबसे बड़ी चिंता होनी चाहिए और निश्चय ही इस संभावना की जांच करना हमारे सर्वोत्तम हित में है।

ऐसा ही एक रास्ता है - रिसाले-ए-नूर द्वारा दिखाया गया रास्ता और कुरान की शिक्षाओं से प्रेरित रास्ता। नीचे एक संक्षिप्त सारांश दिया गया है:

मृत्यु या तो शाश्वत निष्पादन है - एक ऐसा फाँसी का तख्ता जिस पर एक व्यक्ति और उसके दोस्त और रिश्तेदार लटके रहेंगे - या यह एक तरह का प्रवेश द्वार है दूसरे, स्थायी क्षेत्र में, खुशी का एक महल जो उन लोगों के लिए तैयार किया गया है जो विश्वास रखते हैं। जहाँ तक कब्र की बात है, यह या तो एकांत कारावास का एक अँधेरा, अथाह गड्ढा है या एक ऐसा दरवाज़ा है जो इस दुनिया की जेल से बाहर की ओर एक स्थायी, रोशन बगीचे और दावत की जगह की ओर खुलता है। इस सत्य को गेन्क्लिक रेहबेरी में इस प्रकार समझाया गया है:

उदाहरण के लिए: इस जेल प्रांगण में कई फाँसी के तख्ते बनाए गए हैं, और दीवार के ठीक पीछे एक बहुत बड़ा लॉटरी कार्यालय खोला गया है; दुनिया के हर व्यक्ति ने टिकट खरीदा है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि इस जेल में बंद पाँच सौ लोगों को एक-एक करके, बिना किसी अपवाद के, उस प्रांगण में बुलाया जाएगा: भागने की कोई उम्मीद नहीं है। कोई भी व्यक्ति बच नहीं सकता।

घोषणाएँ होती हुई सुनें: “आओ और अपनी मृत्युदंड की रसीद प्राप्त करो और फाँसी के तख्ते पर चढ़ो!” या “अपने हाथ में वह आदेश लो जो तुम्हें अनंत काल के लिए एकांत कारावास में डाल देगा और उस दरवाजे से प्रवेश करो!” या “बधाई हो! तुम्हारा टिकट जीतने वाला है जिसकी कीमत लाखों में है। आओ और इसे ले लो!” हम अपनी आँखों से देखते हैं कि लोग एक के बाद एक फाँसी के तख्ते पर चढ़ रहे हैं। फिर भी, जबकि कुछ लोग फाँसी के तख्ते पर केवल फाँसी के तख्ते पर चढ़ने के लिए चढ़ते हैं, हम जेल के प्रांगण में काम कर रहे ईमानदार अधिकारियों की रिपोर्ट से सीखते हैं कि कुछ लोग फाँसी के तख्ते का इस्तेमाल सीढ़ी की तरह कर रहे हैं, और दीवार फांदकर लॉटरी कार्यालय में प्रवेश कर रहे हैं जो कि बाहर है।

इस समय, दो प्रतिनिधि मंडल हमारी जेल में प्रवेश करते हैं। एक प्रतिनिधि मंडल संगीत वाद्ययंत्र, शराब और स्वादिष्ट मिठाइयाँ और पेस्ट्री लाता है, जिन्हें वे हमें खिलाने का प्रयास करते हैं। लेकिन मिठाइयाँ वास्तव में जहरीली होती हैं, क्योंकि मानव रूप में राक्षसों ने उनमें जहर मिला दिया है।

दूसरा प्रतिनिधिमंडल शिक्षा और प्रशिक्षण के कागजात, वैध खाद्य पदार्थ और वैध पेय पदार्थ लेकर आता है। इस प्रतिनिधिमंडल के सदस्य ये चीजें हमारे सामने पेश करते हैं और बड़ी गंभीरता से कहते हैं:

> पहले प्रतिनिधिमंडल द्वारा लाए गए उपहार एक परीक्षा हैं; यदि आप उन्हें स्वीकार करते हैं और खाते हैं, तो आपको वहाँ फाँसी पर लटका दिया जाएगा, जैसे आपने दूसरों को उनके सामने लटकते देखा है। हालाँकि, यदि आप इस देश के शासक के आदेश पर हमारे द्वारा लाए गए उपहारों को स्वीकार करते हैं, और यदि आप शिक्षा और प्रशिक्षण के इन कागजों पर लिखी प्रार्थनाएँ और प्रार्थनाएँ पढ़ते हैं, तो आपको फाँसी से बचा लिया जाएगा। बिना किसी संदेह के विश्वास करें कि आप में से प्रत्येक को शाही उपहार के रूप में लाखों की कीमत वाली लॉटरी टिकट मिलेगी। लेकिन अगर आप इन अवैध, जहरीली मिठाइयों को खाते हैं, तो इन आदेशों में लिखा है - ऐसे आदेश जिनसे हम सभी सहमत हैं - कि आप उस समय तक जहर के प्रभावों को भुगतेंगे जब तक कि आपको फांसी पर लटकाने के लिए फाँसी पर नहीं ले जाया जाता।

जैसा कि इस तुलना में, विश्वास और आज्ञाकारिता के लोगों के लिए - बशर्ते कि वे सच्चे विश्वास की स्थिति में चले जाएं - एक शाश्वत और अक्षय खजाने के लिए टिकट नियत समय पर फांसी के फंदे से परे मानव भाग्य की लॉटरी से निकाला जाएगा, जिसके बारे में हम हमेशा जानते हैं। हालाँकि, जो लोग परलोक में विश्वास नहीं करते हैं और जो बुराई, गैरकानूनी कार्यों, अविश्वास और पाप में लगे रहते हैं, उनके लिए सौ प्रतिशत संभावना है कि अगर वे पश्चाताप नहीं करते हैं, तो उन्हें न्यायिक आदेश द्वारा मृत्युदंड और शाश्वत विनाश की निंदा की जाएगी। जो लोग मानव आत्मा की अमरता में विश्वास करते हैं, फिर भी वे बुराई और पाप के मार्ग पर चलते हैं, उनके लिए निन्यानबे प्रतिशत संभावना है

संभावना है कि उन्हें हमेशा के लिए एकांत कारावास की सजा दी जाएगी। इस बारे में निश्चित खबर एक सौ चौबीस हज़ार पैगम्बरों ने दी थी, जिनमें से सभी अपनी सच्चाई के सबूत के तौर पर अनगिनत चमत्कारों से लैस थे। यही खबर एक सौ चौबीस मिलियन से ज़्यादा संतों ने दी है, जो पैगम्बरों द्वारा लाई गई खबरों के निशानों और परछाइयों को आध्यात्मिक रूप से उजागर करके पहचानते हैं और पुष्टि करते हैं - जैसे कि किसी चलचित्र के पर्दे पर देखा गया हो। इसी तरह, हज़ारों-लाखों सटीक विद्वानों, इस्लामी कानून के व्याख्याकारों और सत्यनिष्ठ विद्वानों ने निर्णायक सबूतों और शक्तिशाली तर्कों के साथ, इन दो प्रतिष्ठित लोगों के समूहों द्वारा दी गई जानकारी को तर्कसंगत और तार्किक निश्चितता के साथ स्थापित किया है।

अब उस व्यक्ति की स्थिति पर विचार करें, जो किसी एक व्यक्ति की सलाह पर, जिस सुरक्षित मार्ग पर वह चल रहा था, उसे छोड़ देता है और एक लंबे तथा अधिक खतरनाक मार्ग को चुनता है, तथा पहले उल्लेखित सत्य के लोगों - उन चंद्रमाओं, सूर्यों और सितारों, मानवता के उन पवित्र नेताओं - के सामूहिक ज्ञान को नजरअंदाज कर देता है, जिन्होंने सीधा मार्ग दिखाया है जो सीधे शाश्वत सुख की ओर ले जाता है।

ऐसे व्यक्ति की स्थिति यह है: इस यात्रा पर निकलने के बाद, वह अभागा व्यक्ति किसी को यह कहते हुए सुनता है कि छोटा रास्ता अपनाने से खतरे की एक प्रतिशत संभावना है और सड़क के अंत में एक महीने की कैद की संभावना है। इसलिए, एक व्यक्ति की झूठी सलाह पर, हमारा यात्री छोटा रास्ता छोड़कर लंबा रास्ता अपना लेता है। वे ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि यह हानिरहित लगता है, हालाँकि वास्तव में इस मार्ग में कोई लाभ नहीं है। साथ ही, असंख्य बुद्धिमान और सुविज्ञ व्यक्ति उन्हें चेतावनी देते हैं कि वे छोटे और आसान मार्गों को न छोड़ें - जो निश्चित रूप से उन्हें अंततः स्वर्ग और शाश्वत सुख की ओर ले जाएगा। हालाँकि, उन्होंने उनकी बातों को नज़रअंदाज़ कर दिया और अधिक कठिन, अधिक परेशानी वाला रास्ता चुना - जो निन्यानबे प्रतिशत निश्चित रूप से उन्हें नर्क की कैद और अनंत दुख की ओर ले जाएगा।

निश्चय ही, ऐसे दुष्ट ने अपना दिमाग, अपना दिल और अपनी आत्मा खो दी है, क्योंकि केवल एक शराबी पागल ही कुछ मच्छरों के हल्के डंक से बचकर सुरक्षित रास्ते पर भागेगा और उस मार्ग पर भागेगा जिसके किनारे ड्रेगन छिपे हुए हैं, जो उस बेचारे दुष्ट पर हमला करने और उसके अंग-भंग करने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

चूँकि यह स्थिति की वास्तविकता है, इसलिए हम कैदियों को दूसरे, धन्य प्रतिनिधिमंडल के उपहारों को स्वीकार करना चाहिए ताकि हम अपने कारावास की विपत्ति का पूरा बदला ले सकें। कहने का तात्पर्य यह है कि जिस तरह एक मिनट के बदले की खुशी या कुछ मिनटों की बुराई ने हमें दोषी ठहराया है।

वर्षों की कैद से, हमारी दुनिया को जेल में बदलने से, बदला लेने के लिए हमें अपने जेल जीवन के एक या दो घंटे को पूजा के एक या दो दिन में बदल देना चाहिए। इस तरह हम उस धन्य प्रतिनिधिमंडल के उपहारों की बदौलत दो या तीन साल की सजा को स्थायी जीवन के बीस या तीस साल में बदल पाएंगे; इस तरह हम बीस या तीस साल की जेल की सजा को नरक में लाखों वर्षों की कैद से माफ़ी के साधन में बदल पाएंगे, इस प्रकार हमारे अनंत जीवन को उस रोने के प्रतिशोध में मुस्कुराने की अनुमति मिलेगी जो हमारी क्षणभंगुर दुनिया की विशेषता है। यह प्रदर्शित करते हुए कि जेल प्रशिक्षण और शिक्षा का स्थान है, हमें अपने राष्ट्र और देश के अच्छे व्यवहार वाले, भरोसेमंद और उपयोगी सदस्य बनने का प्रयास करना चाहिए।

जेल अधिकारियों, वार्डन और प्रशासकों को यह भी देखना चाहिए कि जिन लोगों को वे डाकू, आवारा, हत्यारे और दुराचारी मानते हैं - और इस तरह देश के लिए हानिकारक हैं - वे वास्तव में शिक्षा के इस सबसे धन्य स्थान में अध्ययनरत छात्र हैं। और उन्हें इस उदारता के लिए गर्व महसूस करना चाहिए और भगवान को धन्यवाद देना चाहिए।

तीसरा मामला

आगे एक शिक्षाप्रद घटना का सारांश दिया गया है जिसका वर्णन इस प्रकार है
युवा गाइड:

मैं एक बार राष्ट्रीय गणतंत्र दिवस के दौरान एस्कीशेहर जेल की खिड़की के पास बैठा था। जेल के सामने वाले स्कूल की छोटी लड़कियाँ स्कूल के मैदान में खेल रही थीं और जयकारे लगा रही थीं। अचानक, मैंने उन्हें पचास साल बाद देखा, उनके भविष्य की परिस्थितियाँ मुझे फिल्म के पर्दे पर फिल्म की तरह दिखाई दे रही थीं।

मैंने देखा कि उन पचास से साठ छात्राओं में से चालीस से पचास छात्राएँ अपनी कब्रों में धूल में मिल चुकी थीं और कष्ट झेल रही थीं। बाकी दस बदसूरत सत्तर वर्षीय थीं, जिन्हें उन लोगों ने तिरस्कृत कर दिया था जिनसे उन्हें प्यार की उम्मीद थी, क्योंकि उन्होंने युवावस्था में अपनी पवित्रता को बनाए नहीं रखा था। यह देखकर, मैं उनकी दयनीय स्थिति देखकर रो पड़ा। जेल में मेरे कुछ दोस्तों ने मेरा रोना सुना और मुझसे पूछा कि क्या हुआ है, लेकिन मुझे उनसे कहना पड़ा कि वे मुझे कुछ समय के लिए अकेला छोड़ दें।

आपको यह समझना चाहिए कि मैंने जो देखा वह वास्तविक था, काल्पनिक नहीं। जिस तरह गर्मी और पतझड़ के बाद सर्दी आती है, उसी तरह जवानी की गर्मी और बुढ़ापे की पतझड़ के बाद कब्र और मध्यवर्ती क्षेत्र की सर्दी आती है। अगर कोई ऐसा उपकरण होता जो भविष्य की घटनाओं को उसी तरह दिखा सकता जिस तरह फिल्में अतीत की घटनाओं को दिखाती हैं, तो पचास साल पहले की घटनाएं वर्तमान में दिखाई जातीं और गुमराह और दुराचारी लोग

पचास साल बाद जब उन्हें अपनी स्थिति दिखाई जाएगी, तो वे दर्द और घृणा से चिल्ला उठेंगे, तथा अपनी वर्तमान स्थिति, स्पष्ट सुख और अवैध सुख पर कड़वी पीड़ा व्यक्त करेंगे।

एस्कीशेहिर जेल में इन टिप्पणियों में व्यस्त रहने के दौरान, एक तरह का सामूहिक व्यक्तित्व, जो बुराई और गुमराही को प्रोत्साहित करता है, मेरे सामने मानव रूप में एक शैतान की तरह अवतरित हुआ। उसने कहा:

> हम जीवन के सभी सुखों और खुशियों का स्वाद लेना चाहते हैं, और दूसरों को भी उनका स्वाद चखाना चाहते हैं; हमारे काम में हस्तक्षेप मत करो!"

जवाब में मैंने कहा:

> चूँकि तुम सुख और आनंद के लिए मृत्यु को याद नहीं करते, बल्कि खुद को दुराचार और गुमराही में डुबो देते हो, इसलिए यह जान लो कि तुम्हारी गुमराही की वजह से सारा अतीत मर चुका है और अस्तित्वहीन है: यह एक उजाड़ और सबसे भयानक कब्रिस्तान है, जो सड़ी-गली लाशों से भरा हुआ है। उन अनगिनत वियोगों से जो तुमने झेले हैं और अपने दोस्तों की मृत्यु से जो दर्द पैदा होता है - वह दर्द, जो तुम्हारे प्रियजनों के साथ फिर से मिलने की कोई उम्मीद नहीं होने के कारण तुम्हारे दिल और दिमाग पर गहरा असर डालता है - जल्द ही उन तुच्छ नशे में धुत्त सुखों को नष्ट कर देगा जो तुम्हारे वर्तमान का निर्माण करते हैं। जहाँ तक भविष्य की बात है, तो तुम्हारे विश्वास की कमी के कारण, वह भी एक अँधेरे, मृत और उजाड़ बंजर भूमि से ज़्यादा कुछ नहीं है। और चूँकि वे अभागे दुष्ट, जो वहाँ से निकलकर इस अस्तित्व के क्षेत्र में तथा वर्तमान में उभरने वाले हैं, उन्हें भी जल्लाद की मौत की तलवार से सिर काट दिया जाएगा तथा, आपकी धारणा के अनुसार, आपके उनके साथ चिंता तथा संबंध के कारण, जो आपके बुद्धिमान प्राणी होने से उपजा है, उन्हें अस्तित्वहीनता में फेंक दिया जाएगा, इसलिए भयंकर चिंताएँ आपके अविश्वासी सिर पर लगातार बरसती रहेंगी, जो आपके क्षुद्र, स्वच्छंद सुख को पहचान से परे नष्ट कर देंगी।

> यदि तुम पथभ्रष्टता और बुराई को त्यागकर सच्चे विश्वास और धार्मिकता के क्षेत्र में प्रवेश करो, तो तुम विश्वास के प्रकाश से देखोगे कि अतीत न तो अस्तित्वहीन है और न ही सड़ी हुई लाशों से भरा कब्रिस्तान है; बल्कि, यह एक वास्तविक, प्रकाशमान दुनिया है जिसे भविष्य में रूपांतरित कर दिया गया है: यह उन अमर आत्माओं के लिए प्रतीक्षा-कक्ष है जो आने वाले संसार में सुख के महलों में प्रवेश करेंगी। चूँकि यह ऐसा है, इसलिए यह कोई पीड़ा नहीं देता; इसके विपरीत, किसी के विश्वास की मात्रा और शक्ति के आधार पर, यह संसार में एक प्रकार का स्वर्गीय आनंद उत्पन्न करता है। भविष्य भी, जब विश्वास की आँख से देखा जाता है, तो एक अँधेरा, उजाड़ बंजर भूमि नहीं है, बल्कि एक ऐसी भूमि है जिसके शाश्वत सुख के महलों में एक सर्व-दयालु, सर्व-करुणामय महामहिम और परोपकारी द्वारा भोज और उपहारों की प्रदर्शनी लगाई गई है - जिसके पास असीम दया और उदारता है और जो

वसंत और ग्रीष्म ऋतु को उपहारों से भरी मेजों में बदल देता है। चूँकि विश्वास की फिल्म स्क्रीन भविष्य को इस तरह से प्रकट करती है और चूँकि विश्वास यह भी जागरूकता देता है कि लोगों को मृत्यु के द्वार से वहाँ भेजा जा रहा है, इसलिए हर कोई इस दुनिया में रहते हुए उस स्थायी क्षेत्र से संबंधित किसी न किसी तरह के आनंद का अनुभव कर सकता है, अपने विश्वास की सीमा और शक्ति के अनुसार। निष्कर्ष रूप में, सच्चा, दर्द-मुक्त आनंद केवल विश्वास में ही पाया जा सकता है और केवल विश्वास के माध्यम से ही संभव है।

चूँकि यह हमारी चर्चा से संबंधित है, इसलिए हम कुछ ऐसा समझाएँगे जो जेनक्लिक रेहबेरी में एक पोस्टस्क्रिप्ट के रूप में शामिल किया गया था, अर्थात् इस दुनिया में भी विश्वास द्वारा उत्पन्न हजारों लाभों और सुखों का एक उदाहरण। यह इस प्रकार है:

उदाहरण के लिए, कल्पना करें कि आपकी प्यारी इकलौती संतान मृत्यु की पीड़ा झेल रही है और आप उसकी दर्दनाक मौत के बारे में बेहद चिंतित हैं। अचानक, खिद्र या लुकमान जैसा कोई चिकित्सक एक अद्भुत दवा लेकर आता है, जिसे वह आपकी प्रियतमा को देता है। आपकी प्यारी, सबसे प्यारी बच्ची मृत्यु से मुक्त होकर अपनी आँखें खोलती है। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि उसके ठीक होने और मृत्यु से बचने पर आपको कितनी खुशी और राहत महसूस होगी?

उदाहरण में बच्चे की तरह, अनगिनत लोग जिन्हें आप प्यार करते हैं और जिनके लिए आप चिंतित हैं, आपकी दृष्टि में, अतीत के कब्रिस्तान में अनंत काल तक सड़ने वाले हैं। अचानक, लुकमान द वाइज़ की तरह, विश्वास की सच्चाई दिल की खिड़की से कब्र पर रोशनी डालती है, जिसे अनंत विनाश का एक विशाल स्थान माना जाता है। विश्वास की सच्चाई और रोशनी की बदौलत, सभी मृतक जीवन में आ जाते हैं, मानो कह रहे हों, 'हम नहीं मरे और नहीं मरेंगे; हम फिर से आपसे मिलेंगे!' इस वास्तविकता का अनुभव करने पर आपको कितना असीम आनंद और उल्लास महसूस होगा! इस दुनिया में वही असीम आनंद और उल्लास देकर, विश्वास साबित करता है कि यह एक बीज की तरह है -

एक बीज जो, यदि मूर्त रूप ले ले, तो एक निजी स्वर्ग, शाश्वत सुख का एक सच्चा तूबा-वृक्ष बन जाएगा।"

अपनी हठधर्मिता पर कायम रहते हुए, मानव रूपी उस शैतान ने इस प्रकार उत्तर दिया:

कम से कम हम अपना जीवन पशुओं की तरह बिता सकते हैं, आनंद और आनन्द में डूबे हुए, मनोरंजन और विलास में लिप्त होकर, और इन सूक्ष्म और नाजुक मामलों के बारे में अपने मन से सभी विचार निकाल कर!

मेरा उत्तर इस प्रकार था:

नहीं, आप जानवरों की तरह नहीं जी सकते, कम से कम इसलिए नहीं क्योंकि जानवरों के लिए न तो अतीत होता है और न ही भविष्य। उन्हें न तो अतीत पर दुख होता है और न ही पछतावा होता है और न ही आने वाले समय को लेकर चिंता या डर होता है। जानवर को शुद्ध आनंद मिलता है। वह आराम से रहता है और सोता है,

अपने रचयिता का धन्यवाद और प्रशंसा करता है। वध होने वाला पशु भी कुछ नहीं महसूस करता। जब छुरी उसका गला काटती है तो उसे पीड़ा होती है, पर वह पीड़ा क्षणिक होती है और क्षण भर में गायब हो जाती है। इसका अर्थ यह है कि अदृश्य को अज्ञात रखना, वहाँ क्या होने वाला है, यह न बताना ईश्वरीय दया और करुणा का महान उदाहरण है; निरीह पशुओं के लिए तो यह और भी बड़ा वरदान है। पर मनुष्य के सत्वगुणी होने के कारण, और चूँकि उसका भूत और भविष्य कुछ हद तक अदृश्य से निकलता हुआ दिखाई देता है, इसलिए दृश्य जगत के पर्दे के पार जो कुछ है, वह पूरी तरह छिपा नहीं रह सकता; फलस्वरूप हे मनुष्य! तू पशुओं की तरह निश्चिंत और निश्चिंत होकर नहीं रह सकता। भूतकाल का पश्चाताप, वियोग की पीड़ा और भविष्य की चिंताएँ तेरे क्षणभंगुर वर्तमान सुखों को भस्म कर देती हैं, और पशुओं के सुखों से सौ गुना कम आकर्षक बना देती हैं। चूँकि यह एक तथ्य है, इसलिए या तो अपनी बुद्धि को त्याग दो, अपने आप को एक पशु बना लो, और इस तरह मोक्ष प्राप्त करो, या फिर सच्चे विश्वास के माध्यम से अपने होश में आओ, कुरान पर ध्यान दो, और इस क्षणभंगुर दुनिया में भी शुद्ध सुख का अनुभव करो, जो पशुओं द्वारा प्राप्त सुख से सौ गुना अधिक है।

मेरे इन शब्दों ने कुछ देर के लिए मेरे विरोधी को चुप करा दिया। लेकिन अपनी जिद में वह एक बार फिर मेरी ओर मुड़ा और बोला: "ठीक है, तो हम कम से कम पश्चिम के अधार्मिक लोगों की तरह तो रह ही सकते हैं।"

मैंने उत्तर दिया:

जिस तरह से आप जानवरों की तरह नहीं जी सकते, उसी तरह से आप पश्चिम के अधार्मिक लोगों की तरह भी नहीं जी सकते। क्योंकि अगर वे एक पैगम्बर को भी नकारते हैं, तो वे दूसरे पैगम्बरों पर विश्वास करते हैं। भले ही वे पैगम्बरों को न पहचानें, वे ईश्वर में विश्वास कर सकते हैं। और अगर वे ईश्वर को नहीं जानते, तो भी उनके पास कुछ व्यक्तिगत विशेषताएँ और गुण हो सकते हैं, जिनके ज़रिए वे पूर्णता पाते हैं। लेकिन अगर कोई मुसलमान अंतिम पैगम्बर, ईश्वर के सबसे महान पैगम्बर, उन पर और उन पर शांति और आशीर्वाद हो, जिनका धर्म और मिशन सार्वभौमिक है, को नकारता है, तो वे किसकी ओर जा सकते हैं? क्योंकि वे किसी दूसरे पैगम्बर को स्वीकार करने में असमर्थ होंगे और उन्हें खुद ईश्वर से भी मुंह मोड़ना पड़ेगा। क्योंकि ईश्वर और दूसरे सभी पैगम्बरों के बारे में उनका ज्ञान पैगम्बर मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, के ज़रिए उन तक पहुँचा है; उनके बिना, दूसरे पैगम्बर किसी के दिल में कैसे जगह बना सकते हैं? यही वजह है कि जहाँ बहुत से लोगों ने शुरुआती समय से ही दूसरे धर्मों को छोड़कर इस्लाम में प्रवेश किया है, वहीं बहुत कम मुसलमान सच्चे यहूदी या ईसाई बन पाए हैं। इस्लाम को छोड़ने वाले मुसलमान आम तौर पर आम हो जाते हैं-

पूर्णतया अधार्मिक: एक नियम के रूप में, उनका चरित्र भ्रष्ट हो जाता है और वे देश और राष्ट्र के लिए खतरा बन जाते हैं।

यह तर्क सुनकर, मानव वेश में जिद्दी शैतान को कोई सहारा नहीं मिला। जवाब देने में असमर्थ, वह गायब हो गया और नरक में चला गया।

तो, यूसुफ के इस स्कूल में मेरे सहपाठियों! वास्तविकता जैसा कि मैंने वर्णन किया है, रिसाले-ए-नूर द्वारा पुष्टि की गई है, जिसने अपने प्रमाणों के साथ, पिछले बीस वर्षों में कई जिद्दी आत्माओं की जिद को कम कर दिया है और कई लोगों को विश्वास दिलाया है। चूंकि यह ऐसा है, इसलिए हमें विश्वास और सही आचरण के मार्ग का पालन करना चाहिए - एक ऐसा मार्ग जो सुरक्षित और आसान है, और जो हमारे और हमारे राष्ट्र के सदस्यों के जीवन को न केवल इस दुनिया में बल्कि अगली दुनिया में भी लाभ पहुंचाता है। खुद को व्यर्थ और अंततः दर्दनाक कल्पनाओं में लिप्त करने के बजाय, हमें अपना खाली समय कुरान की उन सूराओं को पढ़ने में बिताना चाहिए जिन्हें हमने याद किया है और उन दोस्तों से उनका अर्थ सीखना चाहिए जो उन्हें सिखा सकते हैं। हमें उन विहित प्रार्थनाओं की भरपाई करनी चाहिए जिन्हें हम अतीत में करने में विफल रहे हैं। और, एक-दूसरे के अच्छे गुणों का लाभ उठाते हुए, हमें इस जेल को एक धन्य बगीचे में बदलने की कोशिश करनी चाहिए जिसमें अच्छे चरित्र के बीज पोषित हो सकें। इस तरह के धार्मिक कार्यों के साथ, हमें अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करना चाहिए ताकि जेल का शासक और संबंधित लोग दयालु स्वामी और मार्गदर्शक बन सकें, जिन्हें यूसुफ के स्कूल में लोगों को स्वर्ग के लिए तैयार करने और उनके प्रशिक्षण और शिक्षा की देखरेख करने का कर्तव्य सौंपा गया हो, न कि वे नरक के स्वर्गदूतों की तरह यातना देने वाले बनें, जो अपराधियों और हत्यारों के ऊपर खड़े रहते हैं।

चौथा मामला

फिर से, इस मामले को जेनक्लिक रेहबेरी में समझाया गया है । एक बार कुछ भाइयों ने मुझसे निम्नलिखित प्रश्न पूछा जो मेरी मदद कर रहे थे:

> पिछले पचास दिनों से तुमने इस भयानक विश्व युद्ध के बारे में कुछ भी नहीं पूछा है, न ही कोई जिज्ञासा दिखाई है, जिसने पूरी दुनिया को अस्त-व्यस्त कर दिया है, जबकि यह इस्लाम और मुस्लिम दुनिया के भाग्य से बहुत जुड़ा हुआ है। फिर भी, कुछ धार्मिक और विद्वान रेडियो को ध्यान से सुनते हैं, और कुछ लोग इसके परिणामस्वरूप सामूहिक प्रार्थना से भी विचलित हो जाते हैं। क्या इस युद्ध से भी अधिक महत्वपूर्ण कोई और घटना है? या फिर इसके बारे में सोचना किसी तरह से हानिकारक है?

मेरा उत्तर था: जीवन की पूंजी बहुत थोड़ी

है और किया जाने वाला काम बहुत बड़ा है।

संकेन्द्रित वृत्तों की तरह, प्रत्येक व्यक्ति के पास चिंता के कुछ निश्चित क्षेत्र होते हैं जो एक दूसरे के भीतर मौजूद होते हैं: उनमें हृदय और मस्तिष्क के क्षेत्र होते हैं।

पेट; शरीर और घर के क्षेत्र; जिस क्वार्टर में वे रहते हैं और जिस कस्बे या शहर में वे रहते हैं, उसके क्षेत्र; उनके देश का क्षेत्र, पृथ्वी और मानव जाति के क्षेत्र, और सभी जीवित प्राणियों और पूरी दुनिया का क्षेत्र। प्रत्येक व्यक्ति के पास उन क्षेत्रों में से प्रत्येक में कुछ कर्तव्य हो सकते हैं, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण और स्थायी कर्तव्य वे हैं जो निकटतम, सबसे छोटे क्षेत्र से संबंधित हैं, जबकि सबसे कम महत्वपूर्ण और अस्थायी कर्तव्य सबसे दूर, सबसे बड़े क्षेत्र से संबंधित हैं।

इस मानक के अनुसार, ऐसे कर्तव्य हो सकते हैं, जिनका महत्व और क्षेत्र एक दूसरे के व्युत्क्रमानुपाती हों। लेकिन सबसे बड़े क्षेत्र की अपील के कारण, सबसे छोटे क्षेत्र से संबंधित महत्वपूर्ण कर्तव्यों की उपेक्षा की जाती है, क्योंकि लोग अनावश्यक, तुच्छ और परिधीय मामलों में व्यस्त हो जाते हैं। यह उनके जीवन की पूंजी को व्यर्थ में नष्ट कर देता है और उन्हें अपना कीमती समय बेकार की चीजों पर बर्बाद करने के लिए मजबूर करता है। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति जो युद्ध की घटनाओं का अनुसरण करता है, वह अपने दिल में एक पक्ष का समर्थन करने लग सकता है, और परिणामस्वरूप अत्याचार को भी अनुकूल दृष्टि से देख सकता है और उसका हिस्सा बन सकता है।

प्रश्न के पहले भाग के सम्बन्ध में, सभी लोग - विशेष रूप से मुसलमान - लगातार इस विश्व युद्ध से भी अधिक महत्वपूर्ण घटनाओं का सामना कर रहे हैं, तथा विश्व प्रभुत्व से भी कहीं अधिक महत्वपूर्ण मुद्दा है। वास्तव में, यदि सभी के पास जर्मनों और अंग्रेजों की दौलत और थोड़ी सी भी समझ होती, तो वे इस मुद्दे का समाधान खोजने में अपना सब कुछ लगा देते। यह मुद्दा, जिसके बारे में लाखों पैगम्बरों, संतों और शुद्ध विद्वानों ने हमें बताया है, जो कि ब्रह्मांड के स्वामी और संचालक द्वारा दिए गए हजारों वादों और प्रतिज्ञाओं पर निर्भर हैं, इस प्रकार है:

हर किसी के लिए विश्वास के कारण एक शाश्वत संपत्ति जीतने की संभावना मौजूद है, जो पृथ्वी जितनी विशाल है, बगीचों और महलों से भरी हुई है। लेकिन विश्वास के बिना, वह संपत्ति हासिल नहीं की जा सकती। इस युग में, भौतिकवाद के प्रकोप के कारण बहुत से लोग हार रहे हैं। एक निश्चित संत विद्वान, जो कुछ छिपी हुई वास्तविकताओं को उजागर करने में सक्षम थे, ने एक बार एक जिले में देखा कि चालीस लोगों में से केवल कुछ ही जीते, बाकी हार गए। क्या कोई भी चीज, यहां तक कि पूरी दुनिया पर सत्ता और प्रभुत्व भी, ऐसी हार की भरपाई कर सकती है?

हम रिसाले-ए-नूर के छात्र जानते हैं कि परलोक में सुख के लिए आवश्यक कर्तव्यों का परित्याग करना मूर्खता होगी, तथा उस उत्कृष्ट वकील को छोड़ देना जो 99 प्रतिशत लोगों को उनके मुकदमे जीतने में मदद करता है, तथा इसके बजाय तुच्छ बातों में खुद को व्यस्त रखना मूर्खता होगी, मानो हम किसी और को अपनाना चाहते हों।

इस दुनिया में हमेशा के लिए रहना। इस कारण से, हम रिसाले-ए नूर के छात्र आश्वस्त हैं कि अगर हम में से हर कोई आज की तुलना में सौ गुना अधिक बुद्धिमान होता, तो भी हम अपनी बौद्धिक पूंजी का उपयोग उसी अधिकार के लिए करते

कारण।

यहाँ मेरे नए भाईयों से जो मेरे साथ कारावास की विपत्ति में भागीदार हैं, मैं यह कहना चाहूँगा। आप अभी तक रिसाले-ए-नूर को उतना नहीं जान पाए हैं जितना मेरे पुराने भाइयों को, जो मेरे साथ यहाँ आए थे। उन्हें और उनके जैसे हज़ारों छात्रों को साक्षी बनाकर मैं आपको भरोसा दिलाता हूँ कि रिसाले-ए-नूर को मेरे पुराने भाइयों की तरह नहीं जाना जा सकता।

इस युग के अग्रणी 'वकील' हैं, जो बुद्धिमानी भरे कुरान की चमत्कारिकता से प्रेरित हैं और जो इसका अध्ययन करने वालों को उनके जीवन का सबसे महत्वपूर्ण मुकदमा जीतने में मदद करने में सक्षम हैं। वास्तव में, पिछले बीस वर्षों में इसने बीस हज़ार लोगों को सच्चा विश्वास प्राप्त करने में मदद की है - यह अपने आप में एक गारंटी है कि उनका मुकदमा सफल होगा। हालाँकि पिछले अठारह वर्षों से मेरे दुश्मनों और विभिन्न विधर्मियों और भौतिकवादियों ने सरकार के कुछ सदस्यों को मेरे खिलाफ क्रूरता से भड़काया है और अधिकारियों ने हमें चुप कराने के लिए हमें कैद कर लिया है, कुछ ऐसा जो उन्होंने पहले भी करने की कोशिश की है, वे रिसाले -ए-नूर के स्टील के किले को बनाने वाले एक सौ तीस 'उपकरणों' में से केवल दो या तीन की ही आलोचना कर पाए हैं। दूसरे शब्दों में, रिसाले-ए-नूर उस व्यक्ति के लिए पर्याप्त है जो अपने जीवन का मुकदमा जीतने के लिए वकील रखना चाहता है।

इसके अलावा, डरो मत, क्योंकि रिसाले-ए-नूर पर प्रतिबंध नहीं लगाया जा सकता! दो या तीन अपवादों को छोड़कर, इसके सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथ प्रतिनिधियों और सरकार के अन्य प्रमुख व्यक्तियों के बीच स्वतंत्र रूप से प्रसारित हो रहे हैं। ईश्वर की इच्छा से, एक समय आएगा जब सम्मानित राज्यपाल और अधिकारी इन रोशनियों को कैदियों में इस तरह वितरित करेंगे जैसे कि वे भोजन और दवा हों ताकि जेलों को वास्तव में सुधार के प्रभावी घरों में बदल दिया जा सके।

पांचवां मामला

जैसा कि जेनक्लिक रेहबेरी में वर्णित है , इसमें कोई संदेह नहीं है कि एक व्यक्ति की जवानी एक दिन गायब हो जाएगी: जैसे गर्मी अपनी जगह पतझड़ और सर्दी को दे देती है, और जैसे दिन अंततः शाम और फिर रात हो जाता है, वैसे ही जवानी एक दिन बुढ़ापे में बदल जाएगी और मृत्यु में समाप्त हो जाएगी। सभी दिव्य-प्रकट शास्त्र हमें बताते हैं कि यदि युवा अपनी युवावस्था को धार्मिक कार्यों में बिताते हैं, पवित्र व्यवहार करते हैं और अच्छे आचरण की सीमाओं के भीतर कार्य करते हैं, तो वे अंततः शाश्वत युवावस्था प्राप्त करेंगे। हालाँकि, यदि वे अपनी युवावस्था को बर्बाद करते हैं और इसे अपव्यय में खर्च करते हैं, तो वे इसे हमेशा के लिए खो देंगे। जिस तरह एक मिनट के क्रोध से हुई हत्या के परिणामस्वरूप लाखों मिनट की कैद होती है, उसी तरह अवैध-

युवावस्था के सुखों में, जैसा कि हर युवा व्यक्ति अपने अनुभव से पुष्टि कर सकता है, सुख से ज़्यादा दर्द होता है। इस दुनिया में ऐसे सुखों के गुज़र जाने पर जो पछतावा होता है और पाप के परिणामस्वरूप अक्सर यहाँ जो दंड मिलता है, उसके अलावा कब्र की यातना पर भी विचार करना पड़ता है, साथ ही यह तथ्य भी है कि व्यक्ति को परलोक में अपने गलत कामों के लिए जवाब देना होगा।

उदाहरण के लिए, अवैध प्रेम में मिलने वाला क्षणिक सुख ईर्ष्या, अलगाव और बदले में प्यार न मिलने की पीड़ा के कारण ज़हरीले शहद में बदल जाता है। अगर आप यह समझना चाहते हैं कि युवा लोग अक्सर अपनी ज्यादतियों के कारण शारीरिक और मानसिक बीमारियों के साथ अस्पताल में क्यों पहुँचते हैं, या अपने गलत आचरण के कारण जेल में, या सलाखों और दुराचार के अड्डों में, तो आपको बस उन जगहों पर जाना होगा।

और कब्रिस्तान उन लोगों से भरे पड़े हैं जो युवा मानव हृदयों की अपने उचित कर्तव्यों के प्रदर्शन के माध्यम से सच्चा पोषण पाने में असमर्थता के कारण उत्पन्न संकट के परिणामस्वरूप नष्ट हो गए। अस्पतालों और जेलों में जाएँ और पश्चाताप की आहें सुनें और दया के साथ उन आँसुओं को देखें जो उस युवावस्था के लिए बहाए जाते हैं जो अत्यधिकता, दुराचार और अवैध सुख में बर्बाद हो गई है।

कुरान और ईश्वर द्वारा प्रकट किए गए सभी अन्य धर्मग्रंथों और आदेशों में हमें अपनी कई आयतों में बताया गया है कि अगर इसे अच्छे आचरण की सीमाओं के भीतर बिताया जाए, तो युवावस्था परलोक में सुरक्षित रहेगी, जहाँ ईश्वर की कृपा से यह अमर हो जाएगी। चूँकि वैध का क्षेत्र मानव आनंद के लिए पर्याप्त है, और चूँकि अवैध आनंद का एक घंटा कभी-कभी जेल में वर्षों की सज़ा का कारण बनता है, इसलिए निश्चित रूप से युवावस्था के मधुर उपहार को सही तरीके से और नेक आचरण की सीमाओं के भीतर बिताना उस उपहार के लिए धन्यवाद के रूप में महत्वपूर्ण है।

छठा मामला

निम्नलिखित ईश्वर में विश्वास के स्तम्भ के हजारों सार्वभौमिक प्रमाणों में से एक का संक्षिप्त संकेत है, जिनमें से कई, स्पष्टीकरण सहित, रिसाले-ए-नूर में पाए जा सकते हैं।

कस्तमोनू में कुछ हाईस्कूल के छात्रों ने मुझसे पूछा: "हमें हमारे बारे में बताइए
सृष्टिकर्ता, क्योंकि हमारे शिक्षक उसके बारे में बात नहीं करते हैं।" मैंने इस प्रकार उत्तर दिया:

आप जो भी विज्ञान पढ़ते हैं, वे सभी अपनी भाषा में ईश्वर, सृष्टिकर्ता के बारे में लगातार बोलते हैं और उसे बताते हैं। अपने शिक्षकों की बात मत सुनो; उनकी बात सुनो।

उदाहरण के लिए, एक अच्छी तरह से सुसज्जित, अच्छी तरह से डिजाइन की गई फार्मेसी में कई दवाएं और गोलियां होती हैं, जो अलग-अलग, सटीक रूप से मापे गए घटकों से बनी होती हैं।
यह निस्संदेह एक अत्यंत कुशल और विद्वान फार्मासिस्ट के अस्तित्व की ओर संकेत करता है। उसी तरह, पृथ्वी की फार्मेसी में अनगिनत जीवनदायी उपचार और दवाइयाँ भरी पड़ी हैं। चिकित्सा विज्ञान के माध्यम से, अंधे भी उस सर्वशक्तिमान को जान सकते हैं जो पृथ्वी की सबसे बड़ी फार्मेसी का फार्मासिस्ट है।

आइए एक और उदाहरण लें। एक अद्भुत कारखाना जो एक साधारण कपड़े से हजारों तरह के कपड़े बनाता है, बिना किसी संदेह के एक निर्माता और एक कुशल यांत्रिक इंजीनियर के अस्तित्व को इंगित करता है।

इसी तरह, भगवान की फैक्ट्री, जिसे हम धरती कहते हैं, में अनगिनत हिस्से हैं और हर हिस्से में लाखों मशीनें हैं। इसमें कोई शक नहीं कि धरती नामक फैक्ट्री इंजीनियरिंग के विज्ञान के ज़रिए अपने निर्माता और मालिक के अस्तित्व को बताती है।

एक और उदाहरण एक दुकान है जिसमें सैकड़ों अलग-अलग जगहों से लाए गए कई तरह के खाद्य पदार्थों के लिए एक सुव्यवस्थित भंडारण स्थान है। दुकान का अस्तित्व ही बदले में एक दुकान के मालिक के अस्तित्व को इंगित करता है जो उन खाद्य पदार्थों को तैयार करता है, संग्रहीत करता है और वितरित करता है। अब जिस धरती पर हम रहते हैं उसे दया के एक विशाल भंडार या एक दिव्य पोत के रूप में देखा जा सकता है जो हर साल एक विशाल परिक्रमा करता है, जिसमें असंख्य प्रजातियाँ रहती हैं जिन्हें अलग-अलग खाद्य पदार्थों की आवश्यकता होती है: जैसे-जैसे यह अपनी यात्रा पर ऋतुओं से गुज़रता है, यह वसंत ऋतु को, जो एक विशाल गाड़ी की तरह है, बहुत सारे खाद्य पदार्थों से भर देता है और उन्हें उन सभी जीवित प्राणियों तक पहुँचाता है जिनका भोजन सर्दियों के दौरान समाप्त हो गया था। यह भंडारण डिपो, जो पृथ्वी है, निश्चित रूप से अर्थशास्त्र के विज्ञान के माध्यम से, जिसका आप अध्ययन कर रहे हैं, इस डिपो के मालिक, प्रबंधक और आयोजक के अस्तित्व को इंगित करता है जो पृथ्वी है और उसे प्यार करता है।

या कल्पना करें, उदाहरण के लिए, एक सेना जिसमें कई जनजातियाँ और राष्ट्र शामिल हैं, जिनमें से प्रत्येक को अद्वितीय प्रावधान, हथियार, वर्दी, अभ्यास और सेना की आवश्यकता होती है। यदि इसका चमत्कार करने वाला कमांडर उनकी सभी ज़रूरतों को अपने आप पूरा करता है, बिना उनमें से किसी को भूले या भ्रमित किए, तो निश्चित रूप से सेना और उसका शिविर इस कमांडर के अस्तित्व का संकेत देगा और उसकी सराहना करेगा। इसी तरह, हर वसंत में एक कमांडर-इन-चीफ अनगिनत जानवरों और पौधों की प्रजातियों की एक नई भर्ती की गई सेना को वर्दी, राशन, हथियार, प्रशिक्षण और सेना की सेना की सेवा एकदम सही और नियमित तरीके से प्रदान करता है। वह कुछ भी नहीं भूलता और भ्रमित नहीं होता। वसंत की यह दिव्य सेना सैन्य विज्ञान के माध्यम से, अस्तित्व का संकेत देती है

पृथ्वी के सबसे अधिक चौकस और समझदार शासक, उसके प्रभु, प्रशासक और परम-पवित्र कमांडर, और उसे प्यार, प्रशंसा, महिमा और प्रशंसनीय बनाता है।

या फिर एक शानदार शहर की कल्पना करें जो लाखों मोबाइल इलेक्ट्रिक लैंप से जगमगाता हो और जिसमें अक्षय ईंधन और बिजली का स्रोत हो। ऐसा सेट-अप स्पष्ट रूप से एक अद्भुत कारीगर और असाधारण रूप से कुशल इलेक्ट्रीशियन की प्रतिभा को इंगित करेगा जो लैंप बनाता है, बिजली का स्रोत स्थापित करता है और ईंधन प्रदान करता है। और यह दूसरों को इस इलेक्ट्रीशियन की प्रशंसा करने और बधाई देने के लिए प्रेरित करेगा।

अब बहुत से दीपक - ग्रह और तारे - जो महल की छत को सजाते हैं, जो कि दुनिया है, शहर में जो कि ब्रह्मांड है, पृथ्वी से एक हजार गुना बड़े हैं और एक अद्भुत गति से चलते हैं। फिर भी अपनी तेज़ी के बावजूद, वे एक दूसरे से टकराए बिना बहुत ही सटीकता से चलते हैं; वे बुझते नहीं हैं, न ही उनका ईंधन समाप्त होता है। खगोल विज्ञान का विज्ञान, जिसका आप अध्ययन करते हैं, हमें बताता है कि हमारा सूर्य, जो कि दयालु के अतिथिगृह में एक दीपक या चूल्हे की तरह है, पृथ्वी से लाखों गुना बड़ा है और कई अरब वर्ष पुराना है। हर दिन जलते रहने के लिए, इसे उतना ही तेल चाहिए जितना कि पृथ्वी पर समुद्र हैं, उतना ही कोयला चाहिए जितना कि पहाड़ हैं, या उतने ही लट्ठे और लकड़ी के टुकड़े चाहिए जितने कि दस पृथ्वी पर मौजूद हैं।

तो यह स्पष्ट है कि ऐसे दीपक अपनी प्रकाश की उंगलियों से अनंत शक्ति और संप्रभुता के अस्तित्व का संकेत देते हैं, जो बदले में, तेल, लकड़ी या कोयले के बिना सूर्य और अन्य समान सितारों को रोशन करता है, जिससे वे एक दूसरे से टकराए बिना या बुझने के बिना बहुत तेज गति से यात्रा कर सकते हैं। इस प्रकार, बिजली का विज्ञान और उन चमकदार सितारों की गवाही निस्संदेह ब्रह्मांड के सबसे बड़े प्रकाश प्रदर्शन के संप्रभु, प्रकाशक, निर्देशक और निर्माता के अस्तित्व का संकेत देती है, और उसे प्यार, महिमा और पूजा करती है।

अब एक अद्भुत पुस्तक की कल्पना करें। उस पुस्तक की प्रत्येक पंक्ति के भीतर, एक और छोटी पुस्तक लिखी गई है, और प्रत्येक शब्द के भीतर, एक पूरा अध्याय - एक सूरा - एक बढ़िया कलम से अंकित किया गया है। यह पुस्तक सबसे सार्थक और अभिव्यंजक है, और इसके सभी विषय एक दूसरे की पुष्टि करते हैं। ऐसी पुस्तक दिन के उजाले की तरह स्पष्ट रूप से दिखाती है कि यह किसी विशेष कलाकार का उत्पाद होना चाहिए, जिसके पास असाधारण सिद्धियाँ, कलाएँ और कौशल हैं। यह हमें लेखक की सराहना करने और उस पर ईश्वर का आशीर्वाद माँगने के लिए प्रेरित करती है।

उदाहरण में पुस्तक के बारे में जो सत्य है, वही इस विशाल पुस्तक के बारे में भी सत्य है जो ब्रह्मांड है। उदाहरण के लिए, हम अपनी आँखों से एक कलम को ब्रह्मांड पर कुछ लिखते हुए देखते हैं।

पृथ्वी के पृष्ठ पर लाखों पौधे और पशु प्रजातियाँ हैं, जिनमें से प्रत्येक अपने आप में एक संपूर्ण पुस्तक की तरह है। और वे सभी एक साथ, एक दूसरे के भीतर, बिना किसी त्रुटि या भ्रम के अंकित हैं; वे इतनी पूर्णता और सटीकता के साथ अंकित हैं कि एक कविता एक पेड़ की तरह एक शब्द में संकुचित हो जाती है, और एक पूरी किताब एक बिंदु के भीतर पाई जाती है जो एक बीज है। हालाँकि ऊपर वर्णित उदाहरण में पुस्तक की तुलना में यह असीम रूप से सार्थक संग्रह है जो ब्रह्मांड है, यह मूर्त 'मैक्रो-कुरान', जिसके प्रत्येक शब्द में उस हद तक ज्ञान के असंख्य उदाहरण हैं - प्राकृतिक विज्ञानों के माध्यम से जिसका आप अध्ययन करते हैं, यह ब्रह्मांड की इस पुस्तक के लेखक और लेखक को उसकी अनंत पूर्णता के साथ ज्ञात कराता है। "ईश्वर सर्व-महान है" की घोषणा करते हुए, यह उसे ज्ञात कराता है; "सर्व-महिमावान ईश्वर है" के साथ उसकी पवित्रता की घोषणा करते हुए, यह उसका वर्णन करता है; और "सभी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए हैं" जैसे अभिव्यक्तियों के साथ उसकी प्रशंसा करते हुए, यह उसे प्रिय बनाता है।

वस्तुतः, अपने व्यापक माप, अपने विशिष्ट दर्पण, अपनी दूरगामी दृष्टि तथा अपने अन्वेषणात्मक एवं शिक्षाप्रद दृष्टिकोणों के माध्यम से, सैकड़ों विज्ञानों में से प्रत्येक विज्ञान ब्रह्माण्ड के सर्वशक्तिमान रचयिता को उसके नामों, गुणों और सिद्धियों के साथ परिचित कराता है।

ऊपर बताए गए प्रमाणों को स्पष्ट करने के लिए, जो ईश्वरीय एकता का सबसे अधिक विश्वसनीय और शानदार प्रमाण है, चमत्कारी कुरान अक्सर हमारे निर्माता को "आकाश और पृथ्वी का स्वामी" और "आकाश और पृथ्वी का निर्माता" जैसे शब्दों में वर्णित करता है।

मैंने विद्यार्थियों को यह सब बताया और उन्होंने इसे स्वीकार किया तथा इसकी पुष्टि करते हुए कहा: "ईश्वर का अनंत धन्यवाद, क्योंकि हमें एक सच्चा और पवित्र पाठ मिला है। ईश्वर आपसे प्रसन्न हो।"

मैंने निम्नलिखित बातें जोड़ीं:

> मनुष्य एक जीवित मशीन है जो अनेक दुखों से ग्रस्त है और अनेक सुखों को जानने में सक्षम है। यद्यपि हम पूरी तरह से शक्तिहीन हैं, फिर भी हमारे पास अनंत भौतिक और आध्यात्मिक शत्रु हैं। यद्यपि हम पूरी तरह से अभावग्रस्त हैं, फिर भी हमारी अनंत आंतरिक और बाह्य आवश्यकताएं हैं, और हम क्रमिक क्षय और अलगाव के प्रहारों से निरंतर पीड़ित हैं। लेकिन यदि हम विश्वास और पूजा के माध्यम से सर्व-महान प्रभु से संबंध स्थापित कर सकें, तो हमें अपने सभी शत्रुओं के विरुद्ध सहायता का स्रोत और अपनी सभी आवश्यकताओं के लिए सहायता का स्रोत मिल जाएगा। हर कोई उन उच्च पदों पर बैठे लोगों के सम्मान और पद पर गर्व करता है जिनके साथ उनका संबंध है। इस तथ्य को देखते हुए, यदि कोई व्यक्ति विश्वास के माध्यम से असीम शक्तिशाली और दयालु प्रभु से संबंध स्थापित करता है, तो वह अपने सभी शत्रुओं के विरुद्ध सहायता का स्रोत और अपनी सभी आवश्यकताओं के लिए सहायता का स्रोत पा सकता है।

यदि कोई व्यक्ति आराधना के माध्यम से उनकी सेवा में प्रवेश करता है और ऐसा करके, मृत्यु के नियत समय पर फांसी की सजा को एक स्वागत योग्य बरी और मुक्ति में बदल देता है, तो कल्पना कीजिए कि उन्हें कितना गर्व, खुशी और संतोष महसूस होगा।

विपत्तिग्रस्त कैदियों से मैं वही बात दोहराता हूँ जो मैंने स्कूली बच्चों से कही थी: जो लोग उसे पहचानते हैं और उसकी आज्ञा का पालन करते हैं, वे समृद्ध हैं, भले ही वे जेल में हों, जबकि जो लोग उसे भूल जाते हैं, वे अभागे कैदियों के समान हैं, भले ही वे महलों में रहते हों।

एक बार एक अन्यायी लेकिन भाग्यशाली व्यक्ति - अपने विश्वास और उसके बाद होने वाली शहादत के कारण भाग्यशाली - ने उन दुष्ट अपराधियों से कहा जो उसे मृत्युदंड दे रहे थे: "मुझे मृत्युदंड नहीं दिया जा रहा है; बल्कि, मुझे अपने कर्तव्यों से मुक्त कर दिया गया है और मैं अनंत सुख की ओर जा रहा हूँ। हालाँकि, अब मैं देख सकता हूँ कि तुम अनंत दंड के लिए अभिशप्त हो; यह तुम्हारे प्रति मेरे प्रतिशोध के लिए पर्याप्त है।" और यह कहते हुए कि "ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है," वह एक खुशहाल व्यक्ति के रूप में मर गया।

तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

सातवां मामला

यह डेनिज़ली जेल में एक शुक्रवार का फल है।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

क़ियामत की बात तो बस पलक झपकने के बराबर है, या उससे भी कम। निस्संदेह अल्लाह हर चीज़ पर पूरी सामर्थ्य रखता है (16:77)।

तुम्हारी रचना और तुम्हारा पुनरुत्थान एक ही आत्मा के समान है। (31:28)

अब देखो अल्लाह की दयालुता के निशान कि कैसे वह मुर्दा ज़मीन को उसके मरने के बाद जिलाता है। निश्चय ही वही है जो मुर्दों को जिलाएगा। वह हर चीज़ पर पूर्ण सामर्थ्य रखता है (30:50)।

डेनिज़ली जेल के वे कैदी भी मुझसे संपर्क करने में सक्षम थे

छठे मामले में वह पाठ पढ़ा जो मैंने कस्तमोनू के हाई स्कूल के विद्यार्थियों को दिया था—जिन्होंने मुझसे पूछा था: “हमें हमारे सृष्टिकर्ता के बारे में बताओ।”

दृढ़ विश्वास प्राप्त करने के बाद, उन्हें आख़िरत की लालसा महसूस हुई, और उन्होंने मुझसे कहा: "हमें आख़िरत के बारे में भी सिखाओ, ताकि हमारी बुरी आत्माएँ

और इस युग के शैतान हमें सीधे मार्ग से भटकाकर फिर से जेल में न डाल दें।" और इसलिए डेनिज़ली जेल में रिसाले-ए-नूर के छात्रों और छठे मामले के पाठकों के अनुरोध ने विश्वास के स्तंभ यानी आख़िरत के बारे में संक्षेप में बताना ज़रूरी बना दिया है। यहाँ मैं रिसाले-ए-नूर में आख़िरत पर प्रासंगिक चर्चाओं का संक्षिप्त सारांश प्रस्तुत करूँगा:

छठे मामले में हमने आकाश और पृथ्वी से हमारे बारे में पूछा

सृष्टिकर्ता, और उन्होंने उसे विज्ञान की भाषा के माध्यम से सूर्य की तरह स्पष्ट रूप से हमारे सामने प्रकट किया। अपने प्रभु को जानने के बाद, हम सबसे पहले उससे आख़िरत के बारे में पूछेंगे; फिर हम अपने पैग़म्बर से पूछेंगे, फिर कुरान से, फिर दूसरे पैग़म्बरों और शास्त्रों से, फिर फ़रिश्तों से और अंत में स्वयं ब्रह्मांड से।

हमारा पहला कदम है खुद ईश्वर से परलोक के बारे में पूछना। वह अपने भेजे हुए सभी पैगम्बरों के माध्यम से, पुस्तकों या धर्मग्रंथों के रूप में प्रकट किए गए आदेशों के माध्यम से, तथा अपने सभी नामों और गुणों के माध्यम से उत्तर देता है: "परलोक मौजूद है, और मैं तुम्हें वहाँ भेज रहा हूँ।" दसवें वचन ने कई दिव्य नामों पर आधारित बारह निर्णायक तर्कों के साथ परलोक की व्याख्या की है। इन व्याख्याओं से संतुष्ट होकर, हम यहाँ केवल उनके बारे में संक्षिप्त संकेत देंगे।

ऐसी कोई संप्रभुता नहीं है जो उसे मानने वालों को पुरस्कृत न करे और उसके विरुद्ध विद्रोह करने वालों को दंडित न करे। इसलिए एक शाश्वत संप्रभुता, जो पूर्ण प्रभुत्व की डिग्री पर है, निश्चित रूप से उन लोगों को पुरस्कृत करेगी जो विश्वास के माध्यम से उसका पालन करते हैं और उसके आदेशों का पालन करते हैं; इसी तरह यह उन लोगों को दंडित करेगी जो अविश्वास और विद्रोह के माध्यम से इसे अस्वीकार करते हैं। पुरस्कार और दंड क्रमशः ईश्वर की दया और कृपा, और उसकी गरिमा और महिमा के अनुरूप दिए जाएंगे। इस प्रकार सभी संसारों के स्वामी, संप्रभु, सर्वोच्च शासक और सर्व-प्रतिदान करने वाले नाम हमारे प्रश्न का उत्तर देते हैं।

इसके अलावा, हम पृथ्वी पर सार्वभौमिक दया और सर्वव्यापी करुणा और उदारता को उतनी ही स्पष्टता से देखते हैं, जितनी स्पष्टता से हम दिन के उजाले को देखते हैं। उदाहरण के लिए, हर वसंत में, दया सभी फल देने वाले पेड़ों और पौधों को स्वर्ग की हूरियों की तरह सजाती है और उनके हाथों को हर तरह के फलों से भर देती है। और ऐसा लगता है जैसे ये पेड़ अपने फल हमारी ओर बढ़ाते हुए कह रहे हैं: “कृपया अपनी मदद करें और खाएँ!” दया, करुणा और उदारता हमें ज़हरीली मधुमक्खी से खाने के लिए मीठा शहद भी देती है और बिना हाथों वाले एक छोटे से कीड़े के ज़रिए हमें सबसे मुलायम रेशम पहनाती है। वे हमारे लिए मुट्ठी भर में जमा भी करते हैं

छोटे-छोटे बीजों से कई किलो भोजन बनता है, जिससे ये छोटे-छोटे भंडार रिजर्व सप्लाई में बदल जाते हैं। क्या ऐसी दया और करुणा उन प्यारे, आभारी, पूजा करने वाले विश्वासियों को हमेशा के लिए नष्ट नहीं कर देगी, जिनका वे इतनी कोमलता से पालन-पोषण करते हैं? बल्कि, वे उन्हें उनके सांसारिक कर्तव्यों से मुक्त कर देते हैं ताकि उन्हें दया और करुणा के और भी अधिक उज्ज्वल उपहार प्रदान कर सकें। इस प्रकार सर्व-दयालु और सर्व-उदार नाम हमारे प्रश्न का उत्तर देते हैं, यह पुष्टि करते हुए कि स्वर्ग वास्तव में आएगा।

साथ ही, हम स्पष्ट रूप से देखते हैं कि पृथ्वी पर सभी प्राणियों में बुद्धि का हाथ इतनी कुशलता से काम कर रहा है और घटनाएँ न्याय के मानकों के अनुसार इतनी सटीकता से घटित होती हैं कि मानव मन उनसे बेहतर किसी बुद्धि या न्याय की कल्पना ही नहीं कर सकता। उदाहरण के लिए, वह शाश्वत बुद्धि मानव स्मृति में, सैकड़ों शक्तियों में से एक मानवीय क्षमता जो सबसे छोटे बीज से भी बड़ी नहीं है, मनुष्य की संपूर्ण जीवन-कथा, साथ ही उसमें भरी हुई असंख्य घटनाओं को अंकित करती है, जिससे वह वास्तव में एक छोटी सी लाइब्रेरी बन जाती है। मनुष्यों को उनके कर्मों की निरंतर याद दिलाने के लिए—कर्म जो दर्ज हैं और खुले तौर पर प्रकाशित किए जाएँगे ताकि उनका पुनरुत्थान के स्थान पर न्याय किया जा सके—वह बुद्धि हमारे कर्मों के रिकॉर्ड के एक नोट के रूप में, इस छोटी सी लाइब्रेरी को मन में डालती है। जहाँ तक शाश्वत न्याय की बात है, यह सूक्ष्म जीव से लेकर गैंडे तक, मक्खी से लेकर चील तक, सबसे छोटे फूल वाले पौधे से लेकर वसंत ऋतु को बनाने वाले अनगिनत लाखों पौधों और फूलों तक, सभी प्राणियों को बहुत संतुलित और सामंजस्यपूर्ण तरीके से अंग और अंग प्रदान करता है और प्रत्येक को कला का एक अद्भुत काम बनाता है। यह एक सटीक संतुलन और व्यवस्था के अनुसार, उचित अनुपात और उत्तम सुंदरता के साथ और बिल्कुल भी बर्बादी के बिना करता है। यह सभी जीवित प्राणियों को उनके जीवन के अधिकार भी सही मात्रा में देता है और अच्छी चीजों को अच्छे परिणाम और बुरी चीजों को बुरे परिणाम देता है। और आदम के समय से, उस पर शांति हो, इस न्याय ने विद्रोही और अत्याचारी लोगों को दिए गए प्रहारों के माध्यम से खुद को जोरदार तरीके से महसूस किया है। निश्चित रूप से, जिस तरह से सूर्य दिन के उजाले से अटूट रूप से जुड़ा हुआ है, उसी तरह शाश्वत ज्ञान और शाश्वत न्याय परलोक से अटूट रूप से जुड़े हुए हैं और इसके अस्तित्व को आवश्यक बनाते हैं। यह अकल्पनीय है कि वे सबसे अधिक अत्याचारी और सबसे अधिक उत्पीड़ित व्यक्ति को, बिना सच्चा न्याय दिए, समान रूप से मृत्युदंड देने की अनुमति देंगे; वे इस तरह के अन्याय, अन्याय या बुद्धि की कमी को कभी बर्दाश्त नहीं करेंगे।

इस प्रकार, वे नाम जो अत्यन्त बुद्धिमान, न्याय करने वाले, न्याय करने वाले और न्याय करने वाले हैं, हमारे प्रश्न का निर्णायक उत्तर देते हैं।

इसके अलावा, जब भी जीव अपनी स्वाभाविक ज़रूरतों को, जो उनकी शक्ति से परे हैं, अपनी जन्मजात क्षमताओं और अनिवार्य ज़रूरतों की भाषा के ज़रिए, जो अपने आप में एक तरह की प्रार्थना है, तलाशते हैं, तो ये ज़रूरतें अदृश्य से एक अत्यंत दयालु हाथ द्वारा पूरी की जाती हैं। इसके अलावा, मनुष्यों द्वारा की गई स्वैच्छिक मौखिक प्रार्थनाओं में से लगभग सत्तर प्रतिशत, और विशेष रूप से पैगंबरों और अन्य सबसे प्रतिष्ठित विश्वासियों द्वारा, एक ऐसे तरीके से स्वीकार की जाती हैं जो घटनाओं के सामान्य क्रम से बाहर होती हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है कि अदृश्य के पर्दे के पीछे एक ऐसा ईश्वर है जो सब कुछ सुनता है और सब कुछ उत्तर देता है, जो हर पीड़ित प्राणी की आहें और हर ज़रूरतमंद आत्मा की प्रार्थनाएँ सुनता है। वह सबसे छोटे जीव की सबसे तुच्छ ज़रूरत को देखता है और उसकी सबसे गुप्त आह सुनता है। उन पर दया करके, वह उनका उचित उत्तर देता है और उन्हें संतुष्ट करता है।

मानवजाति में से एक, ईश्वर की सबसे महत्वपूर्ण रचना है, जो अपनी प्रार्थनाओं में अनंत जीवन के बारे में सभी मानवता की सार्वभौमिक प्रार्थना को शामिल करता है, जो सभी दिव्य नामों और गुणों और वास्तव में, पूरे ब्रह्मांड से जुड़ा हुआ है। इस प्राणी को अन्य सभी पैगंबरों और सूर्य, सितारों और मानव जाति के नेताओं का समर्थन प्राप्त है, जो कहते हैं, "आमीन! आमीन!" ताकि उसकी प्रार्थना स्वीकार हो सके। इसके अलावा, उसके विश्वासियों के समुदाय में हर धर्मनिष्ठ व्यक्ति दिन में कई बार ईश्वर की शांति और आशीर्वाद की प्रार्थना करता है, और अपनी प्रार्थना में "आमीन!" जोड़ता है। और अन्य सभी प्राणी भी उसकी प्रार्थना में भाग लेते हैं, और कहते हैं, "हे प्रभु, उसे वह दे जो वह माँगता है; हम भी वही माँगते हैं जो वह माँगता है!" जबकि ऐसे अनगिनत कारण हैं कि पुनरुत्थान क्यों होना चाहिए, यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि पैगंबर मुहम्मद की एक ही प्रार्थना, उन पर शांति और आशीर्वाद, अनन्त जीवन और परलोक में खुशी हो, स्वर्ग के अस्तित्व और निर्माण के लिए पर्याप्त है

आने वाले संसार की रचना करना ईश्वरीय शक्ति के लिए उतना ही आसान है जितना कि वसंत का निर्माण करना।

इस प्रकार, क्या उत्तर देने वाले, सुनने वाले और दयावान नाम हमारे प्रश्न का उत्तर देते हैं?

यह भी दिन के उजाले की तरह स्पष्ट है जो सूर्य के अस्तित्व को इंगित करता है कि दृश्यमान दुनिया के पर्दे के पीछे एक अदृश्य परमेश्वर है जो दिखाता है

पृथ्वी के नियंत्रण और प्रबंधन में, ऋतुओं के आने और जाने के साथ होने वाली मृत्यु और पुनर्जीवन में वह स्वयं ही शामिल है। वह एक बगीचे या एक पेड़ की तरह ही सहजता और व्यवस्थित तरीके से शक्तिशाली पृथ्वी का प्रशासन करता है; वह शानदार वसंत की देखभाल ऐसे करता है जैसे कि वह एक फूल हो, और उसी सुविधा, सजावट और अनुपात की समझ के साथ; वह गिनती प्रदर्शित करता है-

पौधों और जानवरों की कम प्रजातियाँ मानो वे सैकड़ों-हज़ारों किताबें हों जो पुनरुत्थान के लाखों उदाहरणों को प्रदर्शित करती हैं। शक्ति की कलम जो इन चीजों को एक दूसरे के भीतर लिखती है, सभी आपस में मिले हुए हैं फिर भी थोड़ी सी भी अव्यवस्था, भ्रम, दोष, दोष या त्रुटि के बिना, और पूर्ण क्रम और उद्देश्यपूर्णता के साथ - यह विशाल, व्यापक शक्ति असीम दया और अनंत ज्ञान के साथ काम करती है। जिसके पास वह शक्ति है, उसने मनुष्यों के लिए विशाल ब्रह्मांड को वश में किया है, सजाया है और सुसज्जित किया है जैसे कि यह एक घर हो, और मनुष्यों को पृथ्वी का शासक नियुक्त किया है, उन्हें "सर्वोच्च विश्वास"[1] प्रदान किया है - एक ऐसा विश्वास जिसे पहाड़, आकाश और पृथ्वी नहीं लेंगे, और जिससे वे डर के मारे सिकुड़ गए। उसने मनुष्यों को एक निश्चित सीमा तक अन्य जीवित प्राणियों पर सेनापति का पद दिया है, और उन्हें दिव्य संबोधन और वार्तालाप का प्राप्तकर्ता बनाकर सम्मानित किया है, इस प्रकार उन्हें सर्वोच्च स्थान प्रदान किया है।

इसके अलावा, सभी प्रकट किए गए आदेशों में उसने मानवता को परलोक में अनंत सुख और स्थायित्व का वादा किया है। इन सब से यह निष्कर्ष निकलता है कि मानवजाति के लिए, जिसे उसने इतना श्रेष्ठ और सम्मानित किया है, वह निश्चित रूप से सुख के उस क्षेत्र को खोल देगा, जो उसकी शक्ति के लिए वसंत के निर्माण जितना ही आसान है, इस प्रकार पुनरुत्थान और अंतिम न्याय को लाएगा। इसलिए, सभी को पुनर्जीवित करने वाले, मृत्यु को दूर करने वाले, सभी को जीवित रखने वाले, स्वयं-निर्भर, सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ नाम हमारे प्रश्न का उत्तर देते हैं।

अगर कोई उस शक्ति पर विचार करे जो हर वसंत में सर्दियों में मर चुके सभी पेड़ों और पौधों की जड़ों को फिर से जीवित कर देती है और पुनरुत्थान के उदाहरण के रूप में लाखों पौधों और जानवरों को पैदा करती है, और अगर कोई पैगंबर मूसा (उन पर शांति हो) और मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के प्रत्येक समुदाय की हजार साल की अवधि की कल्पना करता है, तो यह देखा जा सकता है कि दो हजार वसंत आने वाले पुनरुत्थान के असंख्य उदाहरण और सबूत पेश करते हैं। कोई पूरी तरह से अंधा और मूर्ख होगा जो यह कल्पना करे कि ऐसी शक्ति के लिए शारीरिक पुनरुत्थान कठिन है।

इसके अलावा, एक लाख चौबीस हज़ार पैगम्बरों ने, जो सभी मानव जाति में सबसे प्रसिद्ध हैं, सर्वसम्मति से परलोक में शाश्वत सुख और स्थायित्व की सच्चाई को प्रमाणित किया; न केवल उन्होंने इस बात पर भरोसा किया

---

1 सर्वोच्च विश्वास मानव आत्मत्व या मानव होना या मानव प्रकृति है जो ईश्वर के नामों की अभिव्यक्तियों का केंद्र है जो पूरे ब्रह्मांड में प्रकट होते हैं। (ट्र.)

इस संबंध में सर्वशक्तिमान ईश्वर के अनगिनत वादों पर भरोसा नहीं किया जा सकता, लेकिन उन्होंने इसे स्वयं अपने चमत्कारों के माध्यम से साबित किया है। साथ ही, असंख्य संतों ने अपने प्रकाश और आध्यात्मिक अनावरण के माध्यम से उसी सत्य की गवाही दी है। चूँकि ऐसा है, तो निश्चित रूप से यह सत्य सूर्य की तरह स्पष्ट है, और जो लोग इस पर संदेह करते हैं, वे पागल होंगे।

एक या दो विद्वानों या वैज्ञानिकों की अपनी विशेषज्ञता के क्षेत्र के बारे में राय और निर्णय, हज़ारों लोगों के विरोधी विचारों का खंडन करने के लिए पर्याप्त हैं, जिनके पास ऐसी विशेषज्ञता नहीं है, भले ही वे अपने-अपने क्षेत्र में माहिर हों। इसी तरह, दो लोग जो किसी चीज़ के अस्तित्व की गवाही देते हैं, वे उस चीज़ का उदाहरण देकर हज़ारों लोगों को परास्त कर सकते हैं जो उसके अस्तित्व को नकारते हैं। उदाहरण के लिए, अगर दो भरोसेमंद लोग दावा करते हैं कि उन्होंने अर्धचंद्र देखा है, जो कि, मान लीजिए, रमज़ान के महीने का संकेत देता है, उस दिन जब नए चाँद का दिखना असंभव नहीं है, हालाँकि असंभव नहीं है, तो उनका दावा सत्य के रूप में स्वीकार किया जाता है, भले ही बाकी सभी लोग इससे इनकार करें। इसके अलावा, अगर दो लोग दावा करते हैं कि धरती पर एक बगीचा है जहाँ दूध के डिब्बे जैसे नारियल उगाए जाते हैं, तो उनका दावा सत्यापित हो जाएगा यदि वे एक नारियल लाते हैं या वैकल्पिक रूप से, उस स्थान को इंगित करते हैं जहाँ वे पाए जा सकते हैं। हालाँकि, जो लोग इस दावे को नकारते हैं, वे अपनी बात को केवल पृथ्वी के चारों कोनों की खोज करके ही साबित कर सकते हैं ताकि यह साबित हो सके कि ऐसा कोई नारियल कहीं भी मौजूद नहीं है। इस प्रकार जो व्यक्ति यह दावा करता है कि स्वर्ग मौजूद है, वह केवल उसका एक निशान, एक छाया या एक अभिव्यक्ति प्रदर्शित करके अपने दावे को साबित कर सकता है। हालाँकि, जो लोग इसे नकारते हैं, वे केवल पूरे ब्रह्मांड की छानबीन करके और अनंत काल से लेकर अनंत काल तक, सभी समय में यात्रा करके ही अपनी बात को साबित कर सकते हैं, ताकि इसके अस्तित्व को साबित किया जा सके। यही कारण है कि विद्वानों ने इस नियम पर सहमति व्यक्त की है कि “बशर्ते कि वे स्वाभाविक रूप से अकल्पनीय न हों, इनकार या निषेध जो किसी विशिष्ट मामले से संबंधित नहीं हैं, लेकिन जो पूरे ब्रह्मांड से संबंधित हैं, जैसे कि विश्वास के सत्य, साबित नहीं किए जा सकते हैं,” और इसे एक मौलिक सिद्धांत के रूप में स्वीकार किया।

इस निर्विवाद सत्य के कारण, हजारों दार्शनिकों की विरोधी राय को विश्वास के मामलों से संबंधित रिपोर्ट लाने वाले एक भी सत्यनिष्ठ और भरोसेमंद व्यक्ति पर ज़रा भी संदेह या संदेह नहीं करना चाहिए। तब आप समझ सकते हैं कि विश्वास या आस्था के स्तंभों के बारे में संदेह में पड़ना कितना पागलपन है - जिन स्तंभों पर अनगिनत हज़ारों पैगंबर, संत और विद्वान सहमत हैं - मुट्ठी भर दार्शनिकों के इनकार के कारण जो केवल अपनी भौतिक इंद्रियों पर भरोसा करते हैं और जो सभी आध्यात्मिक मामलों से दूर हो गए हैं।

साथ ही, यह दिन के उजाले की तरह स्पष्ट है कि हमारे अंदर और हमारे चारों ओर एक व्यापक दया, एक व्यापक बुद्धि और निरंतर अनुग्रह और कृपालुता काम कर रही है। हम प्रभुता की एक भयानक संप्रभुता, एक सटीक और उन्नत न्याय और महिमा की गरिमापूर्ण गतिविधि के निशान और अभिव्यक्तियाँ भी देखते हैं। वास्तव में, बुद्धि, जो एक पेड़ पर उतने ही ज्ञान के उदाहरण लगाती है जितने उस पेड़ पर फल और फूल होते हैं; दया, जो प्रत्येक मनुष्य को उसके अंगों, इंद्रियों और क्षमताओं की संख्या के अनुसार अनुग्रह और वरदान प्रदान करती है; और गरिमापूर्ण, दयालु न्याय, जो दलितों के अधिकारों की रक्षा करता है और नूह, हूद, सालेह और फा-राओन के विद्रोही लोगों जैसे गलत काम करने वालों को दंडित करता है, और आयत:

> और उसकी निशानियों में से यह भी है कि आकाश और धरती उसके आदेश से स्थिर हैं। अन्ततः जब वह तुम्हें धरती से बुलाएगा तो तुम तुरन्त निकल आओगे। (30:25)

सभी ने अत्यंत संक्षिप्तता के साथ निम्नलिखित बातें कही हैं:

अपने बैरकों में आज्ञाकारी और अनुशासित सैनिक अपने कमांडर के बुलाते ही तुरंत उठ खड़े होते हैं और अपने कर्तव्यों का पालन करने के लिए दौड़ पड़ते हैं

और बिगुल बज चुका है। इसी तरह, जब स्वर्ग और पृथ्वी के मृतक, जो शाश्वत प्रभु के आज्ञाकारी सैनिकों के लिए दो सुव्यवस्थित बैरकों की तरह हैं, महादूत इसराफिल की तुरही द्वारा बुलाए जाते हैं, तो वे तुरंत अपने शरीर की "वर्दी" पहन लेंगे और उठ खड़े होंगे। यह इसी तरह है और इस तथ्य से प्रमाणित होता है कि सर्दियों में पृथ्वी की बैरकों में मृत पड़े लोग हर वसंत में थंडर के दूत की तुरही-धमाके के साथ इसी तरह से कार्य करते हैं। इसलिए यह असंभव है कि प्रभुता की संप्रभुता, जिसे इस शक्तिशाली घटना से समझा जा सकता है और जिसे दसवें वचन में दृढ़तापूर्वक समझाया गया है, दया की असीम कृपा और सुंदरता को अनंत रूप से बदसूरत क्रूरता में बदलने की अनुमति देगी, क्योंकि वह परलोक के निवास, पुनरुत्थान के क्षेत्र या सर्वोच्च समागम को अस्तित्व में नहीं लाएगी, जिनमें से सभी निश्चित रूप से उस दया, बुद्धि, अनुग्रह और न्याय के लिए आवश्यक और अनिवार्य हैं। बुद्धि की उस असीम पूर्णता को असीम रूप से बेकार व्यर्थता और अपव्यय में बदलना, उस मधुर अनुग्रह को अत्यंत कड़वे विश्वासघात में बदलना, उस सटीक रूप से संतुलित और न्यायसंगत न्याय को सबसे गंभीर अत्याचार में बदलना, उस असीम रूप से राजसी और शक्तिशाली शाश्वत संप्रभुता को नष्ट करना पूरी तरह से असंभव है।

इसकी सारी भव्यता नष्ट हो जाएगी और प्रभुता की पूर्णताएं नपुंसकता या दोष से कलंकित हो जाएंगी। ऐसी बात पूरी तरह से अनुचित और अकल्पनीय होगी; यह मिथ्या है, निषिद्ध है, और पूरी तरह से संभावना की सीमाओं से परे है।

चेतना वाला कोई भी व्यक्ति निश्चित रूप से समझ सकता है कि यह कितना क्रूर होगा यदि इतनी कोमलता से पोषित और बुद्धि तथा हृदय जैसी क्षमताओं से संपन्न मानवता, जो शाश्वत सुख तथा अनंत जीवन की लालसा रखती है, पूरी तरह से नष्ट हो जाए तथा शून्य में चली जाए। यह कितना विवेकपूर्ण होगा यदि मानव मस्तिष्क की असंख्य उद्देश्यपूर्ण क्षमताओं तथा अनंत क्षमताओं को शाश्वत विनाश के माध्यम से पूरी तरह से बर्बाद कर दिया जाए; यह ईश्वरीय संप्रभुता तथा प्रभुत्व की भव्यता तथा पूर्णता के कितने विपरीत होगा यदि ईश्वर को - ईश्वर न करे! - अपने असंख्य वादों को पूरा करने में विफल होने के कारण नपुंसक तथा अज्ञानी के रूप में प्रकट किया जाए। इस प्रकार दयालु, सर्वज्ञ, न्यायी, सर्वदानी तथा सर्व-संप्रभु नाम उपरोक्त सत्यों के साथ उस प्रश्न का उत्तर देते हैं जो हमने अपने सृष्टिकर्ता से परलोक के संबंध में पूछा था, तथा इसे बिना किसी संदेह के प्रमाणित करते हैं।

हम यह भी स्पष्ट रूप से देखते हैं कि संरक्षण का एक विशाल, सर्वव्यापी कार्य सृष्टि पर हावी है। यह सभी चीजों, प्राणियों और घटनाओं के असंख्य रूपों, उनके द्वारा अपने जीवन भर किए जाने वाले कर्तव्यों और उनके कर्मों को दर्ज करता है, जो उनमें प्रकट दिव्य नामों के जवाब में ईश्वर की महिमा के समान हैं, उन पट्टियों पर जो प्रतिनिधित्वों या “आदर्श” रूपों की दुनिया से संबंधित हैं, उनके बीजों में और उनकी यादों में, जो सर्वोच्च संरक्षित पट्टिका के छोटे नमूने हैं, साथ ही उन विशाल पुस्तकालयों में जिन्हें मन में रखा गया है, और अन्य भौतिक और अलौकिक दर्पणों में, जहां वे प्रतिबिंबित होते हैं। यह उन्हें अंकित करता है, रिकॉर्ड करता है और संरक्षित करता है, और फिर, जब समय आता है यह हमारे सामने इन सभी अमूर्त शिलालेखों को भौतिक रूप में प्रदर्शित करता है: प्रत्येक वसंत, दिव्य शक्ति का एक शक्तिशाली फूल, ब्रह्मांड को पुनरुत्थान के एक अद्भुत सत्य की घोषणा करता है जो कविता में व्यक्त किया गया है: और जब स्क्रॉल (प्रत्येक व्यक्ति के कर्मों की) खोली जाती हैं (81:10), अरबों भाषाओं में और लाखों उदाहरणों, प्रमाणों और नमूनों की शक्ति के साथ। इस तरह यह सबसे शक्तिशाली सबूत प्रदान करता है कि निर्मित प्राणी, विशेष रूप से मनुष्य, शाश्वत विनाश और गैर-अस्तित्व के लिए नियत नहीं हैं। इसके बजाय, उन्हें निरंतर अनंत काल की ओर बढ़ने, निरंतर शुद्धिकरण और शोधन के माध्यम से स्थायित्व प्राप्त करने और अपनी अंतहीन जन्मजात क्षमताओं द्वारा आवश्यक चिरस्थायी कर्तव्यों को अपनाने के लिए बनाया गया है।

हर साल हम देखते हैं कि असंख्य पौधे जो पतझड़ के प्रलय के दिन मर जाते हैं, और सभी पेड़, जड़ें, बीज और अनाज जो वसंत में पुनर्जीवित होते हैं, वे आयत का पाठ करते हैं: और जब (प्रत्येक व्यक्ति के कर्मों की) पुस्तकें खोली जाती हैं। पिछले वर्षों की तरह ही समान कर्तव्यों का पालन करते हुए, प्रत्येक व्यक्ति इस आयत के एक अर्थ या पहलू की अपनी भाषा में व्याख्या करता है। इस तरह, वे सभी संरक्षण के उस विशाल कार्य की गवाही देते हैं। हर चीज में आयत के चार जबरदस्त सत्यों को प्रदर्शित करके, वह प्रथम है, अंतिम है, सर्व-बाह्य है और सर्व-आंतरिक है (57:3), वे हमें वसंत की सहजता और निश्चितता के साथ इस संरक्षण और पुनरुत्थान की सूचना देते हैं।

ये चार नाम स्वयं को प्रकट करते हैं और सभी चीज़ों पर कार्य करते हैं, चाहे वे विशेष हों या सार्वभौमिक। उदाहरण के लिए, प्रथम नाम के प्रकटीकरण को प्राप्त करना या उसका अनुग्रह प्राप्त करना, एक बीज, जो एक छोटा सा मामला है जिसमें वृक्ष का सटीक कार्यक्रम और उसके निर्माण और विकास की दोषरहित प्रणालियाँ समाहित हैं, निस्संदेह ईश्वरीय संरक्षण की विशालता को साबित करता है।

इसी प्रकार, प्रत्येक फल, जो अंतिम नाम को प्रकट करता है, एक खजाना है जिसके बीजों में वृक्ष के सभी कर्तव्यों की सूची होती है।

इसके समान ही एक अन्य वृक्ष के जीवन के सिद्धांतों के साथ-साथ इसने भी कार्य किया है। इसलिए यह भी ईश्वरीय संरक्षण के कार्य की पूरी तरह से गवाही देता है।

वृक्ष का भौतिक रूप, जिस पर सर्वव्यापी नाम स्वयं प्रकट होता है, एक सुडौल, कुशलता से सजा हुआ वस्त्र है, जो स्वर्ग की हूरियों के बहुरंगी, सोने की कढ़ाई वाले वस्त्रों जैसा दिखता है। इस तरह यह स्पष्ट रूप से उस प्रचंड शक्ति, पूर्ण बुद्धि और दया की अद्भुत कृपा और सुंदरता को प्रदर्शित करता है जो दिव्य संरक्षण के कार्य में प्रकट होती है।

वृक्ष की आंतरिक संरचना, जो कि परम आन्तरिक नाम के प्रकटीकरण से सुशोभित है, एक व्यवस्थित, चमत्कारी कारखाने की तरह है, एक कार्यशाला जहाँ असंख्य रासायनिक प्रक्रियाएँ होती हैं और जिसमें भोजन का एक सटीक रूप से मापा हुआ बर्तन होता है, जो इसकी किसी भी शाखा, फल या पत्ते को पोषण के बिना नहीं छोड़ता है। यह प्रणाली इतनी दोषरहित है कि यह शक्ति और न्याय की पूर्णता और दया और बुद्धि की कृपा और सुंदरता को सभी संदेहों से परे साबित करती है जो दिव्य संरक्षण के कार्य में प्रकट होती हैं।

इसी तरह, वार्षिक ऋतुओं के संबंध में, पृथ्वी एक वृक्ष के समान है। प्रथम नाम के प्रकटीकरण के माध्यम से, पतझड़ के मौसम में दिव्य संरक्षण को सौंपे गए सभी बीज और अनाज दिव्य आज्ञाओं और सिद्धांतों की सूचियों के छोटे संग्रह की तरह हैं जो वृक्ष के निर्माण के संबंध में दिव्य निर्धारण या नियति से निकलते हैं।

धरती जो अंततः वसंत के वस्त्र पहनने पर अरबों शाखाएँ और टहनियाँ, फूल और फल देगी। ये बीज और अनाज पिछली गर्मियों में पेड़ द्वारा किए गए कार्यों और कर्मों की सूचियाँ और छोटे-छोटे रिकॉर्ड भी हैं। यह बिल्कुल स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि वे महिमा और उदारता के सर्व-संरक्षक की असीम शक्ति, न्याय, बुद्धि और दया के माध्यम से काम करते हैं।

फिर पतझड़ के मौसम में, पृथ्वी का वृक्ष अपने द्वारा निभाए गए सभी कर्तव्यों को, दिव्य नामों के प्रकटीकरण के प्रत्युत्तर में किए गए सभी महिमा-गानों को, तथा अपने कर्मों के सभी अभिलेखों को, जो वसंत के आगामी पुनरुत्थान में प्रकाशित किए जाएंगे, छोटे-छोटे बक्सों में जमा कर देता है; इन्हें वह उस सर्वरक्षक महामहिम की बुद्धि के हाथों में सौंप देता है, तथा समस्त ब्रह्माण्ड के समक्ष असंख्य भाषाओं में यह कहता है कि वह अंतिम है ।

लाखों तरह के फूल खिलकर, जो पुनरुत्थान के लाखों उदाहरण और संकेत दर्शाते हैं, और जीवों के लिए दया, कृपा, करुणा और उदारता की असंख्य मेज़ें सजाकर, वृक्ष का बाहरी रूप प्रशंसा और प्रशंसा करता है, अपने फलों, फूलों और खाद्य पदार्थों की संख्या के अनुसार भाषाओं में कहता है कि वह सर्वव्यापक है । और ऐसा करके वह बिना किसी संदेह के इस सत्य को प्रदर्शित करता है: जब (प्रत्येक व्यक्ति के कर्मों की) पुस्तकें खोली जाएँगी (81:10)।

जहाँ तक इस शानदार पेड़ के अंदरूनी भाग की बात है, जैसा कि पहले बताया गया है, यह एक तरह का रसोईघर या कार्यशाला है, जिसमें कई सुव्यवस्थित मशीनें और बारीक संतुलित कारखाने पूर्ण क्रम और नियमित तरीके से चलते हैं; ये इसे एक औंस से हज़ारों किलो भोजन बनाने में सक्षम बनाते हैं जिसे भूखे लोगों को दिया जा सकता है। यह इतनी सटीकता और संतुलन के साथ काम करता है कि इसमें संयोग की कोई गुंजाइश नहीं रहती। कुछ स्वर्गदूतों की तरह जो हज़ारों भाषाओं से ईश्वर की महिमा करते हैं, इस धरती रूपी पेड़ का अंदरूनी भाग लाखों तरीकों से घोषणा करता है कि वह सर्वव्यापी है ।

अपने वार्षिक चक्र के संबंध में एक वृक्ष के समान होने के अलावा, जो उन चार नामों के माध्यम से प्रकट होने वाले दिव्य संरक्षण को पुनरुत्थान के द्वार की कुंजी बनाता है, पृथ्वी अपने संपूर्ण सांसारिक जीवन के संबंध में भी एक सुव्यवस्थित वृक्ष है; इस वृक्ष के फल परलोक के बाजार में भेजे जाते हैं। यह इन चार नामों के प्रकटीकरण का एक स्थान है जो इतना विशाल है; यह परलोक की ओर ले जाने वाला एक मार्ग है जो इतना चौड़ा है कि हमारा मन उन्हें समझने में असमर्थ है। हम केवल इतना ही कह सकते हैं:

साप्ताहिक घड़ी की सुइयां जो सेकंड, मिनट, घंटे और दिन गिनती हैं, एक दूसरे से मिलती-जुलती हैं और एक दूसरे की प्रकृति और कार्य को इंगित करती हैं। इसलिए, जो व्यक्ति सेकंड की सुई की गति को देखता है, वह अन्य सुइयों और घड़ी के तंत्र के अन्य भागों की गति को स्वीकार करने से नहीं बच सकता। इसी तरह, दिन जो इस दुनिया के सेकंड गिनते हैं, जो आकाश और पृथ्वी के सर्व-महान निर्माता की एक विशाल घड़ी है, वर्ष जो इसके मिनट गिनते हैं, शताब्दियां जो इसके घंटे दिखाती हैं, और युग जो इसके दिनों को बताते हैं - ये सभी एक दूसरे से मिलते-जुलते हैं और एक दूसरे की प्रकृति और कार्य को इंगित करते हैं। अंत में, पृथ्वी की यह घड़ी, जो दुनिया के दिन, वर्ष, शताब्दियां और युग गिनती है, हमें रात के बाद भोर और सर्दी के बाद वसंत की निश्चितता के साथ सूचित करती है कि इस क्षणभंगुर दुनिया की अंधेरी सर्दी के बाद शाश्वत क्षेत्र का शानदार वसंत आएगा। और इस तरह, सर्वरक्षक, प्रथम, अंतिम, सर्वबाह्य और सर्वआंतरिक नाम उस प्रश्न का सच्चा उत्तर देते हैं जो हम अपने सृष्टिकर्ता से पुनरुत्थान के विषय में पूछते हैं।

इसके अलावा, हम देखते और समझते हैं कि मानवता:

- ब्रह्मांड के वृक्ष का अंतिम और सबसे व्यापक फल और मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की सच्चाई के संबंध में, इसका मूल बीज; • ब्रह्मांडीय कुरान और इसकी दिव्य आयत का सर्वोच्च संकेत

  सर्वोच्च आसन २, जो महानतम की अभिव्यक्ति को धारण करता है
  ईश्वर का नाम;
- ब्रह्मांड के महल में सबसे सम्मानित अतिथि और महल के अन्य निवासियों पर प्रबंधन का अधिकार रखने वाला सबसे सक्रिय अधिकारी;

---

2 कुरान की ईश्वरीय सर्वोच्च सीट की आयत, जिसके संबंध में सईद नूरसी ने ब्रह्मांड में मानवता के स्थान के संबंध में मानवता की तुलना की है, इसकी तुलना ब्रह्मांड में इस आयत के स्थान से की गई है।
कुरान में कहा गया है:

> अल्लाह, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वह सब कुछ है, ...
>
> और वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है और वे उसके ज्ञान में से कुछ नहीं समझते, परन्तु जो कुछ वह चाहता है। उसका सिंहासन आकाशों और धरती को घेरे हुए है और वह उनकी रक्षा करने में थकता नहीं। वह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, अत्यन्त प्रभावशाली है। (2:255)

- ब्रह्मांड के शहर में आय और व्यय की निगरानी और पृथ्वी के एक चौथाई हिस्से में बाग लगाने और खेती करने के लिए जिम्मेदार अधिकारी;
- इसका सबसे मुखर और जिम्मेदार मंत्री, सैकड़ों विज्ञानों और हजारों कलाओं और कौशलों से सुसज्जित;
- एक प्रकार का निरीक्षक, एक प्रतिनिधि जिसे समस्त अनंत काल के सम्राट द्वारा, अपनी करीबी जांच के तहत, ब्रह्मांड के दायरे में पृथ्वी के देश की देखरेख करने के लिए नियुक्त किया जाता है;
- वह जाति जिसे इसे नियंत्रित करने और तैनात करने का अधिकार दिया गया है, और जिसके कार्य, चाहे वे विशेष हों या सार्वभौमिक, सभी दर्ज किए जाते हैं;
- जीवित प्राणियों का वह विभाग जो भार वहन करने के लिए सहमत हो गया है सर्वोच्च विश्वास, जिससे आकाश, पृथ्वी और पर्वत सभी भयभीत होकर सिकुड़ जाते हैं;
- ऐसा प्राणी जिसके सामने दो रास्ते हैं, जिनमें से एक घोर दुःख की ओर ले जाता है, जबकि दूसरा परम संतोष की ओर;
- ईश्वर का एक सार्वभौमिक सेवक जिसे सबसे व्यापक पूजा का दायित्व सौंपा गया है;
- महानतम की अभिव्यक्ति से अनुग्रहित होने का प्रकार ब्रह्माण्ड के अधिपति का नाम;
- सभी ईश्वर के नामों का एक व्यापक दर्पण;
- ईश्वर का विशेष अंतरंग और अभिभाषक, उसके दिव्य संबोधनों और वाणी की सर्वोत्तम समझ के साथ;
- ब्रह्मांड में सभी जीवित प्राणियों में सबसे जरूरतमंद: एक दुखी प्राणी, जो अपनी अंतहीन गरीबी और नपुंसकता के बावजूद, असंख्य इच्छाएं और लक्ष्य रखता है और फिर भी असंख्य विरोधी और चीजें हैं जो उसे नुकसान पहुंचाने की धमकी देती हैं;
- ऐसा प्राणी जो अपनी क्षमता में सबसे अधिक धन्य है, फिर भी जीवन के सुखों के संबंध में सबसे अधिक पीड़ित है, जो भयंकर पीड़ाओं के अस्तित्व से विष बन जाते हैं;
- अनंत काल से प्रार्थित शक्ति का सबसे अद्भुत चमत्कार एक;
- सृष्टि की सबसे अद्भुत उपज जिसे अनन्त जीवन की सबसे अधिक आवश्यकता है और उसे प्राप्त करने का सबसे अधिक योग्य भी है;
- ऐसा प्राणी जो अनंत प्रार्थनाओं के साथ शाश्वत सुख की खोज करता है— वास्तव में, यदि उन्हें इस संसार के सभी सुख दे दिए जाएं, तो भी वे अनन्त जीवन की अपनी इच्छा को रत्ती भर भी संतुष्ट नहीं कर सकेंगे;

• ऐसा प्राणी जो एक को श्रद्धा की हद तक प्यार करता है
 जो उनपर कृपा करता है और अपना प्रिय बनाता है और
 उससे प्रेम किया;
• ऐसा प्राणी जिसकी क्षमताएं, जो स्वयं ब्रह्मांड जितनी विशाल हैं, अपने स्वभाव से ही दर्शाती हैं कि उन्हें शाश्वतता प्राप्त करने के लिए बनाया गया है।

संक्षेप में, मानवता उपरोक्त सार्वभौमिक वास्तविकताओं के माध्यम से सर्वशक्तिमान ईश्वर के नाम परम सत्य से बंधी हुई है, और उनके कार्यों को सर्वरक्षक द्वारा निरंतर दर्ज किया जाता है, जो सबसे छोटे जीवित प्राणी की सबसे विशेष आवश्यकता को देखता है, उसकी विनती सुनता है, और उसका जवाब देता है। मानवता के कर्म, जो पूरे ब्रह्मांड से संबंधित हैं, उस सर्वरक्षक के महान लेखकों द्वारा लिखे गए हैं, और यह मानवता ही है जो किसी भी अन्य प्राणी से अधिक उसका ध्यान आकर्षित करती है। इसे देखते हुए, निश्चित रूप से इस सबसे महान प्राणी को पुनरुत्थान और न्याय प्रदान किया जाएगा। और इस न्याय में, परम सत्य नाम के अनुसार, मानव जाति को अपने कर्तव्यों के लिए पुरस्कार या अपने अपराधों के लिए दंड मिलेगा; उन्हें अपने सभी कार्यों, सार्वभौमिक या विशेष, के लिए जवाबदेह ठहराया जाएगा, जो सर्वरक्षक नाम द्वारा दर्ज किए गए हैं। शाश्वत क्षेत्र में शाश्वत सुख के भोज कक्षों के दरवाजे खुल जाएंगे, जैसे कि शाश्वत दुख की जेल के द्वार खुल जाएंगे। वह "अधिकारी" जिसके पास इस संसार में प्राणियों की अनेक प्रजातियों का प्रबंधन है, जो उनमें हस्तक्षेप करता है और कभी-कभी उन्हें असमंजस में डाल देता है, एक बार जब वे मिट्टी में समा जाएंगे, तो उनके कार्यों के संबंध में पूछताछ से बच नहीं पाएंगे; न ही उन्हें बिना जगाए छिपने दिया जाएगा।

मक्खी की भिनभिनाहट सुनना और उसे जीवन के अधिकार देकर उसका उत्तर देना, किन्तु अनंत काल के आह्वान को अनदेखा करना जो असंख्य मानव अधिकारों से उत्पन्न होते हैं और उपरोक्त सत्यों की भाषा के माध्यम से किए जाते हैं -

आकाश और पृथ्वी में बिजली की तरह गूंजने वाले आह्वान - शुद्ध अन्याय और इन अधिकारों का उल्लंघन होगा। इसी तरह, सबसे छोटे जीव - उदाहरण के लिए, एक मक्खी के पंख - को ध्यान में रखना, लेकिन फिर मानव जाति की क्षमताओं, आशाओं और इच्छाओं की उपेक्षा करना और उन्हें बर्बाद करना, जो अनंत काल तक फैली हुई हैं, साथ ही ब्रह्मांड में अनगिनत बंधन और सत्य जो इन क्षमताओं और इच्छाओं को पोषित करते हैं - यह

यह इतना कुरूप और घृणित अत्याचार और अन्याय होगा कि सभी प्राणी जो परम सत्य, सर्व-प्रभु जैसे नामों की गवाही देते हैं, वे भी इसके शिकार हो जाएंगे।

सेवा करने से, सर्वज्ञ, सर्वकृपालु और सर्वकरुणामय इसे अस्वीकार कर देंगे, इसे पूरी तरह असंभव घोषित कर देंगे। इस प्रकार ये नाम उस प्रश्न का उत्तर देते हैं जो हमने अपने निर्माता से पुनरुत्थान के बारे में पूछा था। वे कहते हैं: "जैसे हम सच्चे हैं और हमारे पास ठोस वास्तविकताएँ हैं, और जो प्राणी हमारी गवाही देते हैं वे भी सच्चे हैं, उसी प्रकार पुनरुत्थान भी सच्चा और निश्चित है।"

मैं और अधिक लिखने वाला था, लेकिन चूंकि उपरोक्त बातें यह दिखाने के लिए पर्याप्त हैं कि पुनरुत्थान का सत्य दिन के उजाले की तरह स्पष्ट है, इसलिए मैंने यहां चर्चा को संक्षिप्त कर दिया है।

इस प्रकार, जैसा कि ऊपर वर्णित सत्यों से भी समझा जा सकता है, जिस प्रकार प्राणियों में अपनी अभिव्यक्ति और प्रतिबिम्ब के माध्यम से, सर्वशक्तिमान ईश्वर के सैकड़ों, बल्कि हजारों नाम, जो ब्रह्माण्ड से संबंधित हैं और स्वयं को उसमें प्रकट करते हैं, उस एक के अस्तित्व को स्वयं-सिद्ध रूप से सिद्ध करते हैं, जिसका वे प्रतीक हैं, उसी प्रकार वे पुनरुत्थान और परलोक को भी प्रदर्शित करते हैं, और उन्हें निश्चित रूप से सिद्ध करते हैं।

जिस प्रकार हमारा प्रभु और सृष्टिकर्ता हमें पुनरुत्थान के संबंध में हमारे द्वारा पूछे गए प्रश्न का पवित्र, निर्णायक उत्तर अपनी सभी प्रकाशित पुस्तकों और धर्मग्रंथों तथा अपने अधिकांश नामों के माध्यम से देता है, उसी प्रकार वह अपने स्वर्गदूतों से भी उसी प्रश्न का उत्तर उनकी अपनी भाषा में देने का अनुरोध करता है:

“आदम के समय से लेकर अब तक सैकड़ों ऐसी घटनाएँ हुई हैं

हम दोनों के साथ और अन्य आत्मिक प्राणियों के साथ आपकी मुलाकात के बारे में निस्संदेह गवाही देते हैं। हमारे अस्तित्व और उन अन्य आत्मिक प्राणियों के अस्तित्व, और हमारे ईश्वर के प्रति सेवा-भाव और आज्ञाकारिता के अन्य असंख्य संकेत और प्रमाण भी हैं। एक दूसरे के साथ सहमति में, हमने आपके नेताओं से जब भी मुलाकात की है, उन्हें बताया है कि हम परलोक के गलियारों और उसके कुछ महलों के चारों ओर यात्रा करते हैं। हमें कोई संदेह नहीं है

ये सुंदर, चिरस्थायी हॉल और अच्छी तरह से सुसज्जित, सुसज्जित महल और उनके आगे के आवास उन महत्वपूर्ण मेहमानों के लिए तैयार किए गए हैं जिन्हें वहाँ ठहराया जाना है। हम आपको इसकी अविश्वसनीय खबर देते हैं।" हमारे प्रश्न के लिए स्वर्गदूतों का उत्तर ऐसा ही है।

इसके अलावा, हमारे निर्माता ने पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) को सबसे महान शिक्षक, सर्वोत्तम गुरु और सबसे सच्चे मार्गदर्शक के रूप में नियुक्त किया, जो न तो भटकते हैं और न ही गुमराह करते हैं, और उन्हें अपने अंतिम संदेशवाहक के रूप में भेजा।
इस प्रकार, ताकि हम ईश्वर के बारे में अपने ज्ञान और उस पर अपने विश्वास में आगे बढ़ सकें, ज्ञान पर आधारित निश्चितता से दर्शन से उत्पन्न निश्चितता और अनुभव से उत्पन्न निश्चितता तक आगे बढ़ सकें, हमें सबसे पहले इस स्वामी से वही प्रश्न पूछना चाहिए जो हम अपने सृष्टिकर्ता से पूछते हैं। क्योंकि,

जिस तरह उस व्यक्ति ने अपने अनगिनत चमत्कारों के ज़रिए साबित कर दिया कि क़ुरआन ईश्वर का सच्चा वचन है, उसी तरह क़ुरआन भी अपने चमत्कारों के ज़रिए साबित करता है कि वह ईश्वर का सच्चा और सच्चा रसूल था। दृश्यमान दुनिया की ज़बान के रूप में, पैगम्बर ने अपने पूरे जीवन में पुनरुत्थान की सच्चाई का ऐलान किया और सभी नबियों और संतों ने इसकी पुष्टि की; अदृश्य दुनिया की ज़बान के रूप में, क़ुरआन ने भी अंतिम दिन और आख़िरत की सच्चाई का ऐलान किया और सभी अन्य ईश्वरीय पुस्तकों और शास्त्रों ने इसकी पुष्टि की। इस बात को देखते हुए, पुनरुत्थान का अस्तित्व सभी उचित संदेह से परे साबित होता है।

पुनरुत्थान जैसा विस्मयकारी विषय, जिसकी समझ सामान्य तर्क से परे है, इन दो अद्भुत गुरुओं - पैगम्बर मुहम्मद और कुरान - के निर्देश के माध्यम से सर्वोत्तम रूप से समझा जा सकता है।

प्रारंभिक पैगम्बरों ने क़ुरान की तरह पुनरुत्थान के बारे में विस्तृत तरीके से व्याख्या नहीं की, इसका कारण यह था कि वे सापेक्ष आदिमवाद के युग थे, या मानवता के "बचपन" के युग थे। जो लोग प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, उन्हें विस्तृत और जटिल व्याख्याएँ देने का कोई मतलब नहीं है।

संक्षेप में: चूंकि अधिकांश दिव्य नामों के लिए पुनरुत्थान की आवश्यकता होती है, इसलिए इन नामों के अस्तित्व को प्रदर्शित करने वाले सभी प्रमाण, कुछ हद तक पुनरुत्थान के अस्तित्व और आवश्यकता को भी प्रदर्शित करते हैं।

और चूंकि फ़रिश्ते हमें बताते हैं कि उन्होंने परलोक के शाश्वत क्षेत्र के क्षेत्रों और भवनों को देखा है, इसलिए जो प्रमाण फ़रिश्तों, आत्माओं और आत्मिक प्राणियों के अस्तित्व और पूजनीयता को स्थापित करते हैं, वे परलोक के अस्तित्व की सच्चाई को स्थापित करने में भी सहायता करते हैं।

और चूंकि ईश्वरीय एकता के बाद, पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) ने सबसे अधिक जोर देकर जिस विषय पर जोर दिया वह परलोक था, इसलिए यह निष्कर्ष निकलता है कि सभी प्रमाण और चमत्कार जो उनकी पैगम्बरी होने की गवाही देते हैं, वे परोक्ष रूप से परलोक के अस्तित्व की भी गवाही देते हैं।

और चूंकि कुरान का एक चौथाई भाग पुनरुत्थान और परलोक से संबंधित है, तथा इसकी लगभग एक हजार आयतें परलोक के प्रमाण प्रस्तुत करती हैं, इसलिए कुरान की सत्यता को स्थापित करने वाले सभी साक्ष्य और तर्क अप्रत्यक्ष रूप से परलोक के अस्तित्व को भी स्थापित करते हैं।

अब देखिए कि विश्वास का यह स्तंभ कितना दृढ़ और निश्चित है!

आठवां मामला

सातवें मामले में, हम पुनरुत्थान के संबंध में कई अलग-अलग प्राणियों से सवाल करने की योजना बना रहे थे। हालाँकि, चूँकि हमारे निर्माता के नामों द्वारा दिए गए उत्तर इतने शक्तिशाली और आश्वस्त करने वाले थे, इसलिए हमने उनसे खुद को संतुष्ट कर लिया, किसी और से या किसी और चीज़ से सवाल करने की कोई ज़रूरत नहीं देखी। अब, इस आठवें मामले में हम परलोक में विश्वास से मानवता और इस दुनिया और परलोक दोनों में उनकी खुशी के लिए होने वाले लाभों में से सौवें हिस्से को स्पष्ट करने की योजना बना रहे थे। हालाँकि, चूँकि चमत्कारी कुरान परलोक में खुशी हासिल करने में विश्वास के लाभों के बारे में और अधिक स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं छोड़ता है, और चूँकि इस दुनिया में मानवता के लिए विश्वास के लाभों पर रिसाले-ए-नूर में विस्तार से चर्चा की गई है, इसलिए पाठक कुरान और रिसाले-ए-नूर के संबंधित खंडों का संदर्भ ले सकते हैं। यहाँ, हम मानव व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के संबंध में परलोक में विश्वास के सैकड़ों परिणामों में से केवल तीन या चार का सारांश देंगे।

पहला: जिस तरह एक व्यक्ति का अपने घर से रिश्ता होता है, उसी तरह उसका उससे परे की दुनिया से भी रिश्ता होता है। इसी तरह, जिस तरह उसका अपने रिश्तेदारों से रिश्ता होता है, उसी तरह उसका बाकी मानव-जाति से भी रिश्ता होता है। और जिस तरह वे इस दुनिया में एक तरह की अस्थायी स्थायित्व की इच्छा रखते हैं, उसी तरह वे अनंत काल के दायरे में एक स्थायी स्थायित्व के लिए भी तरसते हैं। जिस तरह एक व्यक्ति भोजन के लिए अपने पेट की ज़रूरत को पूरा करने का प्रयास करता है, उसी तरह वह स्वभाव से अपने मन, हृदय, आत्मा और मानवता के रूपक पेट को पोषण प्रदान करने के लिए प्रयास करने के लिए बाध्य होता है। उनकी इच्छाएँ और माँगें ऐसी हैं कि अनंत काल और शाश्वत सुख के अलावा कुछ भी उन्हें संतुष्ट नहीं कर सकता। जैसा कि दसवें वचन में उल्लेख किया गया है, जब मैं छोटा था, तो मैंने खुद से पूछा: "क्या आप दुनिया के शासक के रूप में एक लाख साल तक जीना चाहते हैं, लेकिन फिर अनंत काल तक अस्तित्वहीन हो जाना चाहते हैं? या आप एक साधारण और कभी-कभी कठिन अस्तित्व रखना पसंद करेंगे, लेकिन हमेशा के लिए जीना चाहेंगे?" मैंने देखा कि मेरी कल्पना हमेशा बाद वाले विकल्प को चुनती है, कहती है: “मैं हमेशा जीना चाहता हूँ, भले ही वह नर्क में ही क्यों न हो!”

इस प्रकार, चूँकि इस संसार के सुख कल्पनाशील क्षमता को संतुष्ट नहीं करते, जो मानव सार का सेवक है, इसलिए यह निष्कर्ष निकलता है कि मानवता का व्यापक सार, अपने स्वभाव से ही, अनंत काल से जुड़ा हुआ है। क्योंकि असीम आशाओं और इच्छाओं से घिरे होने के बावजूद, मानवता के पास अपनी पूंजी के रूप में केवल इच्छाशक्ति की एक तुच्छ क्षमता है, क्योंकि वे पूर्ण गरीबी से त्रस्त हैं। तो, परलोक में विश्वास ऐसा ही है

एक शक्तिशाली और पर्याप्त खजाना, खुशी और आनंद का ऐसा साधन, सहायता और लाभ का ऐसा आश्रय और स्रोत, और इस दुनिया के अंतहीन दुखों के सामने सांत्वना का ऐसा साधन कि अगर इसे पाने के लिए इस दुनिया के जीवन का बलिदान करना पड़े, तो भी यह एक सस्ती कीमत चुकाना होगा।

इसका दूसरा फल और मानव व्यक्तिगत जीवन से संबंधित लाभ:

इसकी व्याख्या थर्ड मैटर में की गई है, तथा इसे गेनक्लिक रेहबेरी में फुटनोट के रूप में पाया जा सकता है।

मानवता की सबसे स्थायी और सर्वोपरि चिंता यह है कि हम भी एक दिन कब्र में चले जायेंगे, जैसे हमारे मित्र और रिश्तेदार हमसे पहले कब्र में चले गये।

वह अभागा मनुष्य, जो एक मित्र के लिए अपनी आत्मा तक का बलिदान करने को तैयार है, यह कल्पना करता है कि उससे पहले कब्र में गए अनगिनत लाखों मनुष्य अनन्त विनाश के लिए अभिशप्त हो चुके हैं, और यह कल्पना उन्हें नरक की यातनाएं भुगतने के लिए मजबूर करती है।

ठीक इसी समय, आख़िरत में ईमान प्रकट होता है, हमारी आँखें खोलता है और पर्दा उठाता है। यह हमें बताता है: “देखो!” और ईमान के साथ देखते हुए, हम देख सकते हैं कि हमारे साथी अनंत विनाश से बच गए हैं और एक रोशनी से भरी दुनिया में खुशी से हमारा इंतज़ार कर रहे हैं; यह महसूस करते हुए, हमें एक आध्यात्मिक आनंद मिलता है जो स्वर्ग के सुखों का प्रतिबिंब है। रिसाले -ए-नूर में इस दूसरे फल की व्याख्याओं से संतुष्ट होकर, हम यहाँ चर्चा को समाप्त करेंगे।

तीसरा लाभ: मनुष्य अपनी श्रेष्ठ विशेषताओं, अपनी व्यापक क्षमताओं, पूजा करने की अपनी सार्वभौमिक क्षमता और अपने जीवन को बनाने वाले अस्तित्व के व्यापक क्षेत्रों के कारण अन्य जीवों से श्रेष्ठ है। हालाँकि, मनुष्य की विशेषताएँ जैसे प्रेम, उत्साह, भाईचारा और मानवता, इस क्षणभंगुर वर्तमान समय की सीमा के अनुसार अर्जित की जाती हैं, जो अतीत और भविष्य के बीच सीमित है, जो दोनों ही अंधकारमय और भयावह हैं।

अस्तित्वहीन.

उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति अपने पिता, भाई या बहन, अपने जीवनसाथी, राष्ट्र या देश से प्यार करता है और उनकी सेवा करता है, जिनमें से किसी को भी वह पहले नहीं जानता था; वे इनमें से किसी को भी इस दुनिया से चले जाने के बाद नहीं देख पाएंगे। चूँकि जीवन की क्षणभंगुर प्रकृति का अर्थ है कि यह बहुत ही असंभव है कि कोई व्यक्ति किसी एक रिश्ते में पूरी तरह से वफ़ादारी या ईमानदारी हासिल कर पाएगा, इसलिए उनके गुण और उत्कृष्टता आनुपातिक रूप से कम हो जाती है। फिर, ठीक उस बिंदु पर जहाँ वे जानवरों से भी निचले स्तर पर गिर जाते हैं और

वे पहले से भी अधिक दुखी हो जाते हैं क्योंकि उनके पास बुद्धि और तर्क है, परलोक में विश्वास इस व्यक्ति की सहायता करता है। यह वर्तमान को, जो कब्र की तरह संकीर्ण है, इस हद तक विस्तृत करता है कि यह अतीत और भविष्य को शामिल करता है और अस्तित्व के एक क्षेत्र को दुनिया की तरह व्यापक रूप से प्रकट करता है, जो पूर्व-अनंत काल से लेकर अनंत काल तक फैला हुआ है। यह महसूस करते हुए कि किसी के जीवनसाथी, माता-पिता और भाई-बहनों के साथ संबंध स्वर्ग में अनंत काल तक जारी रहेंगे, वे इस दुनिया में रहते हुए उनसे प्यार करते हैं, उनका सम्मान करते हैं, उनकी मदद करते हैं और उन पर दया करते हैं।

इस नए एहसास के साथ, इंसान इस दुनिया के बेकार के कामों और इसके तुच्छ स्वार्थों के लिए जीवन और अस्तित्व के इस व्यापक क्षेत्र में फैले रिश्तों पर आधारित ऐसे महत्वपूर्ण कर्तव्यों का दोहन नहीं करेगा। सच्ची निष्ठा और ईमानदारी हासिल करने में सक्षम होने के कारण, इंसान के अच्छे गुण और उपलब्धियाँ उसी के अनुसार विकसित होने लगती हैं और उसकी इंसानियत बुलंद हो जाती है। हालाँकि वह इस जीवन के आनंद में एक गौरेया से भी मुकाबला नहीं कर सकता, लेकिन वह ब्रह्मांड में सबसे महान और सबसे खुश मेहमान बन सकता है, सभी जानवरों से बेहतर हो सकता है, साथ ही ब्रह्मांड के मालिक का सबसे प्रिय और सबसे अधिक सराहा जाने वाला सेवक भी हो सकता है। चूँकि यह बात रिसाले-ए-नूर में भी स्पष्ट की जा चुकी है, इसलिए हम यहाँ इतने से ही संतुष्ट हैं।

परलोक में विश्वास का चौथा लाभ , जो निम्न से संबंधित है

मानव सामाजिक जीवन: रिसाले-ए-नूर की नौवीं किरण में वर्णित इस लाभ का सारांश इस प्रकार है :

बच्चे, जो मानव जाति का एक तिहाई हिस्सा हैं, वास्तव में मानव जीवन जी सकते हैं और वास्तविक मानवीय क्षमताओं को बनाए रख सकते हैं, यदि उन्हें परलोक में ईमानदारी से विश्वास हो। परलोक में विश्वास के बिना, वे अपने अंतिम विस्मृति पर महसूस की जाने वाली चिंता की भरपाई करने के लिए अपने सांसारिक जीवन को तुच्छ और अर्थहीन विकर्षणों से भरकर मजबूर हो जाते हैं। क्योंकि उनके आस-पास अपने जैसे बच्चों की लगातार मौतें उनके संवेदनशील दिमाग और कमजोर दिलों पर ऐसा प्रभाव डालती हैं, जो दूरगामी इच्छाओं और कमजोर आत्माओं को पालते हैं, कि यह उनके लिए जीवन को यातना और उनके तर्क को पीड़ा का साधन बना देता है। हालाँकि, अगर उन्हें परलोक में विश्वास दिलाया जाता है, तो वे अपने साथियों की मौत पर जो चिंताएँ महसूस करते थे, जिनसे वे खुद को अर्थहीन विकर्षणों में डुबो कर बचने की कोशिश करते हैं, वे सच्चाई का एहसास होने पर खुशी और उल्लास में बदल जाएँगे। परलोक में विश्वास के आधार पर वे कहेंगे: “मेरा भाई या साथी मर गया है और स्वर्ग में एक पक्षी बन गया है। वह (या वह) अब हमसे कहीं ज़्यादा उड़-उड़कर और आनंद लेकर घूम रहा है। और हालाँकि मेरी माँ

मर गई है, वह ईश्वरीय दया के दायरे में चली गई है। एक दिन मैं उसे स्वर्ग में देखूंगा, जहां वह मुझे एक बार फिर अपनी बाहों में ले लेगी। " इस तरह का एहसास इन बच्चों को एक ऐसी स्थिति में रहने में सक्षम करेगा जो उनके लिए एक इंसान के रूप में उपयुक्त है।

परलोक में विश्वास करने के माध्यम से ही वृद्ध, जो मानव जाति का एक तिहाई हिस्सा हैं, अपने जीवन के अपरिहार्य विलुप्त होने और इस तथ्य के सामने सांत्वना पाने में सक्षम हैं कि वे भी जल्द ही पृथ्वी की आंतों में समा जाएंगे और उनकी कीमती और प्यारी दुनिया खत्म हो जाएगी। परलोक में विश्वास के बिना, वे दयालु, सम्मानित पिता और वे कोमल, आत्म-त्यागी माताएँ दिल और आत्मा में इतनी व्याकुल और व्यथित हो जाएँगी कि उनकी दुनिया उनके लिए निराशा की जेल और जीवन पीड़ा का भारी बोझ लगने लगेगी। लेकिन परलोक में विश्वास उन्हें संबोधित करते हुए कहता है: "चिंता मत करो! एक उज्ज्वल, शाश्वत जीवन तुम्हारा इंतज़ार कर रहा है और वहाँ तुम शाश्वत युवावस्था का आनंद उठाओगे। तुम अपने प्यारे बच्चों और उन रिश्तेदारों के साथ खुशी से फिर से मिलोगे जिन्हें तुमने खो दिया है। तुम्हारे सभी अच्छे कर्म सुरक्षित हैं और वहाँ तुम्हें उनके लिए पुरस्कृत किया जाएगा।" आख़िरत पर ईमान उन्हें इतनी तसल्ली और खुशी देता है कि अगर उन्हें सौ बार भी बुढ़ापा आए तो भी उन्हें निराशा नहीं होगी।

मानव जाति का एक तिहाई हिस्सा युवा वर्ग का है। अपनी अशांत भावनाओं और भावनाओं के कारण, तथा अपनी बुद्धि को नियंत्रित करने में कठिनाई के कारण, यदि वे परलोक में अपना विश्वास खो देते हैं और नर्क की यातनाओं को ध्यान में नहीं रखते, तो समाज के ईमानदार सदस्यों की संपत्ति और सम्मान, साथ ही कमजोर और वृद्ध लोगों की शांति और गरिमा गंभीर खतरे में पड़ जाएगी। एक युवा एक मिनट के आनंद के लिए एक खुशहाल घर को नष्ट कर सकता है, और उसके बाद के वर्षों की कैद उसे जंगली जानवर बना देगी। लेकिन यदि परलोक में विश्वास उनकी सहायता करता है, तो वे जल्दी से अपने होश में आ जाते हैं, और सोचते हैं: "यह सच है कि सरकारी मुखबिर मुझे नहीं देखते और मैं उनसे छिप सकता हूँ, लेकिन सर्वशक्तिमान प्रभु के फ़रिश्ते, जिनके पास नर्क नामक जेल है, मुझे देखते हैं और मेरे सभी बुरे कर्मों को रिकॉर्ड कर रहे हैं। मैं स्वतंत्र नहीं हूँ और अपने आप पर छोड़ दिया गया हूँ: मैं एक यात्री हूँ जिस पर कर्तव्य का भार है। एक दिन मैं भी बूढ़ा और कमज़ोर हो जाऊँगा।" अचानक यह व्यक्ति उन लोगों के प्रति सहानुभूति और सम्मान महसूस करने लगता है जिन पर उसने पहले बिना सोचे-समझे हमला किया था। इस सत्य की व्याख्या से संतुष्ट होकर, जो पाठक रिसाले-ए-नूर में पा सकते हैं, हम यहाँ चर्चा को संक्षिप्त कर देते हैं।

मानव जाति का एक और महत्वपूर्ण वर्ग है बीमार, उत्पीड़ित, गरीब, हमारे जैसे लोग जो विपत्ति से पीड़ित हैं और जेल में सड़ रहे कैदी हैं, जिन्हें कड़ी सजा दी जाती है। अगर परलोक में ईमान उनकी मदद नहीं करता, तो उनका जीवन अवश्य ही पीड़ा से भरा होगा।

बीमारी उन्हें लगातार मौत की याद दिलाती है; अत्याचारी का घमंडी विश्वासघात, जिसके सामने वे अपनी इज्जत नहीं बचा पाते, उन्हें बहुत तकलीफ देता है; गंभीर आपदाओं में संपत्ति या संतान का नुकसान बेहिसाब निराशा लाता है; और पांच या दस साल जेल में बिताने की असहनीय कठिनाई अथाह दर्द और मानसिक पीड़ा का कारण बनती है। विश्वास के बिना, ये सभी विपत्तिपूर्ण परिस्थितियाँ दुनिया को उन लोगों के लिए एक भयानक जेल में बदल देती हैं जो उन्हें अनुभव करते हैं और जीवन एक जीता जागता नरक बन जाता है। लेकिन अगर आख़िरत में विश्वास उनकी मदद करता है, तो वे राहत महसूस करना शुरू कर देते हैं और, उनके विश्वास की सीमा तक, उनकी परेशानी, निराशा, चिंता और बदला लेने की इच्छा कम हो जाती है और कभी-कभी पूरी तरह से गायब भी हो जाती है।

मैं यहाँ तक कह सकता हूँ कि यदि परलोक में विश्वास ने मुझे और मेरे कुछ भाइयों को इस भयानक विपत्ति में, जो कि इस गलत कारावास की स्थिति है, सहायता न की होती, तो हम कारावास का एक दिन भी सहन नहीं कर पाते: यह मृत्यु के समान असहनीय होता और शायद हमें जीवन को अलविदा कहने पर मजबूर कर देता। लेकिन ईश्वर का असीम धन्यवाद, क्योंकि अपने भाइयों के दुख को सहने के बावजूद, जिन्हें मैं अपने जीवन के समान ही प्यार करता हूँ; रिसाले-ए-नूर की हजारों प्रतियों और अपनी बहुमूल्य, स्वर्ण-जड़ित पुस्तकों को खोने और उनके लिए रोने के बावजूद, जिन्हें मैं अपनी आँखों के समान ही प्यार करता हूँ; और इस तथ्य के बावजूद कि मैं ज़रा-सा भी अपमान सहन नहीं कर सकता था या दूसरों के द्वारा हावी नहीं हो सकता था, मैं शपथ लेता हूँ कि परलोक में विश्वास की रोशनी और शक्ति ने मुझे धैर्य, सहनशीलता, सांत्वना और दृढ़ता प्रदान की। वास्तव में, इसने मुझे मेरे कष्टों के कष्टों को सहकर और भी अधिक पुरस्कार प्राप्त करने का उत्साह दिया है, क्योंकि जैसा कि मैंने इस ग्रंथ की शुरुआत में कहा था, मैं खुद को जोसेफ के स्कूल कहलाने के योग्य शिक्षा के स्थान का छात्र मानता था। अगर बुढ़ापे में कभी-कभार होने वाली पीड़ा और बीमारियाँ न होतीं, तो मैं अपने पाठों को अधिक लगन और अधिक सहजता के साथ सीखता। हालाँकि, हम विषय से भटक गए हैं, और मुझे उम्मीद है कि इसके लिए मुझे माफ़ कर दिया जाएगा।

साथ ही, हर किसी का घर उनके लिए एक छोटी सी दुनिया है, शायद एक छोटा सा स्वर्ग भी। अगर परलोक में विश्वास उस घर की खुशियों का आधार नहीं है, तो उस परिवार के सदस्यों को अपने परिवार के लिए महसूस की जाने वाली करुणा, प्रेम और लगाव के अनुपात में पीड़ा और चिंता का सामना करना पड़ेगा।

उनका स्वर्ग नर्क में बदल जाएगा और उनके पास सुन्न होने के अलावा कोई विकल्प नहीं होगा

अस्थायी मनोरंजन और विकर्षणों से अपने मन को व्यस्त रखते हैं। एक शुतुरमुर्ग की तरह जो यह सोचकर रेत में अपना सिर छिपा लेता है कि उसे शिकारी नहीं देख सकता, ये बेचारे लोग इस उम्मीद में अपने सिर को लापरवाही में डुबो देते हैं कि शायद मौत, पतन और अलगाव उन्हें न पा ले। वे अस्थायी रूप से खुद को सुन्न करके अपनी भयावह स्थिति से बाहर निकलने का रास्ता तलाशते हैं। उदाहरण के लिए, माँ अपने बच्चों को खतरे में देखकर लगातार काँपती रहती है, जिनके लिए वह अपनी आत्मा का बलिदान कर सकती है। बच्चे, अपने पिता या भाई-बहनों को उन विपत्तियों से बचाने में असमर्थ होने के कारण लगातार दु:ख और भय महसूस करते हैं जो अक्सर परिवारों पर आती हैं। इस प्रकार, इस उथल-पुथल भरे सांसारिक जीवन में, परिवार का कथित रूप से संतुष्ट जीवन कई मामलों में अपनी खुशी खो देता है, और इस संक्षिप्त सांसारिक अस्तित्व में बनाए गए रिश्तेदारी और घनिष्ठ संबंध सच्ची वफादारी, हार्दिक ईमानदारी, निस्वार्थ सेवा या वास्तविक प्रेम में परिणत नहीं होते हैं। अच्छा चरित्र आनुपातिक रूप से कम होता जाता है और अक्सर पूरी तरह से खो जाता है। लेकिन अगर आख़िरत में ईमान उस घर में प्रवेश करता है, तो यह उसे पूरी तरह से रोशन कर देता है: उसके सदस्य एक-दूसरे के लिए सम्मान, प्रेम और करुणा विकसित करते हैं, न सिर्फ़ इस छोटी सी दुनियावी ज़िंदगी में रिश्तों की खातिर, बल्कि आख़िरत यानी खुशी के अनंत क्षेत्र में बने रहने के लिए। वे एक-दूसरे का सम्मान करते हैं, प्यार करते हैं और एक-दूसरे के प्रति ईमानदारी से करुणा दिखाते हैं; वे एक-दूसरे के प्रति वफ़ादार होते हैं और एक-दूसरे की खामियों को नज़रअंदाज़ करते हैं और उनके अच्छे चरित्र में भी उसी हिसाब से इज़ाफ़ा होता है। नतीजतन, घर में सच्ची इंसानियत की खुशी विकसित होने लगती है। चूँकि यह भी रिसाले-ए-नूर में स्पष्ट किया गया है, इसलिए हम यहाँ चर्चा को छोटा कर देते हैं।

इसके अलावा, एक शहर उन लोगों के लिए एक बड़े घर की तरह होता है जो वहाँ रहते हैं। अगर उस बड़े परिवार के सदस्यों में परलोक में आस्था नहीं है, बल्कि ईमानदारी, सौहार्द, सदाचार, आपसी प्रेम और सहायता, आत्म-बलिदान और ईश्वरीय प्रसन्नता और परलोक के पुरस्कार की चाहत है - जो सभी अच्छे आचरण का आधार बनते हैं - तो स्वार्थ, दिखावा, पाखंड, बनावटीपन, रिश्वतखोरी और धोखाधड़ी जैसे दोष हावी हो जाएँगे। अराजकता और बर्बरता सतही व्यवस्था और नाममात्र की मानवता के मुखौटे के नीचे हावी हो जाएगी, जो शहर के जीवन को विषाक्त कर देगी। बच्चे बेकार के उपद्रवी बन जाएँगे, युवा नशे में डूब जाएँगे, शक्तिशाली लोग अत्याचार करने लगेंगे और बुज़ुर्ग रोने के लिए छोड़ दिए जाएँगे।

इसी प्रकार, एक देश भी एक घर है - एक राष्ट्रीय परिवार का घर।
यदि ऐसे घर में परलोक में विश्वास प्रबल हो, तो सच्चा आदर, सच्ची करुणा, निस्वार्थ प्रेम, पारस्परिक सहायता, ईमानदार सेवा, अच्छे सामाजिक संबंध आदि का पालन करना चाहिए।

प्रेम, दिखावटी दान, तथा अन्य अनेक श्रेष्ठताएं और सद्गुण पनपने लगेंगे।

परलोक में विश्वास बच्चों से कहता है: "झगड़ा करना बंद करो, क्योंकि जन्नत जीतने लायक है!" और उन्हें कुरान की शिक्षा के माध्यम से आत्म-नियंत्रण सिखाता है।

यह युवाओं से कहता है: "नरक सचमुच मौजूद है: अपनी असावधानी छोड़ दो!" इस प्रकार उन्हें होश में लाया जाता है।

यह अत्याचारी से कहता है: “यदि तुम इसी मार्ग पर चलते रहे तो तुम्हें घोर यातना मिलेगी!” और उन्हें न्याय के आगे झुकने पर मजबूर करता है।

यह बुजुर्गों से कहता है: "आने वाले संसार में न केवल शाश्वत खुशी होगी जो इस संसार में आपके द्वारा अनुभव की जाने वाली किसी भी चीज़ से कहीं ज़्यादा होगी, बल्कि शाश्वत यौवन भी होगा। उन्हें अपने लिए जीतने की कोशिश करें!" इस प्रकार उनके आंसुओं को मुस्कुराहट में बदल दिया जाता है।

परलोक में विश्वास हर समूह, विशेष या सार्वभौमिक, में अपने अनुकूल प्रभाव दिखाता है और उन्हें प्रकाशित करता है। समाजशास्त्रियों और नैतिक दार्शनिकों को, जो मानव जाति के सामाजिक जीवन से संबंधित हैं, इस पर ध्यान देना चाहिए। यदि परलोक में विश्वास से होने वाले हजारों लाभों में से बाकी लाभ हैं

परलोक की तुलना यदि उन पाँच या छः से की जाए, जिनका हमने संक्षेप में उल्लेख किया है, तो हम समझ सकते हैं कि केवल विश्वास ही इस लोक और परलोक में सुख का साधन है।

* * *

28वें वचन और रिसाले-ए-नूर के अन्य ग्रंथों में, शारीरिक पुनरुत्थान के बारे में मौजूद अवास्तविक संदेहों को शांत करने के लिए शक्तिशाली उत्तर दिए गए थे। जो पाठक अधिक विस्तृत चर्चा चाहते हैं, वे इन लेखों को संदर्भित कर सकते हैं; यहाँ हम निम्नलिखित संक्षिप्त संकेत के साथ खुद को संतुष्ट करेंगे: जिस तरह ईश्वरीय नामों का सबसे व्यापक दर्पण भौतिकता में पाया जाता है, उसी तरह ब्रह्मांड के निर्माण के लिए ईश्वरीय उद्देश्यों का सबसे समृद्ध और सबसे सक्रिय केंद्र भी भौतिकता में है। इसी तरह, भगवान की विविध कृपाओं की सबसे बड़ी विविधता भौतिकता में निहित

है, साथ ही कई लोगों द्वारा अपनी आवश्यकताओं की भाषा के माध्यम से अपने निर्माता को दी गई प्रार्थनाओं और धन्यवाद के बीजों की सबसे बड़ी बहुलता है। और आध्यात्मिक और आध्यात्मिक दुनिया के बीजों की सबसे बड़ी विविधता भी भौतिकता में निहित है।

चूँकि सैकड़ों सार्वभौमिक सत्य भौतिकता में केन्द्रित हैं, अतः इसे गुणा करने तथा उपरोक्त सत्यों की अभिव्यक्तियों के साथ इसे अनुकूल बनाने के लिए

पृथ्वी पर, सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता भौतिक अस्तित्व में प्राणियों के क्रमिक कारवां को तैयार करता है और उन्हें उस शानदार प्रदर्शनी में भयानक गति और क्रियाशीलता के साथ भेजता है। फिर वह उन्हें विदा करता है और उनके स्थान पर दूसरों को भेजता है, ब्रह्मांड के कारखाने को लगातार चलाता रहता है। भौतिक उत्पादों को बुनते हुए, वह पृथ्वी को परलोक और स्वर्ग का बीज-बिस्तर बनाता है। वास्तव में, पेट की भूख को संतुष्ट करने के लिए, वह भूख के रूप में की जाने वाली स्थायित्व की प्रार्थना को ध्यान से सुनता है और उसे स्वीकार करता है। इस प्रार्थना का जवाब देने के लिए, वह असंख्य प्रकार के सरल भोजन और कीमती उपहार तैयार करता है, जो सभी अलग-अलग सुख प्रदान करते हैं। यह बिना किसी संदेह के दर्शाता है कि परलोक में स्वर्ग के सबसे अधिक और विविध सुख भौतिक होंगे, जैसे कि उस शाश्वत सुख के निवास की कृपाएँ भौतिक होंगी, जिसकी सभी मनुष्य कामना करते हैं।

सर्वशक्तिमान और दयालु, सर्वज्ञ और दानशील भगवान, भूख के रूप में पेट द्वारा की गई प्रार्थना को स्वीकार करते हैं और उसे लगभग अनंत प्रकार के खाद्य पदार्थ प्रदान करके सावधानी और विचारपूर्वक उत्तर देते हैं। मनुष्य ब्रह्मांड का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम है और उसे पृथ्वी का शासक नियुक्त किया गया है: हम सृष्टिकर्ता के पसंदीदा प्राणी और उपासक हैं। तो क्या यह संभव है कि सर्वशक्तिमान और दयालु, सर्वज्ञ और दानशील भगवान, जो पेट की प्रार्थना को स्वीकार करते हैं और उसका उत्तर देते हैं, वे अनन्त क्षेत्र में सार्वभौमिक, उन्नत भौतिक सुखों के लिए सभी मानवता के पेट द्वारा की गई असंख्य, सार्वभौमिक प्रार्थनाओं को स्वीकार नहीं करेंगे, जिन्हें मानवजाति द्वारा सहज रूप से वांछित और आकांक्षा की जाती है? क्या यह संभव है कि वे इसका उत्तर शारीरिक पुनरुत्थान के साथ न दें, जिससे मानवजाति को अनंत काल तक संतुष्टि मिले? क्या वे मक्खी की भिनभिनाहट सुनेंगे, लेकिन गड़गड़ाहट नहीं? क्या वह एक सामान्य सैनिक की जरूरतों पर ध्यान देंगे, लेकिन पूरी सेना की जरूरतों को नजरअंदाज कर देंगे?

ऐसा करना पूरी तरह असंभव और बेतुका होगा।

दरअसल, जैसा कि आयत में स्पष्ट रूप से कहा गया है: उसमें वह सब होगा जो आत्मा चाहती है और जिससे आंखें प्रसन्न होती हैं (43:71), जन्नत के लोग अपनी स्थिति के अनुरूप, भौतिक सुखों का अनुभव करेंगे, जिनसे वे सबसे अधिक परिचित हैं, जिनके नमूने उन्होंने अपने सांसारिक जीवन के दौरान चखे हैं। उनके प्रत्येक अंग- जीभ, आंख, कान, इत्यादि द्वारा की गई ईमानदारी से धन्यवाद और विशेष पूजा के लिए पुरस्कार उन अंगों के लिए विशेष भौतिक सुखों के रूप में दिया जाएगा। चमत्कारी कुरान भौतिक सुखों का इतना स्पष्ट वर्णन करता है कि यह

उनके शाब्दिक अर्थों को न स्वीकार करना असंभव है: रूपकात्मक व्याख्याओं की तलाश करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

इस प्रकार, परलोक में विश्वास के फल और परिणाम दर्शाते हैं कि जिस प्रकार पेट का अस्तित्व, प्रकृति और आवश्यकताएँ भोजन के अस्तित्व का निर्णायक प्रमाण हैं, उसी प्रकार अनंत काल के लिए मानव जाति की जन्मजात आवश्यकता और इच्छा, साथ ही उनके पास मौजूद श्रेष्ठताएँ और क्षमताएँ जो परलोक में विश्वास के परिणामों और लाभों की मांग करती हैं, आने वाले संसार और स्वर्ग तथा उसके शाश्वत भौतिक सुखों के अस्तित्व के लिए निर्विवाद प्रमाण प्रदान करती हैं। साथ ही, पूर्णताएँ और सार्थक संकेत जो ब्रह्मांड को भरते हैं, और मानवता की अस्तित्वगत वास्तविकताएँ जो इन संकेतों से संबंधित हैं, परलोक, पुनरुत्थान और स्वर्ग और नरक के खुलने के क्षेत्र के निश्चित अस्तित्व की पूरी तरह से गवाही देती हैं। इस मूलभूत सत्य को रिसाले-ए-नूर के कई ग्रंथों में स्पष्ट रूप से समझाया गया है, जिनमें विशेष रूप से दसवां, अट्ठाईसवां और उनतीसवां शब्द, और तीसरी और नौवीं किरणें शामिल हैं। अधिक विस्तृत चर्चा के लिए, पाठकों को इन लेखों का संदर्भ दिया जाता है।

कुरान में नरक का वर्णन इतना स्पष्ट और सुस्पष्ट है कि इसके बारे में और अधिक वर्णन की आवश्यकता नहीं है। इस विषय पर विस्तृत चर्चा रिसाले-ए-नूर में पाई जा सकती है; यहाँ हम एक या दो तुच्छ संदेहों को दूर करने के लिए केवल दो या तीन बिंदुओं को संक्षेप में स्पष्ट करेंगे।

पहला बिंदु: नरक का विचार भय पैदा करके विश्वास के उपरोक्त फलों के आनंद को कम नहीं करता। क्योंकि अनंत ईश्वरीय दया भयभीत व्यक्ति से कहती है:

"मेरे पास आओ! पश्चाताप के द्वार से प्रवेश करो, ताकि नरक का अस्तित्व तुम्हें डराने के बजाय, स्वर्ग के सुखों से पूरी तरह परिचित कराए और तुम्हें और उन सभी प्राणियों को, जिनके अधिकारों का हनन हुआ है, बदला लेने के लिए सक्षम बनाए, साथ ही तुम्हें आनंद भी दे। यदि तुम गुमराही में डूब गए हो, जिससे तुम बाहर नहीं निकल सकते, तो नरक का अस्तित्व अभी भी शाश्वत विनाश से कहीं बेहतर है; यह अविश्वासियों के लिए एक तरह की दया भी है। मनुष्य और यहां तक कि बच्चे पैदा करने वाले जानवर भी अपने रिश्तेदारों, संतानों और दोस्तों के सुख और खुशी से आनंद प्राप्त करते हैं, और एक मामले में खुद भी खुश रहते हैं।

"और इसलिए अविश्वासी भौतिकवादियों से मैं यह कहूंगा: अपने गलत मार्गदर्शन के कारण, आप या तो अनंत काल तक अस्तित्वहीनता में गिरेंगे या फिर नरक में प्रवेश करेंगे। जहां तक अस्तित्वहीनता का सवाल है, यह पूरी तरह से बुराई है, और चूंकि इसका मतलब है कि आप और आपके सभी रिश्तेदार, पूर्वज हमेशा के लिए नष्ट हो जाएंगे।

और आपके वंशज, जिनसे आप प्यार करते हैं और जिनकी खुशी से आप भी खुश होते हैं, शाश्वत गैर-अस्तित्व का विचार आपके दिल और आत्मा को हज़ारों नर्कों से ज़्यादा पीड़ा देता है। क्योंकि अगर नर्क नहीं होता, तो स्वर्ग भी नहीं होता। आपके अविश्वास के कारण, सब कुछ गैर-अस्तित्व में आ जाता है। लेकिन अगर आप नर्क जाते हैं और अस्तित्व के दायरे में रहते हैं, तो आपके प्रियजन और रिश्तेदार या तो स्वर्ग में खुश रहेंगे या अस्तित्व के दायरे में किसी एक मामले में दया से अनुग्रहित होंगे। इसका मतलब है कि आपको इस धारणा का बचाव करना चाहिए कि नर्क मौजूद है, क्योंकि इसका विरोध करना गैर-अस्तित्व का समर्थन करना है, जो बदले में असंख्य रिश्तेदारों और प्रियजनों की खुशी को खत्म करने का समर्थन करना है।"

नरक एक भयानक, राजसी क्षेत्र है जो अस्तित्व के क्षेत्र में महामहिम के संप्रभु से संबंधित कारावास का स्थान होने का बुद्धिमान और न्यायपूर्ण कार्य करता है, जो शुद्ध अच्छा है। जेल होने का कार्य करने के अलावा, नरक के कई अन्य कर्तव्य भी हैं, कई बुद्धिमान उद्देश्यों की पूर्ति करना और शाश्वत क्षेत्र से संबंधित कई कार्य करना। यह कई जीवित प्राणियों, जैसे कि नरक के स्वर्गदूतों का विस्मयकारी निवास भी है।

दूसरा बिन्दु: नरक का अस्तित्व और उसकी भयानक यातनाएं ईश्वर की असीम दया, सच्चे न्याय और संतुलित बुद्धि के विपरीत नहीं हैं।

बल्कि दया, न्याय और बुद्धि इसके अस्तित्व की मांग करते हैं। एक अत्याचारी को दंडित करना जो एक हजार निर्दोष लोगों के अधिकारों को कुचलता है या एक जंगली जानवर को मारना जो सौ डरे हुए जानवरों को टुकड़े-टुकड़े कर देता है, न केवल न्यायपूर्ण है, बल्कि उत्पीड़ितों के लिए एक महान दया है। अत्याचारी को माफ करना और जंगली जानवर को मुक्त छोड़ देना, गलत तरीके से की गई दया के एक कार्य के बदले में सैकड़ों निर्दोष लोगों के प्रति दया की कमी को दर्शाता है।

नरक में जाने वालों में पूर्ण अविश्वासी भी शामिल हैं। वे इस तथ्य के कारण उस स्थान में प्रवेश करेंगे कि उन्होंने ईश्वरीय नामों को अस्वीकार करके उनके अधिकारों का उल्लंघन किया है, और उन्होंने उन सभी प्राणियों के अधिकारों का उल्लंघन किया है जो उन नामों की गवाही देते हैं, उनकी गवाही और महिमा के उच्च कर्तव्यों को अस्वीकार करके जो वे सृष्टि में नामों के प्रकट होने के सामने निभाते हैं। साथ ही, इस तथ्य को अस्वीकार करके कि सभी प्राणी ईश्वरीय प्रभुत्व के प्रकटीकरण के लिए दर्पण हैं और इस प्रभुत्व का जवाब पूजा के साथ देते हैं, जो सृष्टि के निर्माण और ब्रह्मांड के निरंतर अस्तित्व का कारण है , वे अन्य सभी प्राणियों के अधिकारों का और भी अधिक उल्लंघन करते हैं। इसलिए अविश्वास इतना बड़ा अपराध है कि इसे माफ नहीं किया जा सकता; यह वास्तव में आयत में निहित धमकी का हकदार है: निश्चित रूप से, ईश्वर इस बात को माफ नहीं करता कि उसके साथ भागीदार हों

(4:48, 116)। उस अविश्वासी को नरक में न डालना करुणा का गलत कार्य होगा, और उन असंख्य दावेदारों से न्याय और दया को रोकना होगा जिनके अधिकारों का उल्लंघन किया गया है। जिस तरह से ये दावेदार नरक के अस्तित्व की मांग करते हैं, उसी तरह महामहिम की दिव्य गरिमा और उनकी पूर्णता की भव्यता निश्चित रूप से इसकी मांग करती है।

यदि कोई विद्रोही अपराधी जो लोगों पर हमला करता है, यह कहकर शहर के गवर्नर की गरिमा और अधिकार का अपमान करता है: “आप मुझे जेल में नहीं डाल सकते!”, भले ही शहर में कोई जेल न हो, गवर्नर उस बदतमीज़ बदमाश को कैद करने के लिए एक जेल बनवा देगा। इसी तरह, अपने अविश्वास के माध्यम से, पूर्ण अविश्वासी ईश्वर की महिमा और अधिकार पर गंभीर हमला करते हैं; अपने इनकार के माध्यम से वे उनकी शक्ति की भव्यता का अपमान करते हैं और अपने आक्रमण के माध्यम से उनके प्रभुत्व की पूर्णता को अपमानित करते हैं। चाहे नरक के कितने भी कार्य हों या न हों, और चाहे कितने भी कारण या बुद्धिमत्ता के उदाहरण हों जो इसके अस्तित्व को आवश्यक बनाते हैं, यह ईश्वर की गरिमा और महिमा ही है जो किसी भी चीज़ से ज़्यादा उन अविश्वासियों के लिए नरक के निर्माण की मांग करती है, जिनका वर्णन किया गया है।

ऊपर।

इसके अलावा, अविश्वास का सार भी नर्क का संकेत देता है। उदाहरण के लिए, अगर विश्वास का सार मूर्त हो जाए, तो यह अपने सुखों के साथ एक निजी स्वर्ग का रूप ले लेगा और ऐसा करने से, आने वाले स्वर्ग का स्वाद मिलेगा। इसी तरह, जैसा कि पहले और रिसाले-ए-नूर के अन्य भागों में चर्चा की गई है, अविश्वास, पाखंड और धर्मत्याग की आध्यात्मिक पीड़ा और पीड़ा ऐसी है कि अगर उन्हें मूर्त रूप दिया जाए, तो वे अविश्वास से बंधे लोगों के लिए एक निजी नरक का रूप ले लेंगे और उन्हें आने वाले नरक का स्वाद देंगे। साथ ही, यह ध्यान में रखते हुए कि इस दुनिया के क्षेत्र में छोटे-छोटे सत्य परलोक में बड़े-बड़े वृक्ष बनेंगे, यह जहरीला बीज जो अविश्वास है, ज़क्कुम के वृक्ष के उगने का पूर्वाभास देता है, यह कहते हुए: "मैं इसका मूल हूँ। जो अभागे मुझे अपने हृदय में रखते हैं, उनके लिए मेरा फल ज़क्कूम के उस कड़वे वृक्ष का एक निजी नमूना है।''

चूँकि अविश्वास बहुत से अधिकारों का उल्लंघन है, इसलिए यह निश्चित रूप से एक अनंत रूप से बुरा अपराध है जो अनंत दंड का पात्र होगा। मानवीय न्याय पंद्रह वर्ष के कारावास की सजा को उचित मानता है - लगभग आठ मिलियन मिनट - एक मिनट या उससे कम समय में की गई हत्या के लिए; मानवीय न्याय ऐसी सजा को सार्वजनिक हित और पूरे समाज की भलाई के अनुरूप मानता है। इसलिए, चूँकि पूर्ण अविश्वास का एक उदाहरण एक हजार हत्याओं के बराबर है-

एक मिनट के पूर्ण अविश्वास के लिए लगभग आठ अरब मिनट तक यातनाएँ सहना न्याय के उस नियम के अनुरूप है। जो व्यक्ति अपने जीवन का एक वर्ष अविश्वास में बिताता है, वह अनगिनत अरबों मिनट तक चलने वाली सज़ा का हकदार है, इस प्रकार आयत का अर्थ प्रकट होता है: वे हमेशा के लिए उसमें रहेंगे (4:169; 33:65)।

बुद्धिमानीपूर्ण कुरान में स्वर्ग और नरक के चमत्कारी वर्णन तथा रिसाले-ए-नूर में उनके अस्तित्व के प्रमाण , जो उससे निकलता है और उसकी व्याख्या करता है, के कारण और अधिक स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं रह जाती।

कुरान की अनेक आयतें जैसे:

> वे (समझदार लोग) आकाश और धरती की रचना पर विचार करते हैं (और प्रार्थना करते हैं): "हमारे रब! तूने इस (ब्रह्मांड) को अकारथ नहीं बनाया। तू महिमावान है, अतः हमें आग की यातना से बचा!" (3:191)

> "हमारे रब! हमसे जहन्नम की यातना दूर कर दे। उसकी यातना तो निरंतर पीड़ा है। निश्चय ही वह अंतिम स्थान और स्थायी निवास के रूप में कितनी बुरी है!" (25:65-66)

और पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) और सभी अन्य पैगंबरों और सत्य के लोगों की नरक की सजा से बचने के लिए प्रार्थना, जिसमें कहा गया है कि “हमें नरक की आग से बचाओ! हमें नरक की आग से मुक्ति दिलाओ! हमें नरक की आग से बचाओ!” - इन सब से यह स्पष्ट हो जाता है कि मानव जाति के लिए सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा यह है कि उन्हें नरक में अनंत काल तक रहने वाले विनाश से कैसे बचाया जाए। नरक एक अत्यंत महत्वपूर्ण, जबरदस्त और विस्मयकारी वास्तविकता है - जिसे कुछ लोग आंतरिक दृष्टि और आध्यात्मिक अनावरण की क्षमता से संपन्न कर पाए हैं, या इसकी अभिव्यक्तियों और छायाओं को देख पाए हैं। और इस तरह की दृष्टि ने उन सभी को भयभीत होकर चिल्लाने के लिए प्रेरित किया है, “हमें इससे बचाओ!”

ब्रह्मांड में अच्छाई और बुराई, सुख और दुख, प्रकाश और अंधकार, गर्मी और ठंड, सुंदरता और कुरूपता, तथा मार्गदर्शन और पथभ्रष्टता का टकराव, सह-अस्तित्व और अंतर्संबंध एक अत्यंत महत्वपूर्ण उद्देश्य के लिए हैं और वे ज्ञान से भरे हुए हैं। यदि बुराई न हो, तो अच्छाई का अस्तित्व अविभाज्य होगा। यदि दर्द न हो, तो सुख का कोई अर्थ नहीं होगा। अंधकार के बिना प्रकाश का कोई महत्व नहीं होगा और गर्मी की विभिन्न डिग्री केवल ठंड के अस्तित्व के माध्यम से ही महसूस की जाती हैं। कुरूपता के माध्यम से, सुंदरता का एक सत्य एक हजार सत्य बन जाता है, और सुंदरता की हजारों अलग-अलग डिग्री अस्तित्व में आती हैं। यदि नर्क न हो, तो स्वर्ग के कई सुख छिपे रहेंगे।

इन उदाहरणों से हम देखते हैं कि एक तरह से हर चीज़ अपने विपरीत के ज़रिए जानी जाती है; किसी एक चीज़ में निहित एक सत्य कई अंकुर पैदा करता है और कई सत्य बन जाता है। चूँकि ये आपस में मिले हुए प्राणी इस क्षणभंगुर निवास से शाश्वत स्थायित्व के निवास में प्रवाहित होते हैं, निश्चित रूप से, जैसे अच्छाई, आनंद, प्रकाश, सुंदरता और विश्वास जैसी चीज़ें स्वर्ग में प्रवाहित होती हैं, वैसे ही बुराई, दर्द, अंधकार, कुरूपता और अविश्वास जैसी हानिकारक चीज़ें नर्क में प्रवाहित होती हैं। इस निरंतर उत्तेजित ब्रह्मांड की बाढ़ इन दो झीलों में खाली हो जाती है। हम यहाँ इस चर्चा को समाप्त करते हैं, पाठकों को उनतीसवें वचन के अंत में सूक्ष्म और सार्थक बिंदुओं और मामलों का संदर्भ देते हैं।

जोसेफ स्कूल में अपने साथी छात्रों से मैं यह कहना चाहूँगा: अगर हम अपनी सांसारिक कैद का फ़ायदा अच्छे कामों के लिए उठाएँ और जैसे-जैसे हम उन कई पापों से बच जाते हैं जिन्हें यहाँ करना संभव नहीं है, अपने पिछले पापों का पश्चाताप करें और अपने अनिवार्य धार्मिक कर्तव्यों का पालन करें, हम अपनी जेल की ज़िंदगी के हर घंटे को पूरे दिन की इबादत के बराबर बना पाएँगे। अगर हम ऐसा कर सकते हैं, तो हमारी कैद उस भयानक शाश्वत कैद से बचने का सबसे अच्छा अवसर होगा; यह उस रोशनी से भरे स्वर्ग के दरवाज़े की हमारी कुंजी होगी। लेकिन अगर हम इस अवसर को चूक जाते हैं, तो हमारा परलोक दुखों से भर जाएगा, ठीक वैसे ही जैसे यह दुनिया दुखों से भरी है, और हमें वह सज़ा मिलेगी जो इस आयत में बताई गई है: वह (इस तरह) इस दुनिया और आख़िरत दोनों का नुकसान उठाता है (22:11)।

“परमेश्वर सर्व-महान है” का पुनरुत्थान से सम्बन्ध

यह भाग बलिदान के पर्व के दौरान लिखा जा रहा था।
बलिदान के इन पवित्र दिनों में, तीन सौ मिलियन (अब एक बिलियन से ज़्यादा) लोग एक स्वर में घोषणा करते हैं: "ईश्वर सर्व-महान है! ईश्वर सर्व-महान है! ईश्वर सर्व-महान है!" ऐसा लगता है मानो धरती के साथी ग्रह आकाश में पवित्र शब्द सुन रहे हों कि ईश्वर सर्व-महान है! इसके अलावा, 'अराफ़ात की पहाड़ी पर, हज़ारों (अब लाखों) तीर्थयात्री एक स्वर में घोषणा करते हैं कि ईश्वर सर्व-महान है!

यह वही घोषणा है जो ईश्वर के दूत और उनके साथियों ने चौदह सौ साल पहले की थी, और यह ईश्वर की महान उपाधियों पृथ्वी के स्वामी और आकाश के स्वामी के माध्यम से ईश्वरीय प्रभुत्व की सार्वभौमिक अभिव्यक्ति के प्रति व्यापक, सार्वभौमिक पूजा के रूप में एक प्रतिक्रिया है। मैं यह सब कल्पना करने में सक्षम था और इसके बारे में आश्वस्त हो गया।

फिर मैंने सोचा कि क्या इस पवित्र वाक्यांश का पुनरुत्थान के प्रश्न से कोई संबंध है जिस पर हम चर्चा कर रहे हैं। अचानक मेरे मन में ख्याल आया कि इस पवित्र वाक्यांश के साथ-साथ इसी तरह के अन्य वाक्यांश भी हैं

और इस्लामी आस्था के प्रतीक जैसे कि ईश्वर के अलावा कोई पूज्य नहीं है; सभी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए हैं! और ईश्वर महिमावान है!, जिन्हें "स्थायी अच्छे कार्य" के रूप में संदर्भित किया जाता है, एक विशेष और सार्वभौमिक दोनों तरह से इसे याद दिलाते हैं और इसकी प्राप्ति का संकेत देते हैं।

उदाहरण के लिए, वाक्यांश ईश्वर महान है! का अर्थ एक तरह से यह है कि ईश्वर की शक्ति और ज्ञान हर चीज से महान है: कुछ भी उसके ज्ञान या उसकी शक्ति के नियंत्रण और अधिकार से बच नहीं सकता। वे उन चीजों से असीम रूप से महान हैं जिनसे हम सबसे अधिक डरते हैं। इसका मतलब यह है कि उनके पास उन चीजों को पूरा करने की पूर्ण क्षमता है जो पुनरुत्थान लाने, हमें अस्तित्वहीनता से बचाने और शाश्वत खुशी प्रदान करने से कहीं अधिक महान हैं। वे ऐसी चीजें करने में सक्षम हैं जिन्हें हम अजीब, अविश्वसनीय या यहां तक कि अकल्पनीय भी मान सकते हैं। इस कारण से, जैसा कि आयत में स्पष्ट रूप से कहा गया है: आपकी रचना और आपका पुनरुत्थान एक आत्मा के निर्माण (रचना और पुनरुत्थान) के समान है (31:28), मानव जाति का पुनरुत्थान और उनका पुनरुत्थान के स्थान पर एक साथ इकट्ठा होना उस शक्ति के लिए उतना ही आसान है जितना कि एक आत्मा का निर्माण। यह इस सत्य के संबंध में है कि, जब गंभीर आपदाओं का सामना करना पड़ता है या महत्वपूर्ण उपक्रम करने का प्रयास करते हैं, तो सभी मुसलमान कहते हैं: "ईश्वर महान है! ईश्वर महान है!" इसे अपने लिए सांत्वना, शक्ति और समर्थन का स्रोत बना रहे हैं।

जैसा कि नौवें वचन में बताया गया था, वाक्यांश ईश्वर सर्व-महान है!, ईश्वर सर्व-महिमावान है! और सभी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए हैं! विहित प्रार्थनाओं के बीज और सारांश बनाते हैं - सभी पूजाओं का चरमोत्कर्ष -
और इन प्रार्थनाओं के अर्थ पर जोर देने और उनमें किसी भी दोष की भरपाई करने के लिए, उन्हें प्रार्थनाओं के दौरान और बाद में दोनों ही तरह से पढ़ा जाता है। वे तीन सर्वोच्च सत्यों की ओर भी इशारा करते हैं और हमारे मन में उठने वाले उन सवालों के शक्तिशाली जवाब देते हैं जो ब्रह्मांड में हम जो अजीब, उत्कृष्ट और असाधारण चीजें देखते हैं, उन्हें देखकर हम जो विस्मय, खुशी और विस्मय महसूस करते हैं, उससे उत्पन्न होते हैं - ऐसी चीजें जो हमें आश्चर्य से भर देती हैं और हमें उनके विस्मय और भव्यता के कारण धन्यवाद देने के लिए प्रेरित करती हैं। इसके अलावा, जैसा कि सोलहवें वचन के अंत में उल्लेख किया गया है, एक निजी सैनिक किसी उत्सव में फील्ड मार्शल के साथ राजा की उपस्थिति में प्रवेश कर सकता है और उसे सीधे जान सकता है; हालाँकि, अन्य समय में, वह उसे केवल अपने तत्काल कमांडर के माध्यम से जानता है। इसी तरह, कुछ हद तक संतों की तरह, हज करने वाला व्यक्ति ईश्वर को उसकी उपाधियों पृथ्वी के भगवान और सभी दुनियाओं के भगवान के माध्यम से जानना शुरू कर देता है । जैसे-जैसे ईश्वरीय भव्यता की अभिव्यक्तियों के स्तर किसी व्यक्ति के दिल में खुलते हैं, वैसे-वैसे वाक्यांश ईश्वर सर्व-महान है! वे उन सभी आश्चर्यजनक प्रश्नों का उत्तर देते हैं जो हमें अभिभूत कर देते हैं

आत्मा। इसके अलावा, जैसा कि तेरहवीं झलक के अंत में समझाया गया था, वाक्यांश ईश्वर सर्व-महान है! शैतान की सबसे चालाक साज़िशों को सबसे प्रभावी उत्तर प्रदान करता है, उन्हें जड़ से काट देता है; इसी तरह यह परलोक के बारे में हमारे द्वारा पूछे गए प्रश्न का भी सबसे संक्षिप्त लेकिन शक्तिशाली उत्तर देता है।

वाक्यांश "सारी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए है" भी पुनरुत्थान का सुझाव देता है और इसकी मांग करता है। यह हमें बताता है: "आखिरत के बिना, मैं वस्तुतः अर्थहीन हो जाऊंगा। क्योंकि इस वाक्यांश से मेरा मतलब यह है: अनंत काल से लेकर अनंत काल तक की सभी प्रशंसा और धन्यवाद ईश्वर के ही हैं, चाहे उन्हें किसने और किसको अर्पित किया हो। यह केवल शाश्वत खुशी का वादा है - सर्वोच्च उदारता - जो वास्तव में उदारता को प्रचुर बनाती है और सभी सचेत प्राणियों को अस्तित्वहीनता की स्थायी आपदा से बचाती है। केवल शाश्वत खुशी में ही मेरा अस्तित्व सही अर्थ पा सकता है।"

हर आस्तिक द्वारा प्रतिदिन कम से कम एक सौ पचास बार पवित्र प्रार्थना के बाद किया जाने वाला 'सभी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए हैं! ' का पाठ न केवल अपने आप में एक पूजा का कार्य है, बल्कि यह प्रशंसा और धन्यवाद की अभिव्यक्ति भी है जो पूर्व-अनंत काल से लेकर बाद के अनंत काल तक फैली हुई है: यह केवल स्वर्ग और शाश्वत सुख के लिए अग्रिम मूल्य और तत्काल शुल्क हो सकता है। उनके माध्यम से की जाने वाली प्रशंसा और धन्यवाद इस दुनिया की क्षणभंगुर कृपाओं तक सीमित नहीं हो सकती, जो क्षणभंगुरता के दर्द से ग्रसित है; लोग इन्हें सही मायने में शाश्वत कृपाओं की प्राप्ति के साधन के रूप में देखते हैं।

जहाँ तक पवित्र वाक्यांश का सवाल है, सर्व-महिमावान ईश्वर है!, जो यह घोषित करता है कि ईश्वर साझेदारों, दोषों, कमियों, अन्याय, नपुंसकता, निर्दयता, आवश्यकता या धोखे से ऊपर है - वास्तव में, कोई भी नकारात्मक विशेषता जो उसकी पूर्ण पूर्णता, अनुग्रह, सौंदर्य और महिमा के विपरीत है - यह परलोक और उसके स्वर्ग की शाश्वत खुशी की ओर भी इशारा करता है, जो उसकी कृपा, सौंदर्य और महिमा की महिमा और उसकी संप्रभुता की पूर्णता का साधन है। क्योंकि, जैसा कि पहले बताया जा चुका है, यदि कोई शाश्वत खुशी नहीं होती, तो उसकी संप्रभुता और उसकी पूर्णता, उसकी महिमा, अनुग्रह, सौंदर्य और दया दोष और दोष से कलंकित हो जाती।

इन तीन पवित्र वाक्यांशों की तरह, ईश्वर के नाम पर; ईश्वर के अलावा कोई पूज्य नहीं है और इसी तरह के अन्य कथन सभी आस्था के स्तंभों के बीज हैं: वे विश्वास के स्तंभों और कुरान की सच्चाईयों दोनों के सार हैं। पाँच दैनिक प्रार्थनाओं के बीज होने के अलावा, तीन वाक्यांश

ऊपर वर्णित ये पंक्तियाँ कुरान के बीज भी हैं, जो अनेक चमकदार सूरों की शुरुआत में चमकीले रत्नों की तरह चमकते हैं। ये रिसाले-ए-नूर के सच्चे स्रोत और आधार भी हैं , जिसके कई हिस्से मेरे दिमाग में तब बने जब मैंने इन वाक्यों को विहित प्रार्थनाओं के बाद पढ़ा; ये इसकी सच्चाईयों के बीज हैं। साथ ही, पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की पूजा के दृष्टिकोण से और उनके संदेशवाहकत्व में शामिल संतत्व के दृष्टिकोण से, ये वाक्य "मुहम्मद मार्ग" के नियमित पाठ हैं। इस प्रकार, इन्हें पाँच दैनिक प्रार्थनाओं में से प्रत्येक के बाद करोड़ों विश्वासियों द्वारा दोहराया जाता है, जैसे कि वे स्मरण का एक विशाल चक्र बना रहे हों। अपने हाथों में अपनी प्रार्थना की माला लेकर वे घोषणा करते हैं कि अल्लाह महिमावान है! तैंतीस बार, सभी प्रशंसा और कृतज्ञता अल्लाह के लिए है! तैंतीस बार, और अल्लाह महान है! तैंतीस बार।

अब आप निश्चित रूप से समझ गए होंगे कि इस तरह की तिलावत कितनी पुण्यकारी और सवाबपूर्ण है, और कैसे, जैसा कि ऊपर बताया गया है, वे कुरान, विश्वास और पवित्र प्रार्थनाओं के अंश और बीज हैं।

जिस प्रकार इस ग्रंथ के आरंभ में चर्चित प्रथम विषय ने पांच दैनिक विहित प्रार्थनाओं के संबंध में एक सुखद शिक्षा प्रदान की, उसी प्रकार यह अंतिम विषय भी प्रार्थनाओं के बाद नियमित पाठ के संबंध में एक महत्वपूर्ण शिक्षा प्रदान करता है।

परमेश्वर के उपकारों के लिए उसकी स्तुति हो!

तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह, तू ही सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

नौवां मामला

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

रसूल उस चीज़ पर ईमान लाते हैं जो उनके रब की ओर से उन पर उतरी है और ईमान वाले भी ईमान लाते हैं। हर एक अल्लाह, उसके फ़रिश्तों, उसकी किताबों और उसके रसूलों पर ईमान लाता है। “हम उसके रसूलों में से किसी के बीच कोई भेद नहीं करते।” (आयत के अंत तक) (2:285)

एक विस्मयकारी प्रश्न और एक विशाल ईश्वरीय कृपा के प्रकट होने से उत्पन्न मन की स्थिति ने मुझे इस व्यापक, उच्च और उत्कृष्ट श्लोक के विषय में एक लंबी, सार्वभौमिक बात समझाने के लिए प्रेरित किया है।

यह पूछा गया: जबकि ईश्वर और परलोक में विश्वास, सूर्य की तरह, अविश्वास के सभी अंधकार को दूर कर देता है, ऐसा क्यों है कि यदि कोई व्यक्ति विश्वास के सत्यों में से किसी एक को अस्वीकार करता है, तो उसे अविश्वासी क्यों माना जाता है? यदि वे उस विशेष सत्य को स्वीकार नहीं करते हैं, तो उन्हें मुसलमान क्यों नहीं माना जाता है? इसके अलावा, ऐसा क्यों है कि जो व्यक्ति विश्वास के स्तंभों और सत्यों में से किसी एक को अस्वीकार करता है, उसे धर्मत्यागी माना जाता है, जो पूर्ण अविश्वास में गिर गया है और जिसने इस्लाम के समुदाय को छोड़ दिया है? निश्चित रूप से अन्य स्तंभों में उनका विश्वास उन्हें पूर्ण अविश्वास से बचाएगा?

उत्तर: विश्वास एक एकल, एकीकृत सत्य है जो छह स्तंभों से बना है: इसे विभाजित नहीं किया जा सकता। यह कुछ सार्वभौमिक है जिसे भागों में विभाजित नहीं किया जा सकता: यह एक अविभाज्य संपूर्ण है। क्योंकि विश्वास का प्रत्येक स्तंभ अन्य स्तंभों को उन प्रमाणों के साथ सिद्ध और स्थापित करता है जो इसे सिद्ध और स्थापित करते हैं।

वे सभी एक दूसरे के सर्वोच्च शक्तिशाली प्रमाण हैं। चूँकि ऐसा है, इसलिए एक अमान्य धारणा जो सभी स्तंभों को उनके सभी प्रमाणों के साथ हिला नहीं सकती, वास्तव में उन स्तंभों में से किसी एक या यहाँ तक कि एक भी सत्य को अमान्य नहीं कर सकती; यह उन्हें अस्वीकार नहीं कर सकती। कोई व्यक्ति केवल अस्वीकृति के आवरण के नीचे उद्देश्यपूर्ण रूप से अपनी आँखें बंद कर सकता है - पूर्ण अस्वीकृति नहीं - और एक प्रकार का अविश्वास कर सकता है जो सरासर हठ से उपजा है। हालाँकि, वे धीरे-धीरे पूर्ण अविश्वास में पड़ जाएँगे: परिणामस्वरूप, उनकी मानवता नष्ट हो जाएगी और उनके शरीर और आत्मा दोनों को नर्क में भेज दिया जाएगा। इसलिए इस संदर्भ में, ईश्वर की कृपा से, हम इस सर्वोच्च मामले को कुछ बिंदुओं में संक्षिप्त सारांश और निष्कर्ष के रूप में समझाएँगे।

पहला बिंदु: ईश्वर में विश्वास, अपने स्वयं के प्रमाणों के साथ, सभी अन्य स्तंभों और परलोक में विश्वास को स्थापित करता है, जैसा कि विश्वास के फलों के सातवें मामले में स्पष्ट रूप से दिखाया गया है। हम स्पष्ट रूप से देखते हैं कि प्रभुत्व की एक पूर्व-शाश्वत और चिरस्थायी संप्रभुता, एक शाश्वत दिव्य नियम, असीम ब्रह्मांड और उसमें मौजूद सभी चीज़ों को नियंत्रित करता है जैसे कि वह एक महल, एक शहर या एक देश हो। यह संप्रभुता पृथ्वी के गोले को संतुलित और व्यवस्थित तरीके से घुमाती है, इसे ज्ञान के असंख्य उदाहरणों के साथ बदलती है, और परमाणुओं, ग्रहों, मक्खियों और सितारों को एक साथ सुसज्जित और निर्देशित करती है जैसे कि प्रत्येक एक अनुशासित, सुव्यवस्थित सेना हो; यह उन्हें लगातार प्रशिक्षित करती है और उन्हें कार्य करने, यात्रा करने और उसकी आज्ञा और इच्छा से विभिन्न कर्तव्यों को पूरा करने के लिए प्रेरित करती है जैसे कि वे उदात्त युद्धाभ्यास या एक पूजा परेड में लगे हुए हों। तो क्या यह संभव है कि इस शाश्वत, सतत, स्थायी संप्रभुता का कोई शाश्वत स्थान या प्रकटीकरण का शाश्वत स्थान न हो, अर्थात परलोक? भगवान न करे! इसका अर्थ है सर्वशक्तिमान ईश्वर के प्रभुत्व की संप्रभुता और - जैसा कि सातवीं मत्ती में वर्णित है-

उसके अधिकांश नाम और उसके परम आवश्यक अस्तित्व के प्रमाण सभी परलोक की मांग करते हैं और इसकी गवाही देते हैं। इसलिए देखें और समझें कि विश्वास के इस स्तंभ का कितना शक्तिशाली आधार है और इस पर ऐसे विश्वास करें जैसे कि आप इसे देख सकते हैं!

और जिस तरह आख़िरत पर ईमान के बिना खुदा पर ईमान मुमकिन नहीं है, उसी तरह उसके रसूलों और किताबों पर ईमान के बिना भी यह मुमकिन नहीं है। अपनी ख़ुदियत को ज़ाहिर करने और यह दिखाने के लिए कि उसे इबादत का एकाधिकार है, अल्लाह, जो कि सर्व-पूज्य है, ने इस ब्रह्माण्ड को एक मूर्त किताब के तौर पर बनाया है जो यह साबित करती है कि इसका रचयिता हमेशा से चाहा जाने वाला है। इस किताब का हर पन्ना अपने आप में एक छोटी किताब है जो कि अर्थों से भरी हुई है और हर पंक्ति ज्ञान से भरा हुआ पन्ना है। यह किताब एक ऐसे मूर्त क़ुरआन की तरह है जो कि अनंत सृजनात्मक "आयतों" और शब्दों, बिंदुओं और अक्षरों से भरा हुआ है, जिनमें से हर एक चमत्कार है। यह एक शानदार रहमत की मस्जिद की तरह है, जिसका अंदरूनी हिस्सा अनगिनत शिलालेखों और अलंकरणों से सजा हुआ है, और जिसके हर कोने में अलग-अलग किस्म के प्राणी हैं जो अपनी प्रकृति और अपने अस्तित्व के ईश्वरीय उद्देश्यों के अनुसार इबादत में लीन हैं। तो क्या यह संभव है कि ईश्वर, जो सर्व-पूज्य है, इस तरह से ब्रह्मांड का निर्माण करे और इस विशाल पुस्तक के अर्थ सिखाने के लिए गुरुओं को न भेजे? क्या यह संभव है कि वह उस विशाल "कुरान" की आयतों की व्याख्या करने का काम टिप्पणीकारों को न सौंपे, जो दर्शाता है कि यह अनंतकाल से चाहने वाले का काम है? क्या यह संभव है कि वह इस विशाल मस्जिद में विभिन्न तरीकों से पूजा करने वाले सभी लोगों का नेतृत्व करने के लिए इमामों को नियुक्त न करे, या वह उन गुरुओं, टिप्पणीकारों और पूजा के नेताओं को आदेश - दिव्य शास्त्र या पुस्तकें - न दे? भगवान न करे, एक लाख बार!

साथ ही, सचेत प्राणियों को अपनी दया की सुंदरता, अपनी करुणा की उत्कृष्टता और अपने प्रभुत्व की पूर्णता दिखाने के लिए ताकि वह उन्हें प्रशंसा और धन्यवाद देने के लिए प्रोत्साहित कर सके, सर्व-दयालु और सर्व-उदार निर्माता ने ब्रह्मांड को एक भोज कक्ष, एक प्रदर्शनी केंद्र और भ्रमण स्थल के रूप में बनाया है, जिसमें स्वादिष्ट उपहारों और अमूल्य, अद्भुत कलाओं की अनंत किस्में व्यवस्थित हैं। तो, क्या यह संभव है कि वह भोज में इन सचेत प्राणियों से बात न करे या अपने दूतों के माध्यम से उन्हें उनके द्वारा दिए गए उपकारों के लिए धन्यवाद के अपने कर्तव्यों और उनकी दया के प्रकटीकरण और उनके द्वारा खुद को प्यार किए जाने के जवाब में उनकी पूजा के कर्तव्यों के बारे में सूचित करने में विफल न हो? भगवान न करे, एक हजार बार!

इसके अलावा, निर्माता अपनी कला से प्यार करता है और चाहता है कि लोग उससे प्यार करें। उदाहरण के लिए, जैसा कि मानव मुख द्वारा प्राप्त होने वाले हज़ारों सुखों को ध्यान में रखकर संकेत दिया गया है, वह चाहता है कि उसकी कला को प्रशंसा और स्वीकृति मिले। और इसलिए उसने ब्रह्मांड को अमूल्य कलाओं से सजाया है और पूरे ब्रह्मांड में अपनी पारलौकिक सुंदरता के निशान इस तरह से प्रदर्शित किए हैं कि यह स्पष्ट हो जाता है कि वह खुद को जाना और प्यार करना चाहता है। तो क्या यह संभव है कि ऐसा निर्माता मानवता से बात न करे, जो ब्रह्मांड में जीवित प्राणियों का कमांडर है, उन कुछ सबसे प्रतिष्ठित लोगों के माध्यम से जिन्हें उसने संदेशवाहक के रूप में भेजा है? क्या यह बिल्कुल भी संभव है कि उसकी ललित कलाओं की सराहना न की जाए और उसके नामों की असाधारण सुंदरता को महत्व न दिया जाए? क्या यह संभव है कि उसके उन कार्यों का कोई जवाब न हो जो उसे जाना और प्यार करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं? भगवान न करे, एक लाख बार!

इसके अलावा, अपने असीम उपहारों और उपहारों के माध्यम से, जो उद्देश्य, विकल्प और इच्छा को इंगित करते हैं, सर्वज्ञ वक्ता स्पष्ट रूप से और बिल्कुल सही समय पर जीवित प्राणियों द्वारा उनकी प्राकृतिक आवश्यकताओं के लिए की गई सभी प्रार्थनाओं का उत्तर देता है, साथ ही उन सभी अनुरोधों का भी जो वे अपने सहज स्वभाव की भाषाओं के माध्यम से करते हैं। तो क्या यह संभव है कि वह सबसे तुच्छ जीवित प्राणी से बात करे और उनकी सबसे तुच्छ आवश्यकताओं को संबोधित करे, फिर भी मानवजाति के आध्यात्मिक नेताओं से बात करने में विफल हो जाए या मना कर दे, जो उसकी रचनाओं में सबसे बेहतरीन हैं, जिनके पास सृष्टि का प्रबंधन करने का अधिकार है और जो पृथ्वी पर अधिकांश प्राणियों पर कमांडर के रूप में उन्हें दिए गए पद का आनंद लेते हैं? यह देखते हुए कि वह अन्य सभी जीवित प्राणियों से बात करता है, क्या उसे मनुष्यों से बात नहीं करनी चाहिए और उन्हें अपने आदेश नहीं भेजने चाहिए - दिव्य शास्त्र या पुस्तकें? भगवान न करे कि ऐसा हो!

इस प्रकार, अपनी निश्चितता और असंख्य प्रमाणों के साथ, ईश्वर में विश्वास सिद्ध करता है
और पैगम्बरों और पवित्र पुस्तकों या धर्मग्रंथों में विश्वास स्थापित करता है।

उस व्यक्ति के जवाब में जिसने खुद को अपनी सभी कलाकृतियों के माध्यम से जाना और प्यार किया, और जो चाहता है और आदेश देता है कि उसका धन्यवाद किया जाए, पैगंबर मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, उसे जाना और उसे जाना, उससे प्यार किया और उसे प्यार किया, उसका धन्यवाद किया और दूसरों को भी उसका धन्यवाद करने के लिए प्रेरित किया; उन्होंने ये सब कुरान की सच्चाई के माध्यम से सबसे सही तरीके से किया, जिससे ब्रह्मांड गूंज उठता है। साथ ही, "सर्व-महिमावान ईश्वर है!" "सभी प्रशंसा और आभार ईश्वर के लिए हैं!" और "ईश्वर सर्व-महान है!" की उनकी घोषणाओं के साथ पैगंबर मुहम्मद ने धरती को गूंजने दिया, आकाश में गूंजने लगा और भूमि और समुद्र को परमानंद की ऊंचाइयों पर पहुंचा दिया। इसके अलावा, चौदह शताब्दियों तक पैगंबर मुहम्मद

दुनिया के आधे हिस्से या एक चौथाई मानव जाति का नेतृत्व किया है, सृष्टिकर्ता के प्रभुत्व की सभी अभिव्यक्तियों का व्यापक, सार्वभौमिक पूजा के साथ जवाब दिया है, और कुरान के संदेशों को ब्रह्मांड में और सदियों से घोषित और सिखाकर उनके दिव्य उद्देश्यों को पूरा किया है। इस प्रकार पैगंबर मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ने मानव जाति के सम्मान, मूल्य और कर्तव्यों का प्रदर्शन किया और खुद अपने अनगिनत चमत्कारों के माध्यम से सृष्टिकर्ता द्वारा पुष्टि की गई। तो क्या यह संभव है कि पैगंबर मुहम्मद, जो ईश्वर की दृष्टि में इतने योग्य हैं, ईश्वर के प्राणियों में सबसे अच्छे, सबसे उत्कृष्ट दूत और सबसे महान संदेशवाहक नहीं होने चाहिए थे? भगवान न करे! एक लाख बार, भगवान न करे!

इस प्रकार अपने सभी प्रमाणों के साथ, “मैं गवाही देता हूं कि ईश्वर के अलावा कोई पूज्य नहीं है” की सच्चाई, “मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद ईश्वर के दूत हैं” की सच्चाई को साबित और स्थापित करती है।

इसके अलावा, क्या यह संभव है कि ब्रह्मांड का निर्माता प्राणियों को एक दूसरे से असंख्य भाषाओं में बात करने के लिए प्रेरित करे, ताकि वह उनकी बातों को समझे और सुने, लेकिन वह स्वयं चुप रहे? भगवान न करे!

इसके अलावा, क्या यह बिल्कुल भी उचित है कि वह किसी तरह के आदेश के माध्यम से ब्रह्मांड में अपने उद्देश्यों और ज्ञान के उदाहरणों की घोषणा न करे? क्या यह संभव है कि वह कुरान जैसी कोई पुस्तक न भेजे, जो ब्रह्मांड की पहेली को सुलझाती है और सभी आत्माओं द्वारा पूछे गए तीन भयानक सवालों के सही जवाब देती है, अर्थात्: "प्राणी कहाँ से आते हैं?", "वे कहाँ जा रहे हैं?", और "वे क्यों एक के बाद एक काफिले का पीछा करते हैं, थोड़ी देर के लिए रुकते हैं और फिर आगे बढ़ जाते हैं?" भगवान न करे!

चमत्कारी कुरान ने मानव इतिहास की चौदह शताब्दियों को प्रकाशित किया है। यह हर घंटे करोड़ों आदरणीय भाषाओं में प्रसारित होता है और इसे याद रखने वाले लाखों लोगों के दिलों में इसकी पवित्रता अंकित है। अपने नियमों के माध्यम से यह मानव जाति के एक बड़े हिस्से पर शासन करता है, उनकी आत्माओं, मन, हृदय और मन को शिक्षित, शुद्ध और निर्देशित करता है। जैसा कि रिसाले -ए-नूर के कुछ हिस्सों में प्रदर्शित किया गया है, कुरान में चमत्कारीता के चालीस पहलू हैं। उन्नीसवें पत्र में यह स्पष्ट किया गया है कि इनमें से प्रत्येक पहलू के माध्यम से कुरान मानव जाति के एक अलग वर्ग या स्तर को संबोधित करता है। इसके अलावा, पैगंबर मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, जो स्वयं चमत्कारी कुरान का चमत्कार हैं, अपने असंख्य चमत्कारों के माध्यम से निर्णायक रूप से साबित करते हैं कि कुरान ईश्वर का वचन है। तो क्या यह संभव है?

क्या यह संभव है कि यह चमत्कारी कुरान शाश्वत वक्ता और स्थायी निर्माता का वचन और आदेश न हो? भगवान न करे! एक लाख बार, भगवान न करे!

अर्थात्, अपने सभी प्रमाणों के साथ, ईश्वर में विश्वास सिद्ध करता है और स्थापित करता है कि कुरान ईश्वर का वचन है।

इसके अलावा, क्या यह संभव है कि सर्व-प्रतापी शासक, जो निरंतर पृथ्वी को जीवित प्राणियों से भरता और खाली करता है और हमारे इस संसार को चेतन प्राणियों से आबाद करता है ताकि वह स्वयं को ज्ञात, पूजित और महिमावान बना सके - यह संभव है कि वह आकाश और तारों को खाली और निर्जन छोड़ दे, उनके लिए उपयुक्त निवासियों का निर्माण किए बिना और उन्हें इन ऊँचे महलों में बसाए बिना; क्या यह संभव है कि वह अपनी सबसे विस्तृत भूमि में अपने प्रभु की संप्रभुता को सेवकों, राजसी लोगों, अधिकारियों, दूतों, लेफ्टिनेंटों, पर्यवेक्षकों, दर्शकों, उपासकों या प्रजा के बिना छोड़ दे? भगवान न करे! फ़रिश्तों की संख्या के लिए, भगवान न करे!

इसके अलावा, सर्वज्ञ शासक, सर्वज्ञ और सर्व-करुणामयी ने ब्रह्मांड को एक पुस्तक के रूप में लिखा है; वह पेड़ों की पूरी जीवन-कथा और घास और पौधों के जीवन-कर्तव्यों को उनके बीजों में अंकित करता है। उसने सचेत प्राणियों के जीवन को उनकी स्मृतियों में सटीक रूप से दर्ज किया है, जो सरसों के बीज जितनी छोटी हैं; वह अपने सभी प्रभुत्वों और अपनी संप्रभुता के सभी क्षेत्रों में होने वाली सभी क्रियाओं और घटनाओं को असंख्य तस्वीरों के साथ सुरक्षित रखता है। वह पूर्ण न्याय, ज्ञान और दया की अभिव्यक्ति और प्राप्ति की अनुमति देने के लिए शक्तिशाली स्वर्ग और नरक, सर्वोच्च पुल और न्याय के सर्वोच्च तराजू बनाता है, जो उसके प्रभुत्व की सबसे महत्वपूर्ण नींव में से हैं।

क्या यह संभव है कि जो यह सब करता है, वह ब्रह्माण्ड से संबंधित मानव जाति के सभी कार्यों को दर्ज न करे? क्या यह संभव है कि वह उनके कर्मों को दर्ज न करे ताकि उन्हें पुरस्कृत या दंडित किया जा सके, न ही उनके अच्छे और बुरे कर्मों को ईश्वरीय नियति की पट्टियों पर लिखे?

भगवान न करे! ईश्वरीय निर्धारण या नियति की सर्वोच्च पट्टिका पर अंकित अक्षरों की संख्या, भगवान न करे!

इस प्रकार ईश्वर में विश्वास की सच्चाई, देवदूतों में विश्वास और ईश्वरीय नियति या नियति में विश्वास दोनों की सच्चाई को साबित और स्थापित करती है। विश्वास के स्तंभ एक दूसरे को उसी तरह से साबित और स्थापित करते हैं जैसे सूरज दिन के उजाले को दिखाता है और दिन का उजाला सूरज को दिखाता है।

दूसरा बिन्दु: ईश्वर द्वारा उतारी गई पुस्तकों और पैगम्बरों - विशेषकर कुरान और पैगम्बर मुहम्मद - द्वारा किए गए सभी दावे पाँच या छह बुनियादी बिन्दुओं पर आधारित हैं, जिन्हें वे लगातार सिखाने और साबित करने का प्रयास करते रहे हैं। उनकी पैगम्बरी और सत्यता की गवाही देने वाले सभी प्रमाण और सबूत इन बुनियादी बातों से संबंधित हैं और उनकी सत्यता की पुष्टि करते हैं।

ये मूलभूत बातें हैं ईश्वर में विश्वास, परलोक में विश्वास, तथा आस्था के अन्य स्तंभों में विश्वास।

कहने का मतलब यह है कि विश्वास के छह स्तंभों को अलग करना संभव नहीं है। हर एक स्तंभ बाकी को साबित करता है और वे सभी एक दूसरे की आवश्यकता और आवश्यकता को पूरा करते हैं। छह स्तंभ मिलकर एक पूरे का निर्माण करते हैं जो बिल्कुल अविभाज्य है। एक शक्तिशाली पेड़ पर विचार करें - जैसे कि स्वर्ग का तूबा पेड़ - जिसकी जड़ें स्वर्ग में हैं। उस शक्तिशाली पेड़ की प्रत्येक शाखा, फल और पत्ती उसके सार्वभौमिक, अटूट जीवन पर निर्भर करती है।

जो व्यक्ति उस शक्तिशाली जीवन को, जो सूर्य के समान स्पष्ट है, अस्वीकार नहीं कर सकता, वह उससे जुड़ी हुई एक भी पत्ती के जीवन को अस्वीकार नहीं कर सकता। यदि कोई उसे अस्वीकार करता है, तो वृक्ष अपनी शाखाओं, फलों और पत्तियों की संख्या के अनुसार उनका खंडन करेगा, और वह व्यक्ति चुप हो जाएगा। विश्वास, अपने छह स्तंभों के साथ, इसी के समान है।

इस मामले की शुरुआत में, मेरा इरादा छत्तीस बिंदुओं में विश्वास के छह स्तंभों को स्पष्ट करना था, प्रत्येक स्तंभ एक बिंदु में छह उप-खंडों के साथ। मेरा इरादा शुरुआत में इस भयानक प्रश्न का विस्तृत उत्तर देने का भी था, लेकिन कुछ अप्रत्याशित परिस्थितियों ने बीच में हस्तक्षेप किया। हालाँकि, मुझे लगता है कि पहला बिंदु पर्याप्त आधार प्रदान करता है, जिससे आगे स्पष्टीकरण की कोई आवश्यकता नहीं है, खासकर उन लोगों के लिए जो तीव्र बुद्धि रखते हैं।

अब तक यह पूरी तरह से समझ में आ गया होगा कि अगर कोई मुसलमान ईमान के किसी स्तंभ को नकारता है, तो वह पूरी तरह से अविश्वास में पड़ जाएगा। दूसरे धर्मों से अलग, इस्लाम अपने ईमान के स्तंभों को अतुलनीय व्यापकता के साथ स्पष्ट करता है, और ईमान के स्तंभ एक दूसरे से अटूट रूप से जुड़े हुए हैं। एक मुसलमान जो पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) को नहीं पहचानता और उनकी पुष्टि नहीं करता, वह ईश्वर को उनके गुणों के साथ पहचानने में भी विफल रहेगा और परलोक को नहीं जान पाएगा। एक मुसलमान का ईमान शक्तिशाली और अडिग प्रमाणों पर आधारित होता है, जो इतने असंख्य होते हैं कि इनकार करने का कोई बहाना नहीं होता: ये प्रमाण मानवीय तर्क को उन्हें स्वीकार करने के लिए मजबूर करते हैं।

तीसरा बिंदु: मैंने एक बार कहा था “सभी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए है!”, और एक ऐसे दिव्य उपहार की तलाश की जो इसके असीम व्यापक अर्थ के बराबर हो। अचानक मेरे दिमाग में यह वाक्य आया:

"ईश्वर में विश्वास के उपहार के लिए, उसके आवश्यक अस्तित्व, उसकी एकता, उसके गुणों और नामों के लिए, पूर्व-अनंत काल से लेकर अनंत काल तक उसके नामों की अभिव्यक्तियों की संख्या के लिए ईश्वर को सभी धन्यवाद।"

मैंने देखा कि यह पूरी तरह से उचित था।

दसवाँ मामला: एमिरदाग का फूल [3]
कुरान में स्पष्ट दोहराव

कुरान में स्पष्ट दोहराव के बारे में उठाई गई आपत्तियों का निम्नलिखित उत्तर प्रेरक है।

मेरे प्यारे, वफादार भाइयों (और बहनों)!

मेरी व्यथित स्थिति के कारण भले ही यह भ्रमित और खराब तरीके से व्यक्त किया गया हो, लेकिन निम्नलिखित कुरान की चमत्कारिकता के एक पहलू पर एक चिंतन है। हालाँकि मुझे इसे स्पष्ट रूप से व्यक्त करना मुश्किल लगता है, क्योंकि यह कुरान से संबंधित है, यह शिक्षाप्रद होगा और चिंतन की ओर ले जाएगा। इसे एक चमकीले, अमूल्य रत्न के आवरण के समान माना जा सकता है। इसलिए, चढ़ाए जा रहे रत्न पर विचार करें, न कि उसके जर्जर आवरण पर। मैंने इसे रमजान के कुछ दिनों के दौरान कुछ तेज़ी और संक्षिप्तता के साथ लिखा था, जब मैं कुपोषित और बीमार था, इसलिए कृपया इसमें जो भी कमियाँ हों, उन्हें क्षमा करें।

मेरे प्यारे, वफादार भाइयों (और बहनों)!

कुरान सबसे पहले शाश्वत वक्ता के सार्वभौमिक प्रभुत्व के सबसे महान और सबसे व्यापक पद से निकलता है। यह सबसे पहले उस व्यक्ति के व्यापक पद को संबोधित करता है जिसने इसे मानव जाति के नाम पर, बल्कि पूरे ब्रह्मांड के लिए प्राप्त किया। इसका उद्देश्य मानवता को इसके अवतरण के समय से लेकर समय के अंत तक मार्गदर्शन करना है। इसलिए इसमें शामिल है

ब्रह्मांड के रचयिता के प्रभुत्व के बारे में पूरी तरह से सार्थक और व्यापक व्याख्याएँ, जो इस दुनिया और परलोक, धरती और आकाश और अनंत काल के प्रभु हैं, और सभी प्राणियों के प्रशासन से संबंधित दिव्य नियमों का स्पष्टीकरण। कुरान की इन और इसी तरह की अन्य विशेषताओं के कारण ही यह दिव्य प्रवचन इतना व्यापक और ऊंचा है, और इसलिए इतना समावेशी और चमत्कारी है - इतना कि इसके सबसे स्पष्ट, शाब्दिक अर्थ भी जो साधारण लोगों के सरल दिमाग को लक्षित करते हैं, जो कुरान के संबोधित करने वालों का सबसे बड़ा समूह बनाते हैं, उन लोगों को संतुष्ट करने के लिए पर्याप्त हैं

[3] अफ्योन प्रांत (पश्चिमी तुर्की) का एक जिला जहाँ सईद नूरसी कुछ समय तक रहा था। (ट्र.)

ऐसे लोग जिन्होंने समझ के उच्चतम और सबसे परिष्कृत स्तर को प्राप्त किया है। यहां तक कि इसके आख्यान भी ऐतिहासिक कहानियों का संग्रह नहीं हैं जो केवल एक निश्चित युग के लोगों को सिखाने के लिए प्रकट किए गए थे, बल्कि यह हर युग और समझ और सीखने के सभी स्तरों को संबोधित करता है और सार्वभौमिक सिद्धांतों के संग्रह के रूप में प्रकट होता है। उदाहरण के लिए, फिरौन या 'आद और समूद के लोगों को उनके पापों के लिए दी गई सज़ाओं का वर्णन करते हुए, और गलत काम करने वालों के खिलाफ़ अपनी कड़ी धमकियों के साथ, यह सभी अत्याचारियों और अपराधियों को, हमारे अपने समय के लोगों सहित, उनके अत्याचार और गलत कामों के परिणामों के बारे में चेतावनी देता है। अब्राहम और मूसा जैसे पैगंबरों की अंतिम जीत का उल्लेख करके, उन पर शांति हो, यह सभी युगों के गलत विश्वासियों को सांत्वना देता है।

चमत्कारी अभिव्यक्ति वाला कुरान अतीत को पुनर्जीवित करता है, जो कि असावधानी और गुमराही में फंसे लोगों के लिए एक अकेला और भयावह क्षेत्र, एक अंधेरा और बर्बाद कब्रिस्तान है। यह पिछली शताब्दियों और युगों को शिक्षा के जीवित पन्नों में बदल देता है, एक अद्भुत, सजीव क्षेत्र में जो कि सीधे प्रभु के नियंत्रण में है - एक ऐसा क्षेत्र जिसका हमारे साथ महत्वपूर्ण संबंध है। हमें उन समयों में वापस ले जाकर या उन्हें सिनेमा के पर्दे पर दिखाए गए दृश्यों की तरह हमारे सामने प्रदर्शित करके, कुरान हमें अपनी अनूठी और सबसे बेहतरीन और चमत्कारी शैली में शिक्षा देता है। उसी तरह, यह ब्रह्मांड की वास्तविक प्रकृति को दर्शाता है। गुमराह लोग इसे एक अंतहीन, बेजान, एकाकी और भयावह जगह के रूप में देखते हैं, जो क्षय और अलगाव से भरा हुआ है, जबकि कुरान इसे शाश्वत रूप से चाहने वाले की एक किताब, दयालु का शहर और एक ऐसा स्थान दिखाता है जहाँ प्रभु की कला के कार्य प्रदर्शित होते हैं। इसमें निर्जीव वस्तुएं सजीव प्राणी बन जाती हैं जो अपने विशेष कर्तव्यों का पालन करती हैं और संचार की एक आदर्श प्रणाली के अंतर्गत एक दूसरे की सहायता करती हैं।

यह सबसे शानदार कुरान, जो फरिश्तों, जिन्नों और इंसानों को ईश्वरीय ज्ञान में सबसे सुखद तरीके से ज्ञान और शिक्षा देता है, में पवित्र विशिष्टताएँ हैं जो ऐसी हैं कि इसका एक अक्षर कभी दस पुण्य, कभी सौ और कभी हज़ार या बल्कि हज़ारों पुण्य लाता है। अगर सभी जिन्न और इंसान अपनी प्रतिभाएँ एक साथ मिला लें, तो वे किसी भी तरह से कुरान की बराबरी करने वाली कोई चीज़ नहीं बना पाएँगे। यह सभी लोगों और पूरे ब्रह्मांड से सबसे उचित तरीके से बात करता है; यह लाखों लोगों के दिमाग पर लगातार और बड़ी आसानी से अंकित है; इसे जितनी बार भी पढ़ा जाए, यह अपने श्रोताओं को कभी बोर या थका नहीं करता; इसके समान वाक्यों और वाक्यांशों के बावजूद जो कुछ लोगों को भ्रमित कर सकते हैं, बच्चे इसे आसानी से याद कर सकते हैं; यह बीमार और मरने वालों को खुशी और शांति देता है, जिनके लिए कुछ मानवीय शब्द सुनना भी

बहुत तकलीफ़ होती है। क़ुरआन अपने विद्यार्थियों को इस दुनिया और परलोक दोनों में सुख-शांति प्राप्त कराता है।

कुरान ने इसे लिखने वाले की अनपढ़ प्रकृति को ध्यान में रखते हुए, तथा दिखावे या दिखावे के किसी भी संकेत के बिना, अपनी शैलीगत प्रवाह और शुद्धता को बनाए रखा है, जबकि आम जनता की समझ के स्तर को कभी नज़रअंदाज़ नहीं किया है। साथ ही यह लोगों को ईश्वरीय शक्ति के असाधारण चमत्कारों और ईश्वरीय ज्ञान के सार्थक उदाहरणों के बारे में बताता है, जो आकाश और पृथ्वी में होने वाली सभी घटनाओं का आधार हैं, जिससे मार्गदर्शन की पुस्तक के रूप में इसकी स्थिति की कृपा के भीतर चमत्कारीता का एक बढ़िया पहलू प्रदर्शित होता है।

कुरान यह दर्शाता है कि यह प्रार्थना और आह्वान की पुस्तक है, शाश्वत मोक्ष का आह्वान है, तथा ईश्वर की एकता की घोषणा है, जिनमें से सभी को पुनरावृत्ति की आवश्यकता है। परिणामस्वरूप यह इस या उस वाक्य या कहानी को दोहराता है, तथा संबोधित करने वालों के कई अलग-अलग समूहों या श्रेणियों को कई अर्थ देता है, तथा अपने पाठकों को सूचित करता है कि इसका रचयिता छोटी से छोटी और सबसे महत्वहीन चीजों और घटनाओं के साथ भी दया का व्यवहार करता है, तथा उन्हें अपनी इच्छा और नियंत्रण के क्षेत्र में शामिल करता है। इस्लाम की स्थापना और उसके कानूनों के विधान में पैगंबर के साथियों से जुड़ी सबसे खास या दिखने में तुच्छ घटनाओं पर भी ध्यान देकर, यह सार्वभौमिक सिद्धांत प्रस्तुत करता है और सुझाव देता है कि वे घटनाएँ ऐसे काम करती हैं जैसे कि वे बीज हों, जो इस्लाम की स्थापना और उसके कानून में कई महत्वपूर्ण फल पैदा करने के लिए नियत हों। इस तरह, यह अपनी चमत्कारिकता का एक और पहलू प्रदर्शित करता है।

जब ज़रूरतें बार-बार व्यक्त की जाती हैं, तो उत्तरों को भी उसी के अनुसार दोहराया जाना चाहिए। इसलिए, कुरान अपने अवतरण के तेईस वर्षों के दौरान बार-बार पूछे गए कई सवालों का जवाब देता है और समझ और ज्ञान के सभी स्तरों को संतुष्ट करने का प्रयास करता है। यह साबित करने के लिए कि सभी चीजें, छोटे कणों से लेकर विशाल सितारों तक, एक ही द्वारा नियंत्रित हैं और वह प्रलय के दिन इसे एक नया रूप देने के लिए ब्रह्मांड को नष्ट कर देगा, इसे परलोक के असाधारण क्षेत्र से बदल देगा; दिमाग में एक शक्तिशाली और सर्वव्यापी क्रांति स्थापित करने के लिए, जो ब्रह्मांड के निर्माण के उद्देश्यों और परिणामों के लिए, मानव अन्याय और गलत कामों के सामने ईश्वरीय क्रोध और प्रकोप का प्रदर्शन करेगा, जो ब्रह्मांड, पृथ्वी और आकाश को क्रोध से भर देता है, कुरान कुछ आयतों और वाक्यांशों को दोहराता है जो असंख्य प्रमाणों के निष्कर्ष हैं और जो हजारों निष्कर्षों के समान वजनदार हैं। ऐसे मामलों में, दोहराव एक अत्यंत शक्तिशाली पहलू है

कुरान की चमत्कारिकता, इसकी वाक्पटुता और इसकी भाषा की सुंदरता का एक अत्यंत उत्कृष्ट उदाहरण है जो विषय-वस्तु की आवश्यकताओं के अनुरूप है।

उदाहरण के लिए, जैसा कि चौदहवीं झलक और रिसाले-ए-नूर के पहले शब्द में समझाया गया है, वाक्यांश ईश्वर के नाम पर, जो अत्यंत दयालु, अत्यंत दयावान है, जो कुरान में कुल ११४ बार आता है -

अत-तौबा को छोड़कर हर सूरा की शुरुआत में और एक बार अन-नमल नामक सूरा के बीच में - एक सत्य है जो धरती को ईश्वर के सर्वोच्च सिंहासन के साथ-साथ ब्रह्मांड के सभी क्षेत्रों से जोड़ता है, इस प्रकार ब्रह्मांड को प्रकाशित करता है। चूंकि हर किसी को इसकी निरंतर आवश्यकता होती है, इसलिए इसे लाखों बार दोहराना उचित है। हमें इसकी न केवल हर दिन आवश्यकता होती है, उसी तरह जैसे हमें रोटी की आवश्यकता होती है, बल्कि हर पल, उसी तरह जैसे हमें ऑक्सीजन और प्रकाश की आवश्यकता होती है।

दूसरा उदाहरण है " तेरा रब वह है जो महिमावान, प्रभुत्वशाली, दयावान है", जिसमें हज़ारों सत्यों की शक्ति है और जिसे सूरतुश्शूअरा में आठ बार दोहराया गया है। यह पैगम्बरों की अंतिम विजय और मुक्ति तथा उनके विद्रोही लोगों की बर्बादी के बारे में बताता है। यदि, ब्रह्मांड की रचना के उद्देश्यों या परिणामों के लिए, ईश्वर की सार्वभौमिक प्रभुता के नाम पर, और लोगों को यह सिखाने के लिए कि रब की महिमा और गरिमा के लिए अपराधियों का विनाश और उसकी दया के लिए पैगम्बरों की विजय और मुक्ति की आवश्यकता है, तो इस वाक्य को हज़ारों बार दोहराया जाए, तब भी इसकी आवश्यकता होगी। इस प्रकार यह कुरान की वाक्पटुता का एक संक्षिप्त और चमत्कारी पहलू है।

और ये आयतें: तुम दोनों अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों से इनकार करोगे? (55:13) और उस दिन इनकार करनेवालों के लिए अफ़सोस है (77:15), जो अपनी-अपनी सूरों में बार-बार दोहराई गई हैं , वे युगों-युगों से जिन्नों और इंसानों के सामने और आकाशों और धरती में उन सभी लोगों की कृतघ्नता, अविश्वास और अन्याय के बारे में दोहराई गई हैं, जिनके अधर्म के कारण आकाश और धरती का क्रोध भड़कता है, जो सृष्टि के परिणामों को बिगाड़ते हैं और ईश्वरीय प्रभु की महिमा के सामने अवमानना और इनकार करते हैं। वे सभी प्राणियों के अधिकारों के हनन की भी निंदा करती हैं। चूँकि वे एक सार्वभौमिक शिक्षा का निर्माण करती हैं, जिसमें एक हज़ार सत्यों की शक्ति है, इसलिए यदि इन दो आयतों को हज़ारों बार भी दोहराया जाए, तो भी यह पर्याप्त नहीं होगा। इसलिए यह दोहराव संक्षिप्तता और अनुग्रह और सौंदर्य में वाक्पटुता की चमत्कारिकता का एक शानदार उदाहरण प्रस्तुत करता है।

इसके अलावा, पैगंबर अल-जौशानुल-कबीर का आह्वान भी किया जाता है
(महान ढाल), कुरान से प्रेरित है, जिसमें सौ खंड हैं, जिनमें से प्रत्येक इन शब्दों के साथ समाप्त होता है: आप सर्व-महिमावान हैं! आपके अलावा कोई पूज्य नहीं है। दया! दया! हमें आग से बचाओ! इन वाक्यों में ईश्वर की एकता की पुष्टि है, जो ब्रह्मांड में सबसे बड़ा सत्य है। यह पुष्टि सभी सृजित प्राणियों के अपने प्रभु के प्रति सबसे महान कर्तव्यों में से सबसे बड़ी है, अर्थात् महिमा, प्रशंसा, और उसे सर्व-पवित्र और सभी दोषों से मुक्त घोषित करना, जो कि बहुदेववादियों द्वारा उसके लिए बताए गए गुणों से ऊपर है। यह मानवता के लिए एक प्रार्थना भी है कि उसे अनन्त दंड से बचाया जाए, जो कि हमारी सबसे तात्कालिक चिंता होनी चाहिए और यह ईश्वर के प्रति हमारी दासता और उसके सामने हमारी असहायता का अपेक्षित परिणाम है। और इसलिए, भले ही हम इन वाक्यांशों को हज़ारों बार दोहराएँ, फिर भी यह पर्याप्त नहीं होगा।

इस प्रकार, कुरान में ऐसे महत्वपूर्ण सिद्धांतों के कारण पुनरावृत्तियाँ शामिल हैं। अवसर और साहित्यिक वाक्पटुता की माँगों के अनुसार, और समझने में आसानी के लिए, यह कभी-कभी एक पृष्ठ में ईश्वरीय एकता की सच्चाई को बीस बार व्यक्त करता है, चाहे वह स्पष्ट रूप से हो या निहित रूप से। फिर भी, यह अपने श्रोता को कभी बोर नहीं करता; बल्कि, यह अर्थ को लागू करता है और अपने पाठक को देता है

प्रोत्साहन.

मक्का और मदीना में अवतरित सूराएँ एक दूसरे से इस प्रकार भिन्न हैं :
वाक्पटुता और चमत्कारीपन, तथा विस्तार और संक्षिप्तता की डिग्री में। मक्का के लोग मुख्य रूप से कुरैशी बहुदेववादी और अशिक्षित जनजाति-पुरुष थे। इसे देखते हुए, कुरान एक उच्च शैली के साथ सशक्त, वाक्पटु और संक्षिप्त भाषा का उपयोग करता है, जो इसकी सच्चाई को बेहतर ढंग से स्थापित करने के लिए कुछ बिंदुओं को दोहराता है।

मक्का के सूरों में, विश्वास के स्तंभ और ईश्वरीय एकता की अभिव्यक्तियों की श्रेणियाँ और डिग्री बार-बार एक सशक्त, जोरदार, संक्षिप्त और सबसे चमत्कारी भाषा में व्यक्त की गई हैं। वे दुनिया की शुरुआत और अंत, ईश्वर के अस्तित्व और परलोक के आगमन को शक्तिशाली प्रमाणों के साथ साबित करते हैं और न केवल एक पृष्ठ पर, या एक श्लोक, वाक्य या शब्द में, बल्कि कभी-कभी एक अक्षर में भी व्यक्त किए जाते हैं, शब्द क्रम में इतने सूक्ष्म परिवर्तनों के माध्यम से, निश्चित लेखों के उपयोग या गैर-उपयोग के माध्यम से या कुछ शब्दों, वाक्यांशों और वाक्यों को शामिल करने या छोड़ने के माध्यम से कि साहित्यिक वाक्पटुता की कला के स्वामी आश्चर्यचकित हो गए हैं।

मक्का अध्यायों की उत्कृष्ट वाक्पटुता और संक्षिप्तता की चर्चा इशारतुल-एजाज़ और पच्चीसवें शब्द में की गई है, जो कुरान की चमत्कारिक अद्वितीयता के चालीस पहलुओं की व्याख्या करते हैं।

पैगंबर के मिशन के दूसरे चरण के दौरान मदीना में प्रकट हुए सूरा मुख्य रूप से विश्वासियों, यहूदियों और ईसाइयों को संबोधित हैं। वाक्पटुता के नियमों और मार्गदर्शन की व्यावहारिक आवश्यकता के अनुसार, विश्वास के स्तंभों और सिद्धांतों के बजाय, वे शरिया के कानूनों और आदेशों को सरल, स्पष्ट और विस्तृत भाषा में समझाने पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं। हालाँकि, कुरान की अनूठी, अद्वितीय शैली में, व्याख्याएँ आमतौर पर विश्वास, ईश्वरीय एकता या परलोक से संबंधित एक ऊंचे, शक्तिशाली वाक्य या वाक्यांश के साथ समाप्त होती हैं, इस प्रकार उन्हें ईश्वर और अंतिम दिन में विश्वास से जोड़कर उनके प्रति आज्ञाकारिता सुनिश्चित की जाती है। ऐसा करके, कुरान कुछ विशेष घटनाओं का भी आधार बनाता है जिस पर शरिया के कानूनों की सार्वभौमिकता स्थापित होती है।

वाक्पटुता के उच्च पहलू को समझने के लिए तथा कुछ श्लोकों के अंत में आने वाले वाक्यांशों में पाई जाने वाली सूक्ष्मताओं को समझने के लिए, जैसे कि ईश्वर के पास हर चीज पर पूर्ण शक्ति है; ईश्वर को सभी चीजों का पूरा ज्ञान है; वह सर्व-महिमावान और सर्वशक्तिमान है, सर्व-ज्ञानी है; वह सर्व-महिमावान और सर्वशक्तिमान है, सर्व-दयालु है, पाठक पच्चीसवें वचन में द्वितीय प्रकाश की दूसरी किरण का संदर्भ ले सकते हैं।

इस्लाम के गौण सिद्धांतों और सामाजिक कानूनों की व्याख्या करते हुए, कुरान अपने पाठकों का ध्यान अचानक उच्च, सार्वभौमिक सत्यों की ओर आकर्षित करता है, उन्हें शरिया के पाठ से ईश्वरीय एकता के पाठ की ओर ले जाता है, और एक सरल शैली से एक उच्चतर शैली में बदल जाता है। ऐसा करने में यह हर अवसर पर मार्गदर्शन के अपने उद्देश्य को प्रदर्शित करता है और खुद को कानून और ज्ञान की पुस्तक, पंथ, विश्वास, चिंतन, आह्वान, प्रार्थना और ईश्वरीय संदेश के आह्वान की पुस्तक के रूप में दिखाता है। इस प्रकार, कुरान के मदीना अध्याय एक अत्यंत चमत्कारी वाक्पटुता और भाषा की शुद्धता प्रदर्शित करते हैं जो मक्का अध्यायों में स्पष्ट शैलियों से भिन्न है।

उदाहरण के लिए, भगवान को तुम्हारे या मेरे या उसके (तुम्हारा , मेरा , उसका , उसका भगवान) या दुनियाओं (दुनियाओं का भगवान) के साथ संशोधित करके, कुरान क्रमशः, एक व्यक्ति के साथ उसके विशेष संबंध में भगवान की एकता की घोषणा करता है (अहादिया) या पूरी सृष्टि के साथ उसके सार्वभौमिक संबंध में उसकी एकता (वहीदिया)। मेरे भगवान या तुम्हारे भगवान का उपयोग करते हुए , यह भगवान को उनकी विशेष चौकसी और करुणा के परिप्रेक्ष्य से पेश करता है, जबकि दुनिया के भगवान का उपयोग करते हुए, यह उन्हें उनकी सभी महिमा के साथ पेश करता है, पूर्व (अहाद-इया) के भीतर उत्तरार्द्ध (वहीदिया) व्यक्त करता है। कभी-कभी जब कुरान आंख की पुतली में एक अणु को देखता और ठीक करता है, तो यह आकाश में सूर्य को ठीक करने के लिए उसी "हथौड़े" का उपयोग करता है और इसे स्वर्ग की आंख बना देता है।

उदाहरण के लिए, इन अभिव्यक्तियों में: उसने आकाश और पृथ्वी को बनाया है
(57:4), और वह रात को दिन में बदल देता है और वह दिन को रात में बदल देता है (57:6), कुरान आम लोगों की समझ पर विचार करता है, जिसमें वे लोग भी शामिल हैं जो उनमें से अनपढ़ हैं। हालाँकि, यह आयतों को इस तरह समाप्त करता है: वह जो कुछ भी दिलों में है, उसके बारे में पूरी जानकारी रखता है (57:6); इसका मतलब है: "धरती और आकाश की शानदार रचना और प्रशासन के साथ-साथ, वह लोगों के दिलों में जो कुछ भी होता है, उसके बारे में भी पूरी जानकारी रखता है।" इस प्रकार, साधारण लोगों को लक्षित करने वाली भाषण की सरल शैली यहाँ सभी के मार्गदर्शन के लिए एक उच्च और आकर्षक संबोधन के रूप में प्रकट होती है।

प्रश्न: कभी-कभी एक महत्वपूर्ण सत्य सतही दृष्टिकोण से छिपा रह सकता है। साथ ही, एक सामान्य घटना के वर्णन को सार्वभौमिक सिद्धांत या ईश्वरीय एकता के पहलू के साथ समाप्त करने का कारण हमेशा आसानी से नहीं समझा जा सकता है। कुछ लोग इस कुरानिक शैली को दोषपूर्ण मान सकते हैं। उदाहरण के लिए, यह वर्णन करने के बाद कि कैसे पैगंबर जोसेफ, उन पर शांति हो, अपने भाई को हिरासत में लेने में कामयाब रहे (12: 69-76), कुरान एक महान सिद्धांत का उल्लेख करता है: ज्ञान के हर मालिक से ऊपर (हमेशा) एक और ज्ञानी होता है।

वाक्पटुता के नियमों के दृष्टिकोण से, यह वास्तविक संदर्भ से असंबंधित प्रतीत होता है। इसका क्या कारण है?

उत्तर : कुरान विश्वास, चिंतन और आह्वान की पुस्तक है, साथ ही कानून, ज्ञान और मार्गदर्शन की पुस्तक भी है; इसलिए इसमें कई “पुस्तकें” हैं। इस कारण से, लंबे और मध्यम लंबाई के सूरा के कई पन्नों और अंशों में, जिनमें से प्रत्येक एक छोटा कुरान है, कई शिक्षाओं और उद्देश्यों का अनुसरण किया जाता है। उदाहरण के लिए, ईश्वरीय प्रभुत्व की सर्वव्यापक और भव्य अभिव्यक्तियों को व्यक्त करने के लिए, क्योंकि यह ब्रह्मांड की महान पुस्तक की एक तरह की प्रतिलिपि या प्रतिबिंब है, कुरान हर उस अवसर पर निर्देश देता है जो ईश्वर के ज्ञान, ईश्वरीय एकता के पहलुओं और विश्वास की सच्चाइयों से संबंधित है। जब भी कोई उपयुक्त अवसर आता है, चाहे वह कितना भी महत्वहीन क्यों न लगे, कुरान अलग-अलग शिक्षाओं की व्याख्या करता है, इस प्रकार उस अवसर का उपयोग नए निर्देश प्रस्तुत करने या कुछ सार्वभौमिक नियमों या सिद्धांतों को प्रकट करने के लिए करता है। यह चर्चा के लिए पूरी तरह से मेल खाता है और कुरान की वाक्पटुता में इजाफा करता है।

प्रश्न: चाहे स्पष्ट रूप से हो या परोक्ष रूप से, कुरान ईश्वरीय एकता, परलोक और मानवता के बारे में ईश्वर के निर्णय पर बहुत अधिक जोर देता है। ऐसा क्यों है?
यह तो?

उत्तर : कुरान मानवता को ईश्वर के अस्तित्व, ईश्वरीय एकता, तथा ब्रह्माण्ड पर उसके पूर्ण नियंत्रण और उसमें होने वाले परिवर्तनों, उथल-पुथल और क्रांतियों के बारे में सिखाने के लिए अवतरित हुआ; यह इन सत्यों के बारे में सभी संदेहों को दूर करने और उन लोगों की हठधर्मिता को तोड़ने के लिए अवतरित हुआ जो इनकी पुष्टि करने से कतराते रहते हैं। यह मानवता को, जिसने पृथ्वी के प्रतिनिधि के रूप में सर्वोच्च ट्रस्ट को धारण करना स्वीकार किया है, जिस पर उन्हें ईश्वरीय नियमों के अनुसार शासन करना और विकास करना है, शाश्वत सुख या विनाश से संबंधित मानवता के कर्तव्यों के सबसे शक्तिशाली और सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं में निर्देश देने के लिए भी अवतरित हुआ। मानवता को कुरान के निर्देशों की पुष्टि करने और उनसे संबंधित सबसे आवश्यक मामलों पर सहमति देने के लिए, भले ही कुरान इन मामलों पर लाखों बार ध्यान केंद्रित करे, यह समय या शब्दों की बर्बादी नहीं होगी; उन्हें बिना किसी बोरियत के बार-बार पढ़ा और अध्ययन किया जाएगा।

उदाहरण के लिए, हम सूरतुल-बुरूज में पढ़ते हैं :

> जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उनके लिए ऐसे जन्नत हैं जिनमें नहरें बहती होंगी,
> यही बड़ी सफलता है (85:11)

यह आयत हमें सिखाती है कि मृत्यु, जो हमेशा हमारे सामने मौजूद रहती है, वह ऐसी चीज़ है जो हमें, हमारी दुनिया को और हमारे प्रियजनों को अनंत विनाश से बचाती है, क्योंकि यह हमें एक शानदार, अनंत जीवन की ओर ले जाती है। भले ही इस आयत को अरबों बार दोहराया जाए, और अगर इसे उतना ही महत्व दिया जाए जितना पूरे अस्तित्व को दिया जाता है, तब भी यह इतना ज़्यादा नहीं होगा कि इसका महत्व कम हो जाए या इससे इसका महत्व कम हो जाए। इस तरह की अनगिनत, अमूल्य बातों को सिखाने और लोगों को उन भयानक क्रांतियों के बारे में साबित करने और जागरूक करने की कोशिश में जो लगातार ब्रह्मांड को बदलती और नवीनीकृत करती हैं, कुरान इन मामलों की ओर बार-बार ध्यान आकर्षित करता है, या तो स्पष्ट तरीके से या संकेतों के ज़रिए। चूँकि ये प्रकाश, हवा, भोजन और दवा जैसी चीज़ें हैं - ऐसी चीज़ें जिनकी हमें हमेशा ज़रूरत होती है और जिन्हें लगातार नवीनीकरण और ताज़गी की ज़रूरत होती है - यह तथ्य कि कुरान में इन्हें इतनी बार दोहराया गया है, ईश्वरीय कृपा का एक उदाहरण है।

इसके अलावा, निम्नलिखित पर भी विचार
करें: कुरान गंभीर, क्रोधित और जोरदार ढंग से ऐसी धमकी भरी आयतों को दोहराता है:

> अत्याचारियों के लिए दुखद यातना है (14:22)
>
> जिन लोगों ने इनकार किया, उनके लिए जहन्नम की आग है (35:36)।

जैसा कि रिसाले-ए-नूर में विस्तार से चर्चा की गई है , मानवता का अविश्वास ब्रह्मांड और उसके अधिकांश प्राणियों के अधिकारों का इतना जघन्य उल्लंघन है कि यह पृथ्वी को क्रोधित करता है और तत्वों को क्रोधित करता है। यही कारण है कि वे अविश्वासियों को बाढ़ और इसी तरह की आपदाओं से मारते हैं।

जैसा कि स्पष्ट रूप से कहा गया है

> जब वे उसमें डाले जाएंगे, तो वे उसकी कर्कश सांस सुनेंगे (जिससे वे अंदर खींचे जाएंगे) जैसे वह उबल रही हो, लगभग क्रोध से फटने वाली... (67:7–8)

नरक अविश्वासियों से इतना अधिक उग्र है कि इसका वर्णन इस प्रकार किया गया है मानो यह नरक हो।
क्रोध से लगभग फटने वाला। यदि मानवता की भौतिक तुच्छता के परिप्रेक्ष्य से नहीं, बल्कि अविश्वासी के गलत कामों की महानता और अविश्वास की भयावहता को एक जघन्य अपराध और असीम आक्रामकता के रूप में देखते हुए, और अपने विषयों के अधिकारों के महत्व के साथ-साथ अविश्वासियों के अविश्वास और अधर्म में कुरूपता को दिखाने के लिए, ब्रह्मांड का संप्रभु ऐसे अपराधों का एक अरब बार वर्णन और निंदा करता है, तो भी इसे दोष नहीं माना जाएगा। अनगिनत लोगों ने चौदह शताब्दियों से हर दिन इन शब्दों को अत्यंत उत्सुकता के साथ और बिना किसी ऊब या थकान के पढ़ा है।

हर दिन, हर व्यक्ति के लिए एक दुनिया गायब हो जाती है और एक नई दुनिया का द्वार खुल जाता है। इस प्रकार, आवश्यकता के कारण और अपनी प्रत्येक क्षणभंगुर दुनिया को रोशन करने की इच्छा से, हज़ार बार दोहराकर हम प्रत्येक दोहराव को प्रत्येक बदलते दृश्य के लिए एक दीपक बनाते हैं। इसी तरह, कुरान द्वारा शाश्वत प्रभु की धमकियों और दंडों को बार-बार दोहराने का एक कारण मानवता की हठधर्मिता को तोड़ना और उन्हें उनकी विद्रोही शारीरिक आत्मा से मुक्त करना है। इस प्रकार यह उन्हें बदलते दृश्यों और नए-नए भर्ती किए गए संसारों को अंधकारमय करने से रोकना चाहता है, उनके जीवन के दर्पण में प्रतिबिंबित उनकी छवियों को विकृत करने से रोकना चाहता है, और उन क्षणभंगुर दृश्यों को उनके खिलाफ मोड़ने से रोकना चाहता है जो उनके लिए परलोक में गवाही देंगे। इस कारण से, शैतान भी कुरान में धमकियों की गंभीर और जबरदस्त पुनरावृत्ति को अनुचित नहीं मानता है।

ये धमकियाँ दर्शाती हैं कि नरक की यातनाएँ उन लोगों के लिए शुद्ध न्याय हैं जो उनकी ओर ध्यान नहीं देते।

एक अन्य उदाहरण पैगम्बरों की कहानियों का दोहराव है, विशेष रूप से मूसा (उन पर शांति हो) की कहानी।

ऐसी कहानियों में ज्ञान और लाभ के कई उदाहरण हैं। कुरान सभी पिछले नबियों की नबूवत को इस बात का सबूत बताता है कि वे अल्लाह के पैगम्बर हैं।

मुहम्मद की पैगम्बरी, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। इसका मतलब यह है कि सच्चाई के दृष्टिकोण से, कोई भी मुहम्मद की पैगम्बरी को अस्वीकार नहीं कर सकता जब तक कि कोई अन्य सभी पैगम्बरों को अस्वीकार न कर दे। साथ ही, चूंकि हर कोई हर बार कुरान को खोलकर पूरा नहीं पढ़ सकता, इसलिए इसमें लगभग सभी लंबी और मध्यम लंबाई वाली सूराओं में विश्वास की अनिवार्यताओं के साथ-साथ ये कहानियाँ शामिल हैं , जिससे प्रत्येक सूरा एक लघु कुरान की तरह बन जाती है। ऐसा इसलिए किया जाता है क्योंकि यह साहित्यिक वाक्पटुता के सिद्धांतों द्वारा मांग की जाती है और इसलिए भी क्योंकि कुरान यह दिखाना चाहता है कि पैगंबर मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, लोगों में सबसे महत्वपूर्ण और ब्रह्मांड में सबसे महान घटना है।

इस्लाम में आस्था की औपचारिक घोषणा- कलिमातुत-तौहीद- है।

ईश्वर के अलावा कोई पूज्य नहीं है और मुहम्मद ईश्वर के दूत हैं। कुरान मुहम्मद के व्यक्तित्व को सर्वोच्च दर्जा देता है और चूंकि इस घोषणा का एक हिस्सा - मुहम्मद ईश्वर के दूत हैं - विश्वास के छह स्तंभों में से चार की ओर इशारा करता है, इसलिए इसे अक्सर पहले भाग के बराबर माना जाता है, अर्थात ईश्वर के अलावा कोई पूज्य नहीं है। मुहम्मद का संदेशवाहक होना ब्रह्मांड का सबसे बड़ा सत्य है, एक व्यक्ति के रूप में वह ईश्वर की रचनाओं में सबसे महान हैं, और उनका सामूहिक व्यक्तित्व और पवित्र पद, जिसे मुहम्मदी सत्य के रूप में जाना जाता है, इस दुनिया और परलोक दोनों का सबसे चमकीला सूर्य है। रिसाले-ए-नूर में कई प्रमाणों में से जो दिखाते हैं कि वह इस तरह के असाधारण पद को प्राप्त करने के कितने योग्य हैं, निम्नलिखित कुछ हैं:

"कारण जैसा होता है कर्ता" इस नियम के अनुसार, उनके समुदाय द्वारा अब तक किए गए या भविष्य में किए जाने वाले अच्छे कर्मों की संख्या के बराबर इनाम की राशि पैगंबर मुहम्मद के खाते में जोड़ दी जाती है।

चूँकि उन्होंने अपने द्वारा लाई गई रोशनी से ब्रह्मांड को रोशन किया, इसलिए न केवल जिन्न, इंसानियत और फ़रिश्ते, बल्कि आसमान और धरती भी उनके आभारी हैं। हम साफ़ तौर पर देखते हैं कि पौधे और जानवर अपनी क्षमता और ज़रूरत की ज़बान से जो दुआएँ करते हैं, वे स्वीकार की जाती हैं। इससे पता चलता है कि मुहम्मद के समुदाय के लाखों नेक लोगों की दुआएँ ज़रूर स्वीकार की जानी चाहिए। वे सदियों से दिन में कई बार ईश्वर से प्रार्थना करते रहे हैं कि उन्हें शांति और आशीर्वाद मिले और उन्हें वही सवाब मिले जो उन्होंने कमाया है। इसके अलावा, उनके अच्छे कामों के रिकॉर्ड में उनके अनुयायियों द्वारा कुरान के पाठ से अनगिनत रोशनी भी शामिल हैं, जिनमें से प्रत्येक अक्षर दस, सौ या हज़ार सवाब लाता है।

पहले से यह जानते हुए कि उनका सामूहिक व्यक्तित्व - मुहम्मदान सत्य - स्वर्ग के एक धन्य, विस्तृत वृक्ष की तरह होगा

भविष्य के लिए, और उसे उस भव्य वृक्ष का बीज मानकर, परोक्ष के जानने वाले ने अपने कुरआन में उसे सबसे अधिक महत्व दिया है। अपने फरमान में उसने दूसरों के लिए उसकी आज्ञा पालन करने और उसके मार्ग पर चलकर उसकी सिफ़ारिश का सम्मान प्राप्त करने की आवश्यकता पर बल दिया है और इसे मानवता का सबसे महत्वपूर्ण और गंभीर मामला बताया है।

इस प्रकार, चूंकि कुरान में दोहराए गए सत्यों का इतना बड़ा मूल्य है, इसलिए स्वस्थ, अदूषित स्वभाव वाला कोई भी व्यक्ति यह प्रमाणित कर सकता है कि इसके दोहराव में एक शक्तिशाली और व्यापक चमत्कार पाया जा सकता है, जब तक कि कोई व्यक्ति भौतिकवाद के कारण हृदय की किसी बीमारी या विवेक के रोग से ग्रस्त न हो, और इसलिए उसे निम्नलिखित नियम के अंतर्गत शामिल किया जाता है:

> एक व्यक्ति अपनी बीमार आँखों के कारण सूर्य के प्रकाश को नकारता है,
> बीमारी के कारण मुँह मीठे पानी का स्वाद लेने से इंकार कर देता है।

दो समापन नोट

पहला: बारह साल पहले, मैंने सुना कि इस्लाम के एक सबसे खतरनाक और जिद्दी दुश्मन ने कुरान के खिलाफ एक साजिश रची थी और इसका अनुवाद करने का आदेश दिया था ताकि "लोग इसकी दोहराव को देख सकें और समझ सकें कि यह वास्तव में क्या है।" वह यह भी चाहता था कि विहित प्रार्थनाओं में मूल अरबी के स्थान पर एक अनुवाद को प्रतिस्थापित किया जाए। हालाँकि, जैसा कि रिसाले-ए-नूर निर्णायक रूप से दर्शाता है, कुरान का सटीक अनुवाद असंभव है। कोई भी अन्य भाषा अरबी भाषा के बेहतरीन गुणों और सूक्ष्मताओं को संरक्षित नहीं कर सकती है, यह देखते हुए कि यह व्याकरण और वाक्यविन्यास में कितनी सख्त और सटीक है। कोई भी अनुवाद कुरान के चमत्कारिक रूप से अद्वितीय शब्दों और वाक्यांशों की जगह नहीं ले सकता है, जो अर्थ में अत्यंत व्यापक हैं, और जिनके प्रत्येक अक्षर में दस से लेकर एक हज़ार गुण हैं।

रिसाले -ए-नूर ने मस्जिदों में केवल कुरान के अनुवादों को पढ़ने की योजना को भी बाधित कर दिया। लेकिन चूंकि उस विधर्मी द्वारा सिखाए गए पाखंडी लोग शैतान के नाम पर कुरान के सूरज को बुझाने का रास्ता तलाशते रहते हैं, इसलिए मुझे एमिरदाग का फूल लिखने के लिए मजबूर होना पड़ा। हालाँकि, चूँकि मैं लंबे समय से लोगों से नहीं मिला हूँ, इसलिए मुझे हाल ही में हुए घटनाक्रमों के बारे में कोई जानकारी नहीं है।

दूसरा: डेनिज़ली जेल से रिहा होने के बाद, मैं प्रसिद्ध होटल शेहिर की सबसे ऊपरी मंजिल पर बैठा था। मेरे सामने के सुंदर बगीचों में चिनार के पेड़ों की पत्तियों, शाखाओं और तनों का सुंदर नृत्य, प्रत्येक एक उत्साहपूर्ण गति के साथ जैसे दरवेशों का घेरा हो जिसे भगवान ने छुआ हो।

हवा के झोंके ने मेरे दिल को दुखी कर दिया, जो पहले से ही अपने भाइयों से अलग होने और खुद को अकेला पाकर दुखी था। अचानक मुझे पतझड़ और सर्दी का ख्याल आया और एक तरह की असावधानी ने मुझे जकड़ लिया। मुझे उन सुंदर, झूमते चिनार और खुशमिजाज जीवों पर इतना तरस आया कि मेरी आँखों से आँसू बहने लगे। चूँकि वे मुझे ब्रह्मांडीय मुखौटे के अलंकृत आवरण के नीचे छिपी हुई मृत्यु और वियोग की याद दिलाते थे, इसलिए मृत्यु और वियोग से भरी दुनिया का दुःख मुझे अपनी गिरफ़्त में ले चुका था और मुझे निचोड़ने लगा था। लेकिन फिर मुहम्मदी सत्य की रोशनी आई और उस दुःख को खुशी में बदल दिया। वास्तव में, मैं मुहम्मद के व्यक्तित्व के प्रति हमेशा आभारी महसूस करता हूँ, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, उस समय मुझे जो मदद और सांत्वना मिली, मेरे लिए उस प्रकाश की असीम कृपा का केवल एक उदाहरण, जैसा कि सभी विश्वासियों और सभी के लिए है। यह इस प्रकार था:

मुझ पर जो लापरवाही हावी हो गई थी, उसने मुझे दिखा दिया था कि ये धन्य और नाजुक प्राणी केवल गर्मी के मौसम में एक उद्देश्यहीन और निष्फल जीवन में दिखाई देते हैं। उनकी हरकतें खुशी के कारण नहीं थीं; बल्कि वे मृत्यु, अलगाव और अस्तित्वहीनता की यात्रा के विचार से कांप रहे थे। यह दृष्टिकोण स्थायित्व की मेरी उत्कट इच्छा, सौंदर्य के प्रति मेरे प्रेम और सभी प्राणियों और जीवित चीजों के प्रति मेरी करुणा के लिए बहुत हानिकारक था। इस तरह की सोच ने दुनिया को एक तरह के नर्क में और मेरी बुद्धि को यातना के साधन में बदल दिया। लेकिन ठीक उसी समय, पैगंबर मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, मानवता के लिए एक उपहार के रूप में लाए गए प्रकाश ने पर्दा उठा दिया और दिखाया कि विलुप्त होने, अस्तित्वहीनता, शून्यता, निरर्थकता या अलगाव के बजाय, इन चिनार के पेड़ों के अस्तित्व में उनके पत्तों की संख्या जितनी ही अर्थ और उद्देश्य थे। इसके अलावा, इसने प्रकट किया कि उनके पास कई कर्तव्य थे और उनके जीवन ने कई परिणाम दिए, जैसे कि: एक प्रकार का संबंध सर्व-महान निर्माता के नामों से है। उदाहरण के लिए, हर कोई एक इंजीनियर की सराहना करता है और उसे बधाई देता है जो एक असाधारण मशीन बनाता है। अपने कार्यों को ठीक से करने से, मशीन को बदले में अपने इंजीनियर को बधाई और सराहना करते हुए कहा जा सकता है। ब्रह्मांड में हर सृजित प्राणी एक ऐसी मशीन है और अपने निर्माता को बधाई और सराहना करता है।

चिनार के पेड़ों जैसी चीज़ों में ज्ञान का एक और उदाहरण यह है कि उनमें से प्रत्येक एक पाठ जैसा दिखता है, जिसका अध्ययन करने पर, सचेत जीवों को ईश्वर के बारे में ज्ञान मिलता है। इन जैसे प्राणियों के मन में अपने अर्थ छोड़ कर, और इन प्राणियों की यादों में अपने रूप छोड़ कर, साथ ही प्रतिनिधित्व या "आदर्श रूपों" की दुनिया की पट्टियों पर और

अदृश्य दुनिया के अभिलेखों के अनुसार, वे भौतिक दुनिया को अदृश्य दुनिया में छोड़ देते हैं। दूसरे शब्दों में, वे प्रत्यक्ष अस्तित्व से वंचित हो जाते हैं और कई अस्तित्व प्राप्त करते हैं जो अर्थों, उनके पीछे छिपे ज्ञान और चेतन प्राणियों के ज्ञान और अदृश्य क्षेत्र से संबंधित होते हैं।

चूँकि ईश्वर का अस्तित्व है और उसका ज्ञान सभी चीज़ों को समाहित करता है, इसलिए निश्चित रूप से वास्तविकता में या किसी आस्तिक की दुनिया में गैर-अस्तित्व, शाश्वत विनाश या शून्यता जैसी कोई चीज़ नहीं हो सकती। हालाँकि, एक अविश्वासी की दुनिया गैर-अस्तित्व, अलगाव और विलुप्ति जैसी धारणाओं से भरी हुई है।

जैसा कि प्रसिद्ध कहावत है: "जिसके लिए ईश्वर है उसके लिए सब कुछ मौजूद है; जिसके लिए ईश्वर नहीं है उसके लिए कुछ भी मौजूद नहीं है।"

संक्षेप में, तो जिस तरह से विश्वास हमें मरने पर अनन्त दंड से बचाता है, उसी तरह यह हर किसी की विशेष दुनिया को अनन्त विलुप्ति और शून्यता के अंधकार से बचाता है। अविश्वास, विशेष रूप से ईश्वर का इनकार, व्यक्ति को और उसकी विशेष दुनिया को मृत्यु के भय से नष्ट कर देता है, उन्हें अंधेरे, नारकीय गड्ढों में डाल देता है और उनके जीवन के सुखों को दर्द में बदल देता है। जो लोग इस दुनिया को परलोक से ज़्यादा पसंद करते हैं, उन्हें इस बात पर ध्यान देना चाहिए।

उन्हें या तो इस दुष्कर समस्या का समाधान ढूंढना चाहिए या फिर विश्वास को स्वीकार कर लेना चाहिए, जिससे वे स्वयं को एक भयंकर शाश्वत हानि से बचा सकें।

तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

आपका भाई जिसे आपकी प्रार्थनाओं की सख्त जरूरत है और वह आपको बहुत याद करता है,

नर्सी ने कहा

ग्यारहवाँ मामला

ईमान के पवित्र वृक्ष के सैकड़ों अनगिनत फलों, विशेष और सार्वभौमिक, जिनमें से एक है स्वर्ग, दूसरा है शाश्वत सुख और तीसरा है ईश्वर का दर्शन, को रिसाले-ए-नूर के कुछ अन्य भागों में समझाया गया है। इच्छुक पाठकों को इन भागों की ओर संकेत करते हुए, हम यहाँ इसके सार्वभौमिक स्तंभों के बजाय इसके सबसे छोटे और विशेष फलों के कुछ उदाहरण प्रस्तुत करेंगे।

एक दिन प्रार्थना करते हुए, "हे मेरे प्रभु! गेब्रियल, माइकल, इसराफिल और अजराईल की श्रद्धा में, और उनकी सिफ़ारिश के ज़रिए, मुझे इंसानों और जिन्न की बुराई से बचाओ!" मुझे विशेष रूप से खुशी और सांत्वना महसूस हुई

जब मैंने अज़राएल का ज़िक्र किया - मौत के महादूत का नाम और वह जो आम तौर पर लोगों को डर से काँपने पर मजबूर कर देता है। मैंने कहा, "सभी प्रशंसा और आभार ईश्वर के लिए है!" और उसके लिए सच्चे दिल से प्यार महसूस करने लगा। मैं स्वर्गदूतों में विश्वास के कुछ ही फलों के बारे में बहुत ही संक्षेप में बताऊँगा, साथ ही अन्य स्तंभों में विश्वास के कुछ विशेष फलों के बारे में भी बताऊँगा। वे इस प्रकार हैं:

एक फल: हर किसी की सबसे कीमती संपत्ति जिसे वे बचाने की पूरी कोशिश करते हैं, वह है उनकी आत्मा। मुझे बहुत खुशी हुई कि मैंने इसे एक शक्तिशाली और भरोसेमंद हाथ - अज़राएल को सौंप दिया, जिससे इसे लक्ष्यहीनता से बचाया जा सका और इसे खोने या नष्ट होने से बचाया जा सका। फिर मुझे वे फ़रिश्ते याद आए जो इंसानी हरकतों को रिकॉर्ड करते हैं, और मैंने देखा कि उनके अस्तित्व से इस तरह के कई मीठे फल मिलते हैं।

दूसरा फल: हर कोई गद्य, कविता या फिल्म निर्माण के माध्यम से अपने सार्थक कथनों या कार्यों को सहेजने की उत्सुकता से कोशिश करता है, इस प्रकार वह जो कहता या करता है उसे अमर बना देता है। और अगर उनके कर्मों से स्वर्ग में हमेशा के लिए फल मिलना है, तो वे उन्हें सहेजने के लिए और भी अधिक उत्सुक होते हैं। यह तथ्य कि रिकॉर्डिंग करने वाले फ़रिश्ते लोगों के कंधों पर बैठकर उन कर्मों को रिकॉर्ड करते हैं जो उन्हें हमेशा के लिए पुरस्कार दिलाएंगे और जिन्हें लोग अनंत काल के क्षेत्र में हमेशा के लिए दृश्य के रूप में देखेंगे, मुझे इतना प्यारा और सुखद लगा कि मैं इसका वर्णन नहीं कर सकता।

तीसरा फल: फिर, जब सांसारिक अधिकारियों ने मुझे सामाजिक जीवन से जुड़ी हर चीज़ से अलग कर दिया था, मुझे मेरी सभी किताबों, दोस्तों, सहायकों और मुझे सांत्वना देने वाली चीज़ों से दूर रखा था, और जब मैं निर्वासन से कुचला जा रहा था और खाली दुनिया मेरे चारों ओर ढह रही थी, तो स्वर्गदूतों में विश्वास के कई फलों में से एक मेरी मदद के लिए आया। इसने मेरी दुनिया को खुश कर दिया और मेरे जीवन को रोशन कर दिया, इसे स्वर्गदूतों और आत्मिक प्राणियों से भर दिया, और मेरे आस-पास की हर चीज़ को खुशी से मुस्कुराने पर मजबूर कर दिया। इसने यह भी दिखाया कि गुमराह लोगों की दुनिया उजाड़, खालीपन और अंधेरे में रोती है।

चौथा फल: इस फल का आनंद लेते हुए, मेरी कल्पना ने विश्वास के कई फलों में से एक को प्राप्त किया और उसका स्वाद चखा, अर्थात् पैगम्बरों में विश्वास। अचानक, सभी भूतपूर्व पैगम्बरों में मेरा विश्वास इतना शक्तिशाली हो गया मानो मैं वास्तव में उनके बीच रहा हूँ, जिसने अतीत को प्रकाशित कर दिया, मेरे विश्वास को विस्तृत किया और उसे सार्वभौमिकता प्रदान की। इसने पैगम्बरों की मुहर की शिक्षाओं का समर्थन भी किया, उन पर शांति और आशीर्वाद हो,

पिछले पैगम्बरों की संख्या के बारे में विश्वास को बढ़ाकर, इस प्रकार शैतानी लोगों को चुप करा दिया गया।

फिर मेरे मन में एक सवाल आया, जिसकी चर्चा तेरहवीं झलक में भी की गई है, शैतान से बचने के लिए परमेश्वर की शरण लेने में जो बुद्धिमत्ता है, उसके बारे में। यह इस प्रकार था:

प्रश्न: यद्यपि मार्ग पर चलने वालों को इन जैसे असंख्य मीठे फलों और लाभों, अच्छे कर्मों के उत्तम परिणामों और अत्यंत दयावान रहमान की दयालु सहायता से सहायता और बल मिलता है, फिर भी ऐसा क्यों है कि गुमराह लोग अक्सर उन्हें पराजित करने में सफल हो जाते हैं? क्यों कभी-कभी बीस काफ़िर सौ ईमान वालों को कुचलने में समर्थ हो जाते हैं?

जवाब : इस बारे में सोचते हुए, मुझे कुरान की शैतान की कमज़ोर साज़िशों के बारे में जोरदार चेतावनियाँ याद आईं, और कैसे यह हमें बार-बार याद दिलाता है कि सर्वशक्तिमान ईश्वर ईमान वालों के साथ है और उनकी सहायता के लिए फ़रिश्तों को भेजता है। इस मामले को रिसाले-ए-नूर में कहीं और विस्तार से समझाया गया है और इसलिए हम यहाँ इसका सिर्फ़ संक्षिप्त उल्लेख करेंगे।

ऐसा हो सकता है कि जब एक भी आगजनी करने वाला किसी महल में आग लगाने की कोशिश करे, तो महल सिर्फ़ सौ आदमियों की कोशिशों से ही खड़ा रह सकता है जो इसकी रक्षा करते हैं, सौ आदमी जो कानून की पूरी ताकत का सहारा लेते हैं। क्योंकि इसके अस्तित्व की तरह, महल का अस्तित्व भी उसके सभी हिस्सों के निरंतर अस्तित्व के साथ-साथ उसके अस्तित्व के लिए ज़रूरी सभी परिस्थितियों और कारणों की मौजूदगी से ही संभव है। हालाँकि, इसका विनाश और अस्तित्वहीनता एक भी परिस्थिति के न होने से हो सकती है। जिस तरह एक उपद्रवी एक ही माचिस से महल को तहस-नहस कर सकता है, उसी तरह जिन्न और इंसानियत के बीच शैतानी लोग तुलनात्मक रूप से आसानी से व्यापक विनाश और तबाही मचा सकते हैं।

सभी बुराइयों और पापों का आधार और उत्पत्ति अस्तित्वहीनता और विनाश है।
उनका आभासी अस्तित्व वास्तविक अनस्तित्व और विनाश को ढक लेता है -
अर्थात्, यद्यपि बुराई और पाप वास्तव में अस्तित्व में प्रतीत होते हैं, वास्तव में वे अच्छाई की अनुपस्थिति हैं और इसलिए शुद्ध रूप से अस्तित्वहीन हैं। इस प्रकार जिन्न और मानवता में से शैतानी लोग एक बहुत बड़ी ताकत का सामना करने में सक्षम हैं, जो वास्तव में एक बहुत ही कमजोर ताकत है, इस प्रकार सत्य के लोगों को ईश्वर के दरबार में लगातार शरण लेने के लिए मजबूर करता है। इस कारण से, कुरान ने अच्छाई की सुरक्षा को अत्यधिक महत्व दिया है। यह उनके समर्थन के स्रोत के रूप में निन्यानबे ईश्वरीय नाम प्रदान करता है और उन्हें इन दुश्मनों का सामना करने के लिए कठोर आदेश देता है।

इस उत्तर ने एक महान सत्य और एक विस्मयकारी बात का आधार उजागर किया। स्वर्ग अस्तित्व की सभी दुनियाओं की फसलों को प्रदर्शित करता है और दुनिया में बोए गए बीजों को अंकुरित करके अनन्त पौधों या पेड़ों में बदल देता है। इसी तरह, अस्तित्वहीनता और शून्यता की असंख्य भयानक दुनियाओं के दुखद परिणामों को प्रदर्शित करने के लिए, नर्क इन दुनियाओं के उत्पादों को जला देता है और अस्तित्वहीनता की दुनिया से गंदगी को साफ करता है। लेकिन यह एक ऐसा मामला है जिसे हम आगे देखेंगे।

अन्यत्र चर्चा करें.

पाँचवाँ फल: स्वर्गदूतों में विश्वास के फल का एक और उदाहरण "प्रश्न करने वाले स्वर्गदूतों" से संबंधित है, जिन्हें मुनकर और नकीर के नाम से जाना जाता है: मैंने एक बार कब्र में प्रवेश करने की कल्पना की थी, क्योंकि एक दिन, हर

किसी की तरह, मैं भी कब्र में प्रवेश करूँगा। जब मैं वहाँ लेटा था, उस अंधेरे, ठंडे, संकीर्ण गड्ढे की वीरानी और निराशा से भयभीत, स्वर्गदूतों की प्रजाति में से मुनकर और नकीर नामक दो धन्य मित्र प्रकट हुए और मुझसे बातचीत करने लगे। एक के बाद एक, आत्माओं की दुनिया की ओर खिड़कियाँ खुलने से कब्र और मेरा दिल दोनों ही खुल गए, रोशन हो गए और गर्म हो गए। मैं इस काल्पनिक स्थिति से खुश था, यह जानते हुए कि मैं भविष्य में ऐसा अनुभव करूँगा और मैंने दिल से धन्यवाद दिया।

बताया गया कि एक मदरसा छात्र जो अरबी पढ़ रहा था, उसकी मृत्यु हो गई।
मुनकर और नकीर के सवाल के जवाब में , जिन्होंने उनसे पूछा था कि "तुम्हारा भगवान कौन है?" उन्होंने एक पल के लिए कल्पना की कि वे फिर से मदरसे में आ गए हैं और जवाब दिया: "शब्द 'कौन' विषय है और 'तुम्हारा भगवान' इसका विधेय है; अब मुझसे कुछ कठिन पूछो!" उनके जवाब ने दोनों स्वर्गदूतों और अन्य आत्मिक प्राणियों और एक संत व्यक्ति को हँसाया जो दुनिया से इस घटना को देख रहा था, और ईश्वरीय दया के प्रतीकात्मक चेहरे पर मुस्कान ला दी। ईश्वर की इच्छा से, छात्र को पीड़ा से मुक्ति मिली। मुझे उम्मीद है कि रिसाले -ए नूर के एक शहीद छात्र स्वर्गीय हाफ़िज़ अली की तरह

जिनकी मृत्यु जेल में विश्वास के फल नामक ग्रंथ का अध्ययन और उत्साहपूर्वक प्रतिलिपिकरण करते समय हुई , और जिन्होंने इस ग्रंथ में वर्णित सत्यों के साथ मुनकर और नकीर के प्रश्नों का उत्तर दिया, हम रिसाले-ए-नूर के छात्र भी मुनकर और नकीर द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों का उत्तर रिसाले-ए-नूर में बताए गए शक्तिशाली प्रमाणों के साथ देने की क्षमता से धन्य हो सकते हैं ।

छठा फल: फ़रिश्तों पर विश्वास करने से मिलने वाला एक और छोटा सा फ़ायदा सांसारिक सुख से जुड़ा है। एक मासूम बच्चे ने, जिसने इस्लामी दैनिक जीवन से जुड़ी एक पुस्तिका से आस्था का पाठ सीखा था, एक बार दूसरे बच्चे से कहा

जो अपने छोटे भाई की मौत पर रो रहा था: "मत रोओ! शुक्र मनाओ, क्योंकि तुम्हारा भाई स्वर्ग चला गया है और अब फ़रिश्तों के साथ है। वह वहाँ खूब मौज-मस्ती कर रहा है और हमसे बेहतर समय बिता रहा है। वह फ़रिश्तों की तरह उड़ रहा है और हर चीज़ को देख रहा है।" इन शब्दों के साथ उसने अपने दोस्त के शोकाकुल आँसुओं को ख़ुशी भरी मुस्कुराहटों में बदल दिया।

ठीक उस रोते हुए बच्चे की तरह, इस दुख भरी सर्दी में मुझे दो मौतों की दर्दनाक खबर मिली। एक मेरे भतीजे फुआद की मौत थी, जो देश के सबसे सफल हाई स्कूल के छात्रों में से एक था और जिसने रिसाले -ए-नूर द्वारा अध्ययन और सिखाए गए सत्यों को प्रकाशित किया था। दूसरी मेरी बहन अलीमा हनीम की मौत थी, जो हज के दौरान काबा की परिक्रमा करते समय मर गई थी। जबकि मेरे दो रिश्तेदारों की मौत मुझे रुला रही थी, जैसा कि अब्दुर्रहमान की मौत ने किया था, जिसका वर्णन बुजुर्गों के लिए ग्रंथ (यानी छब्बीसवीं झलक) में किया गया है, मैंने अपने दिल में विश्वास की रोशनी के माध्यम से देखा कि निर्दोष फुआद और उस नेक महिला के साथी स्वर्ग के फ़रिश्ते और हूर थे, और वे इस दुनिया के खतरों और पापों से बच गए थे। उस भयंकर दु:ख के बजाय अत्यधिक खुशी महसूस करते हुए, मैंने उन दोनों को और फुआद के पिता अब्दुल-मसीद को और खुद को भी बधाई दी और दयालुतम रहमान को धन्यवाद दिया। इसे यहाँ दोनों मृतकों के लिए दया की प्रार्थना के रूप में उल्लेख किया गया है।

रिसाले-ए-नूर में सभी तुलनाएं और विवरण विश्वास के उन फलों का वर्णन करते हैं जो इस दुनिया और अगली दुनिया में खुशी के साधन हैं।
इस दुनिया में जीवन की खुशियों और सुखों की तुलना में, ये सार्वभौमिक और व्यापक फल बताते हैं कि उनका विश्वास हर आस्तिक को हमेशा के लिए खुशी दिलाएगा; वास्तव में, यह अंकुर पैदा करने और उस तरह से विकसित होने के लिए बाध्य है। इन असंख्य सार्वभौमिक फलों में से पाँच को इकतीसवें वचन के अंत में स्वर्गारोहण के फलों के रूप में वर्णित किया गया था, जबकि पाँच को चौबीसवें वचन की पाँचवीं शाखा में उदाहरण के रूप में शामिल किया गया है।

हमने शुरू में कहा था कि विश्वास के प्रत्येक स्तंभ के असंख्य अलग-अलग फल हैं, और इन स्तंभों की समग्रता का एक फल विशाल स्वर्ग है, जबकि दूसरा शाश्वत सुख है, और फिर एक और, शायद सबसे मधुर, ईश्वर का दर्शन है। इसके अलावा विश्वास के कुछ फल जो दोनों दुनिया में खुशी के साधन हैं, उनका वर्णन तुलना में किया गया है जो कि थर्टी-सेकंड वर्ड के अंत में आता है।

सातवां फल: ईश्वरीय आदेश और भाग्य पर विश्वास करने से भी इस संसार में बहुमूल्य फल प्राप्त होते हैं। इसका प्रमाण सुप्रसिद्ध शास्त्रों में देखा जा सकता है।

यह कहते हुए कि "जो कोई भी ईश्वरीय नियति में विश्वास करता है, वह दु:ख से सुरक्षित रहता है।" ईश्वरीय नियति में विश्वास का एक सार्वभौमिक फल, ईश्वरीय निर्णय और नियति पर ग्रंथ के अंत में दिए गए बेहतरीन उदाहरण में समझाया गया है, जो दो पुरुषों के बारे में है जो एक महल के सुंदर बगीचे में प्रवेश करते हैं। मेरे पास अनगिनत व्यक्तिगत अनुभव हैं, जिन्होंने मुझे आश्वस्त किया है कि ईश्वरीय नियति में विश्वास की कमी इस सांसारिक जीवन की खुशी को नष्ट कर देती है। जब भी मैं ईश्वरीय नियति के दृष्टिकोण से गंभीर दुर्भाग्य पर विचार करता हूं, तो मैं देखता हूं कि दुर्भाग्य बहुत हल्का हो जाता है। मैं अक्सर आश्चर्य करता हूं कि जो लोग इसमें विश्वास नहीं करते हैं वे कैसे जीवित रह सकते हैं!

आठवां फल: स्वर्गदूतों में विश्वास के स्तंभ के सार्वभौमिक फलों में से एक का उल्लेख बाईसवें वचन के दूसरे स्टेशन में इस प्रकार किया गया है: महादूत अजराइल, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ने ईश्वर से कहा: "जब मैं मरने वालों की आत्माओं को पकड़ने का अपना कर्तव्य पूरा करूंगा, तो आपके सेवक मुझसे नाराज होंगे और मेरे बारे में शिकायत करेंगे।"

परमेश्वर ने उत्तर दिया: “मैं बीमारियों और विपत्तियों को तुम्हारे कर्तव्यों को ढकने के लिए एक परदा बना दूँगा, ताकि मेरे सेवकों की शिकायतें इन घटनाओं पर केंद्रित हों, न कि तुम पर।”

इन पर्दों की तरह, महादूत अज़राएल, उन पर शांति हो, का कर्तव्य भी एक पर्दा है, ताकि अनुचित शिकायतें सर्वशक्तिमान ईश्वर की ओर निर्देशित न हों। क्योंकि हर कोई मृत्यु की बुद्धि, दया, सुंदरता और लाभों को नहीं समझ सकता: लोग केवल इसका बाहरी चेहरा देखते हैं और आपत्ति और शिकायत करना शुरू कर देते हैं। यह इसलिए है ताकि अनुचित शिकायतें परम दयालु ईश्वर की ओर निर्देशित न हों, इसलिए अज़राएल के कार्य को पर्दा किया गया है।

ठीक उसी तरह, सभी फ़रिश्तों के काम, बल्कि सभी स्पष्ट कारणों के काम, वे पर्दे हैं जो शक्ति के हाथ को ढकते हैं, ताकि दिव्य शक्ति की गरिमा और पवित्रता और दिव्य दया की सर्वव्यापी प्रकृति उन चीज़ों के संबंध में सुरक्षित रहे जिनकी आवश्यक सुंदरता स्पष्ट नहीं है और जिनकी बुद्धि समझ में नहीं आती है; उन्हें संरक्षित किया जाता है ताकि वे आपत्तियों का लक्ष्य न बनें, और ताकि जो लोग चीज़ों को सतही तौर पर देखते हैं वे दिव्य शक्ति को ऐसी चीज़ के रूप में न देखें जो आधारहीन, तुच्छ या क्रूर चीज़ों में व्यस्त है। क्योंकि जैसा कि रिसाले-ए-नूर में स्पष्ट रूप से चर्चा की गई थी, कोई भी कारण या एजेंट चीज़ों के निर्माण या नियंत्रण में कोई आवश्यक भूमिका नहीं निभा सकता है, और हर चीज़ में सबसे स्पष्ट रूप से दिव्य एकता की मुहर होती है। आविष्कार और सृजन केवल ईश्वर के लिए विशेष हैं; कारण ईश्वर के लिए विशेष हैं

केवल एक आवरण। देवदूत जैसे सचेतन प्राणी अपनी आंशिक, सीमित इच्छा शक्ति और अपने अस्तित्व के लिए दिव्य उद्देश्य के अनुसार कुछ कर्तव्यों को पूरा करने के अलावा कुछ नहीं कर सकते। इसे "अधिग्रहण" कहा जाता है।4 वे जो करते हैं वह एक तरह की पूजा है जिसे वे अपने महत्वपूर्ण कर्तव्यों के रूप में पेश करते हैं।

> ईश्वर की गरिमा और महानता यह मांग करती है कि मन की दृष्टि में कारण शक्ति के हाथ को ढकने के लिए पर्दे हैं;
>
> जबकि ईश्वरीय एकता और एकरूपता यह मांग करती है कि कारणों की सृष्टि में कोई रचनात्मक भूमिका नहीं होती।

जिस तरह सृष्टि के कामों में इस्तेमाल किए जाने वाले फ़रिश्ते और प्रत्यक्ष कारण ईश्वरीय शक्ति को उन दोषों और प्रत्यक्ष बुराईयों से बचाने के साधन हैं जिन्हें कुछ लोग चीज़ों या घटनाओं में देखते हैं, जिनकी ज़रूरी खूबसूरती और ज्ञान के उदाहरण अदृश्य या अज्ञात हैं; वे ईश्वर को पवित्र करने, किसी भी कमी या ग़लती से उनकी पूर्ण स्वतंत्रता पर विश्वास करने और उसे घोषित करने के साधन हैं, उसी तरह इंसानों और जिन्नों में से हानिकारक तत्व और शैतानी व्यक्ति बुरे कामों और गैर-अस्तित्व से संबंधित कार्यों में नियोजित किए जाते हैं ताकि वे ईश्वरीय शक्ति को अन्याय या अनुचित आपत्तियों और शिकायतों के आरोपण से बचाने में सहायता कर सकें। वे ब्रह्मांड में सभी दोषों और दोषों से पूरी तरह मुक्त होने के रूप में सर्वशक्तिमान ईश्वर की महिमा का मार्ग प्रशस्त करने में भी मदद करते हैं। क्योंकि दोष और दोष गैर-अस्तित्व या पर्याप्त क्षमता की कमी, विनाश या कुछ कर्तव्यों को पूरा करने में विफलता से उत्पन्न होते हैं, जो सभी गैर-अस्तित्व की ओर ले जाते हैं और उन कार्यों से उत्पन्न होते हैं जो विनाश या गैर-अस्तित्व लाते हैं। इन शैतानी और बुरे आवरणों पर दोष और खामियां आरोपित की जाती हैं; उन पर आपत्तियां और शिकायतें निर्देशित की जाती हैं, और इस प्रकार वे ऐसे साधन के रूप में कार्य करते हैं जिनके द्वारा सर्वशक्तिमान ईश्वर को सभी दोषों से पूर्णतः मुक्त घोषित किया जाता है।

वास्तव में, गैर-अस्तित्व से संबंधित बुरे और विनाशकारी कार्यों को किसी उल्लेखनीय शक्ति या ताकत की आवश्यकता नहीं होती है: कुछ तुच्छ कार्य, कुछ महत्वहीन शक्ति, या यहां तक कि किसी कर्तव्य का गैर-प्रदर्शन भी महान विनाश और व्यापक गैर-अस्तित्व का कारण बन सकता है। इसके बावजूद, अक्सर यह माना जाता है कि बुराई करने वालों के पास वास्तविक शक्ति और क्षमता होती है, भले ही वे गैर-अस्तित्व का कारण बनने के अलावा कोई भूमिका नहीं निभाते हैं और मामूली नुकसान के अलावा कोई शक्ति नहीं रखते हैं। लेकिन चूंकि बुराइयाँ गैर-अस्तित्व से उत्पन्न होती हैं, इसलिए बुराई करने वाले उनके हैं " अधिग्रहण करना-

4 “अधिग्रहण” मानवता और जिन्न जैसे जिम्मेदार प्राणियों के स्वैच्छिक कार्यों को दर्शाता है जो निश्चित परिणाम देते हैं और जिसके लिए वे जिम्मेदार होते हैं। (ट्र.)

अगर वे बुद्धिमान प्राणी हैं, तो उन्हें इसके परिणाम भुगतने ही होंगे। यानी बुरे काम करने वाले लोग उनके एजेंट या कर्ता हैं।

हालाँकि, चूँकि अच्छे कर्म और कार्य अस्तित्व के साधन हैं और उनसे संबंधित हैं, जो लोग उन्हें करते हैं वे उनके सच्चे कर्ता नहीं हैं: बल्कि, वे साधन हैं जिनके माध्यम से ईश्वरीय अनुग्रह स्वयं प्रकट होता है; बुद्धिमान कुरान कहता है कि उनका पुरस्कार भी विशुद्ध रूप से ईश्वरीय अनुग्रह है: जो कुछ भी आपके साथ अच्छा होता है, वह ईश्वर की ओर से होता है; और जो कुछ भी बुराई आपके साथ होती है, वह आपकी ओर से होती है (4:79)।

संक्षेप में: अस्तित्व की दुनिया और गैर-अस्तित्व की असंख्य दुनियाएँ आपस में टकराती हैं, जिससे स्वर्ग और नर्क जैसे फल पैदा होते हैं। अस्तित्व की सभी दुनियाएँ घोषणा करती हैं, “सभी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए हैं!” इस प्रकार वे घोषणा करते हैं कि उनमें पूर्णता के सभी गुण पूर्ण रूप से विद्यमान हैं, जबकि गैर-अस्तित्व की सभी दुनियाएँ घोषणा करती हैं, “सर्व-महिमावान ईश्वर है!” इस प्रकार वे घोषणा करते हैं कि ईश्वर सभी दोषों और अन्याय से पूर्णतः मुक्त है। स्वर्गदूत और राक्षस, साथ ही अच्छे और बुरे के उदाहरण, जिनमें हृदय में प्रवेश करने वाली परोपकारी प्रेरणाएँ और शैतानी फुसफुसाहटें शामिल हैं, सभी एक-दूसरे के विरुद्ध संघर्ष करते हैं। और जब ये टकराव होते हैं, तो स्वर्गदूतों में विश्वास का एक फल अचानक प्रकट होता है, जो ब्रह्मांड को प्रकाशित करता है। हमें पद की एक रोशनी दिखाते हुए: ईश्वर स्वर्ग और पृथ्वी का प्रकाश है

(24:35), यह हमें स्वाद चखाता है कि यह फल कितना मीठा है।

नौवां फल: स्वर्गदूतों पर विश्वास का एक और सार्वभौमिक फल है

चौबीसवें और उनतीसवें वचनों में पाया जाता है।

ब्रह्माण्ड के हर कोने में, अस्तित्व के हर क्षेत्र में और हर चीज़ में, चाहे वह विशेष हो या सार्वभौमिक, प्रभुता की करुणामयी महिमा है, जो खुद को ज्ञात और प्यार करती है। और निश्चित रूप से उस महिमा, उस करुणा और खुद को ज्ञात और प्यार करने की इच्छा का जवाब धन्यवाद और व्यापक, सचेत पूजा के साथ देना आवश्यक है, उन्हें सभी दोषों से मुक्त घोषित करना। केवल अनगिनत देवदूत ही हैं जो अचेतन निर्जीव प्राणियों और सार्वभौमिक तत्वों की ओर से यह कर्तव्य निभा सकते हैं; वे ही एकमात्र प्राणी हैं जो पृथ्वी पर हर जगह, उसके मूल से लेकर प्लीएडेस और उससे परे, उस प्रभुता की संप्रभुता की बुद्धिमान, राजसी गतिविधि का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं।

उदाहरण के लिए, दर्शन के निर्जीव, निष्प्राण नियम पृथ्वी के निर्माण और उसके "प्राकृतिक" कर्तव्यों को अंधकारमय और उजाड़ दिखाते हैं। हालाँकि, इब्न अब्बास ने इस्राएल के बच्चों के पहले के पैगम्बरों के संदर्भ में बताया है कि पृथ्वी दो फ़रिश्तों के कंधों पर बैठी है जिन्हें थौर (बैल) और हुत कहा जाता है।

(मछली)। इस कथन के अनुसार, ये देवदूत पृथ्वी की देखरेख करते हैं।

थर्मोर, एक पदार्थ जिसे सखरा कहा जाता है, जो दूसरी दुनिया से संबंधित है, को पृथ्वी की आधारशिला कहा जाता है और इसका उपयोग पृथ्वी के एक निश्चित हिस्से को स्वर्ग में बदलने में किया जाएगा। यह एक ऐसा परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है जिससे कोई व्यक्ति कथन के वास्तविक अर्थ को समझ सकता है, अर्थात पृथ्वी इन प्राणियों के कंधों पर टिकी हुई है जिन्हें थावर और हुत के नाम से जाना जाता है।

दुर्भाग्य से, इस आलंकारिक वर्णन को समय के साथ शाब्दिक रूप से लिया जाने लगा, और इसने पूरी तरह से तर्कहीन रूप ले लिया, जबकि स्वर्गदूतों में विश्वास का फल पृथ्वी, इसकी रचना और कर्तव्यों को प्रकाशित करता है। चूँकि स्वर्गदूत पृथ्वी और चट्टान और ग्लोब के केंद्र के माध्यम से उसी तरह यात्रा करते हैं जैसे वे हवा के माध्यम से यात्रा करते हैं, न तो उन्हें और न ही पृथ्वी को भौतिक चट्टानों, या उन्हें सहारा देने के लिए मछली या बैल की आवश्यकता होती है!

साथ ही, चूँकि पृथ्वी पर जितने भी जीव हैं, उतने ही सिर के साथ ईश्वरीय महिमा का गान किया जाता है, उन प्रजातियों के सदस्यों की संख्या के अनुसार जीभों के साथ, और उन सदस्यों के अंगों, पत्तियों और फलों की संख्या के अनुसार, तो निश्चित रूप से इस शानदार, अचेतन "प्राकृतिक" पूजा को सचेत रूप से प्रस्तुत करने और इसे ईश्वरीय न्यायालय में पेश करने के लिए, चालीस हज़ार सिर वाला एक नियुक्त देवदूत होगा, जो अपनी चालीस हज़ार जीभों में से प्रत्येक के साथ ईश्वर की महिमा करेगा, और प्रत्येक जीभ चालीस हज़ार ईश्वरीय महिमा का उच्चारण करेगी। विश्वसनीय रिपोर्टर, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ने हमें इसे एक सत्य के रूप में सूचित किया। यह दर्शाता है कि स्वर्गदूतों का अस्तित्व और असाधारण प्रकृति, जैसे कि गेब्रियल, उन पर शांति हो, जो मानवता के साथ ईश्वर के रिश्ते को संप्रेषित और प्रकट करते हैं, जो ब्रह्मांड के निर्माण का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम है; इसराफिल और अजराइल, उन पर शांति हो, जो जीवित प्राणियों की दुनिया में निर्माता की भयानक गतिविधि का प्रतिनिधित्व करते हैं और उसे आराधना के साथ देखते हैं, जैसे कि जीवन देना, जीवन को बहाल करना, और मृत्यु के माध्यम से कर्तव्यों का निर्वहन करना; माइकल, उस पर शांति हो, जो दयालु ईश्वर द्वारा अपने प्राणियों के लिए प्रदान की जाने वाली व्यवस्था को देखने के अलावा, जो जीवन के क्षेत्र में दया का सबसे व्यापक और आनंददायक कार्य है, सचेत रूप से अचेतन धन्यवाद का प्रतिनिधित्व करता है। इन जैसे स्वर्गदूतों का अस्तित्व और असाधारण प्रकृति और उनकी आत्माओं की अमरता ईश्वरीय प्रभुत्व की संप्रभुता और भव्यता के कारण आवश्यक है।

उनका और जिस प्रजाति से वे संबंधित हैं उनका अस्तित्व उतना ही निश्चित है जितना कि संप्रभुता और भव्यता का अस्तित्व जिसे ब्रह्मांड में सूर्य की तरह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। स्वर्गदूतों से संबंधित अन्य मामलों को इस दृष्टिकोण से देखा जा सकता है।

कृपा और महिमा से परिपूर्ण सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने पृथ्वी पर लाखों प्रकार के जीवों की रचना की है; उन्होंने प्राणियों की रचना की है

बहुत अधिक मात्रा में आत्माएँ, यहाँ तक कि निम्न और सड़े हुए पदार्थों से भी, ब्रह्मांड को उनसे भर देती हैं। अपनी कला के चमत्कारों के संबंध में वह उन्हें यह घोषणा करने के लिए प्रेरित करता है: "ईश्वर ने क्या चमत्कार किए हैं! ईश्वर कितना धन्य है और उसके आशीर्वाद कितने महान हैं! ईश्वर सर्व-महिमावान है!", और उसकी दया के उपहारों के संबंध में: "सभी प्रशंसा और आभार ईश्वर के लिए हैं! सभी धन्यवाद ईश्वर को! ईश्वर सर्व-महान है!" इसलिए, निश्चित रूप से, उसने विशाल स्वर्ग के लिए उपयुक्त निवासियों और आत्मिक प्राणियों का निर्माण किया है, ऐसे प्राणी जो कभी विद्रोह नहीं करते और निरंतर पूजा करते हैं। स्वर्ग को खाली न छोड़ते हुए, उसने असंख्य विभिन्न प्रकार के स्वर्गदूतों का निर्माण किया है, जो जानवरों की प्रजातियों की तुलना में संख्या में बहुत अधिक हैं। उनमें से कुछ बारिश की बूंदों और बर्फ के टुकड़ों पर सवार होते हैं और अपनी भाषाओं में दिव्य कला और दया की सराहना करते हैं। अन्य लोग चलते हुए तारों पर सवार होकर अंतरिक्ष में अपनी यात्रा के दौरान, ईश्वर की महिमा के रूप में तथा प्रभुता की महानता, गरिमा और वैभव के संबंध में उसकी एकता की घोषणा के रूप में अपनी आराधना की घोषणा संसार के सामने करते हैं।

आदम के समय से लेकर अब तक सभी धर्मग्रंथों और धर्मों का स्वर्गदूतों के अस्तित्व और पूजा के बारे में सहमत होना, तथा स्वर्गदूतों के साथ मनुष्यों की बातचीत और मुलाकातों के बारे में सभी युगों में अनगिनत सर्वसम्मत विवरण यह साबित करते हैं कि उनका अस्तित्व उतना ही निश्चित है जितना कि अमेरिका के लोगों का अस्तित्व, जिन्हें हमने कभी नहीं देखा; यह भी स्पष्ट है कि स्वर्गदूतों का संबंध हमसे है।

अब आओ और विश्वास के प्रकाश के माध्यम से इस सार्वभौमिक फल का अनुभव करो: देखो कि यह कैसे ब्रह्मांड को एक छोर से दूसरे छोर तक भरता है, इसे सुशोभित करता है और इसे एक विशाल मस्जिद या पूजा स्थल में बदल देता है। जबकि वैज्ञानिक भौतिकवाद और नास्तिक दर्शन ब्रह्मांड को ठंडा, बेजान, अंधेरा और उजाड़ दिखाते हैं, विश्वास प्रकट करता है कि यह जीवन और प्रकाश से भरा है। यह दर्शाता है कि यह सचेत, परिचित और सबसे सुखद है, जो विश्वास करने वाले लोगों को इस दुनिया में रहते हुए अपने विश्वास की डिग्री के अनुसार, अनंत जीवन के सुखों की अभिव्यक्ति का अनुभव करने की अनुमति देता है।

निष्कर्ष: ईश्वर की एकता से उत्पन्न होने वाली ब्रह्मांड में एकता के कारण, ब्रह्मांड के हर हिस्से में एक ही शक्ति, एक ही नाम, एक ही बुद्धि और एक ही कला व्याप्त है, और सभी जीव, व्यक्तिगत रूप से या एक प्रजाति के रूप में, अपने स्वभाव की जीभों के माध्यम से निर्माता की एकता, उसके पूर्ण नियंत्रण और अधिकार, उसकी रचनात्मकता, आधिपत्य और पवित्रता की घोषणा करते हैं। उसी तरह, उसने स्वर्गदूतों को बनाया है और उनके साथ स्वर्ग को आबाद किया है, जिससे वे अपनी पूजा करने वाली जीभों के माध्यम से उन महिमाओं का प्रतिनिधित्व और पेशकश करते हैं जो सभी अचेतन प्राणी करते हैं।

अपनी स्वभावगत भाषा के माध्यम से अर्पण करते हैं। देवदूत कभी भी ईश्वरीय आदेश के विरुद्ध कार्य नहीं करते। शुद्ध उपासना के अलावा, वे सृष्टि के नाम पर कुछ भी नहीं करते, न ही वे किसी भी चीज़ में हस्तक्षेप करते हैं जब तक कि उन्हें आज्ञा न दी जाए; वे तब तक हस्तक्षेप भी नहीं कर सकते जब तक कि उन्हें अनुमति न दी जाए। वे इस बात को पूरी तरह से प्रकट करते हैं कि देवदूत ईश्वर के सम्मानित सेवक हैं

(21:26) और जो आदेश उन्हें दिया जाता है, वे उसे पूरा करते हैं (66:6)

दूसरा अध्याय

दूसरा अध्याय

परमेश्वर का अंतिम, निर्णायक तर्क

इस ग्रंथ में विश्वास के ग्यारह प्रमाण हैं।

पहला प्रमाण: सर्वोच्च चिन्ह

इसमें एक यात्री के अवलोकन (उन्नीस चरणों में) शामिल हैं जो ब्रह्मांड से उसके निर्माता के बारे में प्रश्न करता है।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

सातों आकाश और धरती और जो कोई उनमें है, सब उसी की तसबीह करते हैं। कोई चीज़ उसकी तसबीह के बिना नहीं है, (और वह कहती है कि वही अकेला अल्लाह है, न कोई साझी है और न कोई साझी है और सारी प्रशंसा उसी के लिए है), किन्तु तुम उनकी तसबीह को समझ नहीं सकते। निस्संदेह वह अत्यन्त तरस खानेवाला, अत्यन्त क्षमाशील है। (17:44)

पहला कदम

हाँ, गेस्टहाउस या निवास पर आने वाले प्रत्येक अतिथि को इस दुनिया के लोग अपनी आँखें खोलते हैं और देखते हैं कि यह शानदार अतिथिगृह सबसे उदार भोजों का स्थान है, एक अत्यंत कलात्मक रूप से निर्मित प्रदर्शनी है, एक सबसे शानदार सैन्य शिविर और प्रशिक्षण स्थल है, मनोरंजन और अवलोकन का सबसे अद्भुत, प्रेरक और उत्साहवर्धक स्थान है, और शिक्षा का सबसे सार्थक और बुद्धिमान स्थान है। ऐसा व्यक्ति खुद से पूछता है कि इस शानदार अतिथिगृह का मालिक कौन है, इस सर्वोच्च पुस्तक का लेखक, इस शानदार का शासक कौन है-

राज्य। पहली चीज़ जो उन्हें नज़र आती है वह है स्वर्ग का सुंदर चेहरा, जो प्रकाश के सुनहरे अक्षरों से अंकित है। यह इस व्यक्ति को पुकारता है, कहता है, "मेरी ओर देखो, और मैं तुम्हें उस तक पहुँचाऊँगा जिसे तुम खोज रहे हो।"

फिर वे देखते हैं और एक सर्वोच्च प्रभुत्व का प्रकटीकरण देखते हैं - प्रभुता और प्रशासन - जो बिना किसी सहारे के, लाखों आकाशीय पिंडों को ऊपर उठाए रखता है, जिनमें से कुछ पृथ्वी से हजार गुना भारी हैं और जो तोप के गोले से भी कई गुना तेज चलते हैं। यह इन पिंडों को बिना टकराए एक साथ सामंजस्य और असाधारण गति से चलने के लिए प्रेरित करता है। यह असंख्य दीपों को बिना किसी तेल के निरंतर प्रकाश देता है; यह इन विशाल पिंडों को बिना किसी व्यवधान या अव्यवस्था के नियंत्रित और प्रबंधित करता है; यह सूर्य और चंद्रमा जैसे विशाल पिंडों को बिना किसी विद्रोह की अनुमति दिए अपने-अपने कार्य में लगाता है; यह अनंत अंतरिक्ष में - जिसकी माप की गणना या आंकड़ों से व्यक्त नहीं की जा सकती - एक ही समय में, एक ही शक्ति के साथ, एक ही स्थापित तरीके और तरीके से, बिना किसी दोष के कार्य करता है। यह उन सभी पिंडों को उनकी विशाल, आक्रामक शक्तियों के साथ बिना किसी आक्रमण की अनुमति दिए, बिना किसी शर्त और पूर्ण रूप से अपने कानून का पालन कराता है; यह स्वर्ग के चेहरे को लगातार साफ और चमकदार बनाए रखता है और किसी भी तरह के कचरे को उसे गंदा करने की अनुमति नहीं देता है; यह उन पिंडों को एक अनुशासित सेना की तरह घुमाता है, और पृथ्वी को घुमाकर, सृष्टि के दर्शकों को उस शानदार चाल के कई अन्य वास्तविक या काल्पनिक रूप दिखाता है, हर रात और हर साल, एक फिल्म के पर्दे पर दृश्यों की तरह। यह सर्वोच्च प्रभुत्व और प्रशासन अधीनता, प्रबंधन, निर्देशन, आदेश, सफाई और रोजगार को प्रकट करता है। यह एक उदात्त और व्यापक सत्य है, और इस उदात्तता और व्यापकता के साथ यह सत्य स्वर्ग के निर्माता के बिल्कुल आवश्यक अस्तित्व और एकता की गवाही देता है और इस तथ्य की खुले तौर पर गवाही देता है कि उसका अस्तित्व स्वर्ग के अस्तित्व से अधिक स्पष्ट है। इसलिए, पहले चरण में, इसे इस प्रकार घोषित किया जाता है:

> ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है, जो अनिवार्य रूप से अस्तित्व में है, जिसका अनिवार्य अस्तित्व उसकी एकता में स्वर्ग द्वारा स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया जाता है, जिसमें जो कुछ भी है। यह अधीनता, प्रबंधन, निर्देशन, आदेश, सफाई और रोजगार की उत्कृष्ट व्यापक, विशाल और परिपूर्ण वास्तविकता द्वारा प्रमाणित है, जो सभी स्पष्ट रूप से देखने योग्य हैं।

दूसरा कदम

फिर वातावरण, जो कि एक अद्भुत जगह है, उस यात्री को जो कि दुनिया में मेहमान बनकर आया है, गरज-चमक कर घोषणा करने लगता है, "मेरी ओर देखो! तुम मेरे माध्यम से उसे खोज सकते हो और जान सकते हो जिसे तुम खोज रहे हो, जिसने तुम्हें दुनिया में भेजा है!" यात्री वातावरण के स्पष्ट रूप से कड़वे, लेकिन दयालु चेहरे को देखता है, और उसके भयानक, फिर भी खुशखबरी से भरे गरजते संदेशों को सुनता है। यात्री निम्नलिखित को देखता है:

आकाश और धरती के बीच लटके बादल, दुनिया के बगीचे को बहुत ही बुद्धिमानी और दयालु तरीके से सींचते हैं, धरती के निवासियों को जीवन का जल पहुंचाते हैं, जीवन की प्राकृतिक गर्मी को संशोधित करते हैं, और जहाँ भी ज़रूरत होती है, वहाँ सहायता प्रदान करने के लिए दौड़ पड़ते हैं। इन और अन्य कर्तव्यों को पूरा करने के बाद, एक सुव्यवस्थित सेना की तरह जो दिए गए आदेशों के अनुसार खुद को तुरंत प्रकट या छिपा लेती है, वायुमंडल को भरने वाले विशाल बादल अचानक खुद को छिपा लेते हैं, अपने घटक भागों के साथ आराम करने के लिए पीछे हट जाते हैं ताकि कोई निशान न दिखाई दे। फिर, जब उन्हें आदेश मिलता है: "बारिश बरसाने के लिए आगे बढ़ो!" बादल एक घंटे में या कुछ मिनटों में एकत्र हो जाते हैं, वायुमंडल को भरते हैं और अपने कमांडर से आगे के आदेशों के लिए तैयार खड़े होते हैं।

इसके बाद यात्री हवा की ओर देखता है और पाता है कि हवा को इतने कार्यों में बुद्धिमानी और उदारता से नियोजित किया गया है कि ऐसा लगता है जैसे निर्जीव हवा का प्रत्येक अचेतन परमाणु उस आवाज को सुनने और समझने में सक्षम है।

ब्रह्मांड के स्वामी से आने वाले आदेश। उनमें से किसी की भी उपेक्षा किए बिना, यह अपने स्वामी के आदेशों को पूरी तरह से व्यवस्थित तरीके से, प्रभु की शक्ति के माध्यम से पूरा करता है। यानी, यह पृथ्वी पर सभी प्राणियों को सांस देता है, सभी जीवित प्राणियों को उनकी ज़रूरत की गर्मी, रोशनी और बिजली पहुँचाता है, और ध्वनि संचारित करता है, साथ ही पौधों के परागण में सहायता करता है। यह इन सार्वभौमिक कार्यों में एक अदृश्य हाथ द्वारा अत्यंत सचेत, ज्ञानवान और जीवन-रक्षक रूप से नियोजित होता है।

ढंग।

फिर यात्री बारिश को देखता है और पाता है कि दया के छिपे हुए खजाने से भेजी गई इन कोमल, चमकती और मीठी बूंदों में इतने सारे दयालु उपहार और कार्य हैं कि ऐसा लगता है जैसे दया स्वयं बारिश में सन्निहित है और बूंदों के रूप में दिव्य खजाने से बह रही है। यही कारण है कि बारिश को "दया" कहा जाता है।

फिर यात्री बिजली को देखता है और गड़गड़ाहट सुनता है और देखता है कि ये दोनों भी सबसे अद्भुत और आश्चर्यजनक कार्यों में लगे हुए हैं।

इनसे अपनी नज़र हटाकर, यात्री अपने विवेक की ओर मुड़ते हैं और खुद से कहते हैं: “यह निर्जीव, प्राणहीन बादल जो रूई के समान है, निश्चित रूप से हमारे बारे में कुछ नहीं जानता है, और यह हमारी सहायता के लिए स्वयं नहीं आता है क्योंकि इसमें कोई चेतना नहीं है जिससे यह हम पर दया कर सके।

न ही यह किसी बाहरी आदेश के बिना प्रकट हो सकता है और न ही गायब हो सकता है। बल्कि, इसे सबसे शक्तिशाली और कमांडर के आदेशों के अनुसार कार्य करना चाहिए।

भावुक कमांडर। यह बिना कोई निशान छोड़े गायब हो जाता है और फिर अचानक अपने काम पर लग जाता है। एक सबसे सक्रिय और पारलौकिक, एक सबसे शानदार और स्वयं प्रकट होने वाले संप्रभु के आदेश और शक्ति से, समय-समय पर यह वातावरण को भरता और खाली करता है। यह आकाश को एक पट्टिका में बदल देता है जिस पर चीजें लिखी और मिटाई जाती हैं, ज्ञान के साथ अंकित करता है और थोड़ी देर के लिए रुक कर मिटा देता है, इस प्रकार पुनरुत्थान का एक उदाहरण प्रदर्शित करता है। एक सबसे उदार और उदार, एक सबसे उदार और चौकस शासक और निर्देशक के आदेश से, यह हवा पर चढ़ता है और पहाड़ों की तरह भारी बारिश के खजाने से लदा होता है, ज़रूरतमंद जगहों की मदद के लिए दौड़ता है। ऐसा लगता है जैसे यह उन जगहों पर दया से रो रहा हो, बगीचों को पानी से छिड़क रहा हो, उन्हें फूलों से मुस्कुरा रहा हो, सूरज की गर्मी को ठंडा कर रहा हो और धरती का चेहरा साफ कर रहा हो।

जिज्ञासु यात्री फिर उनका कारण बताता है: "ये सैकड़ों-हज़ारों बुद्धिमान, दयालु और सरल कार्य, और उदारता और सहायता के ये कार्य जो इस बेजान, अचेतन, अस्थिर, तूफानी, अस्थिर और अस्थिर हवा के माध्यम से होते प्रतीत होते हैं, जिसमें कोई सचेत उद्देश्य नहीं हो सकता, सभी संदेह से परे साबित करते हैं कि हवा, यह मेहनती सेवक, कभी भी अपनी इच्छा से कार्य नहीं करता है; बल्कि, यह केवल एक सबसे शक्तिशाली और जानकार, सबसे बुद्धिमान और उदार कमांडर के आदेश का पालन करता है। यह ऐसा है जैसे इसका प्रत्येक अणु प्रत्येक कार्य के बारे में जानता हो और एक सैनिक की तरह जो अपने कमांडर के हर आदेश को समझता और मानता है, हवा में बहने वाले प्रत्येक दिव्य आदेश को सुनने और उसका पालन करने में सक्षम हो।

यह सभी जानवरों की सांस लेने और जीवित रहने में मदद करता है, सभी पौधों के परागण और विकास को सुगम बनाता है, और उनके अस्तित्व के लिए आवश्यक सभी पदार्थ प्रदान करता है। यह बादलों की गति और दिशा, नौकायन जहाजों को आगे बढ़ाने और विशेष रूप से वायरलेस, टेलीफोन, टेलीग्राफ और रेडियो के माध्यम से बोले या भेजे गए ध्वनियों के प्रसारण में भी मदद करता है।

इन और अन्य सार्वभौमिक कार्यों में सेवा करने के अलावा, और इसके बावजूद

दो सरल पदार्थों - नाइट्रोजन और ऑक्सीजन - से मिलकर बने होने और एक दूसरे के समान होने के कारण, वायु के कण बुद्धि के हाथ द्वारा पूर्ण क्रम के साथ सैकड़ों हजारों विभिन्न कार्यों में नियोजित होते हैं।

> निश्चय ही आकाशों और धरती की रचना में, और रात और दिन के आने-जाने में, और उन नावों में जो लोगों के लाभ के लिए समुद्र में चलते हैं, और उस जल में जिसे अल्लाह आकाश से बरसाता है, और उसके द्वारा धरती को उसके मरने के पश्चात जिलाता है, और उसमें हर प्रकार के जीव-जन्तु फैला देता है, और हवाओं को चलाने में, और आकाश और धरती के बीच रहनेवाले बादलों को, निश्चय ही उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो बुद्धि से काम लें (2:164)।

जैसा कि उपरोक्त श्लोक में कहा गया है, यात्री यह निष्कर्ष निकालता है कि जो हवाओं को नियंत्रित करता है और उन्हें पालन, पोषण और पोषण के असंख्य कार्यों में लगाता है; जो बादलों को वश में करता है ताकि उनका उपयोग दया के असंख्य कार्यों में किया जा सके और जो ऊपर वर्णित तरीके से वायु को उत्पन्न और नियोजित करता है - ऐसा प्राणी कोई और नहीं बल्कि सर्वशक्तिमान और सर्व-दयालु भगवान ही हो सकता है, जो अनिवार्य रूप से विद्यमान है, जो सर्वज्ञ है और सभी चीजों पर पूर्ण शक्ति रखता है।

यात्री फिर बारिश को देखता है और पाता है कि इसमें जितनी बूँदें हैं, उतनी ही इसमें दयालु उपयोग, लाभ और ज्ञान के उदाहरण हैं। इसके अलावा, ये प्यारी, नाजुक और धन्य बूँदें, साथ ही ओलों और बर्फ के टुकड़ों की बूँदें, इतनी खूबसूरती से और इतने क्रम से बनाई जाती हैं और इतने संतुलन और नियमितता के साथ भेजी जाती हैं कि वे तूफानी हवाएँ भी जो बड़ी वस्तुओं को टकराने का कारण बनती हैं, इस क्रम को नष्ट नहीं कर सकतीं: बूँदें एक दूसरे से टकराती नहीं हैं या इस तरह से मिलती नहीं हैं कि पानी के हानिकारक द्रव्यमान बन जाएँ। यह सरल पदार्थ, पानी, जो दो सरल, निर्जीव और अचेतन तत्वों से बना है -

हाइड्रोजन और ऑक्सीजन का उपयोग सैकड़ों हज़ारों बुद्धिमानी भरे, उद्देश्यपूर्ण कार्यों और कलाओं में किया जाता है, खास तौर पर सजीव प्राणियों में। इसका मतलब यह है कि बारिश, जो दया की साक्षात् प्रतिमूर्ति है, सिर्फ़ उस सर्वशक्तिमान की दया के अदृश्य ख़ज़ाने में ही निर्मित हो सकती है। और इसके उतरने के ज़रिए यह आयत भौतिक शब्दों में व्याख्या करती है: वही है जो हर तरह से उपयोगी बारिश बरसाता है, ताकि (उन्हें) जब वे सारी उम्मीद खो चुके होते हैं, तो बचा सके और अपनी दया को दूर-दूर तक (हर प्राणी पर) फैलाता है। वही रक्षक और प्रशंसनीय है (42:28)।

यात्री फिर ध्यान से गड़गड़ाहट सुनता है और फिर से बिजली की चमक को देखता है। वह समझता है कि भौतिक शब्दों में व्याख्या करने के अलावा: गड़गड़ाहट उसकी प्रशंसा के साथ उसकी महिमा करती है (13:13), और बिजली की चमक लगभग दृष्टि को छीन लेती है (24:43), ये दो विस्मयकारी वातावरणीय घटनाएँ बारिश के आने की भी घोषणा करती हैं, इस प्रकार उन लोगों को खुशखबरी देती हैं जिन्हें इसकी आवश्यकता है। और वातावरण को अचानक असाधारण शोर के साथ बोलने के लिए प्रेरित करने में, अंधेरे वातावरण को बिजली की अद्भुत रोशनी और आग से भरने में, और उन बादलों को जलाने में जो कपास के पहाड़ों या टोंटियों जैसे होते हैं जिनसे ओले, बर्फ या बारिश होती है, ये और अन्य अद्भुत और बुद्धिमान घटनाएँ उन लापरवाह लोगों के सिर पर वार करती हैं जो “नीचे देखते हैं और उन्हें नहीं देख पाते हैं।” वे चेतावनी देते हुए कहते हैं: “अपना सिर ऊपर उठाओ और एक सदा-सक्रिय और शक्तिशाली व्यक्ति के अद्भुत कार्यों को देखो जो खुद को प्रकट करना चाहता है। जिस तरह आपको अपनी मर्जी पर नहीं छोड़ा जाता, उसी तरह ये घटनाएँ भी संयोगवश होने वाली यादृच्छिक घटनाएँ नहीं हैं। उनमें से प्रत्येक को कई बुद्धिमान कार्यों में नियोजित किया जाता है; प्रत्येक को एक सर्व-बुद्धिमान निर्देशक द्वारा नियोजित किया जाता है।”

इस प्रकार, जिज्ञासु यात्री एक सत्य की जोरदार और स्पष्ट गवाही सुनता है जो बादलों के वश में होने, हवाओं के निपटान, वर्षा के उतरने और वायुमंडलीय घटनाओं की दिशा से बना है, और कहता है: "मैं ईश्वर में विश्वास करता हूँ।" इस दूसरे चरण में जो कहा गया है वह वायुमंडल के संबंध में यात्री की उपर्युक्त टिप्पणियों को व्यक्त करता है:

> ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है, जो अनिवार्य रूप से अस्तित्ववान है, जिसका अनिवार्य अस्तित्व वातावरण और उसमें मौजूद हर चीज़ से स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता है। यह अधीनता, निपटान, और अवतरित होने का कारण, और प्रबंधन या निर्देशन की अत्यंत व्यापक, विशाल और परिपूर्ण वास्तविकता से प्रमाणित होता है, जो सभी स्पष्ट रूप से देखने योग्य हैं।

तीसरा कदम

और फिर धरती उस चिंतनशील यात्री को, जो अब चिंतन की अपनी यात्रा का आदी हो चुका है, अपनी स्वभावगत भाषा में संबोधित करती है: "तुम अंतरिक्ष में, आकाश में क्यों भटक रहे हो? आओ, मैं तुम्हें वह बताऊँगी जिसे तुम खोज रहे हो। मेरे द्वारा किए जाने वाले कार्यों को देखो और मेरे पन्नों को पढ़ो!"

यात्री देखता है और पाता है कि, एक आनंदित मेवलेवी दरवेश की तरह, पृथ्वी में दो गतियाँ हैं जो दिनों की घटना का साधन हैं,

ऋतुओं और वर्षों के अनुसार, सर्वोच्च समागम स्थल के चारों ओर एक घेरा बना रहा है। वे देखते हैं कि यह एक शानदार, वशीभूत जहाज है जो अपने भीतर सैकड़ों हज़ारों प्रजातियों के जीवों को रखता है, साथ ही उनके लिए ज़रूरी सभी खाद्य और उपकरण भी रखता है, एक जहाज जो अंतरिक्ष के महासागर में सूर्य के चारों ओर पूर्ण संतुलन और व्यवस्था के साथ यात्रा कर रहा है।

यात्री फिर पृथ्वी के पन्नों या पन्नों को देखता है और पाता है कि प्रत्येक अध्याय का प्रत्येक पृष्ठ अपने हज़ारों "श्लोकों" में पृथ्वी के स्वामी के अस्तित्व की घोषणा करता है। संपूर्ण कार्य को पढ़ने का समय न होने के कारण, वे उस पृष्ठ को देखते हैं जिसमें वसंत ऋतु में जीवित प्राणियों के निर्माण और प्रशासन का वर्णन है, और निम्नलिखित को देखते हैं:

लाखों की संख्या में असंख्य सदस्यों के रूप

प्रजातियों को एक साधारण पदार्थ से असाधारण क्रमबद्धता और सटीकता के साथ खोला जाता है; फिर उन्हें सबसे दयालु तरीके से पोषित और बड़ा किया जाता है। इसके बाद, इनमें से कुछ सदस्यों के बीजों को सबसे चमत्कारी तरीके से पंख दिए जाते हैं और उड़ने के लिए प्रेरित किया जाता है, जिससे उन्हें पृथ्वी पर बिखरने की अनुमति मिलती है। सैकड़ों की संख्या में ये सभी असंख्य सदस्य

हजारों प्रजातियों को अत्यंत कुशलता से निर्देशित किया जाता है और उन्हें सबसे अधिक स्नेह के साथ खिलाया और पोषित किया जाता है। उनके असंख्य, विविध और स्वादिष्ट पोषण को सूखी मिट्टी, पानी की बूंदों और हड्डियों के समान बीज और जड़ों से सबसे अधिक करुणामय तरीके से प्रदान किया जाता है और उन्हें पहुँचाया जाता है, जो एक दूसरे से थोड़ा भिन्न होते हैं। जिस तरह से माल को मालगाड़ी पर लादा जाता है, उसी तरह हर झरने पर अदृश्य खजाने से सैकड़ों-हजारों विभिन्न प्रकार के भोजन और उपकरण लादे जाते हैं और जीवित प्राणियों तक पूरी तरह से व्यवस्थित तरीके से पहुँचाए जाते हैं। विशेष रूप से, इन खाद्य पैकेजों में डिब्बाबंद दूध भेजना, जो कि माताओं के स्नेही स्तनों से निकलने वाले मीठे दूध के रूप में शिशुओं के मुँह में पहुँचाया जाता है, ऐसे स्नेह, करुणा और ज्ञान को प्रदर्शित करता है कि यह स्पष्ट रूप से एक सर्व-दयालु की दया का उपहार और सबसे स्नेही और चौकस अभिव्यक्ति के रूप में देखा जा सकता है।

संक्षेप में: पुनरुत्थान और सर्वोच्च समागम के सैकड़ों-हज़ारों उदाहरणों को प्रदर्शित करके, वसंत का यह जीवंत पृष्ठ इस श्लोक की शानदार व्याख्या करता है, फिर, ईश्वर की दया के निशानों को देखें - कैसे वह मृत पृथ्वी को उसकी मृत्यु के बाद पुनर्जीवित करता है: निश्चित रूप से वह वही है जो मृतकों को पुनर्जीवित करेगा (इसी तरह से)। उसके पास हर चीज़ पर पूरी शक्ति है (30:50)। इसी तरह, यह श्लोक चमत्कारी तरीके से उस पृष्ठ के अर्थों को व्यक्त करता है।

इस प्रकार यात्री समझता है कि पृथ्वी अपने सभी पृष्ठों के माध्यम से घोषणा करती है

"उसके सिवा कोई पूज्य नहीं है," इस ढंग से और इस शक्ति के साथ कि यह उचित है-
इसके आकार के अनुसार।

पृथ्वी के बीस से अधिक बड़े पृष्ठों में से एक पृष्ठ के बीस पहलुओं में से किसी एक की संक्षिप्त गवाही के माध्यम से, पृथ्वी के अन्य पृष्ठों में यात्री द्वारा किए गए अवलोकनों को इस तीसरे चरण में इस प्रकार व्यक्त किया गया है:

> ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है, जो अनिवार्य रूप से अस्तित्व में है, जिसका अनिवार्य अस्तित्व उसकी एकता में पृथ्वी और उसके ऊपर मौजूद हर चीज़ द्वारा स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता है। यह अधीनता, प्रबंधन, पालन-पोषण, खोलना, बीजों का वितरण, संरक्षण, प्रशासन, और सभी जीवित प्राणियों के प्रावधान, और सर्वव्यापी और सर्व-समावेशी दयालुता और करुणा की सूक्ष्म व्यापक, विशाल और परिपूर्ण वास्तविकता द्वारा प्रमाणित है, जो सभी स्पष्ट रूप से देखने योग्य हैं।

चौथा चरण

फिर, जैसे-जैसे वह चिंतनशील यात्री पृथ्वी के प्रत्येक पृष्ठ को पढ़ता है, उनका विश्वास, जो सच्ची खुशी की कुंजी है, मजबूत होने लगता है; आध्यात्मिक प्रगति की कुंजी, ईश्वर के बारे में उनका ज्ञान बढ़ता है, और ईश्वर में विश्वास की सच्चाई, जो सभी पूर्णता का स्रोत और आधार है, उनमें एक डिग्री और विकसित होती है, जिससे उन्हें कई आध्यात्मिक सुख मिलते हैं और उनकी जिज्ञासा और उत्सुकता और भी बढ़ जाती है। स्वर्ग, वायुमंडल और पृथ्वी द्वारा उन्हें सिखाए गए परिपूर्ण और ठोस पाठों को सुनने के बाद, यात्री पूछता है: "क्या और भी कुछ है?" जिस बिंदु पर वे समुद्र और उनमें बहने वाली बड़ी नदियों द्वारा किए गए ईश्वर के जोरदार, उल्लासपूर्ण आह्वान को सुनते हैं; वे कुछ देर तक इन शोकपूर्ण और सुखद ध्वनियों को सुनते हैं।

मौखिक रूप से और मूक वाक्पटुता के साथ वे कह रहे हैं: “हमें देखो और हमें भी पढ़ो!” और इसलिए यात्री देखता है, और वह यह देखता है:

हालाँकि समुद्र, जो लगातार जीवन से भरे रहते हैं, और जिनमें ज़मीन पर पानी भरने की एक सहज प्रवृत्ति होती है, और जो धरती के साथ-साथ चलते हैं, जो सूरज के चारों ओर इतनी तेज़ी से चक्कर लगाती है कि एक साल में वह इतनी दूरी तय कर लेती है जितनी दूरी एक व्यक्ति पच्चीस हज़ार साल में चलकर तय कर सकता है, वे न तो फैलते हैं और न ही बहते हैं, कभी भी उस ज़मीन पर अतिक्रमण नहीं करते जिसके किनारे पर उनका पानी बहता है। इसका मतलब यह है कि वे एक सबसे शक्तिशाली और उदात्त प्राणी की आज्ञा और शक्ति द्वारा चलते और स्थिर रहते हैं।

समुद्र की गहराई में झाँकते हुए यात्री देखता है कि अत्यंत सुंदर, सुशोभित और सुडौल रत्नों के अलावा, हजारों प्रकार के जानवरों का पालन-पोषण, पालन-पोषण, जीवन देना और उन्हें पूरी तरह संतुलित और व्यवस्थित तरीके से मरना होता है। वे यह भी देखते हैं कि इन जीवों का पालन-पोषण रेत और पानी से ही होता है, लेकिन इतने बेहतरीन तरीके से कि बिना किसी संदेह के वे एक सर्वशक्तिमान, महामहिम, दयालु और कृपालु व्यक्ति के अस्तित्व को स्थापित करते हैं।

फिर यात्री नदियों को देखता है और पाता है कि वे जो लाभ प्रदान करती हैं, जो कार्य करती हैं, और जो पानी उनमें बहता है और उनसे निकलता है, वे ऐसी बुद्धिमत्ता और दया प्रदर्शित करते हैं कि वे स्पष्ट रूप से साबित करते हैं कि सभी नदियाँ, झरने और धाराएँ एक दयालु, महान और उदार ईश्वर की दया के खजाने से निकलती हैं। उन्हें इस तरह से खिलाया, संरक्षित और वितरित किया जाता है कि पैगंबर से यह बताया गया है, उन पर शांति और आशीर्वाद हो: "चार नदियाँ स्वर्ग से निकलती हैं।" अर्थात्, चूँकि उनके बहने की वास्तविकता स्पष्ट कारणों से परे है, वे एक अमूर्त स्वर्गीय स्रोत के खजाने से, एक अदृश्य और अक्षय कुएँ की प्रचुरता से निकलती हैं।

उदाहरण के लिए, धन्य नील नदी (दुनिया की सबसे लंबी नदी), जो मिस्र की रेतीली भूमि को स्वर्ग में बदल देती है, मध्य अफ्रीका में चंद्रमा के पहाड़ों (या कुछ ऊंचे इलाकों या पहाड़ियों या झीलों) से निकलती है और बिना थके बहती है, जैसे कि यह एक छोटा सा समुद्र हो। यदि छह महीने में यह जो पानी लाती है उसे एक हिमखंड के रूप में इकट्ठा किया जाए, तो यह उन पहाड़ों (या ऊंचे इलाकों या झीलों) से बड़ा होगा जो इसके स्रोत के रूप में कार्य करते हैं। फिर भी उन पहाड़ों में नदी का स्रोत उनके द्रव्यमान के छठे हिस्से के बराबर भी नहीं है। जहाँ तक नदी को खिलाने वाले पानी और उसके जलाशय में आने वाली बारिश की बात है, वे ऐसे गर्म क्षेत्र में बहुत कम मात्रा में होते हैं और प्यासी मिट्टी द्वारा जल्दी से निगल लिए जाते हैं; परिणामस्वरूप वे नदी में मिलने वाले और उससे बहने वाले पानी की मात्रा के बीच संतुलन बनाए रखने में असमर्थ होते हैं। इस प्रकार पैगंबरी परंपरा जो कहती है कि धन्य नील नदी एक असाधारण तरीके से एक अदृश्य स्वर्गीय स्रोत से निकलती है, अत्यंत सार्थक है और एक सुंदर वास्तविकता को व्यक्त करती है।

इस प्रकार, यात्री समुद्र और नदियों में निहित सागर-समान सत्य और साक्ष्यों का हजारवाँ भाग देखता है। ये सभी सत्य सर्वसम्मति से और उस शक्ति के साथ घोषित होते हैं जो समुद्र के आकार के अनुपात में होती है।

समुद्र, "उसके अलावा कोई देवता नहीं है ," जबकि समुद्र इस गवाही के लिए उतने ही गवाह पेश करते हैं जितने कि उनमें रहने वाले सभी जीव। यात्री इतना ही समझता है।

समुद्रों और नदियों की गवाही को अभिप्रेत और अभिव्यक्त करते हुए, यह चौथे चरण में घोषित:

> ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है, जो अनिवार्य रूप से अस्तित्व में है, जिसका अनिवार्य अस्तित्व उसकी एकता में सभी समुद्रों और नदियों और उनमें मौजूद हर चीज़ से स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता है। यह अधीनता, संरक्षण, भंडारण और प्रबंधन की अत्यंत व्यापक, विशाल और परिपूर्ण वास्तविकता से प्रमाणित होता है, जो सभी स्पष्ट रूप से देखने योग्य हैं।

पांचवां कदम

फिर पहाड़ और मैदान उस यात्री को अपने चिंतन की यात्रा पर बुलाते हैं, और कहते हैं: “हमारे पन्ने भी पढ़ो!” देखते हुए, यात्री देखता है:

पर्वतों द्वारा किये जाने वाले सार्वभौमिक कार्य तथा उनके उद्देश्य इतने महान तथा ज्ञान से परिपूर्ण हैं कि वे मन को आश्चर्यचकित कर देते हैं।

उदाहरण के लिए, पहाड़ अपने रब के हुक्म से धरती की सतह से फूटकर बाहर आते हैं और इस तरह धरती के अंदर की हलचलों से पैदा होने वाली अशांति, क्रोध और गुस्से को शांत करते हैं। फिर भी, जब धरती अपने अंदर के हानिकारक झटकों और उथल-पुथल से मुक्त हो जाती है और इन पहाड़ों के फूटने से उसे सांस लेने की अनुमति मिल जाती है, तो यह अपने निवासियों के आराम या सुख में खलल नहीं डालती क्योंकि यह अपने घूमने के कर्तव्य को पूरा करती है। जिस तरह जहाज़ों को उथल-पुथल से बचाने और उनका संतुलन बनाए रखने के लिए उन पर मस्तूल लगाए जाते हैं, उसी तरह चमत्कारी व्याख्या वाले कुरान के अनुसार, पहाड़ भी मस्तूलों की तरह हैं जिन्हें जहाज़ यानी धरती के डेक पर लगाया गया है:

> और पहाड़ भी मस्तूल जैसे हैं (78:7)
>
> और धरती को भी हमने फैलाया और उसमें दृढ़ पर्वत स्थापित कर दिए। (15:19; 50:7)
>
> और उसने पहाड़ भी स्थिर किये हैं। (79:32)

इसके अलावा, पहाड़ों में अनगिनत चीजें तैयार और संग्रहीत की जाती हैं जिनकी जीवित प्राणियों को आवश्यकता होती है, जैसे झरने, पानी, खनिज और औषधीय पदार्थ; इन्हें वहां इतनी बुद्धिमत्ता, कुशलता, उदारता और सावधानी से संग्रहीत और संरक्षित किया जाता है कि वे केवल सबसे मूल्यवान वस्तु हो सकती हैं।

अनंत शक्ति और बुद्धि के भंडार और सेवक। यात्री इतना ही निष्कर्ष निकालता है, और इन दोनों के साथ पहाड़ों और मैदानों में निहित ज्ञान के अन्य कर्तव्यों और उदाहरणों की तुलना करके, वे उनके द्वारा दी गई गवाही और उनके द्वारा घोषित दिव्य एकता को देख सकते हैं, जो वे कहते हैं, "उनके अलावा कोई देवता नहीं है," उनमें छिपे हुए ज्ञान के सामान्य उदाहरणों के माध्यम से और, विशेष रूप से, उनमें ईश्वर द्वारा संग्रहित चीजों के संबंध में। और यह देखते हुए कि उनका कथन पहाड़ों की तरह ही शक्तिशाली और दृढ़ है और मैदानों की तरह ही विशाल और विस्तृत है, यात्री भी घोषणा करता है: "मैं ईश्वर में विश्वास करता हूँ।"

इस अर्थ की अभिव्यक्ति के रूप में, इसे पांचवें चरण में घोषित किया गया है:

> ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है, जो अनिवार्य रूप से अस्तित्ववान है, जिसका अनिवार्य अस्तित्व सभी पहाड़ों और मैदानों से स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता है, और उनमें या उनके ऊपर जो कुछ भी है। यह भंडारण और प्रबंधन की अत्यंत व्यापक, विशाल और परिपूर्ण वास्तविकता से प्रमाणित होता है, बीजों के प्रसार द्वारा, संरक्षण और एहतियाती उपाय जो कि ईश्वरीय प्रभुत्व के लिए विशेष हैं, ये सभी स्पष्ट रूप से देखने योग्य हैं।

छठा कदम

फिर जब वह यात्री अपने मन में पहाड़ों और मैदानों के बीच यात्रा कर रहा होता है, तो पेड़-पौधों की दुनिया का प्रवेश द्वार उसके लिए खुल जाता है।

उन्हें इन शब्दों के साथ प्रवेश करने के लिए आमंत्रित किया जाता है: “आओ, हमारी दुनिया में घूमो और हमारे शिलालेखों को पढ़ो।” वहाँ प्रवेश करते हुए, यात्री देखता है कि उन्होंने एक शानदार और अच्छी तरह से सुसज्जित सभा बनाई है जो ईश्वर की एकता की घोषणा करती है और एक मंडली जो उनके नामों से उनका उल्लेख करती है और उन्हें धन्यवाद देती है। यात्री सभी पेड़ों और पौधों की उपस्थिति से ही समझ सकता है कि, अपनी सभी प्रजातियों के साथ वे सर्वसम्मति से घोषणा करते हैं: “ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है।” क्योंकि वे तीन महान, सार्वभौमिक वास्तविकताओं को देखते हैं जो इस तथ्य को इंगित और प्रमाणित करते हैं कि उनके सुडौल और वाक्पटु पत्तों की भाषा में, उनके समृद्ध रूप से सजे और धाराप्रवाह फूलों के वाक्यांशों के साथ, और उनके सुव्यवस्थित और स्पष्ट फलों के शब्दों के साथ, सभी फल देने वाले पेड़ और पौधे ईश्वर की महिमा करते हैं और उनकी एकता की गवाही देते हैं, यह कहते हुए कि “उनके अलावा कोई देवता नहीं है ।”

पहली वास्तविकता: प्रत्येक पौधे और वृक्ष यह स्पष्ट आभास देते हैं कि उन्हें एक जानबूझकर उद्देश्य के साथ प्रदान किया गया है और उनका उद्देश्य है-

यह तथ्य सूर्य के प्रकाश की चमक के साथ पेड़ों और पौधों की समग्रता में भी देखा जाता है।

दूसरी वास्तविकता: असंख्य किस्मों और प्रजातियों में एक बुद्धिमत्तापूर्ण और उद्देश्यपूर्ण भेद और विभेदन, तथा एक स्वेच्छाचारी और करुणापूर्ण ढंग से निर्मिति, सुसज्जितता और अलंकरण, जिनमें से कोई भी किसी भी तरह से संयोग के कारण नहीं है, दिन के प्रकाश की तरह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है: वे इस तथ्य को स्पष्ट रूप से प्रकट करते हैं कि वे एक सर्वज्ञ निर्माता के कार्य और कढ़ाई हैं।

तीसरी वास्तविकता: पौधों और पेड़ों की इन सैकड़ों-हज़ारों प्रजातियों के प्रत्येक सदस्य को सबसे उत्तम क्रम, संतुलन, अनुपात और सुंदरता के साथ एक अलग, विशिष्ट रूप दिया गया है, जिसमें जीवन शक्ति और बुद्धिमान उद्देश्यपूर्णता है, और बिना किसी त्रुटि के, सरल और ठोस बीजों और अनाजों से जो एक दूसरे के समान या लगभग समान हैं। यह सूर्य से भी अधिक चमकदार वास्तविकता है और इस सत्य को साबित करने वाले गवाह उतने ही हैं जितने वसंत में दिखाई देने वाले फूल, फल और पत्ते हैं। यात्री इसे समझता है और कहता है: "विश्वास के आशीर्वाद के लिए सभी प्रशंसा भगवान की है।"

इन वास्तविकताओं और उनके लिए दी गई गवाही की अभिव्यक्ति के रूप में छठे चरण में कहा गया है:

> ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है, जो अनिवार्य रूप से अस्तित्व में है, जिसका अनिवार्य अस्तित्व उसकी एकता में सभी प्रकार के पेड़ों और पौधों द्वारा स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया जाता है, जो ईश्वर की महिमा करते हैं और अपने सुसंतुलित, वाक्पटु पत्तों, अपने धाराप्रवाह, समृद्ध रूप से सजे फूलों और अपने सुव्यवस्थित, स्पष्ट फलों के शब्दों से बोलते हैं। यह उद्देश्यपूर्ण और दयालु प्रावधान, दान और अनुग्रह, और स्वेच्छापूर्वक और बुद्धिमानी से भेद करने, सजाने और गढ़ने की उत्कृष्ट व्यापक, विशाल और परिपूर्ण वास्तविकता द्वारा प्रमाणित है, जो सभी स्पष्ट रूप से देखने योग्य हैं। यह इस तथ्य से भी स्पष्ट रूप से संकेत मिलता है कि इनमें से प्रत्येक पेड़ और पौधे को समान या लगभग समान बीजों और अनाजों से एक सुसंतुलित, सजाया हुआ, विशिष्ट, अलग रूप दिया जाता है, जो सभी सीमित और सीमित हैं।

सातवां कदम

फिर, जैसे वह जिज्ञासु यात्री, जिसकी चिंतन यात्रा प्रत्येक कदम के साथ अधिक आनन्ददायक होती जाती है, वसंत के बगीचे से ईश्वर के ज्ञान और विश्वास का गुलदस्ता लेकर लौटता है, जो स्वयं एक वसंत की तरह है, पृथ्वी के पशु-पक्षियों के राज्य का द्वार उनके सत्य-बोधक मन और बुद्धि के सामने खुला है, जिसने इस समय तक ईश्वर का एक निश्चित सीमा तक ज्ञान प्राप्त कर लिया है। वे सैकड़ों-हजारों विभिन्न आवाजों और विभिन्न भाषाओं के साथ यात्री को अंदर बुलाते हैं।

अंदर जाकर वे देखते हैं कि पृथ्वी के सभी पशु-पक्षियों की प्रजातियाँ, समूह और राष्ट्र मौखिक रूप से और अपने स्वभाव की मूक वाक्पटुता की भाषा में यह कह रहे हैं: “कोई देवता नहीं है सिवाय उसके,” जिससे पृथ्वी ईश्वर की एकता की घोषणा और उसके नामों से उसका उल्लेख करने के लिए एक विशाल सभा में बदल रही है। यात्री देखता है कि वे अपने निर्माता का वर्णन कर रहे हैं और उसकी प्रशंसा कर रहे हैं जैसे कि प्रत्येक भगवान के रूप में उसे समर्पित एक स्तुति है, एक शब्द जो उसे महिमा देता है या एक अक्षर जो उसकी दया को इंगित करता है। ऐसा लगता है जैसे कि इन पशु-पक्षियों की इंद्रियाँ, शक्तियाँ, अंग और यंत्र सुंदर, लयबद्ध, सुसंगठित शब्द या परिपूर्ण और व्यवस्थित अभिव्यक्तियाँ हैं। यात्री तीन महान और व्यापक वास्तविकताओं को देखता है जो निर्णायक रूप से संकेत देते हैं कि वे अपने निर्माता और प्रदाता को धन्यवाद देते हैं और उसकी एकता की गवाही देते हैं।

प्रथम वास्तविकता: पशु-पक्षियों को बुद्धि के साथ शून्य से अस्तित्व में लाया गया है, उन्हें पूर्ण कला और पूर्ण ज्ञान के साथ बनाया और गढ़ा गया है और इस तरह से जीवन दिया गया है कि बीस पहलुओं में ज्ञान, बुद्धि और इच्छा की अभिव्यक्ति प्रदर्शित होती है - यह सब, जो इस तरह से घटित होता है कि इसे संयोग के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है, आवश्यक अस्तित्व, सात आवश्यक गुणों और सभी जीवित, स्वयं-निर्भर एक की एकता की गवाही देता है - एक गवाही जो जीवित प्राणियों की संख्या के अनुसार कई प्रमाणों पर आधारित है।

दूसरी वास्तविकता: चेहरे की विशेषताओं में जो भेद विद्यमान है,

इन अनंत प्राणियों के बीच, उनके अलंकृत रूपों में, तथा उनकी पूर्णतया गणना की गई संख्या और सुव्यवस्थित संरचना में, एक ऐसा सत्य प्रकट होता है जो इतना भव्य और शक्तिशाली है कि जिसके पास पूर्ण शक्ति और ज्ञान है, उसके अलावा किसी अन्य के लिए ऐसा व्यापक कार्य कर पाना पूर्णतया असंभव और अकल्पनीय है, ऐसा कार्य जो हर दृष्टि से हजारों आश्चर्यों और बुद्धिमत्ता के उदाहरणों को प्रदर्शित करता है।

तीसरी वास्तविकता: इन असंख्य जानवरों और पक्षियों की लाखों प्रजातियों में से प्रत्येक को सबसे व्यवस्थित और आनुपातिक तरीके से और बिना किसी त्रुटि के, एक विशिष्ट चेहरा और रूप दिया गया है -

ज्ञान का एक चमत्कार - जो अंडे और शुक्राणु नामक तरल पदार्थ की बूंदों से निकलता है, जो एक दूसरे के समान या बहुत मिलते-जुलते हैं। यह इतनी शानदार वास्तविकता है कि यह उतने ही अलग-अलग प्रमाणों से प्रकाशित होती है जितने कि अस्तित्व में जानवर और पक्षी हैं।

इन तीनों वास्तविकताओं की सर्वसम्मति से, सभी पशु-जातियाँ एक साथ यह प्रमाणित करती हैं कि " उसके अलावा कोई देवता नहीं है।" यह ऐसा है मानो पूरी सृष्टि ही ईश्वर है।

पृथ्वी, एक विशाल मानव की तरह, अपनी विशालता के अनुरूप तरीके से कह रही थी कि "उसके अलावा कोई देवता नहीं है" , और स्वर्ग के निवासियों को अपनी गवाही दे रही थी। यात्री इसे देखता है और इसे पूरी तरह से समझता है। इन वास्तविकताओं की अभिव्यक्ति के रूप में, इसे सातवें अध्याय में घोषित किया गया है

कदम:

> ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है, जो अनिवार्य रूप से अस्तित्व में है, जिसका अनिवार्य अस्तित्व उसकी एकता में पृथ्वी के सभी पशु-पक्षियों की प्रजातियों द्वारा स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया जाता है, जो अपनी इंद्रियों, शक्तियों और क्षमताओं के संतुलित, सुसंगठित और धाराप्रवाह शब्दों के साथ और अपने अंगों, अंगों और अवयवों के परिपूर्ण और वाक्पटु शब्दों के साथ ईश्वर की स्तुति करते हैं और उसकी गवाही देते हैं। यह उद्देश्यपूर्ण आविष्कार, निर्माण और उत्पत्ति की उत्कृष्ट व्यापक, विशाल और परिपूर्ण वास्तविकता, उद्देश्यपूर्ण पहचान और श्रृंगार की वास्तविकता और बुद्धिमानी से निर्धारण, पहचान और निर्माण की वास्तविकता द्वारा प्रमाणित होता है, जो सभी स्पष्ट रूप से देखने योग्य हैं।

> यह इस तथ्य से भी निर्णायक रूप से संकेतित होता है कि इनमें से प्रत्येक पशु और पक्षी को एक सुव्यवस्थित, भिन्न और विशिष्ट रूप दिया गया है जो समान या समान प्रतीत होने वाले अंडों और तरल पदार्थ की बूंदों से निकलता है, जो सभी परिमित और सीमित हैं।

आठवां कदम

इसके बाद, चिंतनशील यात्री अनंत श्रेणियों और आनंद की असीमित डिग्री और ईश्वर के ज्ञान की रोशनी में आगे बढ़ने के लिए मानवता की दुनिया में प्रवेश करना चाहता है। और इस प्रकार, पैगंबरों के नेतृत्व में मानव जाति, यात्री को अंदर आमंत्रित करती है। वहां प्रवेश करते हुए, और पहले उस विशाल भवन में देखते हुए जो अतीत है, यात्री देखता है कि सभी पैगंबर, उन पर शांति हो, जो सभी लोगों में सबसे अधिक प्रकाशमान और पूर्ण हैं, एक स्वर में घोषणा करते हैं: "उसके अलावा कोई देवता नहीं है ।" अपने असंख्य शानदार और पुष्ट चमत्कारों की शक्ति से, वे ईश्वर की एकता की पुष्टि और घोषणा कर रहे हैं, और मानवता को जानवरों के पद से उठाकर स्वर्गदूतों के पद पर लाने के लिए, वे लोगों को ईश्वर में विश्वास करने की शिक्षा दे रहे हैं और उन्हें इसके लिए बुला रहे हैं। प्रकाश की उस पाठशाला में घुटने टेकते हुए, यात्री भी सबक पर ध्यान देता है और निम्नलिखित को देखता है:

इन सभी शिक्षकों, जो सभी प्रसिद्ध मनुष्यों में सबसे श्रेष्ठ और प्रसिद्ध हैं, के हाथों में असंख्य चमत्कार हैं जो उन्हें ब्रह्मांड के निर्माता द्वारा उनके मिशन की पुष्टि करने वाले संकेत के रूप में दिए गए हैं। इसके अलावा, लोगों का एक बड़ा समूह, एक पूरा समुदाय,

उनके दावों की पुष्टि की और उनके निर्देश के माध्यम से विश्वास तक पहुँचे। यात्री देखता है कि यह कितना शक्तिशाली, निर्णायक और निश्चित सत्य है जिस पर सर्वसम्मति से सहमति व्यक्त की गई और इन एक लाख से अधिक गंभीर और सत्यनिष्ठ व्यक्तियों द्वारा पुष्टि की गई। यात्री यह भी समझता है

कि इतने सारे सच्चे उपदेशकों द्वारा प्रमाणित और पुष्टि किए गए सत्य को नकार कर, गुमराह लोग सबसे गंभीर गलती कर रहे हैं - बल्कि एक अपराध कर रहे हैं - और इस प्रकार वे सबसे दर्दनाक अनन्त दंड के पात्र हैं। यात्री, इसके विपरीत, यह देखता है कि जो लोग पैगम्बरों के संदेश की पुष्टि करते हैं और ईमान लाते हैं, वे वास्तव में कितने धर्मी हैं, और इस प्रकार यात्री के लिए ईमान की पवित्रता की एक और डिग्री स्पष्ट हो जाती है।

पैगम्बरों द्वारा किये गए अनगिनत चमत्कारों के अलावा, उन पर शांति हो, जो उनके और उनके मिशन के बारे में ईश्वर की वास्तविक पुष्टि के संकेत हैं; उनके विरोधियों को दिए गए स्वर्गीय प्रहारों के अलावा, जो पैगम्बरों की सच्चाई को प्रदर्शित करते हैं; उनकी व्यक्तिगत परिपूर्णता और सत्य शिक्षाओं के अलावा, जो उनकी सच्चाई और धार्मिकता को इंगित करते हैं; उनके विश्वास की ताकत, उनकी सर्वोच्च गंभीरता और आत्म-बलिदान के अलावा, जो उनकी ईमानदारी को प्रदर्शित करते हैं; उनके हाथों में जो पवित्र पुस्तकें और स्क्रॉल हैं, तथा उनके असंख्य शिष्य हैं जिन्होंने उनका अनुसरण करके सत्य, पूर्णता और प्रकाश प्राप्त किया है, तथा इस प्रकार उनके मार्गों की सत्यता को प्रमाणित किया है - इन सभी वास्तविकताओं के अलावा, ईश्वर के संदेशों के सबसे गंभीर संवाहक पैगंबरों और उनके अनुयायियों की सभी सच्चे, सकारात्मक मामलों पर एकमत सहमति, तथा उन्हें स्थापित करने और सिद्ध करने में उनकी एकता, पारस्परिक सहायता और आत्मीयता, ये सब एक ऐसा शक्तिशाली प्रमाण है जिसका सामना दुनिया की कोई भी शक्ति नहीं कर सकती है, तथा इस पर कोई संदेह या संदेह नहीं किया जा सकता है। यात्री को यह समझ में आता है कि

सभी पैगम्बरों (उन पर शांति हो) पर विश्वास, विश्वास के स्तंभों में से एक है, जो शक्ति का एक अन्य स्रोत है, और वे जो शिक्षाएँ उन्होंने सिखाईं उनसे विश्वास का बड़ा लाभ प्राप्त करते हैं।

इस यात्री द्वारा सीखे गए पाठों की अभिव्यक्ति में, आठवें चरण में
यह घोषित किया गया है:

> ईश्वर के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं है, जिसका अस्तित्व उसकी एकता में सभी पैगम्बरों की सर्वसम्मति से स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता है, तथा उनके चमत्कारों की शक्ति भी स्पष्ट रूप से प्रमाणित होती है, जो (उनके मिशनों और संदेशों) की पुष्टि करते हैं और (असंख्य लोगों और सर्वसम्मति से स्वीकार की गई रिपोर्टों द्वारा) उनकी पुष्टि करते हैं।

नौवां कदम

जब जिज्ञासु यात्री, जिसने विश्वास की शक्ति से सत्य का उच्च स्वाद प्राप्त किया है, पैगंबरों की सभा से आ रहा है, तो उन्हें उन महान, सत्यनिष्ठ और शुद्ध विद्वानों के विद्यालय में कदम रखने के लिए आमंत्रित किया जाता है, जो पैगंबरों के दावों की पुष्टि करते हैं, उन पर शांति हो, सबसे निर्णायक और शक्तिशाली प्रमाणों के साथ जो ज्ञान के आधार पर निश्चितता की डिग्री तक पहुंचते हैं। यहां प्रवेश करते हुए, यात्री देखता है कि अपने गहन अध्ययन और जांच के साथ, हजारों प्रतिभाशाली और लाखों सत्यनिष्ठ और महान विद्वान सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से ईश्वर के अस्तित्व और उसकी एकता की आवश्यकता को साबित कर रहे हैं, साथ ही विश्वास के अन्य सभी लेखों को भी, जो बिल्कुल सत्य हैं। और वे ऐसा इस तरह से कर रहे हैं कि संदेह के लिए बिल्कुल भी जगह नहीं है। वास्तव में, यह तथ्य कि वे विश्वास के सिद्धांतों और स्तंभों पर सर्वसम्मति से सहमत हैं, इस तथ्य के बावजूद कि वे अपनी क्षमताओं और दृष्टिकोण में भिन्न हैं, उनमें से प्रत्येक अपने स्वयं के दृढ़ और निश्चित प्रमाण पर निर्भर है, अपने आप में इतना मजबूत सबूत है कि उस पर संदेह नहीं किया जा सकता है। या, बल्कि, हम देख सकते हैं कि इस पर संदेह तभी किया जा सकता है जब संदेह करने वाले के पास इन सभी विद्वानों की संयुक्त बुद्धि और सूझबूझ से अधिक बुद्धि और सूझबूझ हो, और केवल तभी जब वे अपने तर्कों का मुकाबला एक ऐसे प्रमाण से कर सकें जो सभी विद्वानों के संयुक्त प्रमाणों से अधिक सम्मोहक हो। अन्यथा, इनकार करने वाले केवल अपनी अज्ञानता प्रदर्शित करने के लिए उनका विरोध कर सकते हैं—

उनकी घोर अज्ञानता - और नकारात्मक मामलों के संबंध में उनकी हठ और पक्षपातपूर्ण असावधानी जो न तो इनकार करने की अनुमति देती है और न ही पुष्टि की। पक्षपातपूर्ण असावधानी वाला या जो अपनी आँखें बंद कर लेता है, वह दिन को केवल अपने लिए रात में बदल देता है।

यात्री को एहसास होता है कि इन प्रतिष्ठित और प्रखर विद्वानों ने इस भव्य और विशाल विद्यालय से जो रोशनी फैलाई है, वह एक हजार से भी अधिक वर्षों से आधी दुनिया को रोशन कर रही है। यात्री को इन रोशनी में ऐसी नैतिक और आध्यात्मिक शक्ति मिलती है कि अगर सभी इनकार करने वाले लोग उनके खिलाफ एकजुट हो जाएं, तो भी वे यात्री को न तो भ्रमित कर पाएंगे और न ही हिला पाएंगे।

इस स्कूल में यात्री ने जो सबक सीखा है, उसका संक्षिप्त उल्लेख करते हुए,
नौवें चरण में कहा गया है:

> ईश्वर के अतिरिक्त कोई देवता नहीं है, जिसका एकत्व में अनिवार्य अस्तित्व सभी शुद्ध, संत और सत्यनिष्ठ विद्वानों द्वारा उनके उज्ज्वल, निश्चित और सर्वसम्मत प्रमाणों की शक्ति से स्पष्ट रूप से सिद्ध हो चुका है।

दसवां कदम

चिंतनशील यात्री, जो विश्वास को मजबूत करने और विकसित करने तथा ज्ञान से उत्पन्न होने वाली निश्चितता से दृष्टि या अवलोकन से प्राप्त होने वाली निश्चितता की ओर प्रगति में प्रकाश और आनंद को देखने की उत्सुकता से इच्छा रखता है, धार्मिक विज्ञान के विद्यालय से विदा ले रहा है, उसे एक और निमंत्रण मिलता है। इस बार, यह उन हजारों, बल्कि लाखों आध्यात्मिक मार्गदर्शकों की ओर से आता है जो सत्य के लिए काम कर रहे हैं और मुहम्मद के राजमार्ग पर और उनके स्वर्गारोहण की छाया में, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, दृष्टि या अवलोकन की निश्चितता के स्तर को प्राप्त कर चुके हैं। वे यात्री को आध्यात्मिक प्रशिक्षण के एक विशाल, प्रकाश-प्रसारक विद्यालय में आमंत्रित करते हैं, ईश्वर की याद का एक स्थान, जो आध्यात्मिक प्रकाश के अनगिनत छोटे विद्यालयों के विलय से बना है।

यहाँ प्रवेश करते हुए, यात्री देखता है कि ये आध्यात्मिक मार्गदर्शक, जो असाधारण कार्यों के स्वामी हैं और दिव्य सत्य और आध्यात्मिक रहस्यों को उजागर करने में माहिर हैं, अपने अनावरण, दर्शन और चमत्कारी कार्यों के आधार पर एक स्वर में घोषणा कर रहे हैं कि “उनके अलावा कोई देवता नहीं है” और पूरे ब्रह्मांड के लिए वे भगवान के आवश्यक अस्तित्व और एकता की घोषणा करते हैं। यात्री यहाँ देखता है कि यह सत्य कितना स्पष्ट और स्व-स्पष्ट है, एक ऐसा सत्य जिस पर इन सभी पवित्र प्रतिभाओं और प्रकाशमान विद्वानों ने पूर्ण सहमति प्राप्त की है, भले ही वे कई अलग-अलग आध्यात्मिक मार्गों का अनुसरण करते हों।

यात्री देखता है कि जिस तरह सूर्य अपने प्रकाश में सात रंग बिखेरता है और उनके माध्यम से जाना जाता है, उसी तरह ये प्रकाशमान व्यक्ति, ईश्वर के अपने ज्ञान में, अनंत काल के सूर्य द्वारा उत्सर्जित रंगों की एक श्रृंखला को मजबूती से थामे हुए हैं, जिनकी संख्या स्वयं ईश्वर के सर्व-सुंदर नामों जितनी ही है। यात्री देखता है कि पैगम्बरों की एकमतता, शुद्ध और सत्यनिष्ठ विद्वानों की सहमति और संतों की सहमति के माध्यम से बनी सर्वोच्च सहमति, दिन के उजाले से भी अधिक चमकदार है जो सूर्य के अस्तित्व को ज्ञात कराता है।

यात्री द्वारा प्राप्त प्रकाश किरणों के संक्षिप्त संदर्भ में

आध्यात्मिक प्रशिक्षण के स्कूल में, दसवें चरण में यह घोषणा की गई है:

> ईश्वर के अतिरिक्त कोई देवता नहीं है, जिसका अनिवार्य अस्तित्व उसकी एकता में संतों की सहमति से स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता है, जो उनकी स्पष्ट, सत्यापित और पुष्ट आध्यात्मिक खोजों और असाधारण कार्यों या उपलब्धियों के साथ है।

ग्यारहवाँ कदम

यात्री अब यह जान गया है कि सभी मानवीय पूर्णताओं में सबसे महान और सबसे महत्वपूर्ण, वास्तव में ऐसी सभी पूर्णताओं का मूल और आधार, ईश्वर के प्रति प्रेम है जो ईश्वर में विश्वास और उसके ज्ञान से उत्पन्न होता है। इसे ध्यान में रखते हुए, यात्री अपनी पूरी शक्ति और क्षमताओं के साथ अपने विश्वास को मजबूत करने और अपने ज्ञान के विकास में और भी आगे बढ़ने की इच्छा रखता है। और इस प्रकार यात्री अपना सिर उठाता है और आकाश की ओर देखते हुए, अपने स्वयं के तर्कशील मन को इस प्रकार संबोधित करता है:

> क्योंकि ब्रह्माण्ड में सबसे मूल्यवान वस्तु जीवन है और ब्रह्माण्ड की सभी वस्तुएँ जीवन के अधीन हैं, और क्योंकि सभी जीवित प्राणियों में सबसे मूल्यवान प्राणी वे हैं जो आत्मा से संपन्न हैं, और क्योंकि आत्मा से संपन्न प्राणियों में सबसे मूल्यवान वे हैं जो सचेत हैं, और क्योंकि प्रत्येक शताब्दी और प्रत्येक वर्ष पृथ्वी को खाली और पुनः भर दिया जाता है ताकि जीवित प्राणियों की संख्या को उनके मूल्य के कारण बिना रुके बढ़ाया जा सके -
>
> इन सब के कारण, निस्संदेह यह निष्कर्ष निकाला जाना चाहिए कि इन शानदार और अलंकृत स्वर्गों में जीवित, सचेत निवासी भी होने चाहिए जो उनके लिए विशिष्ट हैं। स्वर्गदूतों को देखने और उनसे बात करने से संबंधित अनुभव - जैसे कि पैगंबर मुहम्मद की उपस्थिति में एक मानव के रूप में अर्खंगेल गेब्रियल का प्रकट होना, उन पर शांति हो और साथियों के सामने आशीर्वाद हो - सबसे प्राचीन समय से विश्वसनीय प्रसारण चैनलों के माध्यम से प्रसारित और संबंधित हैं। यह देखते हुए कि यह सच है, काश मैं स्वर्ग के निवासियों से बात कर पाता और इस मामले पर उनके विचार जान पाता। क्योंकि ब्रह्मांड के निर्माता के बारे में उनके शब्द अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

जब यात्री ऐसा सोच रहा था, तो उसने अचानक एक दिव्य आवाज सुनी: "यदि आप हमसे मिलना चाहते हैं और हमारे शब्द सुनना चाहते हैं, तो जान लें कि हमने सबसे पहले उन विश्वासों की सच्चाइयों पर विश्वास किया है जो हमने पैगम्बरों को बताई थीं, और सबसे पहले पैगंबर मुहम्मद को, जिन पर शांति और आशीर्वाद हो, जिन्होंने चमत्कारी व्याख्या के साथ कुरान लाया था।

"इसके अलावा, हमारे बीच से जो भी पवित्र आत्माएँ मनुष्यों के सामने प्रकट हुई हैं, उन्होंने सर्वसम्मति से और बिना किसी अपवाद के, ब्रह्मांड के निर्माता के आवश्यक अस्तित्व और पवित्र गुणों की गवाही दी है, और एकमत से इसकी घोषणा की है। इन असंख्य घोषणाओं की एकरूपता और आपसी पत्राचार आपके लिए एक मार्गदर्शक है कि

सूर्य के समान उज्ज्वल है।" परिणामस्वरूप, यात्री के विश्वास का प्रकाश और अधिक उज्ज्वल हो जाता है और पृथ्वी से स्वर्ग तक चढ़ जाता है।

यात्री ने जो सबक सीखा है उसका संक्षिप्त संदर्भ इस प्रकार है-

स्वर्गदूतों, यह ग्यारहवें चरण में कहा गया है:

> ईश्वर के अतिरिक्त कोई देवता नहीं है, जिसका अस्तित्व उसकी एकता में स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता है, उन देवदूतों की सहमति से जो मानव रूप में मनुष्यों के सामने आते हैं और जो मानव जाति के बीच आध्यात्मिक रूप से प्रतिष्ठित लोगों से अपने परस्पर संगत और अनुरूप संदेशों के साथ बात करते हैं।

बारहवां और तेरहवां चरण

फिर अत्यंत जिज्ञासु और उत्साही यात्री, जो पहले से ही दृश्य क्षेत्र से संबंधित विभिन्न प्रजातियों और राष्ट्रों की भाषाओं और स्वभावों से सीख चुका है, सत्य की आगे की खोज में अदृश्य और मध्यवर्ती क्षेत्र के माध्यम से यात्रा करने की इच्छा व्यक्त करता है। और इस तरह उनके सामने एक द्वार खुलता है जो ईमानदार और प्रबुद्ध बुद्धि और स्वस्थ और प्रबुद्ध हृदय की दुनिया की ओर ले जाता है, जो मानव जाति के बीज, ब्रह्मांड के फल की तरह हैं, और जो अपने छोटे आकार के बावजूद लगभग पूरे ब्रह्मांड को गले लगाने के लिए विस्तारित हो सकते हैं। यात्री देखता है और पाता है कि ये बुद्धि और हृदय अदृश्य और दृश्य क्षेत्रों के बीच एक कड़ी बनाते हैं, और इन दो क्षेत्रों के बीच संपर्क और आदान-प्रदान जो मानव जाति से संबंधित हैं, इस बिंदु पर होते हैं। उनके तर्क और हृदय को संबोधित करते हुए, यात्री कहता है: "आओ, तुम्हारे इन समकक्षों के द्वार से सत्य की ओर जाने वाला मार्ग छोटा है। हमें उन गुणों, स्वभावों और रंगों का अध्ययन करने से लाभ उठाना चाहिए जो विश्वास ने उन्हें दिए हैं, उस तरीके से जो हमने पिछले मार्गों से संबंधित भाषाओं के माध्यम से सीखने में इस्तेमाल किया है।"

इस अध्ययन की शुरुआत करते हुए, यात्री देखता है कि ईश्वरीय एकता के बारे में जो विश्वास और दृढ़ विश्वास सभी ईमानदार और प्रबुद्ध बुद्धि रखते हैं और अपने पूरे जीवन में प्रदर्शित करते हैं, वह उनकी अलग-अलग क्षमताओं और उनके अलग-अलग और कभी-कभी विरोधी तरीकों और दृष्टिकोणों के बावजूद, पूरी तरह से अनुरूप है; यात्री देखता है कि उनकी निरंतर और हमेशा-विश्वासी निश्चितता और आश्वासन एक हैं। इसका मतलब है कि वे एक ही, अपरिवर्तनीय सत्य को मजबूती से पकड़े हुए हैं: उनकी जड़ें इस सत्य में गहराई से घुस गई हैं और उन्हें बाहर नहीं निकाला जा सकता है। नतीजतन, विश्वास और ईश्वर के आवश्यक अस्तित्व और एकता के बारे में उनकी सहमति एक चमकदार, अटूट श्रृंखला की तरह है, एक चमकदार रोशनी वाली खिड़की जो सत्य की ओर खुलती है।

यात्री यह भी देखता है कि विश्वास के स्तंभों के संबंध में इन सभी स्वस्थ और प्रबुद्ध हृदयों की उल्लासमय आध्यात्मिक खोजें और दर्शन, उनके अलग-अलग आध्यात्मिक पथों के बावजूद, एक-दूसरे के साथ पत्राचार में हैं, और वे दिव्य एकता पर पूर्ण सहमति में हैं।

ये सभी प्रकाशित हृदय, जिनमें से प्रत्येक सत्य का अवतार है, ईश्वर के ज्ञान का एक छोटा सिंहासन है और एक व्यापक दर्पण है जो शाश्वत रूप से चाहने वाले को दिखाया गया है, वे सत्य के सूर्य की ओर खुलने वाली खिड़कियों के समान हैं। एक साथ लिया गया, वे एक सर्वोच्च दर्पण हैं, जैसे एक महासागर जो सूर्य को प्रतिबिंबित करता है। ईश्वर के आवश्यक अस्तित्व और एकता के बारे में उनकी सहमति और एकमत एक अचूक और सबसे सही मार्गदर्शक, सबसे ऊंचा गुरु है। क्योंकि यह किसी भी तरह से संभव या कल्पनीय नहीं है कि कोई भी गलत धारणा या गलत विश्वास एक ही समय में इतनी तेज, सत्य-दर्शी आँखों को धोखा दे या धोखा दे सके। यहां तक कि मूर्ख सोफिस्ट, जो ब्रह्मांड के अस्तित्व को नकारते हैं, भ्रष्ट और बिखरी हुई बुद्धि से सहमत नहीं हो सकते हैं जो ऐसी चीज को संभव मानते हैं। यह सब समझते हुए, हमारे यात्री अपने दिल और बुद्धि से कहते हैं: "मैं भगवान में विश्वास करने लगा हूँ।"

बारहवें और तेरहवें चरण में यात्री ने जो विश्वास का ज्ञान सीखा है, उसका संक्षिप्त उल्लेख करते हुए कहा गया है:

> ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है, जो अनिवार्य रूप से विद्यमान है, जिसका अनिवार्य अस्तित्व उसकी एकता में सभी ईमानदार, प्रबुद्ध बुद्धिजीवियों की एकमत सहमति से स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता है, उनके अनुरूप पंथों, उनके विश्वासों और संगत निश्चितताओं के साथ, उनकी क्षमता और दृष्टिकोण में भिन्नताओं के बावजूद। उनकी एकता में उसका अनिवार्य अस्तित्व सभी स्वस्थ, प्रबुद्ध हृदयों की सहमति से भी प्रदर्शित होता है, उनके परस्पर सहायक खोजों और उनके सुसंगत अवलोकनों और दर्शनों के साथ, उनके अलग-अलग मार्गों और तरीकों के बावजूद।

चौदहवाँ और पंद्रहवाँ कदम

फिर वह यात्री, जो अपने मन और हृदय से यात्रा कर रहा है, अदृश्य के दायरे को और करीब से देखना शुरू करता है। उस दुनिया के संदेश को जानने के लिए जिज्ञासा से उसके दरवाजे पर दस्तक देते हुए, वे मन ही मन सोचते हैं: "यह स्पष्ट है कि अदृश्य के पर्दे के पीछे वह है जो दृश्यमान दुनिया में इन सभी असंख्य, सुंदर ढंग से सजी कलाकृतियों के माध्यम से खुद को ज्ञात करना चाहता है; वह इन असंख्य के माध्यम से खुद को प्यार करना चाहता है,

मधुर और सुशोभित उपहारों को प्राप्त करना, तथा कला के इन अनगिनत, चमत्कारी और कुशल कार्यों के माध्यम से अपनी छिपी हुई परिपूर्णताओं को प्रकट करना। यह स्पष्ट है कि कोई एक है जो अपनी इच्छा को प्रकट करता है कि वह स्वयं को जाने और प्यार करे, तथा अपनी छिपी हुई परिपूर्णताओं को भाषण से अधिक स्पष्ट तरीके से प्रकट करे। इसे देखते हुए, जिस तरह वह अपने कार्यों और कर्मों के माध्यम से अपनी इच्छा को प्रकट करता है, यह स्पष्ट है कि उसे भाषण के माध्यम से भी स्वयं को ज्ञात और प्यार करना चाहिए।

इस प्रकार, हमें अदृश्य जगत के सम्बन्ध में उसकी अभिव्यक्तियों से उसे जानना चाहिए।'' ऐसा विचार करते हुए, यात्री अपने हृदय से उस जगत में प्रवेश करता है और अपनी बुद्धि की आँखों से निम्नलिखित को देखता है:

रहस्योद्घाटन का सत्य अदृश्य जगत में हर समय अभिव्यक्ति के सबसे शक्तिशाली साधन के रूप में व्याप्त है। ईश्वर के अस्तित्व और एकता की गवाही जो ब्रह्मांड और उसकी सामग्री की गवाही से कहीं अधिक शक्तिशाली है, रहस्योद्घाटन और प्रेरणा के सत्य के माध्यम से अदृश्य के सर्वज्ञ एक से आती है। वह अपने आप को, अपने अस्तित्व और एकता की पहचान और पुष्टि को केवल अपने प्राणियों की गवाही तक सीमित नहीं रखता है। बल्कि, वह एक पूर्व-शाश्वत वाणी के साथ बोलता है जो उसके अपने अस्तित्व के अनुकूल है। जो अपने ज्ञान और शक्ति के साथ सर्वव्यापी है, उसकी वाणी भी अनंत है, और जिस तरह उसकी वाणी का अर्थ उसे ज्ञात कराता है, उसी तरह उसका प्रवचन भी उसके गुणों के साथ खुद को ज्ञात कराता है।

प्रकाशितवाक्य की सच्चाई स्थापित हो चुकी है और स्वयं को स्पष्ट कर दिया गया है।

एक लाख से ज़्यादा पैगम्बरों की सहमति से, उन पर शांति हो, और इस तथ्य के माध्यम से कि इन पैगम्बरों के सभी निर्देश और घोषणाएँ ईश्वरीय रहस्योद्घाटन पर आधारित हैं; यह पवित्र पुस्तकों और स्वर्गीय स्क्रॉल में निहित सबूतों और चमत्कारों के माध्यम से भी स्पष्ट किया गया है, जो रहस्योद्घाटन के फल हैं और सभी मनुष्यों के लिए मार्गदर्शक हैं, जिनमें से अधिकांश ने इसमें सत्य की पुष्टि की है। इसे महसूस करते हुए, यात्री आगे समझता है कि रहस्योद्घाटन की सच्चाई निम्नलिखित पाँच पवित्र वास्तविकताओं को सामने रखती है।

पहली वास्तविकता: रहस्योद्घाटन ईश्वरीय दया या कृपा का एक रूप है ।

यह "परमेश्वर द्वारा अपनी वाणी को मानवीय क्षमता के स्तर तक कम करना है, ताकि वे इसे समझ सकें" के रूप में वर्णित किया गया है। परमेश्वर अपने सभी चेतन प्राणियों को बोलने में सक्षम बनाता है और उनकी वाणी को समझता है, इसलिए समस्त सृष्टि का प्रभु होने के नाते यह उसकी आवश्यकता है कि वह अपनी वाणी के साथ उनमें भाग ले।

दूसरी वास्तविकता: जिसने स्वयं को ज्ञात करने के लिए चमत्कारी, अमूल्य कलाकृतियों से भरा एक ब्रह्मांड बनाया है, जो असंख्य भाषाओं को उसकी पूर्णता का बखान करने के लिए प्रेरित करता है, वह स्वयं-प्रमाणित रूप से अपने शब्दों के माध्यम से भी स्वयं को ज्ञात करेगा।

तीसरी वास्तविकता: सृष्टिकर्ता होने के नाते यह उसकी विशेषता है कि परमेश्वर अपने कार्यों के द्वारा, अपने प्राणियों में से सबसे अधिक चुने हुए, सबसे जरूरतमंद, सबसे नाजुक और सबसे उत्साही लोगों द्वारा की गई प्रार्थनाओं और धन्यवादों का उत्तर अपनी वाणी से देता है - जो वास्तव में मानव हैं।

चौथी वास्तविकता: वाणी का गुण, जो ज्ञान और जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है तथा दोनों की प्रकाशमान अभिव्यक्ति है , अनिवार्यतः उस सत्ता में व्यापक और शाश्वत रूप में पाया जाएगा जिसके पास व्यापक ज्ञान और शाश्वत जीवन है।

पाँचवीं वास्तविकता: यह दिव्यता का परिणाम है कि जो प्राणी अपने सबसे प्रिय और प्यारे, अपने सबसे बेचैन और दरिद्र प्राणियों को - जिन्हें सबसे अधिक किसी सहारे की आवश्यकता है और जो अपने स्वामी और मालिक को पाने के लिए सबसे अधिक इच्छुक हैं - जन्मजात नपुंसकता और लालसा, गरीबी और आवश्यकता, भविष्य की चिंताएँ, और प्रेम और आराधना प्रदान करता है - यह उसकी दिव्यता का परिणाम है कि वह अपनी वाणी के माध्यम से उन्हें अपना अस्तित्व बताए। इस प्रकार, सार्वभौमिक, स्वर्गीय रहस्योद्घाटन, जिसमें ईश्वर द्वारा अपनी वाणी को मानवीय समझ के स्तर तक कम करने की वास्तविकताएँ शामिल हैं, स्वयं को ज्ञात करने के लिए भगवान के रूप में उनकी इच्छा, और उनकी दयालु प्रतिक्रिया, राजसी वार्तालाप, और शाश्वत रूप से चाहने वाले के रूप में आत्म-संचार, अनिवार्य रूप से विद्यमान एक के अस्तित्व और एकता के लिए सर्वसम्मति से गवाही देते हैं। यह प्रमाण सूर्य के अस्तित्व के बारे में सूर्य की किरणों की गवाही से भी अधिक शक्तिशाली है। यात्री को यही बात समझ में आई है।

यात्री फिर प्रेरणा के उपहार पर विचार करता है और देखता है कि सच्ची प्रेरणा एक मामले में रहस्योद्घाटन से मिलती जुलती है और यह प्रभु के प्रवचन का एक रूप है। हालाँकि, रहस्योद्घाटन और प्रेरणा दो मामलों में भिन्न हैं:

पहला अंतर: रहस्योद्घाटन, जो प्रेरणा से कहीं अधिक उच्च है, आमतौर पर स्वर्गदूतों द्वारा दिया जाता है, जबकि प्रेरणा आमतौर पर सीधे आती है।

उदाहरण के लिए, एक राजा के पास अपने आदेश को कहने और संप्रेषित करने के दो तरीके होते हैं। पहला यह कि, अपने राज्य और अपने राज्य की शान के नाम पर, वह अपने राज्य के नाम पर आदेश देता है।

पूरे देश पर संप्रभुता के लिए, वह एक गवर्नर के पास एक लेफ्टिनेंट भेजता है।
कभी-कभी, अपनी संप्रभुता की भव्यता और अपने शाही आदेश के महत्व को प्रदर्शित करने के लिए, वह अपने लेफ्टिनेंट के साथ बैठक कर सकता है, और फिर राज्यपाल को आदेश सुनाया जाता है। दूसरा यह है कि वह अपने निजी फोन पर, सम्राट की उपाधि या राजत्व के नाम पर नहीं, बल्कि अपने स्वयं के व्यक्ति के रूप में, किसी भरोसेमंद नौकर या किसी साधारण व्यक्ति से बात करता है, जिसके साथ उसका कोई विशेष संबंध या कोई विशेष व्यवसाय है।

इसी प्रकार, पूर्व-शाश्वत प्रभु या तो सभी लोकों के प्रभु के नाम से तथा ब्रह्माण्ड के रचयिता के पद से रहस्योद्घाटन या व्यापक प्रेरणा के माध्यम से बोल सकते हैं, जिसका कार्य रहस्योद्घाटन करना है, या वे एक गुप्त तरीके से, प्रत्येक जीव के प्रभु और रचयिता के रूप में, एक पर्दे के पीछे से तथा सम्बोधित करने वाले की क्षमता के अनुसार बोल सकते हैं।

दूसरा अंतर: रहस्योद्घाटन स्पष्ट, शुद्ध और सबसे चुने हुए लोगों के लिए आरक्षित है। हालाँकि, प्रेरणा रहस्योद्घाटन जितनी स्पष्ट नहीं है; इसमें रंग हस्तक्षेप कर सकते हैं और यह अधिक सामान्य है। प्रेरणा के कई अलग-अलग प्रकार हैं, जैसे कि वह जो फ़रिश्तों को आती है, वह जो मनुष्यों को होती है, और वह जो जानवरों को दी जाती है; इस प्रकार प्रेरणा समुद्र में बूंदों की सीमा तक ईश्वर के शब्दों के गुणन के लिए एक क्षेत्र बनाती है। यात्री समझता है कि ईश्वर के शब्दों का गुणन एक तरह से इस आयत की व्याख्या है: कहो: "अगर सारा समुद्र मेरे रब के शब्दों को लिखने के लिए स्याही होता, तो समुद्र वास्तव में मेरे रब के शब्दों के समाप्त होने से पहले ही समाप्त हो जाता, भले ही हम उसके साथ ऐसा ही कुछ और भी लाएँ" (18:109)।

फिर यात्री प्रकृति, ज्ञान, गवाही और परिणाम को देखता है
प्रेरणा और देखता है कि वे निम्नलिखित चार प्रकाशों से मिलकर बने हैं:

प्रथम प्रकाश: यह इसलिए उभरता है क्योंकि ईश्वर सर्व-प्रेममय और दयालु है और इस प्रकार वह अपने वचन, उपस्थिति और वार्तालाप के माध्यम से स्वयं को प्रिय बनाता है, ठीक उसी प्रकार जैसे वह अपने कर्मों के माध्यम से अपने प्राणियों से स्वयं को प्रिय बनाता है।

दूसरा प्रकाश: यह ईश्वर के अत्यन्त दयालु होने का परिणाम है; जिस प्रकार वह अपने बंदों की प्रार्थनाओं का उत्तर कर्मों के रूप में देता है, उसी प्रकार वह परदे के पीछे से शब्दों के माध्यम से भी उन्हें उत्तर देता है।

तीसरा प्रकाश: परमेश्वर का प्रभुत्व यह मांग करता है कि जिस प्रकार वह अपने उन प्राणियों की सहायता के लिए की गई प्रार्थनाओं और पुकारों का अपने कार्यों में उत्तर देता है,

जब मनुष्य घोर क्लेशों और कष्टों से पीड़ित होते हैं, तब भी वह प्रेरणा के वचनों के साथ उनकी सहायता के लिए आता है, जो उसकी वाणी के समान हैं।

चौथा प्रकाश: जिस तरह ईश्वर अपने कर्मों के माध्यम से अपने अस्तित्व, उपस्थिति और सुरक्षा को अपने उन चेतन प्राणियों के लिए प्रत्यक्ष बनाता है जो गरीब, कमजोर हैं और जिन्हें अपने स्वामी, रक्षक, संरक्षक और संरक्षक को खोजने की सबसे अधिक आवश्यकता है, यह भी उसके सर्व-प्रेमी देवता और सर्व-दयालु भगवान होने का परिणाम है कि उसे अपनी उपस्थिति और अस्तित्व को वाणी के माध्यम से, सच्ची प्रेरणा के फिल्टर के माध्यम से - भगवान के रूप में उनके प्रवचन का एक तरीका - व्यक्तियों को उनके और उनकी क्षमताओं के अनुरूप तरीके से, उनके दिलों के "टेलीफोन" के माध्यम से संप्रेषित करना चाहिए। यह बात यात्री को समझ में आ गई है।

यात्री फिर प्रेरणा की गवाही को देखता है और देखता है कि, उदाहरण के लिए, यदि सूर्य में चेतना और जीवन होता, और उसके प्रकाश में सात रंग उसके सात गुण होते - जैसे कि ईश्वर के सात सकारात्मक या पुष्टिकारक गुण - तो उसके पास अपनी किरणों और प्रकाश की अभिव्यक्तियों के माध्यम से एक प्रकार की वाणी भी होती। चूँकि सभी पारदर्शी चीज़ों में उसका प्रतिबिंब और छवि होती है, इसलिए वह सभी दर्पणों, चमकती हुई वस्तुओं, कांच के टुकड़ों, बुलबुले और पानी की बूंदों से प्रत्येक की क्षमता के अनुसार बात करेगा। यह उन सभी चीज़ों की ज़रूरतों को पूरा करेगा जिनमें यह प्रतिबिंबित होता है और ये सभी सूर्य के अस्तित्व की गवाही देंगे। इसके अलावा, इसका कोई भी कार्य अन्य कार्यों में बाधा नहीं बनेगा, और एक वस्तु को संबोधित करना इसे अन्य सभी वस्तुओं को एक साथ संबोधित करने से नहीं रोकेगा। इसी प्रकार, अनंत काल के सूर्य की वाणी, जो शाश्वत सर्व-प्रतापी प्रभु, सर्व-महिमावान, सर्व-कृपालु सभी चीजों का निर्माता है, जो सार्वभौमिक और सर्वव्यापी है, अपने ज्ञान और शक्ति की तरह, प्रत्येक वस्तु या प्राणी की क्षमता के अनुसार खुद को प्रकट करता है। एक अनुरोध के लिए इसका जवाब अन्य सभी अनुरोधों के लिए इसके जवाब में बाधा नहीं बनता है, न ही इसका कोई कार्य अन्य कार्यों की पूर्ति को रोकता है। चाहे वह कितने भी प्राणियों को संबोधित करे, यह कभी भ्रमित नहीं होता।

यात्री को ज्ञान और दर्शन के आधार पर निश्चितता की सीमा तक यह समझ में आ जाता है कि ये सभी अभिव्यक्तियाँ, वार्तालाप और प्रेरणाएँ - अलग-अलग और एक साथ - उस शाश्वत सूर्य की सर्वव्यापकता और आवश्यक अस्तित्व तथा उसकी एकता और एकरूपता की सर्वसम्मति से गवाही देती हैं।

जिज्ञासु यात्री को अदृश्य जगत से ईश्वर के ज्ञान के सम्बन्ध में जो शिक्षा मिली है, उसका संक्षिप्त उल्लेख चौदहवें और पंद्रहवें चरण में किया गया है:

ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है, वह अनिवार्य रूप से विद्यमान, एकवचन और सर्व-अद्वितीय है, जिसका अपनी एकता में अनिवार्य अस्तित्व सभी सच्चे रहस्योद्घाटनों की सर्वसम्मति से स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता है, जिसमें ईश्वर द्वारा अपनी वाणी को मानवीय समझ के स्तर तक कम करना, उसके गौरवशाली प्रवचन, भगवान के रूप में उसका आत्म-संचार, सर्व-दयालु के रूप में अपने सेवकों की विनतियों का उसका उत्तर, और अपने प्राणियों को अपने अस्तित्व का संकेत सर्वदा चाहने वाले के रूप में देना शामिल है। उसकी एकता में उसका अनिवार्य अस्तित्व सभी सत्य प्रेरणाओं की सर्वसम्मति से भी प्रदर्शित होता है, जिसमें ईश्वर द्वारा स्वयं को प्रिय बनाने, सर्व-दयालु के रूप में अपने प्राणियों की प्रार्थनाओं का उसका उत्तर, उनके प्रभु के रूप में सहायता के लिए अपने सेवकों की अपीलों का उसका उत्तर, और अपने प्राणियों को सर्व-महिमावान के रूप में उसके अस्तित्व और सर्वव्यापकता का उसका संकेत देने के उदाहरण शामिल हैं।

सोलहवाँ कदम

यात्री फिर अपनी बुद्धि को संबोधित करते हुए कहते हैं: "चूँकि मैं इन प्राणियों के माध्यम से इस ब्रह्मांड के निर्माता और मालिक की खोज कर रहा हूँ, इसलिए मुझे सबसे पहले उनके प्राणियों में सबसे प्रसिद्ध के पास जाना चाहिए - जो, जैसा कि उनके शत्रुओं ने भी पुष्टि की है, उनमें से सबसे उत्तम है, और सबसे कुशल सेनापति, सबसे प्रसिद्ध शासक, सबसे महान वक्ता और सबसे प्रखर बुद्धि का स्वामी है। मुझे उस व्यक्ति के पास जाना चाहिए जिसने अपने गुणों और कुरान के साथ पिछली चौदह शताब्दियों को प्रकाशित किया है: मुहम्मद अरबवासी, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। हमें उनसे वह पूछने के लिए खुशी के युग में एक साथ जाना चाहिए जिसकी मुझे तलाश है।" और इस तरह यात्री अपनी बुद्धि के साथ उस युग में प्रवेश करता है और देखता है कि, मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, के लिए धन्यवाद, यह सच्ची खुशी का युग था; इस व्यक्ति ने एक सबसे आदिम और अनपढ़ लोगों को दुनिया के स्वामी और शिक्षक में बदल दिया था और उन्होंने यह बहुत ही कम समय में अपने द्वारा लाए गए प्रकाश के माध्यम से किया था।

यात्री उनकी बुद्धि से कहता है: "सबसे पहले, हमें इस असाधारण व्यक्ति के मूल्य, उसके शब्दों की सत्यता और उसके संदेशों की सत्यता को निश्चित रूप से जानना चाहिए। फिर हमें उससे हमारे निर्माता के बारे में पूछना चाहिए।" और इस तरह यात्री जांच शुरू करता है। यहाँ हम यात्री द्वारा खोजे गए अनगिनत सार्वभौमिक और निर्णायक प्रमाणों में से नौ का संक्षेप में उल्लेख करेंगे।

वे इस प्रकार हैं:

प्रथम : यह व्यक्ति, उस पर शांति और आशीर्वाद हो, सभी संभव प्रशंसनीय गुणों और उत्कृष्ट विशेषताओं से युक्त था; यह पुष्टि की गई थी

यहाँ तक कि उसके शत्रुओं द्वारा भी। इसके अतिरिक्त, विश्वसनीय संचार माध्यमों से यह बताया गया है कि उसके हाथों से सैकड़ों चमत्कार किए गए थे, जैसे कि मात्र एक इशारे से चाँद को विभाजित करना, या मुट्ठी भर मिट्टी फेंक कर कई सैनिकों को भागने पर मजबूर करना—ऐसे चमत्कार जिनका उल्लेख आयतों में किया गया है, और चाँद विभाजित हो गया (54:1), और जब तुमने फेंका तो तुम नहीं थे जिन्होंने फेंका, बल्कि अल्लाह ने फेंका (8:17)। उन्होंने अपनी उंगलियों से प्रचुर मात्रा में बहने वाले पानी से एक पूरी सेना की प्यास भी बुझाई थी। वास्तव में, इनमें से तीन सौ से अधिक चमत्कारों को उन्नीसवें पत्र में निर्णायक प्रमाणों के साथ प्रस्तुत किया गया है, जिसे पैगंबर मुहम्मद के चमत्कार के रूप में जाना जाता है। पैगंबर के अन्य चमत्कारों के बारे में जानने के इच्छुक पाठकों को उस ग्रंथ का संदर्भ लेना चाहिए। और इसलिए यात्री निष्कर्ष निकालता है: “वह जो

अपनी सबसे महान विशेषताओं और सिद्धियों के अलावा जो ऐसे स्पष्ट चमत्कार करता है, उसे वाणी में सबसे सच्चा होना चाहिए। वह झूठ और छल-कपट में खुद को कैसे गिरा सकता है, जो कि नीच लोगों के दोष हैं?”

दूसरा : पैगम्बर मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, अपने हाथ में ब्रह्मांड के मालिक का फरमान रखते हैं, अर्थात शक्तिशाली, गौरवशाली कुरान, जिसे हर सदी में करोड़ों लोगों ने स्वीकार किया है और इसकी पुष्टि की है। यह तथ्य कि कुरान ब्रह्मांड के निर्माता का वचन है और कम से कम चालीस पहलुओं में चमत्कारी है, इसे पच्चीसवें वचन में पुख्ता सबूतों के साथ समझाया गया है, जिसे कुरान की चमत्कारिकता के रूप में जाना जाता है। उन पहलुओं के बारे में अधिक जानने में रुचि रखने वाले पाठकों को उस ग्रंथ का संदर्भ लेना चाहिए। इसे समझते हुए, यात्री कहता है: "ऐसे शुद्ध सत्य के फरमान का अनुवादक, व्याख्याता और संवाहक झूठ नहीं बोल सकता, क्योंकि ऐसा करना फरमान का उल्लंघन करना और उसके मालिक को धोखा देना होगा।"

तीसरा : निम्नलिखित पर विचार करें:

- पैगम्बर मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, एक पवित्र कानून, एक धर्म, पूजा की एक संहिता, प्रार्थना का एक तरीका, एक संदेश और विश्वास का एक तरीका लेकर आए, जो पहले कभी अस्तित्व में नहीं था। और उनके बिना, इनमें से कुछ भी कभी भी नहीं हो सकता था। उस अनपढ़ पैगम्बर द्वारा लाया गया अद्वितीय कानून चौदह शताब्दियों तक मानव जाति के पांचवें हिस्से पर न्यायपूर्ण और सटीक तरीके से शासन करता रहा है।

- इस्लाम, जिसकी उत्पत्ति पैगंबर के कार्यों, कथनों, कथनों और उदाहरणों से हुई और जिसका प्रतिनिधित्व पैगंबर ने किया, वह भी बेजोड़ है। समय या स्थान की परवाह किए बिना, इसने करोड़ों लोगों के जीवन में मार्गदर्शक और सक्षम अधिकारी के रूप में सेवा की है। इसने सिखाया है

और उनके मनों को प्रशिक्षित किया, उनके हृदयों को प्रकाशित और शुद्ध किया, उनकी आत्माओं को प्रशिक्षित और परिष्कृत किया, और उनकी आत्माओं को परिपूर्ण बनाया।

• पैगम्बर मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, इस्लाम द्वारा निर्धारित पूजा पद्धति का सबसे अच्छा उदाहरण हैं; वे सभी में सबसे अधिक ईश्वर के प्रति जागरूक और ईश्वर का सम्मान करने वाले व्यक्ति हैं। उन्होंने अत्यंत सावधानी और ध्यान से पूजा की, यहां तक कि सबसे छोटी-छोटी बातों पर भी, बड़े संकट के समय और निरंतर संघर्ष और गतिविधि वाले जीवन के दौरान। उन्होंने अपनी पूजा में किसी की नकल नहीं की, और आध्यात्मिक विकास के अल्फा और ओमेगा को पूरी तरह से संयोजित किया।

• उनकी प्रार्थनाएँ और ईश्वर के बारे में उनका ज्ञान भी बेमिसाल है: अकेले अल-जौशनुल-कबीर के साथ , जो उनकी हज़ारों प्रार्थनाओं और दुआओं में से सिर्फ़ एक है, वह अपने भगवान का वर्णन इस हद तक ज्ञान के साथ करते हैं कि कोई भी संत या ज्ञानी कभी भी इस तरह का ज्ञान प्राप्त नहीं कर पाया, भले ही वे अपने पूर्वजों की उपलब्धियों पर निर्माण करने में सक्षम रहे हों। अल-जौशनुल-कबीर के निन्यानवे भागों में से सिर्फ़ एक का सरसरी अध्ययन भी दिखाएगा कि इसके जैसा कोई दूसरा भाग कभी नहीं हो सकता। • अपने संदेश को संप्रेषित करते हुए और अपने लोगों को सच्चाई की ओर बुलाते हुए, पैगंबर - उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ने ऐसी दृढ़ता और साहस का प्रदर्शन किया कि वह कभी भी लड़खड़ाए या हिचकिचाए नहीं। और यह आस-पास की शक्तियों और धर्मों के साथ-साथ उनके अपने
लोगों और कबीले, यहाँ तक कि उनके चाचा की शत्रुता के बावजूद था। उन्होंने सफलतापूर्वक पूरी दुनिया को चुनौती दी, जिससे इस्लाम सभी अन्य धर्मों और प्रणालियों से श्रेष्ठ बन गया। इससे यह सिद्ध होता है कि मानवजाति को उपदेश देने या उन्हें सत्य के संदेश की ओर बुलाने में कोई भी अन्य व्यक्ति उनकी बराबरी नहीं कर सकता। • उनका विश्वास इतना असाधारण रूप से मजबूत और आश्वस्त था, उनके हृदय में इतना चमत्कारिक रूप से विकसित और निहित था, और इतना ऊंचा और विश्व-ज्ञानवर्धक था कि उस समय प्रचलित कोई भी विचार, विश्वास, दर्शन या आध्यात्मिक शिक्षा उनके भीतर कोई संदेह पैदा नहीं कर सकी। उनके शत्रुओं के विरोध और शत्रुता के बावजूद, वे उन्हें हिला नहीं पाए या उन्हें उनके उद्देश्य के बारे में अनिश्चित नहीं कर पाए। इसके अलावा, सभी युगों के संत, सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण उनके साथी, जिन्होंने आध्यात्मिकता में और विश्वास की विभिन्न डिग्री के माध्यम से
प्रगति की है, हमेशा उनके विश्वास से लाभान्वित हुए हैं, जिसे वे उच्चतम डिग्री मानते हैं। यह सिद्ध करता है कि उनका विश्वास भी बेजोड़ है।

जो यात्री ईश्वर की खोज में रहता है, वह इस प्रकार समझता है और अपनी बुद्धि से यह निष्कर्ष निकालता है कि जिसने ऐसा अनूठा कानून और अद्वितीय धर्म प्रस्तुत किया, जिसने ऐसी अद्भुत उपासना पद्धति और प्रार्थना में असाधारण उत्कृष्टता प्रदर्शित की, जिसके उपदेश की प्रशंसा संसार भर में हुई और जिसका विश्वास चमत्कारिक पूर्णता की सीमा तक था, उसके गुणों में झूठ और छल के लिए कोई स्थान नहीं हो सकता।

चौथा : जिस तरह पैगम्बरों की सर्वसम्मति ईश्वर के अस्तित्व और एकता का बहुत मजबूत प्रमाण है, उसी तरह यह उस महान व्यक्ति की सच्चाई और संदेशवाहक होने की ठोस गवाही भी प्रस्तुत करता है। क्योंकि इतिहास पुष्टि करता है कि उसके पास सभी पवित्र गुण, चमत्कार और कर्तव्य हैं जो पैगम्बर के मिशन और सत्यनिष्ठा को दर्शाते हैं। जिस तरह पिछले पैगम्बरों ने टोरा, सुसमाचार, भजन और अन्य शास्त्रों में उसके आने की खुशखबरी देकर भविष्यवाणी की थी - उन्नीसवें पत्र में इन खुशनुमा भविष्यवाणियों में से बीस से अधिक स्पष्ट भविष्यवाणियाँ बताई गई हैं -

उन्होंने अपने मिशन और चमत्कारों से भी उसकी पुष्टि की, इस व्यक्ति की सत्यता की पुष्टि की, जो पैगम्बरी के मिशन और कार्यों को पूरा करने में सबसे निपुण है, वास्तव में उसके दावों पर अपनी मुहर लगा दी। यात्री को लगता है कि पिछले सभी पैगम्बरों ने अपने कार्यों की एकमतता के माध्यम से इस व्यक्ति की सत्यता की गवाही दी, ठीक उसी तरह जैसे उन्होंने मौखिक सहमति के माध्यम से ईश्वर की एकता की गवाही दी थी।

पांचवां : उस व्यक्ति के कर्मों और सिद्धांतों का अनुसरण करके सत्य, पूर्णता, चमत्कार करने की श्रेणी, वस्तुओं की वास्तविकता में अंतर्दृष्टि, तथा आध्यात्मिक खोज और दर्शन प्राप्त करने के बाद, हजारों संत एकमत होकर ईश्वर की एकता और उस व्यक्ति की सत्यता और संदेशवाहक होने की गवाही देते हैं, जो उनका स्वामी है। यह तथ्य कि अपने संतत्व के प्रकाश के माध्यम से संत अदृश्य जगत के संबंध में उनके द्वारा घोषित कुछ सत्यों के साक्षी होते हैं, और विश्वास के प्रकाश के माध्यम से वे ज्ञान की निश्चितता या दृष्टि की निश्चितता या अनुभव की निश्चितता की डिग्री पर इन सभी पर विश्वास करते हैं और उनकी पुष्टि करते हैं, उस व्यक्ति की सत्यता और सदाचार की सीमा को सूर्य से भी अधिक चमकदार तरीके से प्रदर्शित करता है, जो उनका स्वामी है।

छठा : लाखों परिश्रमी, सावधान, शुद्ध और सत्यनिष्ठ विद्वान और ऋषिगण, जो उस अशिक्षित व्यक्ति द्वारा लाये गये पवित्र सत्यों में निहित शिक्षा के माध्यम से, उसके द्वारा प्रवर्तित उत्कृष्ट विज्ञानों के माध्यम से, और उसके द्वारा खोजे गये ईश्वर के ज्ञान के माध्यम से ज्ञान के उच्चतम स्तर तक पहुँच चुके हैं - सभी एकमत से न केवल ईश्वर की एकता को सिद्ध और पुष्ट करते हैं, जो कि ईश्वर की एकता ही है।

पैगंबर मुहम्मद के मिशन की नींव ही नहीं, बल्कि उस सर्वोच्च गुरु की सच्चाई और उनके शब्दों की सत्यता भी है। यह उनके संदेशवाहक होने और सच्चाई का सबूत है जो दिन के उजाले की तरह साफ है।

सातवीं बात: पैगम्बरों के बाद पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के परिवार और साथी अंतर्दृष्टि, विवेक और पूर्णता में सबसे उन्नत हैं; वे मानव जाति के सबसे प्रसिद्ध, सम्मानित, धर्मपरायण और तीक्ष्ण दृष्टि वाले सदस्य हैं। पैगम्बर के सभी विचारों और उनकी छिपी और प्रकट अवस्थाओं और स्थितियों की गहन जांच करने के बाद, उन्होंने सर्वसम्मति से निष्कर्ष निकाला है कि वे दुनिया के सबसे महान और सबसे सच्चे और ईमानदार व्यक्ति थे। यात्री समझता है कि ऐसे असाधारण लोगों द्वारा उनके बारे में ऐसी अडिग पुष्टि उनके उद्देश्य की सच्चाई को साबित करती है, जैसे दिन का प्रकाश सूर्य के अस्तित्व को साबित करता है।

आठवाँ : यह ब्रह्मांड उस निर्माता, लेखक, लेखक और डिज़ाइनर को दर्शाता है जिसने इसे निर्धारित और आकार दिया है और जो इसे एक महल, एक पुस्तक और चमत्कारों की प्रदर्शनी की तरह नियंत्रित और प्रशासित करता है। इसलिए, एक महान संदेशवाहक, एक सच्चा प्रकटकर्ता, एक सटीक गुरु और एक सच्चा शिक्षक होना चाहिए जो ब्रह्मांड के निर्माण के पीछे के दिव्य उद्देश्य को जानता और बताता है, जो दूसरों को उस दिव्य ज्ञान के बारे में सिखाता है जो ब्रह्मांड की उद्देश्यपूर्ण गति और परिवर्तनों को रेखांकित करता है, जो इसके अंतर्निहित मूल्य और इसमें मौजूद प्राणियों की पूर्णता की घोषणा करता है, और जो इस महान ब्रह्मांडीय पुस्तक के अर्थों की व्याख्या करता है। यात्री को यह एहसास होता है कि ऐसे कर्तव्यों को सबसे पूर्णता से पूरा करने वाला व्यक्ति अपने उद्देश्य में सबसे सच्चा है, जो ब्रह्मांड के निर्माता का सबसे भरोसेमंद और महान अधिकारी है।

नौवां : सृजन के पर्दे के पीछे एक है जो इन उद्देश्यपूर्ण और कुशल कार्यों के माध्यम से, चाहता है कि उसकी संपूर्ण कौशल और कलात्मकता प्रदर्शित हो। उस पर्दे के पीछे एक है जो अपने द्वारा बनाए गए अनगिनत सजे-धजे प्राणियों के माध्यम से खुद को ज्ञात और प्यार करना चाहता है, और अपने असीम बहुमूल्य उपहारों के बदले में प्रशंसा और धन्यवाद प्राप्त करना चाहता है, अपने स्नेही और सुरक्षात्मक जीवन को बनाए रखने के माध्यम से अपने प्रभुत्व के लिए कृतज्ञता और प्रशंसा के साथ पूजा को प्रोत्साहित करना चाहता है, साथ ही साथ अपने प्राणियों के सबसे नाजुक स्वाद और भूख को संतुष्ट करना चाहता है। वह अपनी बुद्धिमानी और विस्मयकारी रचनात्मकता और शानदार, राजसी और उद्देश्यपूर्ण गतिविधि के माध्यम से अपनी दिव्यता को प्रदर्शित करना चाहता है, जो कि उदाहरण के लिए, मौसम के परिवर्तन और दिन और रात के परिवर्तन के दौरान प्रदर्शित होती है - यह सब इसलिए ताकि मानवजाति

उसके दिव्यत्व में विश्वास करना, उसके प्रति समर्पित होना और उसकी आज्ञा का पालन करना। इसके अलावा, वह अपने न्याय, न्याय और सच्चाई के प्रकटीकरण की इच्छा रखता है, सद्गुणों और पुण्यात्माओं की रक्षा करते हुए बुराई और उसे करने वालों का नाश करता है, और झूठे और अत्याचारियों को स्वर्गीय प्रहारों से नष्ट करता है।

इस प्रकार, संसार की सबसे प्रिय रचना और सबसे समर्पित सेवक
उस अदृश्य सत्ता के दर्शन को प्राप्त करने वाला व्यक्ति निश्चित रूप से ऊपर वर्णित ईश्वरीय उद्देश्यों की सर्वोच्च सीमा तक सेवा करने वाला होगा। यह वह व्यक्ति होगा जो ब्रह्मांड की रचना के रहस्य और ताबीज को प्रकट करता है, जो हमेशा अपने निर्माता के नाम पर कार्य करता है, और जो केवल उसी से सहायता और सफलता मांगता है, और दोनों प्राप्त करता है। यह पैगंबर मुहम्मद अल-कुरैशी हैं, उन पर शांति और आशीर्वाद हो।

यात्री उनकी बुद्धि या तर्क को संबोधित करते हुए कहता है: "चूँकि ये नौ सत्य उस व्यक्ति की सत्यनिष्ठा की गवाही देते हैं, इसलिए वह निस्संदेह मानवता के सम्मान और दुनिया के गौरव का स्रोत होना चाहिए। इसलिए वह 'दुनिया का गौरव' और 'मानव जाति का गौरव' कहलाने के योग्य है। इसके अलावा, कुरान, वह चमत्कारी शब्द और दयालु का फरमान जिसे इस व्यक्ति ने अपने हाथ में थामा है, उसने पुरानी दुनिया के आधे हिस्से को अपने शानदार आध्यात्मिक क्षेत्र में खींच लिया है। पैगंबर की व्यक्तिगत पूर्णता और उच्च गुणों के साथ, यह दर्शाता है कि वह दुनिया में सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति है, और तदनुसार हमारे निर्माता के बारे में उनके शब्द सबसे महत्वपूर्ण हैं।"

अब आओ और देखो! अपने सैकड़ों चमत्कारों और इस्लाम में निहित हज़ारों उदात्त, स्थापित सत्यों की शक्ति के आधार पर, उनका एकमात्र उद्देश्य अनिवार्य रूप से विद्यमान अस्तित्व और एकता को साबित करना और उसकी गवाही देना था, और उसे उसके सभी गुणों और नामों के साथ घोषित करना था। वह ब्रह्मांड को प्रकाशित करने वाला "आध्यात्मिक सूर्य" है, हमारे निर्माता का सबसे शानदार प्रमाण और "ईश्वर का प्रिय" है। महान, सत्य और अडिग सर्वसम्मति के निम्नलिखित रूपों में से प्रत्येक पुष्टि करता है और पुष्टि करता है

वह जो साक्ष्य प्रस्तुत करता है वह है:

पहला : मुहम्मद के परिवार और वंशजों के रूप में जाने जाने वाले और प्रसिद्ध समुदाय की सर्वसम्मत पुष्टि, जिनमें हज़ारों आध्यात्मिक ध्रुव और सर्वोच्च संत हैं, जिनके पास इतनी गहरी आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि है कि वे अदृश्य में भी प्रवेश कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, इमाम अली ने कहा: "यदि अदृश्य से पर्दा हटा दिया जाए, तो मेरी निश्चितता में वृद्धि नहीं होगी।" और फिर 'अब्दुल-क़द्र अल-जिलानी हैं, जो

इस धरती पर रहते हुए ही मैंने परमेश्वर के सर्वोच्च सिंहासन और महादूत इसराफिल के भयानक रूप को देखा।

दूसरा : साथियों की सर्वसम्मति से पुष्टि, जो इस विश्वास पर आधारित थी कि वे इसके लिए अपने जीवन और संपत्ति, अपने माता-पिता और अपने कबीले को बलिदान करने के लिए तैयार थे। हालाँकि वे आदिम लोगों के बीच पले-बढ़े थे और अज्ञानता के माहौल में सामाजिक जीवन या प्रशासन के बारे में किसी भी सकारात्मक धारणा से रहित थे, किसी मार्गदर्शक शास्त्र से रहित थे और असभ्य युग के अंधेरे में डूबे हुए थे जब कोई पैगंबर नहीं थे, इन लोगों ने मुहम्मद के पदचिन्हों का अनुसरण करना शुरू कर दिया और जल्द ही अपने समय के सबसे सभ्य और सामाजिक-राजनीतिक रूप से उन्नत लोगों और राज्यों के स्वामी, मार्गदर्शक और न्यायप्रिय शासक बन गए।

तीसरा : उनके समुदाय में असंख्य सटीक और गहन विद्वानों की सर्वसम्मति से पुष्टि, जो ज्ञान की निश्चितता पर आधारित है। प्रत्येक शताब्दी में ऐसे हजारों लोग हुए हैं जो विज्ञान और कला की हर शाखा में असाधारण रूप से उन्नत हुए हैं।

इस प्रकार, इस व्यक्ति की ईश्वर के अस्तित्व और एकता के प्रति गवाही इतनी सार्वभौमिक और अडिग है कि यदि इसके विरोधी सभी प्राणी एक हो जाएं, तो भी वे इसे चुनौती नहीं दे पाएंगे। यात्री इस निष्कर्ष पर पहुंचता है। यात्री ने अपने मन में सुख के युग का भ्रमण करते हुए प्रकाश के उस विद्यालय में जो सबक सीखा, उसके संदर्भ में इस सोलहवें चरण में कहा गया है:

> ईश्वर के अलावा कोई पूज्य नहीं है, वह अनिवार्य रूप से अस्तित्ववान, एक और अद्वितीय है, जिसका अनिवार्य अस्तित्व उसकी एकता में स्पष्ट रूप से दुनिया के गौरव और आदम की संतानों की महिमा से, कुरान की संप्रभुता की महिमा, इस्लाम की समग्रता की महिमा, उसकी परिपूर्णताओं की बहुलता और उसके नैतिक गुणों की उदात्तता से प्रमाणित होता है, जिसकी पुष्टि उसके शत्रुओं द्वारा भी की गई है। फिर, वह सैकड़ों चमत्कारों की शक्ति के माध्यम से गवाही देता है जो उसकी सत्यनिष्ठा को प्रमाणित करते हैं और जो दृढ़ता से स्थापित हो चुके हैं, और उसके धर्म में निहित हजारों स्पष्ट और निर्णायक सत्यों की शक्ति के माध्यम से, जैसा कि उसके प्रसिद्ध, प्रकाश फैलाने वाले परिवार और वंशजों की सर्वसम्मति से, उसके साथियों की पैनी दृष्टि और विवेक के साथ सहमति से, और उसके समुदाय के विद्वानों की उनके ज्ञानवर्धक प्रमाणों और अंतर्दृष्टि के साथ सहमति से पुष्टि की गई है।

सत्रहवाँ कदम

अथक और अतृप्त यात्री, जो इस दुनिया में जीवन के उद्देश्य और सार को विश्वास में समझते हैं, अपने दिल को संबोधित करते हैं और कहते हैं: "आइये हम विश्वास करें।"

चमत्कारिक व्याख्या वाली कुरान नामक पुस्तक का सहारा लें, जिसके बारे में कहा जाता है कि यह उस व्यक्ति का वचन है जिसे हम खोज रहे हैं: आइए हम दुनिया की 'सबसे प्रसिद्ध, सबसे शानदार और सबसे बुद्धिमान पुस्तक' की जांच करें, जो हर युग में उन लोगों को चुनौती देती है जो इसे मानने से इनकार करते हैं। आइए देखें कि इसमें क्या लिखा है। लेकिन सबसे पहले, हमें यह स्थापित करना होगा कि यह पुस्तक हमारे निर्माता की ओर से है।"

यह कहकर वे जांच शुरू करते हैं।

चूँकि यात्री वर्तमान युग में रहते हैं, इसलिए वे सबसे पहले रिसाले-ए-नूर को देखते हैं, जिसमें कुरान की चमत्कारिकता की झलकियाँ शामिल हैं, और वे देखते हैं कि इसके एक सौ तीस भाग सत्य और असत्य के बीच के उस मानदंड - कुरान - से कुछ आयतों के सूक्ष्म अर्थों, प्रकाशों और सुस्थापित व्याख्याओं से मिलकर बने हैं। वे इस हठ और अविश्वास के युग में इसकी विषय-वस्तु और कुरान की सच्चाइयों के सशक्त प्रसार और बचाव से समझते हैं कि कुरान, इसका स्वामी, स्रोत, अधिकार और सूर्य, एक अवतरित पुस्तक है। रिसाले-ए-नूर के विभिन्न भागों में कुरान के ईश्वरीय रचयिता के सैकड़ों प्रमाणों में से , पच्चीसवाँ शब्द, जो कुरान का एकमात्र प्रमाण है, और उन्नीसवें अक्षर का अंत कुरान की चमत्कारिकता के चालीस पहलुओं को इस तरह स्थापित करता है कि जो कोई भी उन्हें देखेगा, वह न केवल कोई आलोचना या आपत्ति उठाएगा, बल्कि उनके तर्कों की भी बहुत सराहना करेगा। इसलिए, कुरान को ईश्वरीय वचन के रूप में स्थापित करने और चमत्कारिकता के इसके विभिन्न पहलुओं की व्याख्या को रिसाले -ए-नूर पर छोड़ते हुए, यात्री कुछ बिंदुओं पर ध्यान देता है जो संक्षेप में कुरान की महानता को प्रदर्शित करते हैं।

पहला बिन्दु: जिस प्रकार कुरान, अपने सभी चमत्कारों और सत्यों के साथ जो इसकी सत्यता को दर्शाते हैं, पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) का एक चमत्कार है, स्वयं पैगम्बर मुहम्मद, अपने सभी चमत्कारों, पैगम्बरी के प्रमाणों और ज्ञान की परिपूर्णता के साथ कुरान का एक चमत्कार है और एक निर्णायक प्रमाण है कि यह ईश्वर का वचन है।

दूसरा बिंदु: कुरान ने मानवीय सामाजिक जीवन में एक सार्थक, खुशहाल और ज्ञानवर्धक परिवर्तन लाने के साथ-साथ लोगों की आत्माओं, दिलों, आत्माओं और बुद्धि में तथा उनके व्यक्तिगत, सामाजिक और राजनीतिक जीवन में भी क्रांति ला दी है। इसके अलावा, इसने इस क्रांति को इस तरह से कायम रखा है कि पिछली चौदह शताब्दियों में हर पल इसे एक सौ मिलियन से अधिक लोगों द्वारा अत्यंत सम्मान के साथ पढ़ा गया है, जिससे उनकी आत्माओं को प्रशिक्षण और परिष्कार मिला है और उनके दिलों को शुद्ध किया है। आत्माओं के लिए यह विकास और उन्नति का साधन रहा है; बुद्धि के लिए, मार्गदर्शन और प्रकाश; और जीवन के लिए, यह स्वयं जीवन और सुख रहा है-

ऐसी पुस्तक निस्संदेह हर दृष्टि से अद्वितीय है: यह एक आश्चर्य, एक चमत्कार और एक चमत्कार है।

तीसरी बात: अपने अवतरण के समय से लेकर आज तक, कुरान ने ऐसी वाक्पटुता प्रदर्शित की है कि इसने "सात लटकती कविताओं" - जिन कविताओं को सर्वश्रेष्ठ माना जाता था, जो सोने में लिखी गई थीं और अज्ञानता के युग के दौरान काबा की दीवारों पर लटकी हुई थीं - का मूल्य इतना कम कर दिया है कि काबा से अपने पिता की कविता को उतारते समय, (प्रसिद्ध कवि) लबीद की बेटी ने कहा: "कुरान की आयतों की तुलना में, इसका अब कोई मूल्य नहीं है।"

एक बार एक बेडौइन कवि ने इस आयत का पाठ सुना जिसका अर्थ है: जो कुछ तुम्हें कहने का आदेश दिया गया है उसे खुलकर और जोरदार तरीके से कहो (15:94) और तुरंत सजदा कर लिया। जब उन्होंने उससे पूछा: "क्या तुम मुसलमान हो गए हो?" तो उसने जवाब दिया: "नहीं! मैं तो बस इस आयत की वाक्पटुता के आगे सजदा कर रहा था!"

इसके अलावा, हजारों विद्वानों, लेखकों और वाक्पटुता और बयानबाजी के विज्ञान के प्रतिभाशाली लोगों, जैसे कि अब्दुल-काहिर अल-जुरजानी, सक्काकी और ज़माख-शरी, ने सर्वसम्मति से निष्कर्ष निकाला है कि कुरान की वाक्पटुता मानव क्षमता से परे है और इसे किसी भी प्राणी द्वारा दोहराया नहीं जा सकता है।

इसके अलावा, कुरान ने शुरू से ही सभी अहंकारी और खुदगर्ज कवियों और बयानबाज़ों को चुनौती दी है, इस तरह से कि उनका अहंकार खत्म हो जाए: "(अगर तुम नहीं मानते कि मैं खुदा का कलाम हूँ, तो) या तो मेरी तरह एक भी सूरा बनाओ या फिर इस दुनिया और आखिरत में बर्बादी और अपमान को स्वीकार करो।" इस चुनौती के बावजूद, उस युग के जिद्दी बयानबाज़ों ने कुरान की तरह एक भी सूरा बनाने की कोशिश करने के छोटे रास्ते को छोड़ दिया और इसके बजाय (इसके खिलाफ लड़ने और) अपने जान-माल को खतरे में डालने का लंबा रास्ता चुना। इससे साबित होता है कि छोटा रास्ता नहीं अपनाया जा सकता।

लाखों अरबी किताबें प्रचलन में हैं, जो उस समय से या तो कुरान के मित्रों द्वारा इसकी नकल करने के लिए या इसके शत्रुओं द्वारा इसका विरोध करने और इसकी आलोचना करने के लिए लिखी गई हैं; ऐसी किताबों में समय के साथ विज्ञान और विचार के विकास के साथ सुधार किया गया है। हालाँकि, आज तक उनमें से एक भी कुरान के स्तर तक नहीं पहुँच पाई है। अगर कोई आम इंसान भी उन्हें सुनेगा, तो वह ज़रूर कहेगा: "कुरान इन दूसरी किताबों से मिलता-जुलता नहीं है और यह पूरी तरह से अलग श्रेणी में है। यह या तो उनसे नीचे है या उनसे ऊपर।" और चूँकि दुनिया में कोई भी नहीं - न ही कोई

यहां तक कि एक अविश्वासी या मूर्ख भी कह सकता है कि यह उनसे नीचे है, इसलिए उसे यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि वाक्पटुता में यह उन सभी से ऊंचा है।

एक बार एक व्यक्ति ने यह आयत पढ़ी जिसका अर्थ है, आकाश और पृथ्वी में जो कुछ भी है वह ईश्वर की महिमा करता है (57:1)। उसने कहा: "मैं इस आयत में कोई चमत्कारिक वाक्पटुता नहीं देख सकता।" उसे बताया गया: "अपने मन में उस युग में वापस जाओ और उस आयत को सुनो जैसा कि इसे वहाँ पढ़ा गया था।" खुद को वहां होने की कल्पना करते हुए, उसने देखा कि दुनिया के सभी प्राणी बेजान और बिना चेतना या उद्देश्य के दिखाई दे रहे थे, एक अस्थिर, क्षणभंगुर दुनिया में रह रहे थे, जो खाली, अनंत और असीम अंतरिक्ष से घिरा हुआ था, और भ्रम और अंधेरे में फंस रहा था। अचानक उसने कुरान की आवाज से उपरोक्त आयत की घोषणा सुनी। तुरन्त इस आयत ने ब्रह्मांड के चेहरे से पर्दा हटा दिया और इसे रोशन कर दिया। इस पूर्व-शाश्वत भाषण, इस शाश्वत आदेश ने सारी सृष्टि, और खास तौर पर आकाश और धरती, ईश्वर की याद और उसकी महिमा के उद्घोष में लगे हुए थे, और इस कार्य को खुशी और संतुष्टि के साथ पूरा कर रहे थे। यह सब यात्री ने देखा है। इस प्रकार, कुरान की वाक्पटुता का एक अंश चखकर और अन्य आयतों की तुलना करके, यात्री उन हजारों बुद्धिमान कारणों में से एक को समझ सकता है कि क्यों कुरान की वाक्पटुता ने आधी धरती और पाँचवें हिस्से की मानवता पर विजय प्राप्त की है; वे देखते हैं कि कैसे इसने अपने आगमन के बाद से चौदह शताब्दियों में बिना किसी बाधा के और अत्यंत सम्मान के साथ अपने राजसी प्रभुत्व को बढ़ाया है।

चौथा बिंदु: जबकि सबसे सुखद बात को भी बार-बार दोहराने से अंततः घृणा होती है, कुरान की मिठास ऐसी है कि इसे जितनी बार भी पढ़ा जाए, यह न तो थकावट पैदा करती है और न ही विकर्षण। वास्तव में, यह स्वयंसिद्ध हो गया है कि जिनके दिल भ्रष्ट नहीं हैं और जिनका स्वाद खराब नहीं हुआ है, उनके लिए कुरान को बार-बार पढ़ने से थकान नहीं होती, बल्कि इसकी मिठास और आकर्षण में वृद्धि होती है। साथ ही, कुरान में इतनी ताजगी, युवापन और मौलिकता है कि भले ही यह चौदह शताब्दियों से जीवित है और सभी के लिए उपलब्ध है, लेकिन इसकी जीवंतता ऐसी है कि कोई सोचेगा कि यह अभी-अभी ही अवतरित हुई है। हर सदी में कुरान ने एक नया यौवन देखा है, मानो वह उस सदी को संबोधित कर रहा हो। इसी तरह, भले ही ज्ञान की हर शाखा के विद्वान कुरान को हमेशा अपने पास रखते हैं ताकि इससे लाभ उठा सकें और उसका अनुसरण कर सकें

वे देखते हैं कि कुरान ने अपनी व्याख्या की शैली और तरीके की मौलिकता को बरकरार रखा है।

पाँचवाँ बिंदु: क़ुरआन का एक पक्ष अतीत में है और दूसरा भविष्य में। इसका मूल और एक पक्ष पूर्ववर्ती पैगम्बरों की सर्वसम्मति से पुष्टि की गई सच्चाईयाँ हैं, जो इसे सर्वसम्मति की भाषा से पुष्टि करते हैं और बदले में यह भी पुष्टि और पुष्टि करता है। इसी तरह, सभी संत और शुद्ध विद्वान - दूसरा पक्ष - क़ुरआन के वे फल जिन्होंने इससे जीवन प्राप्त किया है, उन्होंने अपनी महत्वपूर्ण आध्यात्मिक प्रगति के माध्यम से दिखाया है कि उनका धन्य "वृक्ष" सत्य का जीवित और सबसे उज्ज्वल साधन है, और हर तरह से लाभदायक है। सभी सच्चे आध्यात्मिक मार्ग या संतत्व और इस्लामी विज्ञान के तरीके, जो सभी क़ुरआन के दूसरे पक्ष के संरक्षण में विकसित हुए हैं, सर्वसम्मति से गवाही देते हैं कि क़ुरआन स्वयं सत्य है और सत्यों का एक संग्रह है जो व्यापकता में अद्वितीय है।

छठा बिन्दु: कुरान अपने निम्नलिखित छह श्लोकों में से प्रत्येक में प्रकाशमान है।
पहलू या पक्ष, जो सभी इसकी सत्यता और सच्चाई को इंगित करते हैं:

- इसके नीचे तर्क और प्रमाण के स्तम्भ छिपे हैं;
- इसके ऊपर चमत्कार या अदृश्यता की छाप की झलकियाँ चमकती हैं
  स्थिरता;
- दोनों लोकों में सुख की प्राप्ति को अपना लक्ष्य बनाना उसके सामने है;
- इसके पीछे स्वर्गीय रहस्योद्घाटन की सच्चाईयाँ हैं
  सहायता;
- इसके दाईं ओर असंख्य स्वस्थ और ईमानदार दिमागों की अच्छी तरह से प्रलेखित और प्रमाणित पुष्टि है;
- और इसके बायीं ओर सच्ची संतुष्टि, ईमानदार आकर्षण और स्वस्थ हृदय और शुद्ध अंतःकरण की समर्पणता देखी जा सकती है।

इन छह बातों को मिलाकर यह साबित होता है कि कुरान एक असाधारण, दृढ़ और अजेय स्वर्गीय किला है जो धरती पर खड़ा है। इन छह पहलुओं से यह स्पष्ट है कि कुरान शुद्ध सत्य है, यह मानवीय शब्द नहीं है और इसमें कोई त्रुटि नहीं है।

भी:

- ब्रह्मांड के नियन्ता एवं निर्देशक, जिसने ब्रह्मांड में सदैव सुन्दरता प्रदर्शित करना, अच्छाई एवं सत्य की रक्षा करना, तथा ढोंगियों एवं झूठों का नाश करना अपना आचरण बना लिया है, ने कुरान को संसार में सर्वाधिक स्वीकार्य, सर्वोच्च एवं सर्वाधिक प्रभावशाली सम्मान एवं सफलता का स्थान देकर उस पर अपनी मुहर लगा दी है।

• जिस व्यक्ति ने इस्लाम का प्रतिनिधित्व और संचार किया तथा जीवन भर कुरान की व्याख्या और व्याख्या की - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - वह किसी और की तुलना में इसमें अधिक दृढ़ता से विश्वास करता था और इसे अधिक सम्मान देता था।

• जब यह बात उजागर हुई तो उन्होंने एक अलग अवस्था धारण कर ली।

• उनके अपने शब्द (हदीस) कुरान से मिलते-जुलते नहीं थे और कभी भी उसी स्तर पर नहीं हो सकते थे।

• अशिक्षित होने के बावजूद, कुरान को आधार बनाकर, वह अदृश्य पर्दे के पीछे से अतीत और भविष्य की कई घटनाओं और असंख्य ब्रह्मांडीय घटनाओं का पूरे विश्वास के साथ वर्णन करने में सक्षम थे।

• कुरान के सर्वोच्च अनुवादक के रूप में, जिनके व्यवहार में कभी भी कोई छल या कमी नहीं देखी गई थी, यहां तक कि सबसे तेज आंखों से भी, उन्होंने कुरान की हर घोषणा पर पूरी ताकत से विश्वास किया और उसकी पुष्टि की, और किसी भी चीज को अपने विश्वास में हिलने नहीं दिया।

ये सभी छह तथ्य इस बात की पुष्टि करते हैं कि कुरान पवित्र है।
अपने सर्व-दयालु सृष्टिकर्ता का दिव्य-प्रकट वचन।

आगे:

• मानवता के पांचवें हिस्से से ज़्यादा लोगों ने खुद को पवित्रता और उत्साह के साथ क़ुरान के प्रति समर्पित कर दिया है, और सच्चाई जानने की अपनी इच्छा में उत्सुकता से उस पर ध्यान दिया है। कई संकेतों, घटनाओं और आध्यात्मिक अनावरणों द्वारा प्रदान की गई गवाही के अनुसार, जब भी इसे पढ़ा जाता है, तो जिन्न, फ़रिश्ते और आत्माएँ सत्य की पूजा करते हुए पतंगों की तरह इसके चारों ओर इकट्ठा हो जाते हैं। यह भी इस बात की पुष्टि करता है कि क़ुरान को सार्वभौमिक स्वीकृति प्राप्त है और यह सर्वोच्च स्थान रखता है।

• इसके अतिरिक्त, मानव जाति के विभिन्न वर्ग, सबसे सरल और निम्न से लेकर सबसे चतुर और विद्वान तक, कुरान की शिक्षा का पूरा हिस्सा लेने और इसके सबसे गहन सत्य को समझने में सक्षम हैं (प्रत्येक अपनी क्षमता के अनुसार)।

• इसके अलावा, धार्मिक विज्ञान की सभी शाखाओं के सभी प्रसिद्ध विद्वान, विशेष रूप से सर्वोच्च शरिया के महान व्याख्याकार, धर्मशास्त्र और धर्म के मूल सिद्धांतों के प्रतिभाशाली और सटीक विद्वान कुरान से अपने विभिन्न विषयों के लिए आवश्यक सभी उत्तर प्राप्त करने में सक्षम हैं।

ये तथ्य इस बात की पुष्टि करते हैं कि कुरान सत्य का स्रोत और वास्तविकता की खान है।

• साथ ही, हालांकि अरब लेखकों और कवियों में से अविश्वासियों ने, जो साहित्य और वाक्पटुता में सबसे आगे थे, कुरान पर विवाद करने की सबसे बड़ी जरूरत महसूस की, लेकिन वे वाक्पटुता में एक भी सूरा की रचना करके कभी भी इसका मुकाबला नहीं कर पाए, इस तथ्य के बावजूद कि वाक्पटुता कुरान की चमत्कारिकता के सात सबसे प्रमुख पहलुओं में से केवल एक है। आज तक, यहां तक कि प्रसिद्ध वाक्पटुतावादी या भाषा विशेषज्ञ जिन्होंने खुद का नाम बनाने के लिए कुरान पर विवाद किया है, वे भी इसके चमत्कारिकता के एक भी पहलू का विरोध नहीं कर पाए हैं, और परिणामस्वरूप उन्हें नपुंसक चुप्पी में रहने के लिए मजबूर होना पड़ा है। यह इस बात की और पुष्टि करता है कि कुरान एक चमत्कार है और पूरी तरह से मानव क्षमता से परे है। • भाषण का मूल्य, श्रेष्ठता और वाक्पटुता इसके संबंध में पूछे गए प्रश्नों के उत्तरों पर आधारित है: "यह किससे आता है, इसका उद्देश्य किसके लिए है, और इसका उद्देश्य क्या है?" इन बातों के सम्बन्ध में, कुरान के समान कोई नहीं है, और कोई भी इसके बराबर नहीं हो सकता। क्योंकि कुरान सभी संसारों के प्रभु और रचयिता का भाषण और संबोधन है; यह हमारे साथ उसका संवाद है जो किसी भी तरह से व्युत्पन्न या बनावटी नहीं है। यह उस व्यक्ति को संबोधित है जिसे सभी मानवता के नाम पर भेजा गया था, वास्तव

में सभी प्राणियों में, मानव जाति में सबसे प्रसिद्ध और विख्यात; यह उस व्यक्ति को संबोधित है जिसके विश्वास में इतनी ताकत और चौड़ाई थी कि इसने शक्तिशाली इस्लाम को गति दी और इसके स्वामी को "दो धनुष की डोरियों के बीच की दूरी के बराबर या उससे भी अधिक निकटता" के पद पर पहुँचाया, उसे शाश्वत रूप से चाहने वाले के रूप में लौटा दिया। यह इस दुनिया और परलोक में सुख, ब्रह्मांड के निर्माण के परिणामों और इसके भीतर प्रभु के उद्देश्यों से संबंधित मामलों का वर्णन और व्याख्या करता है। यह अपने पहले और मुख्य संबोधित - पैगंबर मुहम्मद - के विश्वास को भी स्पष्ट करता है, जो इस्लाम के सभी सत्यों को समाहित करते हुए सबसे उच्च और सबसे व्यापक विश्वास है।

यह एक नक्शे, एक घड़ी या एक घर की तरह विशाल ब्रह्मांड के हर पहलू को प्रकट करता है और उसका वर्णन उस तरीके से करता है जो इसे बनाने वाले शिल्पकार के लिए उपयुक्त है। इसलिए इस कुरान के समान चमत्कारिक व्याख्या बनाना संभव नहीं है, न ही इसकी चमत्कारिकता की डिग्री हासिल की जा सकती है।

• साथ ही, उच्च बुद्धि के हजारों सावधानीपूर्वक, विद्वान विद्वानों ने कुरान पर व्याख्या करने वाली टिप्पणियां लिखी हैं, जिनमें से कुछ सत्तर खंडों में शामिल हैं, जो स्पष्ट प्रमाण और तर्क के साथ इसके असंख्य गुणों, विशेषताओं, रहस्यों, सूक्ष्मताओं और उच्च अर्थों को साबित करते हैं, और हर तरह के छिपे या अनदेखे मामले के बारे में कई संकेत दिखाते हैं। रिसाले -ए-नूर के एक सौ तीस भाग, विशेष रूप से, प्रत्येक निर्णायक तर्कों के साथ कुरान की एक गुणवत्ता या सूक्ष्म बात साबित करता है। इसका प्रत्येक भाग - जैसे कुरान की चमत्कारिकता पर पच्चीसवां वचन; बीसवें वचन का दूसरा स्टेशन, जो रेलवे और हवाई जहाज जैसे सभ्यता के चमत्कारों के संबंध में कुरान से कई चीजों का निष्कर्ष निकालता है; पहली किरण, जिसे कुरान के संकेत कहा जाता है, जो बिजली के कुछ छंदों के संकेतों की व्याख्या करती है; आठ छोटे ग्रंथ जिन्हें आठ निशानियाँ कहा जाता है, जो दर्शाते हैं कि कुरान के शब्द वास्तव में कितने सुव्यवस्थित, अर्थपूर्ण और रहस्यमय हैं; छोटा ग्रंथ (द ग्लेम्स में "सातवीं झलक") जो सूरतुल-फ़तह (सूरा 48) के अंत में आयतों की चमत्कारिकता के पाँच पहलुओं को उनके अदृश्य की खबर देने के दृष्टिकोण से साबित करता है - संक्षेप में, रिसाले-ए-नूर का प्रत्येक भाग

कुरान की एक सच्चाई या एक रोशनी को दर्शाता है। यह सब इस तथ्य की पुष्टि करता है कि कुरान का कोई सानी नहीं है: यह एक चमत्कार और एक आश्चर्य है; यह इस दृश्यमान सांसारिक क्षेत्र में अदृश्य दुनिया की भाषा है, और यह उस व्यक्ति का शब्द है जो अदृश्य को अच्छी तरह से जानता है।

कुरान के इन गुणों और विशेषताओं के कारण ही, जिन्हें हमने ऊपर, लगातार तीन समूहों में शामिल अठारह बिंदुओं में दर्शाया है, इसकी उदात्त, प्रकाशमान संप्रभुता और इसका पवित्र, शक्तिशाली शासन पूर्ण वैभव के साथ जारी रहने में सक्षम रहा है, जिसने सदियों के चेहरों और धरती की छवि को तेरह शताब्दियों से अधिक समय तक प्रकाशित किया है। कुरान के इन गुणों के कारण ही इसके प्रत्येक अक्षर को कम से कम दस पुरस्कार, दस पुण्य और दस शाश्वत फल देने का पवित्र गौरव प्राप्त है; वास्तव में, कुछ आयतों और सूरों के अक्षर सौ या एक हजार या उससे भी अधिक फल देते हैं, जबकि कुछ निश्चित समय पर प्रत्येक अक्षर का प्रकाश, पुरस्कार और मूल्य सौ गुना बढ़ जाता है। दुनिया भर में यात्रा करने वाला हमारा यात्री इसे समझता है और अपने लेखों में कहता है

"कुरान, जो हर तरह से चमत्कारी है, अपने सूराओं की सर्वसम्मति, अपनी आयतों की सहमति, अपनी रोशनी और रहस्यों की सहमति और अपने फलों और कार्यों की सहमति के माध्यम से, अपने सबूतों के साथ एक अनिवार्य रूप से विद्यमान एक के अस्तित्व, एकता, गुणों और नामों की गवाही देता है, और इसकी गवाही ने सभी विश्वासियों की स्थायी गवाही को जारी किया है।"

इस प्रकार, कुरान से यात्री को विश्वास और ईश्वरीय एकता की जो शिक्षा मिली, उसका संक्षिप्त उल्लेख करते हुए सत्रहवें चरण में कहा गया है:

> ईश्वर के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं है, वह अनिवार्यतः विद्यमान है, एक है और अद्वितीय है, जिसका अनिवार्य अस्तित्व उसकी एकता में स्पष्ट रूप से चमत्कारिक व्याख्या वाले कुरान द्वारा प्रदर्शित होता है, वह पुस्तक जिसे सभी प्रकार के फ़रिश्तों, मनुष्यों और जिन्नों द्वारा स्वीकार किया जाता है और जिसकी चाहत की जाती है; जिसकी आयतें वर्ष के प्रत्येक मिनट में, अत्यंत श्रद्धा के साथ, करोड़ों लोगों द्वारा पढ़ी जाती हैं और जिसकी पवित्र प्रभुता पृथ्वी और ब्रह्मांड के सभी क्षेत्रों और समय के चेहरे पर स्थायी है; इसका आध्यात्मिक और प्रकाशमान अधिकार चौदह शताब्दियों से आधी पृथ्वी और मानवता के पांचवें भाग पर अत्यंत वैभव के साथ चला आ रहा है। इसकी पवित्र और स्वर्गीय सूराओं की एकमतता, इसकी प्रकाशमान दिव्य आयतों की सहमति, इसके रहस्यों और प्रकाशों की एकरूपता, और इसके फलों और प्रभावों की संगति, साक्षी और स्पष्ट दृष्टि द्वारा भी इसकी गवाही और प्रमाण है।

अठारहवाँ कदम

जीवन की यात्रा कर रहे यात्री को अब पता है कि विश्वास सबसे कीमती पूंजी है जो एक इंसान के पास हो सकती है, क्योंकि यह दरिद्र मानवता को कोई क्षणभंगुर क्षेत्र या आवास नहीं, बल्कि एक विशाल ब्रह्मांड, एक शाश्वत संपत्ति प्रदान करता है जो दुनिया जितनी ही विशाल है। विश्वास क्षणभंगुर मानवजाति को वह सब भी प्रदान करता है जिसकी उसे शाश्वत जीवन के लिए आवश्यकता होती है; यह उस दुखी व्यक्ति को शाश्वत विनाश से बचाता है जो भाग्य के आगमन के लिए फांसी पर लटके होने की तरह प्रतीक्षा कर रहा है, मानवता के लिए शाश्वत सुख का एक शाश्वत खजाना खोलता है। फिर यात्री खुद से कहता है: “आगे बढ़ो! विश्वास की अनंत डिग्री में से एक और डिग्री प्राप्त करने के लिए, आइए हम ब्रह्मांड की समग्रता पर विचार करें और सुनें कि यह क्या कहता है। हमें इसके घटकों और भागों से प्राप्त पाठों को पूर्ण और स्पष्ट करना चाहिए।”

कुरान से प्राप्त व्यापक और समग्र दूरबीन से देखने पर यात्री देखता है कि ब्रह्मांड इतना अर्थपूर्ण और सुव्यवस्थित है कि वह एक मूर्त पुस्तक, एक सृजित कुरान, प्रतीत होता है।

सर्व-महिमावान प्रभु, शाश्वत रूप से प्रार्थना करने वाले का एक सुंदर ढंग से सुसज्जित महल और सर्व-दयालु का एक व्यवस्थित शहर। उनके निरंतर, सार्थक विलोपन और पुनर्पुष्टि के माध्यम से, और उनके बुद्धिमान परिवर्तनों, परिवर्तन और रूपांतरणों के माध्यम से, ब्रह्मांड की उस पुस्तक के सभी सूरा, छंद और शब्द - यहाँ तक कि इसके अक्षर, पंक्तियाँ, पृष्ठ, अध्याय और विभाग भी -

उस एक के अस्तित्व और उपस्थिति का वर्णन करें जिसके पास पुस्तक के लेखक के रूप में सभी चीजों पर पूर्ण शक्ति और ज्ञान है - एक पूर्ण और महाप्रतापी लेखक जो सभी चीजों में सभी चीजों को देखता है और सभी चीजों के साथ सभी चीजों के संबंध को जानता है।

इसी तरह, अपने सभी असंख्य विभागों, प्रजातियों और कणों के साथ, अपने सभी निवासियों और अंतर्वस्तुओं के साथ, इसमें प्रवेश करने और इसे छोड़ने वाले सभी लोगों के साथ, और इसमें होने वाले सभी दैवीय परिवर्तनों, रूपांतरणों और नवीनीकरण और ताज़गी की बुद्धिमान प्रक्रियाओं के साथ, ब्रह्मांड भी एक सर्वोच्च शिल्पकार, एक अद्वितीय निर्माता के अस्तित्व और एकता की घोषणा करता है जो असीम शक्ति और अनंत बुद्धि के साथ कार्य करता है। निम्नलिखित दो शक्तिशाली वास्तविकताओं की गवाही, जो ब्रह्मांड जितनी ही विशाल हैं, ब्रह्मांड के इस सर्वोच्च साक्षी की पुष्टि करती हैं।

पहली वास्तविकता: यह “समय और स्थान के भीतर अस्तित्व में आना” और “संयोग” की वास्तविकता है , जिसे धर्म के सिद्धांतों और धर्मशास्त्र के विज्ञान के प्रतिभाशाली विद्वानों, साथ ही इस्लाम के संतों द्वारा अनगिनत प्रमाणों के साथ स्थापित किया गया है। इन लोगों के अनुसार, चूँकि दुनिया और सभी चीज़ों में परिवर्तन और बदलाव देखे जाते हैं, इसलिए दुनिया क्षणभंगुर होनी चाहिए और समय के भीतर बनाई गई होनी चाहिए: यह अनिर्मित और पूर्व-शाश्वत नहीं हो सकती। अगर इसे बनाया गया है, तो इसका मतलब है कि इसे बनाने वाला कोई निर्माता होना चाहिए। और अगर किसी चीज़ का अस्तित्व में आना या न आना समान रूप से संभव है और अगर उसके अस्तित्व में आने या न आने के लिए कोई आवश्यक या अनिवार्य कारण नहीं है - एक कारण जो अनिवार्य रूप से अपने आप में उत्पन्न होता है, तो वह चीज़ अतीत में आवश्यक या अनिवार्य और शाश्वत नहीं हो सकती। यह भी निर्णायक तर्कों के साथ सिद्ध किया गया है कि अतीत में अनंत काल तक चीजों का एक के बाद एक एक करके एक दूसरे को बनाना संभव नहीं है; दूसरे शब्दों में, चीजें चक्रों में अनंत काल तक वापस नहीं जा सकतीं, जिसमें पहले वाले ने बाद वाले को बनाया हो। इसलिए, एक अनिवार्य अस्तित्ववान का अस्तित्व आवश्यक हो जाता है - जिसके समान कोई नहीं हो सकता, जिसकी समानता असंभव है, तथा जिसके अलावा अन्य सभी आकस्मिक हैं और उसके द्वारा निर्मित हैं।

“समय और स्थान के भीतर अस्तित्व में आने या लाने” की वास्तविकता पूरे ब्रह्मांड में व्याप्त है। इसके कई उदाहरण हैं

आँखों से दिखाई देता है, जबकि बाकी बुद्धि द्वारा देखा जा सकता है। क्योंकि हमारी आँखों के सामने हर पतझड़ में एक पूरी दुनिया मर जाती है; इसके साथ ही सैकड़ों हज़ारों तरह के पौधे और छोटे जानवर भी मर जाते हैं, प्रत्येक प्रजाति का प्रत्येक सदस्य अपने आप में एक छोटे ब्रह्मांड की तरह होता है। हालाँकि, यह इतनी व्यवस्थित मृत्यु है कि सभी चीजें अपने स्थान पर बीज और अंडे छोड़ जाती हैं - दया और बुद्धि, शक्ति और ज्ञान के छोटे चमत्कार - ताकि वसंत में वे एक नए पुनरुत्थान और पुनर्जन्म का साधन बन जाएँ। वे बीजों और अंडों को अपने कर्मों की किताबें और अपने द्वारा किए गए कर्तव्यों की योजनाएँ और रिकॉर्ड सौंपते हैं, उन्हें सर्व-महान संरक्षक की बुद्धि और संरक्षण को सौंपते हैं, और उसके बाद ही वे मरते हैं।

वसंत ऋतु में, मृत पेड़, जड़ें और कुछ जानवर फिर से वैसे ही जीवित हो जाते हैं जैसे वे थे, इस प्रकार सर्वोच्च पुनरुत्थान के सैकड़ों हज़ारों उदाहरण, नमूने और प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। कुछ अन्य के स्थान पर, उनसे मिलते-जुलते पौधे और जानवर अस्तित्व में आते हैं और जीवन पाते हैं, इस प्रकार पिछले वसंत के प्राणियों के पन्नों को उनके कर्मों और कार्यों के साथ प्रकाशित करते हैं, ठीक एक विज्ञापन की तरह।

इस प्रकार, वे इस आयत का एक अर्थ प्रदर्शित करते हैं, और जब (प्रत्येक व्यक्ति के कर्मों की) पुस्तकें खोली जाएँगी (81:10)। और फिर, प्रत्येक पतझड़ में, एक पूरी दुनिया मर जाती है, और प्रत्येक वसंत में एक नई दुनिया अस्तित्व में आती है। यह मृत्यु और पुनर्जन्म इतने व्यवस्थित तरीके से आगे बढ़ता है, और इतनी सारी प्रजातियों की मृत्यु और पुनर्जन्म उनके भीतर इतने व्यवस्थित और नियमित तरीके से होता है, कि ऐसा लगता है जैसे दुनिया एक गेस्टहाउस है जहाँ सजीव प्राणी कुछ समय के लिए रहते हैं, जहाँ यात्रा करने वाली दुनियाएँ और प्रवासी क्षेत्र आते हैं, अपने कर्तव्यों को पूरा करते हैं, और फिर अपने रास्ते पर चले जाते हैं। और इसलिए, सूर्य की तरह स्पष्टता के साथ, सभी बुद्धि के लिए आवश्यक अस्तित्व, असीम शक्ति और एक सर्व-महान व्यक्ति की अनंत बुद्धि स्पष्ट है जो इस दुनिया में कई सजीव क्षेत्रों और कर्तव्यपरायण ब्रह्मांडों को पूर्ण बुद्धि, ज्ञान, सामंजस्य, संतुलन, व्यवस्था और नियमितता के साथ बनाता है और फिर उन्हें प्रशिक्षण, पोषण, उत्थान और रखरखाव के उद्देश्यों के लिए उपयोग करता है - यह सब ईश्वरीय उद्देश्यों और दयालु लक्ष्यों के लिए, पूर्ण शक्ति और करुणा के साथ। हम समय और स्थान के भीतर अस्तित्व में लाने और आने से संबंधित मामलों की आगे की चर्चा रिसाले-ए-नूर और धर्मशास्त्र की पुस्तकों पर छोड़ते हैं।

जहाँ तक आकस्मिकता की बात है, यह भी पूरे ब्रह्मांड पर हावी है और इसे घेरे हुए है। क्योंकि हम देखते हैं कि सभी चीजें - चाहे वे सार्वभौमिक हों या विशेष, बड़ी हों या छोटी, सबसे ऊँचे आकाश से लेकर ज़मीन तक, परमाणु से लेकर ग्रह तक - एक विशेष सार, एक निश्चित सार के साथ अस्तित्व में लाई गई हैं।

विशिष्ट रूप, एक अलग पहचान, विशेष गुण, बुद्धिमान गुण और लाभकारी घटक। अब,

- उस विशेष सार और प्रकृति को उसकी विशेषताएं प्रदान करना अनंत संभावनाओं में से;
- जितनी भी संभावनाएं और सम्भावनाएं कल्पना की जा सकती हैं, उनमें से उसे विशिष्ट, विशिष्ट और उपयुक्त रूप प्रदान करना;

- उस प्राणी को उसकी उपयुक्त पहचान के साथ, उस प्रजाति के सदस्यों जितनी असंख्य संभावनाओं में से अलग करना;
- इसे अद्वितीय, उपयुक्त और लाभकारी गुण प्रदान करना, जबकि यह संभावनाओं और संभावनाओं के बीच निराकार और संकोची है, जो गुणों और उनकी डिग्री की विविधताओं के समान ही असंख्य हैं;
- और उस निराकार प्राणी को बुद्धिमान गुण और लाभकारी अंग प्रदान करना, जो असंख्य संभावनाओं और संभावनाओं के बीच उलझन में है और लक्ष्यहीन है, जो अनंत कल्पनीय मार्गों और तौर-तरीकों से उत्पन्न होता है - ये सभी आवश्यक अस्तित्व, अनंत शक्ति और अनिवार्य रूप से विद्यमान प्राणी की असीमित बुद्धि के संकेत और प्रमाण हैं: वे पुष्टि करते हैं कि यह वही है जो इन सभी आकस्मिक प्राणियों के विशिष्ट ठोस रूपों और आकारों, विशेषताओं और स्थितियों को निर्दिष्ट, चुनता, निर्दिष्ट, भेद करता और बनाता है, चाहे वे सार्वभौमिक हों या विशिष्ट। वे यह भी संकेत करते हैं कि कोई भी वस्तु या पदार्थ उससे छिपा नहीं है, उसके लिए कुछ भी कठिन नहीं है, और उसके लिए सबसे बड़ा कार्य भी उतना ही आसान है जितना कि सबसे छोटा कार्य; वे दिखाते हैं कि वह एक झरने को उतनी ही आसानी से बना सकता है जितनी आसानी से एक पेड़ और एक पेड़ को उतनी ही आसानी से बना सकता है जितनी आसानी से एक बीज। यह सब, फिर, आकस्मिकता की वास्तविकता से संबंधित है, और ब्रह्मांड द्वारा वहन की जाने वाली सर्वोच्च साक्षी का एक पंख बनाता है।

चूँकि ब्रह्माण्ड की यह गवाही, जिसके दो पंख और दो वास्तविकताएँ हैं, रिसाले-ए-नूर के विभिन्न भागों में स्थापित और व्याख्या की जा चुकी है, विशेष रूप से बाईसवें और बत्तीसवें शब्दों में, साथ ही बीसवें और तैंतीसवें अक्षरों में, इसलिए हम अपने पाठकों को इन ग्रंथों का संदर्भ देते हैं और यहाँ इस अत्यंत लंबी व्याख्या को संक्षिप्त करते हैं।

दूसरी वास्तविकता: यह वास्तविकता ब्रह्मांड की संपूर्ण योजना से निकलती है, जो इसकी महान और सार्वभौमिक गवाही का दूसरा पंख भी है। यह इस प्रकार है:

सहयोग या पारस्परिक सहायता की एक वास्तविकता उन प्राणियों के बीच देखी जा सकती है जो अपना अस्तित्व बनाए रखने की कोशिश कर रहे हैं - और, यदि वे सजीव हैं, तो अपना जीवन - और विभिन्न क्रांतियों और परिवर्तनों से उत्पन्न निरंतर उत्तेजना के बीच अपने कर्तव्यों को पूरा करने की कोशिश कर रहे हैं, एक ऐसा प्रयास जो उनकी क्षमताओं से कहीं परे है।

हम देखते हैं कि तत्व जीवों की सहायता करने के लिए तत्पर रहते हैं: बादल, विशेष रूप से, वनस्पति जगत की सहायता के लिए आते हैं, जबकि वनस्पति जगत पशु जगत की सहायता करने के लिए तत्पर रहता है, और पशु जगत मानव जगत की सहायता करने के लिए तत्पर रहता है। स्तनों से दूध बहता है, जैसे स्वर्ग का झरना, बच्चों के लिए; जीवों को उनके पोषण और जीवन की अन्य आवश्यकताएं अप्रत्याशित स्थानों से ऐसी तरह से दी जाती हैं जो उनकी क्षमता से बिल्कुल परे होती हैं; भोजन के कण शरीर की कोशिकाओं को बनाए रखने और उनकी मरम्मत करने के लिए तत्पर रहते हैं, इत्यादि। सर्व-दयालु भगवान के पूर्ण नियंत्रण, निर्देशन और नियोजन के तहत सहयोग की वास्तविकता के ये और कई अन्य समान उदाहरण सभी दुनियाओं के स्वामी की सार्वभौमिक और दयालु प्रभुता को प्रदर्शित करते हैं, जो ब्रह्मांड को एक महल की तरह चलाते हैं।

वास्तव में, जो वस्तुएं ठोस, निर्जीव और संवेदनाशून्य हैं, लेकिन फिर भी वे एक दूसरे की कोमल और सचेतन तरीके से सहायता करती हैं, वे निस्संदेह एक असीम दयालु और बुद्धिमान महाप्रभु की शक्ति, दया और आदेश के कारण एक दूसरे की सहायता के लिए दौड़ पड़ती हैं।

ब्रह्मांड में व्याप्त सार्वभौमिक सहयोग; ग्रहों से लेकर सजीव प्राणियों के अंगों, अंगों और शारीरिक कणों तक सभी चीजों में सर्वोच्च क्रम के साथ व्याप्त सर्व-समावेशी संतुलन और सर्वव्यापी संरक्षण; वह अलंकरण जिसकी कलम पूरे ब्रह्मांड पर चलती है, आकाश के सुनहरे चेहरे से लेकर पृथ्वी के अलंकृत चेहरे तक और फूलों के नाजुक चेहरों तक; आकाशगंगा से लेकर सब्जियों और फलों, जैसे कि मक्का और अनार तक सभी चीजों पर व्याप्त व्यवस्था और संगठन; और सूर्य, चंद्रमा, तत्वों और बादलों से लेकर मधुमक्खियों तक सभी चीजों को कर्तव्य सौंपना - ये सभी विशाल वास्तविकताएं अपनी विशालता के अनुपात में एक गवाही देती हैं, और उनकी गवाही ब्रह्मांड द्वारा दी गई गवाही का दूसरा पंख बनाती है। चूंकि रिसाले -ए-नूर ने इसे अन्यत्र स्पष्ट किया है, इसलिए हम यहां इस संक्षिप्त संकेत से संतुष्ट होंगे।

विश्वास के उस पाठ का संक्षिप्त संदर्भ जो यात्री ने
ब्रह्माण्ड से जो सीखा है, अठारहवें चरण में कहा गया है:

ईश्वर के अतिरिक्त कोई देवता नहीं है, वह अनिवार्यतः विद्यमान है, जिसके समान कोई भी किसी भी प्रकार से अस्तित्व में नहीं आ सकता, तथा जिसके अतिरिक्त अन्य सभी आकस्मिक हैं; वह एकल, अद्वितीय, जिसका अनिवार्य अस्तित्व उसकी एकता में ब्रह्माण्ड द्वारा स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता है - वह विशाल पुस्तक जो साकार रूप में आच्छादित है, सर्वोच्च अवतार कुरान, अलंकृत एवं व्यवस्थित महल, भव्य एवं सुव्यवस्थित नगर -

इसके सभी सूरों, छंदों, शब्दों, अक्षरों, अध्यायों, भागों, पन्नों और पंक्तियों के साथ, और इसके मूल विभाजनों, प्रजातियों, भागों और कणों, इसके निवासियों और सामग्री, और इसमें क्या प्रवेश करता है और क्या छोड़ता है, की सहमति के साथ। समय और स्थान के भीतर परिवर्तन और आकस्मिकता द्वारा अस्तित्व में लाने या आने की उत्कृष्ट व्यापक, विशाल और परिपूर्ण वास्तविकता और धर्मशास्त्र के विज्ञान में सभी विद्वानों की सहमति से इसकी गवाही दी जाती है। यह एक गवाही है जिसमें ज्ञान और नियमितता के साथ इसके रूप और सामग्री के बदलने और व्यवस्था और सामंजस्य के साथ इसके अक्षरों और शब्दों के नवीनीकरण की वास्तविकता भी शामिल है। यह सहयोग, पारस्परिक प्रतिक्रिया, एकजुटता, अंतर्संबंध, माप, संतुलन और संरक्षण की वास्तविकता की महानता और सर्व-समावेशीता द्वारा दी गई गवाही भी है - जो सभी इसके भीतर मौजूद सभी प्राणियों में स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं।

उन्नीसवां कदम

जिज्ञासु और तड़पता यात्री, जो इस स्तर तक ऊपर वर्णित अठारह श्रेणियों से आगे बढ़कर सत्य के सिंहासन तक पहुँच गया है, और जो दुनिया के निर्माता को अप्रत्यक्ष रूप से जानने की श्रेणी से सीधे उसे संबोधित करने के पद तक उठ गया है, अपनी आत्मा को इस प्रकार संबोधित करता है: "फ़ातिहा (कुरान का प्रारंभिक अध्याय) की शुरुआत में हम अप्रत्यक्ष रूप से ईश्वर की स्तुति करते हैं, (कहते हैं: "सभी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए है।")। हालाँकि, जब हम इय्याका ("केवल आप") शब्द तक पहुँचते हैं, तो हम उसकी उपस्थिति में प्रवेश करते हैं और सीधे उसे संबोधित करते हैं। इससे संकेत लेते हुए, हमें इस अप्रत्यक्ष खोज को छोड़ देना चाहिए और जिसे हम खोज रहे हैं, उसे संबोधित करना चाहिए, उससे सीधे उसके बारे में प्रश्न करना चाहिए। आखिरकार, अगर कोई सूर्य के बारे में जानना चाहता है, जो सभी चीजों को दिखाता है, तो उसे सूर्य से ही पूछना चाहिए।

जो सब कुछ दिखाता है, वह खुद को और भी स्पष्ट रूप से दिखाता है। जिस तरह हम सूर्य को उसकी किरणों के माध्यम से देखते हैं, उसी तरह हम अपनी क्षमताओं के अनुसार अपने निर्माता को उसके सभी सुंदर नामों और पवित्र गुणों के माध्यम से जानने की कोशिश कर सकते हैं। हम यहाँ संक्षेप में और संक्षिप्तता के साथ उन अनगिनत रास्तों में से दो को प्रस्तुत करेंगे जो इस लक्ष्य की ओर ले जाते हैं; हम

इन दो मार्गों के असंख्य चरणों में से दो की व्याख्या कीजिए तथा इन दो चरणों की असंख्य वास्तविकताओं में से दो की व्याख्या कीजिए।

पहली वास्तविकता: हम एक सर्वव्यापी गतिविधि की व्यापक, निरंतर, व्यवस्थित और विस्मयकारी वास्तविकता को स्पष्ट रूप से देख पाते हैं जो स्वर्ग और पृथ्वी पर सभी चीजों और प्राणियों को निर्देशित, परिवर्तित और नवीनीकृत करती है। उस व्यापक रूप से बुद्धिमान गतिविधि की वास्तविकता के भीतर व्यक्ति तुरंत प्रभुता की अभिव्यक्ति के सत्य को समझने में सक्षम होता है। बदले में, प्रभुता की उस व्यापक रूप से दयालु अभिव्यक्ति के सत्य के भीतर, व्यक्ति दिव्यता के प्रदर्शन के सत्य को पहचानने में सक्षम होता है।

इस निरंतर, निरंकुश और बुद्धिमानीपूर्ण क्रियाकलाप के पर्दे के पीछे से, सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ कर्ता के कार्यों को इतनी स्पष्टता से देखा जा सकता है कि ऐसा लगता है जैसे कोई उन्हें प्रत्यक्ष रूप से देख रहा हो। और प्रभुता के इन पोषण, निर्देशन और प्रशासन कार्यों के पर्दे के पीछे से, सभी चीजों में प्रकट होने वाले दिव्य नामों को सबसे स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

फिर उन सर्वसुंदर नामों के पर्दे के पीछे से, जो स्वयं को महिमा और अनुग्रह के साथ प्रकट करते हैं, सात पवित्र गुणों के अस्तित्व और संचालन को ज्ञान की निश्चितता की डिग्री पर, या बल्कि, दृष्टि या अवलोकन की निश्चितता की डिग्री पर, या यहां तक कि अनुभव की निश्चितता पर निष्कर्ष निकाला जा सकता है। और जैसा कि पूरी सृष्टि द्वारा इन सात गुणों, अर्थात् जीवन, ज्ञान, शक्ति, इच्छा, श्रवण, दृष्टि और वाणी की अनंत अभिव्यक्तियों के माध्यम से प्रमाणित किया गया है, इन गुणों द्वारा वर्णित अनिवार्य रूप से विद्यमान एक का अस्तित्व, इन नामों से ज्ञात एकता का वह एकमात्र, वह सर्व-स्वतंत्र, शाश्वत रूप से प्रार्थित एक, हृदय में विश्वास की आंख से, स्वयं-स्पष्ट रूप से, आवश्यक रूप से जाना जाता है, जैसे कि वह सूर्य की तुलना में अधिक स्पष्ट और चमकदार रूप से देखा जा रहा हो।

एक सुंदर और सार्थक पुस्तक और एक अच्छी तरह से निर्मित घर के लिए क्रमशः लेखन और निर्माण के कार्य पूर्व निर्धारित होते हैं; सुंदर ढंग से लिखने और अच्छी तरह से निर्माण करने के कार्य स्वतः स्पष्ट रूप से लेखक और निर्माता की उपाधियों को पूर्व निर्धारित करते हैं; लेखक और निर्माता की उपाधियाँ स्पष्ट रूप से लेखन और निर्माण की कलाओं और विशेषताओं को दर्शाती हैं; और ये कलाएँ और विशेषताएँ स्पष्ट रूप से उस व्यक्ति की आवश्यकता होती हैं जो इन नामों और विशेषताओं से योग्य हो, और जो एक कलाकार, एक शिल्पकार और एक एजेंट हो। क्योंकि, जिस तरह से कर्ता के बिना कोई कार्य असंभव है, या नाम के बिना कोई नाम असंभव है, उसी तरह से विशेषता के बिना कोई विशेषता होना असंभव है, या शिल्पकार के बिना कोई शिल्प होना असंभव है।

इस वास्तविकता और सिद्धांत के आधार पर, ब्रह्मांड और उसमें मौजूद सभी चीजें ईश्वरीय नियति की कलम द्वारा लिखी गई अनगिनत सार्थक पुस्तकों और पत्रों तथा ईश्वरीय शक्ति के औजारों से निर्मित अनगिनत इमारतों और महलों के संग्रह के समान हैं। ये सभी, व्यक्तिगत रूप से हजारों तरीकों से और साथ में असंख्य तरीकों से, प्रभुता और दया के असीम कार्यों की अनंत गवाही देते हैं।

इन कर्मों के साथ-साथ, एक हजार एक सर्व-सुंदर नाम, जो इन कर्मों के मूल हैं, तथा महिमा के सात गुण, जो नामों के स्रोत हैं, अपनी अनंत अभिव्यक्तियों के माध्यम से, तथा अनंत और अनंत तरीकों से, एक सर्व-प्रतापी सत्ता के आवश्यक अस्तित्व और एकता की गवाही देते हैं, जो इन सात पवित्र, सर्वव्यापी गुणों का स्रोत है तथा उनके द्वारा योग्य है। और इसी प्रकार, उन प्राणियों में पाए जाने वाले सौंदर्य, अनुग्रह, मूल्य और पूर्णता के सभी उदाहरण प्रभुत्व के कार्यों की पवित्र सुंदरता और पूर्णता के लिए एक के रूप में गवाही देते हैं; वे शाश्वत रूप से मांगे जाने वाले दिव्य नामों और गुणों तथा सर्व-महिमावान की आवश्यक विशेषताओं की गवाही देते हैं, जो उनके लिए उपयुक्त और योग्य हैं। और इन सभी नामों, गुणों और विशेषताओं के साथ, वे सर्व-शुद्ध और पवित्र दिव्य सार की पवित्र सुंदरता और पूर्णता की गवाही देते हैं।

इस प्रकार, प्रभुत्व का सत्य जो सभी गतिविधियों की वास्तविकता के भीतर खुद को प्रकट करता है, वह ज्ञान और बुद्धि के साथ सृजन, आविष्कार, निर्माण और उत्पत्ति जैसे गुणों और कार्यों में खुद को प्रकट करता है; यह खुद को आदेश और संतुलन के साथ निर्धारित करने, गढ़ने, निर्देशित करने और प्रशासन करने में प्रकट करता है; यह खुद को उद्देश्य और इच्छा के साथ रूपांतरित करने, बदलने, अवतरित होने और परिपूर्ण करने में प्रकट करता है; यह खुद को कोमलता और दया के साथ खिलाने, पालने और उपहारों के दान के माध्यम से ज्ञात करता है। और प्रभुत्व की अभिव्यक्ति की वास्तविकता के भीतर पाई और अनुभव की गई दिव्यता के आत्म-प्रदर्शन की वास्तविकता खुद को सर्व-सुंदर नामों की दयालु और उदार अभिव्यक्तियों और सात स्थापित, सकारात्मक या सकारात्मक गुणों की राजसी और सुंदर अभिव्यक्तियों के माध्यम से ज्ञात और पहचानी जाती है: जीवन, ज्ञान, शक्ति, इच्छा, श्रवण, दृष्टि या दृष्टि, और भाषण।

जिस प्रकार वाणी का गुण परम पवित्र दिव्य तत्व को प्रकाशन और प्रेरणा के माध्यम से ज्ञात कराता है, उसी प्रकार शक्ति का गुण उसे अपने कुशल कार्यों और प्रभावों के माध्यम से ज्ञात कराता है, जो उसके मूर्त शब्द हैं। संपूर्ण ब्रह्मांड को मूर्त आलोचनाओं की एक पुस्तक के रूप में प्रस्तुत करना-

सत्य और असत्य में भेद करने वाली शक्ति, एक सर्वशक्तिमान महामहिम का वर्णन करती है और उसे ज्ञात कराती है।

जहाँ तक ज्ञान के गुण का प्रश्न है, वह असंख्य बुद्धिमान, सुव्यवस्थित और संतुलित कलाकृतियों के माध्यम से, तथा उन सभी अनगिनत प्राणियों के माध्यम से, जो ज्ञान के माध्यम से प्रशासित, निर्देशित, सुशोभित और विशिष्ट बनाये जाते हैं, एक एकल, सर्वज्ञ और सर्व-पवित्र दिव्य सार को प्रकट करता है।

जहाँ तक जीवन के गुण का प्रश्न है, यह अपने स्वयं के प्रमाणों तथा ईश्वर की शक्ति की घोषणा करने वाले सभी कार्यों द्वारा स्थापित होता है; यह ईश्वर के ज्ञान को इंगित करने वाले सभी सुव्यवस्थित, बुद्धिमान, संतुलित और सुशोभित रूपों और अवस्थाओं के साथ-साथ अन्य गुणों द्वारा प्रदान किए गए सभी प्रमाणों द्वारा ज्ञात होता है।

इस प्रकार जीवन, जो अपने सभी प्रमाणों के साथ सभी जीवित प्राणियों को साक्षी के रूप में दिखाता है, जो इसके दर्पण के रूप में कार्य करते हैं, एक सर्व-जीवित और स्वयं-अवस्थावान सत्ता को ज्ञात करता है। जीवन ब्रह्मांड को एक सर्वोच्च दर्पण में भी बदल देता है जो अनगिनत छोटे दर्पणों से बना होता है - एक ऐसा दर्पण जो लगातार बदलता और नवीनीकृत होता रहता है ताकि नए और विविध अभिव्यक्तियों और डिजाइनों की एक निरंतर बदलती सरणी प्रदर्शित की जा सके। इसी तरह, दृष्टि और श्रवण और इच्छा और वाणी के प्रत्येक गुण उसी तरह से सर्व-पवित्र दिव्य सार को प्रकट और ज्ञात करते हैं जैसे कि ब्रह्मांड करता है।

इसके अलावा, जिस प्रकार गुण सर्व-महान् दिव्य सार के अस्तित्व को प्रदर्शित करते हैं, उसी प्रकार वे जीवन के अस्तित्व और वास्तविकता तथा इस तथ्य को भी स्पष्ट रूप से इंगित करते हैं कि दिव्य सार शाश्वत रूप से जीवित है।

क्योंकि जानना जीवन का लक्षण है; सुनना जीवित होने का संकेत है; देखना केवल जीवितों का काम है; और इच्छा करना केवल जीवन के द्वारा ही संभव है। उद्देश्यपूर्ण शक्ति केवल जीवित प्राणियों में पाई जाती है, जबकि वाणी उन लोगों की क्षमता है जो जीवन और ज्ञान से संपन्न हैं। इन सभी वास्तविकताओं से यह निष्कर्ष निकलता है कि जीवन के दिव्य गुण के पास ब्रह्मांड से सात गुना बड़े प्रमाण हैं, और ऐसे प्रमाण हैं जो उसके अपने अस्तित्व और उस व्यक्ति के अस्तित्व की घोषणा करते हैं जिसे वह योग्य बनाता है। इसी कारण से जीवन अन्य सभी गुणों का आधार और स्रोत है: यह ईश्वर के महानतम नाम का उद्गम और धुरी है। चूँकि रिसाले -ए-नूर ने इस प्राथमिक सत्य को शक्तिशाली प्रमाणों के साथ स्थापित किया है और, एक हद तक, इसे स्पष्ट किया है, इसलिए हम अब इस महासागर से एक बूंद लेकर संतुष्ट हो जाएँगे।

दूसरी वास्तविकता: यह ईश्वरीय प्रवचन है जो इस प्रकार से उत्पन्न होता है :

वाणी का दिव्य गुण.

जैसा कि आयत में कहा गया है: यदि सारा समुद्र मेरे प्रभु के शब्दों को लिखने के लिए स्याही होता, तो भी मेरे प्रभु के शब्द समाप्त होने से पहले ही समुद्र समाप्त हो जाता, यहाँ तक कि

यदि हम इसके साथ-साथ ऐसा ही कुछ और भी लाएँ (18:109), तो ईश्वरीय वाणी अनंत है। किसी प्राणी के अस्तित्व को दर्शाने वाला सबसे स्पष्ट संकेत उसकी वाणी है। इस प्रकार, यह वास्तविकता शाश्वत वक्ता के अस्तित्व और एकता का एक अनंत प्रमाण है। जैसा कि इस ग्रंथ के चौदहवें और पंद्रहवें चरण में बताया गया है, रहस्योद्घाटन और प्रेरणा इस वास्तविकता के दो शक्तिशाली प्रमाण हैं; ईश्वरीय रूप से प्रकट की गई पुस्तकें, जैसा कि दसवें चरण में उल्लेख किया गया है, एक विस्तृत प्रमाण हैं, और जैसा कि सत्रहवें चरण में संकेत दिया गया है, चमत्कारिक व्याख्या वाला कुरान सबसे शानदार और व्यापक प्रमाण है। अतः इस वास्तविकता की व्याख्या उन चरणों से करते हुए, और इस महान आयत की रोशनी और रहस्यों से संतुष्ट होते हुए: ईश्वर (स्वयं) गवाही देता है कि निश्चय ही उसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं है, और इसी प्रकार फ़रिश्ते और ज्ञानवान लोग भी, जो सत्य और ईमानदारी पर अडिग रहते हैं, ऐसा ही करते हैं: (ये सभी गवाही देते हैं कि) उसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं है, वह अप्रतिम सामर्थ्य वाला, अत्यन्त बुद्धिमान है (3:18), जो इस वास्तविकता की घोषणा चमत्कारिक ढंग से करता है और सभी पूर्ववर्ती लोगों के साथ अपनी गवाही जोड़ता है, हमारा यात्री आगे नहीं जाता है।

यात्री ने जो सबक सीखा है उसके संक्षिप्त अर्थ के संदर्भ में
इस पवित्र पद पर सीखी गई बात उन्नीसवीं सीढ़ी में घोषित की गई है:

> ईश्वर के अतिरिक्त कोई भी देवता नहीं है, वह अनिवार्यतः अस्तित्ववान, एकल, अद्वितीय है, जिसके पास सर्वसुन्दर नाम और सर्वोत्कृष्ट गुण हैं, तथा जिसका वर्णन सबसे उत्कृष्ट है।
>
> उनकी एकता में उनका आवश्यक अस्तित्व उनके सभी पवित्र और सर्वव्यापी गुणों और उनके सभी सुंदर नामों द्वारा स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता है, जो स्वयं को निरंतर प्रकट करते हैं, और जिनकी अभिव्यक्तियाँ उनके आवश्यक गुणों और क्रियाशील कृत्यों की सहमति से प्रदर्शित होती हैं। यह प्रभुता के प्रकटीकरण में दिव्यता के आत्म-प्रकाशन की उदात्त वास्तविकता द्वारा प्रमाणित होता है, जो इच्छा और शक्ति के माध्यम से आविष्कार, सृजन, निर्माण और उत्पत्ति के कार्यों के माध्यम से, चुनाव और बुद्धि के माध्यम से निर्धारण, निर्माण, प्रशासन और निर्देशन के कार्यों के माध्यम से, और नियति और दया के माध्यम से विस्तार, आदेश, संरक्षण, प्रबंधन और प्रदान करने के कार्यों के माध्यम से निरंतर, सर्वव्यापी गतिविधि में खुद को प्रकट करता है - सभी पूर्ण व्यवस्था, सामंजस्य और संतुलन के साथ। इसकी पुष्टि आयत के रहस्यों की उत्कृष्ट और सर्वव्यापी सच्चाई से भी होती है: ईश्वर (स्वयं) गवाही देता है कि निश्चय ही उसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं है, और इसी प्रकार फ़रिश्ते और ज्ञानवान भी, जो सत्य और ईमानदारी पर दृढ़ रहते हैं, ऐसा ही करते हैं: (ये सभी गवाही देते हैं कि) उसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं है, वह अत्यन्त महिमावान, अप्रतिम सामर्थ्यवान, अत्यन्त तत्वदर्शी है (3:18)।

दूसरा प्रमाण: सृष्टि अस्वीकार करती है साझेदारों को ईश्वर से जोड़ना

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

यदि आकाशों और धरती में अल्लाह के अलावा कोई और देवता होते तो दोनों ही नष्ट हो जाते। (21:22)

ईश्वर के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं है, वही अकेला है; उसका कोई साझी नहीं; उसी का प्रभु है और उसी के लिए सारी प्रशंसा है; वही जीवन देता है और मरने का कारण बनता है; वह सर्वव्यापक है और कभी नहीं मरता; उसके हाथ में सब भलाई है। वह हर चीज़ पर पूर्ण अधिकार रखता है, और उसी की ओर वापसी है।

रमज़ान के दौरान एक रात मैंने बताया कि ईश्वरीय एकता की पुष्टि करने वाले उन ग्यारह कथनों में से प्रत्येक में एकता का एक पहलू और एक विशेष शुभ समाचार (विश्वासियों के लिए) शामिल है। मैंने केवल एक रूपक वार्तालाप या दृष्टांत के रूप में कोई भागीदार न होने का अर्थ समझाया। अब, मस्जिद में भाइयों और मेरे साथ आए दोस्तों के अनुरोध पर, मैं इस वार्तालाप को लिखने के लिए लिख रहा हूँ।

कल्पना कीजिए कि कोई व्यक्ति, ईश्वर के साथ सभी प्रकार के संबंधों और विभिन्न प्रकार के अविश्वास और अन्य प्रकार के गुमराह करने वाले तरीकों के नाम पर - जैसे कि हर चीज को प्रकृति या भौतिक कारणों या मूर्ति-पूजा के लिए जिम्मेदार ठहराना - सृष्टि के किसी भाग पर प्रभु होने या प्रभुत्व रखने का दावा करता है। यानी, यह प्राणी दावा करता है कि वह उस भाग का स्वामी है या उस पर शासन करता है, उसे नियंत्रित करता है या उसका निपटान करता है। सबसे पहले एक परमाणु पर आकर, वह उसे भौतिक विज्ञान या प्राकृतिक दर्शन की भाषा में या अनुमानों के अनुसार बताता है कि वह उसका सच्चा स्वामी और मालिक है। परमाणु सत्य और प्रकट ज्ञान की भाषा में उत्तर देता है:

मैं असंख्य कार्य करता हूँ; मैं असंख्य सृजित सत्ताओं के भीतर, उनके साथ या उन पर कार्य करता हूँ। क्या आपके पास इन कार्यों में मुझे निर्देशित करने का ज्ञान और शक्ति है? मैं एक समान संरचना वाले असंख्य अन्य परमाणुओं के साथ एक मापा हुआ संबंध में कार्य करता हूँ और आगे बढ़ता हूँ ।

5 प्रत्येक वस्तु जो गति करती है, सूक्ष्म कणों से लेकर ग्रहों तक, वह शाश्वत रूप से प्रयत्नशील एकता की मुहर और एकता को प्रदर्शित करती है। साथ ही, अपनी गति के कारण, प्रत्येक इकाई उन स्थानों पर अधिकार कर लेती है जहाँ वह एकता के नाम पर प्रवेश करती है, इस प्रकार उन्हें अपने सच्चे स्वामी की संपत्ति में जोड़ देती है। पौधों से लेकर स्थिर तारों तक, प्रत्येक अचल इकाई एकता की मुहर की तरह है जो अपने निर्माता के संदेश के रूप में अपना स्थान दिखाती है। प्रत्येक पौधा और फल एकता की मुहर और मुहर है जो एकता के नाम पर प्रदर्शित करता है कि उसका निवास स्थान और मूल स्थान उसके निर्माता का संदेश है। संक्षेप में, एकता के नाम पर चलते हुए, प्रत्येक इकाई सभी इकाइयों पर अधिकार कर लेती है, जिसका अर्थ है कि जो सभी तारों पर नियंत्रण नहीं कर सकता, वह एक कण पर भी नियंत्रण नहीं कर सकता।

क्या आप इन सभी को आदेश देते हैं और नियुक्त करते हैं? यदि आप अनंत जटिलता वाले तत्वों के स्वामी हैं, उन्हें व्यवस्थित करते हैं या उनका प्रबंधन करते हैं, उदाहरण के लिए, लाल रक्त कणिकाएँ, जिनके परमाणुओं में से मैं एक हूँ, और ऐसा पूर्ण ज्ञान और अनुशासन के साथ करते हैं, तो आप मेरे भगवान होने का दावा करते हैं, और उसके बाद ही मुझे ईश्वर के अलावा किसी और के लिए जिम्मेदार मानते हैं।

लेकिन तुम ऐसा नहीं कर सकते, इसलिए चुप रहो! तुम मेरे मालिक नहीं हो और मेरे काम में हस्तक्षेप नहीं कर सकते, क्योंकि मेरी सारी गतिविधियाँ और क्रियाएँ इतनी उद्देश्यपूर्ण और व्यवस्थित हैं कि उन्हें केवल अनंत बुद्धि और सर्वव्यापी ज्ञान वाला व्यक्ति ही चला सकता है। अगर किसी और का इसमें हाथ होता, तो गड़बड़ हो जाती। कोई भी व्यक्ति, जो तुम्हारी तरह खुद को जीवन भी नहीं दे सकता, जिसकी दृष्टि और भावना सत्य के प्रति अंधी है, जो खुद को प्रकृति के संयोग और दुर्घटनाओं के अधीन मानता है, वह मेरे काम में हस्तक्षेप करने की हिम्मत कैसे कर सकता है?

ढोंगी ने सभी भौतिकवादियों की तरह जवाब दिया: "तो फिर अपने मालिक खुद बनो! तुम किसी दूसरी शक्ति की सेवा में होने का दावा क्यों करते हो?" परमाणु ने जवाब दिया:

यदि मेरे पास सूर्य के प्रकाश के समान सर्वव्यापी ज्ञान और उसकी ऊष्मा के समान प्रखर शक्ति होती; यदि मेरे पास सूर्य के प्रकाश में उपस्थित सात रंगों के समान सर्वव्यापी अनुभूति की शक्ति होती; यदि मेरे पास प्रत्येक प्राणी और प्रत्येक स्थान की ओर मुख और आंखें होतीं जिनसे मेरा अस्तित्व और मेरा स्थान जुड़ा हुआ है; और यदि इन सभी संबंधों में और इन पर मेरा अधिकार होता -

तब शायद मैं भी अपने स्वामी होने का दावा कर सकता था। फिर भी, अगर मैं ऐसा करता तो मैं भी आपकी तरह ही मूर्ख होता।
अब तुम मुझसे दूर चले जाओ, क्योंकि मेरा तुमसे कोई संबंध नहीं है!

परमाणु से निराश ढोंगी लाल रक्त कणिका के साथ मामले को आगे बढ़ाने की उम्मीद करता है। एक के सामने आकर वह उससे भौतिक कारणता और प्राकृतिक दर्शन की भाषा में बात करता है: "मैं तुम्हारा भगवान और स्वामी हूँ।" लाल रक्त कणिका सत्य और दिव्य बुद्धि की भाषा में उत्तर देती है:

मैं अकेला नहीं हूँ। यदि आप भी रक्त सेना में मेरे सभी साथियों को अपने साथ रखते हैं, जिनके साथ मैं हमारे निर्माता की ओर इशारा करते हुए एक ही संरचना साझा करता हूँ, साथ ही वही कर्तव्य और कार्य करता हूँ, और यदि आपके पास पूर्ण और विस्तृत ज्ञान, भयानक और सूक्ष्म शक्ति है, साथ ही सभी शरीर कोशिकाओं को निर्देशित करने के लिए पूर्ण बुद्धि है जिसके माध्यम से हम चलते हैं और जिसमें हम काम करते हैं, तो आपके दावों में कुछ समझ हो सकती है। लेकिन चूंकि आप अंधी और बहरी प्रकृति या प्राकृतिक शक्तियों पर निर्भर हैं, इसलिए आप हम पर कोई प्रभाव नहीं डाल सकते, मुझ पर प्रभुत्व तो दूर की बात है। हमारा क्रम इतना परिपूर्ण और जटिल है कि केवल वही जो सब कुछ देखता, सुनता और जानता है, वही हमारा सच्चा संप्रभु और स्वामी हो सकता है। इसलिए, चुप रहो! मेरे पास इतना प्रभाव है-

हम इतने महत्वपूर्ण कर्तव्य निभाते हैं और हम इतने अनुशासन में काम करते हैं कि आपके निरर्थक दावों का जवाब देने के लिए मेरे पास समय नहीं है!

लाल रक्त कणिका को धोखा देने में असमर्थ, ढोंगी आगे बढ़ता है और एक बड़ी इकाई के सामने आता है जिसे वे "कोशिका" कहते हैं। प्राकृतिक दर्शन की परिचित भाषा में इसे संबोधित करते हुए, वह कहता है: "सच है, परमाणु और लाल रक्त कणिका ने मेरी बात नहीं सुनी। मुझे उम्मीद है कि आप मेरी बात समझ सकते हैं।

जैसा कि मैं देख सकता हूँ, आप कई छोटे तत्वों से बने हैं, जैसे किसी कमरे में व्यवस्थित चीजें। मैं इस व्यवस्था में हाथ बँटा सकता हूँ, और इसे व्यवस्थित और पुनर्व्यवस्थित कर सकता हूँ। आप मेरे प्राणी हो सकते हैं, और मैं आप पर अधिकार कर सकता हूँ।"

शरीर की कोशिका बुद्धिमता और सत्य की भाषा में उत्तर देती है:

यद्यपि मैं छोटा हूँ, फिर भी मैं महत्वपूर्ण कार्य करता हूँ। मेरे सभी पड़ोसी कोशिकाओं और उस पूरे जीव के साथ मेरा सूक्ष्मतम और फिर भी सबसे मजबूत संबंध है जिसका मैं एक हिस्सा हूँ। मैं उदाहरण के लिए, धमनियों और नसों, संवेदी और मोटर तंत्रिकाओं, आकर्षण और प्रतिकर्षण की विद्युत शक्तियों और मेरे आकार, आकृति और प्रजनन को निर्धारित करने वाले सिद्धांतों या तत्वों के साथ महत्वपूर्ण कार्य करता हूँ। यदि आपके पास एक संपूर्ण जीव बनाने, धमनियों, नसों और तंत्रिकाओं को व्यवस्थित और विनियमित करने और हमारे रूप और कार्य को प्रबंधित करने वाली सभी विविध शक्तियों और सिद्धांतों को काम में लगाने का ज्ञान और शक्ति है; यदि आप अदम्य शक्ति और सर्वज्ञ बुद्धि के साथ, कला और गुणवत्ता में मेरे समान असंख्य शरीर कोशिकाओं को निर्देशित कर सकते हैं, तो अपनी क्षमता दिखाएँ। तब शायद, शायद, आप मुझ पर प्रभुत्व करने या मुझे बनाने का दावा कर सकें।

लेकिन जब आप ऐसा नहीं कर सकते, तो मुझे छोड़ दें - अभी भी लाल रक्त कोशिकाएँ मेरे लिए पोषण ले जा रही हैं, सफ़ेद रक्त कोशिकाएँ उन बीमारियों का सामना कर रही हैं जो मुझे ख़तरे में डाल सकती हैं - मैं व्यस्त हूँ, इसलिए अपने घमंड में मेरा समय और बर्बाद न करें। आप जितना खाली कोई भी व्यक्ति सच्ची समझ, सच्ची सुनवाई और देखने से वंचित नहीं है, वह कभी भी हमारे अस्तित्व में हस्तक्षेप नहीं कर सकता। हमारा क्रम इतना सटीक, नाजुक और परिपूर्ण है कि केवल पूर्ण बुद्धि, ज्ञान और शक्ति वाला व्यक्ति ही हमें नियंत्रित कर सकता है।[6] अगर ऐसा नहीं होता, तो हमारा सामंजस्य और व्यवस्था मौजूद नहीं होती या जल्दी ही अराजकता में गिर जाती।

---

6 सर्वज्ञ निर्माता ने मानव शरीर को एक सुव्यवस्थित शहर की तरह बनाया है। कुछ तंत्रिकाएँ टेलीफोन और टेलीग्राफ़ के रूप में कार्य करती हैं, जबकि कुछ रक्त वाहिकाएँ रक्त (जीवन का जल) ले जाने वाली पाइप के रूप में कार्य करती हैं। रक्त में दो प्रकार की कोशिकाएँ होती हैं: लाल कोशिकाएँ शरीर की कोशिकाओं तक पोषक तत्व पहुँचाती हैं, जो ईश्वरीय नियम के अनुसार उनका पोषण करती हैं (व्यापारियों और अधिकारियों द्वारा भोजन वितरित करने के समान); सफ़ेद कोशिकाएँ, जो संख्या में कम होती हैं, बीमारी जैसे आक्रमणकारियों से रक्षा करती हैं (सैनिकों के समान)। जब वे सक्रिय रूप से रक्षा में लगे होते हैं, तो वे मेवलेवी दरवेशों की तरह दो चक्कर लगाते हैं और एक अद्भुत और तेज़ तरलता प्रदर्शित करते हैं।

रक्त कोशिकाओं को हुए नुकसान की मरम्मत करता है और कोशिकाओं से अपशिष्ट पदार्थ एकत्र करके शरीर को साफ करता है। धमनियों और नसों के लिए, एक शुद्ध रक्त को ले जाने के लिए चैनल बनाती है जबकि दूसरी अशुद्ध रक्त के लिए चैनल बनाती है जो अपशिष्ट को इकट्ठा करती है। सर्वज्ञ निर्माता ने बनाया

निराश होकर, ढोंगी एक मानव शरीर के सामने आता है, अज्ञानी प्रकृति और गलत दर्शन की भाषा में तर्क को दोहराता है: "मैं कह सकता हूँ कि तुम मेरे हो, कि तुम्हारे स्वामित्व और प्रबंधन में मेरा हिस्सा है।" मानव शरीर ज्ञान और सत्य की भाषा में और अपने आदेश की भाषा में उत्तर देता है:

क्या आपके पास मेरे जैसे सभी मानव शरीरों को नियंत्रित करने और निर्देशित करने का ज्ञान और शक्ति है जो सर्वोच्च शक्ति और सृजन के समान लक्षण प्रकट करते हैं? क्या आपके पास प्रकाश, वायु और जल के भण्डारों के साथ-साथ सभी पौधों और जानवरों पर प्रभुत्व है, जो मेरे प्रावधान और पोषण का आधार और भंडार हैं? क्या आपके पास असीम बुद्धि और अनंत शक्ति है जिसके द्वारा मन, बुद्धि और आत्मा जैसी अमूल्य, अमूर्त संस्थाएँ मेरे जैसे संकीर्ण, शारीरिक आवरण में इतनी सुरक्षित रूप से व्यवस्थित हैं, और अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य करके "पूजा" करने के लिए बनाई गई हैं? यदि आपके पास ऐसी शक्ति, ज्ञान और बुद्धि है, तो इसका प्रदर्शन करें - केवल तभी मुझे स्वामित्व और प्रबंधन करने का दावा करें।

लेकिन जब तुम चुप नहीं रह सकते, तो चुप रहो! मेरा निर्माता सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी और सर्वश्रवण है - यह उस पूर्णता से प्रमाणित होता है जिसके साथ मैं संगठित हूँ और मेरे चेहरे पर एकता का चिन्ह है। तुम्हारे जैसा अज्ञानी और अक्षम प्राणी कभी भी उसकी कला में थोड़ा भी हाथ नहीं रख सकता।

ढोंगी, इस बात से हैरान कि मानव शरीर के सभी बिंदु उसके दावे को खारिज करते हैं, आगे बढ़ता है और एक प्रजाति के रूप में मानवता का सर्वेक्षण करता है, सोचता है: वे विविध और जटिल समाजों में रहते हैं। मैं देखता हूँ कि शैतान उनकी इच्छा के मामलों और उनके सामाजिक जीवन में हस्तक्षेप करने के तरीके ढूँढ़ता है। इसलिए मैं उनके निर्माण, गठन और संचालन में प्रवेश करने का एक तरीका ढूँढ़ सकता हूँ

हवा में दो तत्व होते हैं: नाइट्रोजन और ऑक्सीजन। जब ऑक्सीजन श्वसन के दौरान रक्त से मिलती है, तो यह रक्त को प्रदूषित करने वाले अशुद्ध कार्बन तत्व को अपनी ओर खींच लेती है, बिल्कुल एम्बर की तरह।
कार्बन के साथ मिलकर यह दोनों पदार्थों को कार्बोनिक एसिड गैस में बदल देता है। ऑक्सीजन शरीर के तापमान को बनाए रखने में भी मदद करता है और रक्त को शुद्ध करता है। सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता ने ऑक्सीजन और कार्बन को एक दूसरे के प्रति एक उत्साह, एक प्रकार का रासायनिक स्नेह दिया है, ताकि, ईश्वरीय नियम के अनुसार, वे एक दूसरे के पास पहुँचें और फिर संयोजित हो जाएँ। विज्ञान ने समझाया है कि यह संयोजन, दहन का एक रूप होने के नाते, किस प्रकार ऊष्मा उत्पन्न करता है:

ऑक्सीजन और कार्बन परमाणुओं की अलग-अलग गतियाँ होती हैं, जो संयुक्त होने पर एक गति बन जाती हैं, प्रत्येक परमाणु जोड़ी में अब एक परमाणु की गति होती है। इस प्रकार मूल दो गतियों में से एक "खो जाती है।" यह "खोई हुई" गति सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता के एक नियम द्वारा ऊष्मा में परिवर्तित हो जाती है। "गति से ऊष्मा उत्पन्न होती है" एक स्थापित सिद्धांत है। यह रासायनिक संयोजन रक्त से कार्बन को हटाता है और शारीरिक तापमान को बनाए रखता है, जबकि उसी समय, रक्त को शुद्ध करता है। साँस लेते समय, ऑक्सीजन शरीर के जीवन के जल को साफ करती है और जीवन के लिए इसकी अग्नि को प्रज्वलित करती है। साँस छोड़ते समय, ऑक्सीजन मुँह में शब्दों (दिव्य शक्ति के चमत्कार) को बनाने में सक्षम बनाती है। वह सर्व-महिमावान है जिसके कार्यों से मन चकित हो जाते हैं।

अगर मैं उनके शरीर में नियंत्रण का कोई बिंदु पा सकता हूँ, तो मैं उस शरीर और उसकी कोशिकाओं को नियंत्रित करने में सक्षम हो जाऊँगा, जिन्होंने मुझे नकार दिया।

इस इरादे से, वह अंधे प्रकृति और गलत दर्शन की परिचित भाषा में प्रजातियों को संबोधित करता है: "आप बहुत विविध और बहुत विषमता में दिखाई देते हैं। मैं आपका स्वामी और मालिक हूँ या, कम से कम, आपके निर्माण और जीवन में मेरा हिस्सा है।" इस पर, मानवता सत्य और वास्तविकता की भाषा में और ज्ञान और व्यवस्था की भाषा में प्रतिक्रिया करती है:

क्या आपके पास वह शक्ति, ज्ञान और बुद्धि है जिससे आप पृथ्वी की सतह को ढंकने वाली समृद्ध संरचना का निर्माण कर सकें, जिसे विविध प्रकार के कपड़ों, हजारों खनिजों, पौधों और पशु प्रजातियों से उत्तम बुद्धि के साथ बुना गया हो?

क्या आप भी इसी तरह की बुद्धि के साथ इस बनावट को नवीनीकृत कर सकते हैं और ऐसा लगातार करते रह सकते हैं? क्या आपके पास वह सर्वव्यापक शक्ति और सर्वज्ञ विज्ञान है जो पृथ्वी को नियंत्रित करता है, जिसके हम फल हैं, और ब्रह्मांड को, जिसके हम बीज हैं? क्या आप हमें ब्रह्मांड के पार से और मापी गई मात्रा में, हमारे भरण-पोषण के लिए आवश्यक खाद्य सामग्री भेज सकते हैं? क्या आप मेरे जैसे सभी व्यक्तियों को, भूतकाल और भविष्य में, उत्पन्न कर सकते हैं, जिनके चेहरों पर मेरे जैसे ही सर्वोच्च राजसीपन और शक्ति के चिह्न हों? यदि ऐसा है, तो शायद आप मुझ पर प्रभुत्व का दावा कर सकते हैं।

लेकिन जब आप ऐसा नहीं कर सकते, तो चुप रहें! मेरी प्रजाति में विविधता पर टिप्पणी करने से यह कहने की हिम्मत न करें कि मुझमें आपका हाथ है, क्योंकि विविधता हमारी व्यवस्था की पूर्णता का हिस्सा है। विविधता और बहुलता शक्ति द्वारा नियति की पुस्तक [एक आदर्श क्रम में प्राणियों की उत्पत्ति को शामिल करते हुए] से एक आदर्श क्रम के साथ बनाई गई प्रतियां हैं। हमारी उपस्थिति की विविधता हमारे रूपों [नियति द्वारा निर्धारित] का एक प्रकार का पुनरुत्पादन है - जैसा कि पौधों और जानवरों (जो हमसे कमतर हैं, हमारी निगरानी में हैं, और जिनका हम अध्ययन करते हैं) की पूर्ण विविधता और व्यवस्था भी गवाही देती है।

क्या यह संभव है कि जो इस संसार की बनावट में फैले हुए विविध ताने-बाने को बड़ी कुशलता से बुनता है, वह इसका रचयिता नहीं है, कि एक फल का रचयिता उस वृक्ष के रचयिता से भिन्न है जिससे वह उगता है, और कि एक बीज का रचयिता उस पौधे या वृक्ष के रचयिता से भिन्न है जिसमें वह उगता है? तुम अंधे हो, क्योंकि तुम मेरे चेहरे पर शक्ति के चमत्कार और मेरे शरीर में उसकी सृष्टि के चमत्कार नहीं देख सकते। यदि तुमने देखा होता, तो तुम समझ जाते कि मेरे रचयिता की निगाह से कोई चीज नहीं बच सकती या उसे मनमाने ढंग से काम नहीं दे सकती। वह सितारों को उतनी ही आसानी से बनाता है जितनी आसानी से वह एक परमाणु बनाता है। वह वसंत को उतनी ही आसानी से बनाता है जितनी आसानी से वह एक फूल बनाता है। उसने विशाल ब्रह्मांड की सूची को मेरे शरीर में पूर्ण संगति के साथ रखा है। क्या कोई ऐसा व्यक्ति जो तुम्हारे जैसा भौतिक, अक्षम, अंधा और बहरा है, ऐसी सत्ता की कलात्मकता में हाथ रख सकता है? इसलिए चुप रहो और चले जाओ!

फिर ढोंगी धरती के चेहरे पर एक अलंकृत लबादे की तरह फैली हुई व्यापक बनावट की ओर मुड़ता है और उससे कार्य-कारण के नाम पर और प्राकृतिक दर्शन की भाषा में बात करता है: "मैं तुम्हें संभाल सकता हूँ। मैं तुम्हारा मालिक हूँ, या कम से कम तुममें मेरा हिस्सा है।" बनावट[7] सत्य के नाम पर और ज्ञान की भाषा में उत्तर देती है:

> यदि आपके पास वह कौशल और शक्ति है कि आप उन सभी बनावटों को बना और बुन सकें, जिनमें पृथ्वी हर वर्ष और हर शताब्दी में नए सिरे से बंद होती है, और जो अतीत की रेखा पर लटकी हुई हैं, सभी समयों में निर्बाध रूप से बिछाई गई हैं, खोली गई हैं और फिर से बिछाई गई हैं, और जो भविष्य की रेखा पर लटकी रहेंगी, सबसे अधिक सटीकता के साथ और नियति के ढांचे के अनुसार पूर्वनिर्धारित कार्यक्रमों और प्रतिमानों के अनुसार, प्रत्येक सुंदर, उद्देश्यपूर्ण और विशिष्ट रूप से सुशोभित; यदि आपके पास अमूर्त हाथ हैं जो पृथ्वी के निर्माण से लेकर उसके विनाश तक, या बल्कि, बिना आरंभ के अनंत काल से लेकर बिना अंत के अनंत काल तक पहुंच सकते हैं; यदि आपके पास इस बनावट के भीतर सभी व्यक्तियों को बनाने, उन्हें सटीक क्रम और बुद्धिमता से पुनर्स्थापित और नवीनीकृत करने की शक्ति और विज्ञान है; यदि आप स्वयं पृथ्वी को बना और अपने पास रख सकते हैं, जो कि मेरे लिए एक मॉडल है और मुझे एक परदे की तरह रखती है - केवल तभी यदि आप कर सकते हैं, केवल तभी मुझ पर आधिपत्य का दावा करें - यदि नहीं, तो चले जाइए! आपका यहाँ कोई काम नहीं है!

> मेरी समृद्ध और सामंजस्यपूर्ण विविधता में एकता के स्पष्ट संकेत और उसकी अद्वितीयता की स्पष्ट छाप दिखाई देती है। केवल वही जो पूरे ब्रह्मांड को नियंत्रित करता है, जो एक साथ असंख्य कार्य कर सकता है, जो सभी प्राणियों और उनके कार्यों को, चाहे वे आंतरिक हों या बाह्य, एक ही पल में देख सकता है, जो समय, स्थान या आयाम से असीम होते हुए भी हर जगह मौजूद और सतर्क रहता है, और जिसके पास अनंत ज्ञान, विज्ञान और शक्ति है - केवल ऐसा ही व्यक्ति कभी भी मेरा स्वामी या मुझ पर प्रभुत्व रख सकता है।

ढोंगी धरती की ओर मुड़ता है, उसे धोखा देने की उम्मीद करता है,[8] और कार्य-कारण के नाम पर और मात्र प्रकृतिवाद की भाषा में वही तर्क दोहराता है: "मैं देखता हूँ कि तुम ब्रह्मांड में बेकार घूमते हो। निश्चित रूप से तुम

---

7 वास्तव में, इसकी बनावट सजीव है, जो नियमित रूप से जीवन के संकेत देती रहती है। इसकी कढ़ाई निरंतर पूर्ण बुद्धि और व्यवस्था के साथ नवीनीकृत होती रहती है ताकि इसके बुनकरों के नामों की विभिन्न, हमेशा अलग-अलग अभिव्यक्तियाँ प्रदर्शित की जा सकें।

8 संक्षेप में, परमाणु से शुरू करते हुए, प्रत्येक वस्तु ने ढोंगी को अगले स्तर पर भेजा: परमाणु से लेकर लाल रक्त कणिका, कोशिका, शरीर, मानवता, पृथ्वी का बाहरी वस्त्र, पृथ्वी का ग्लोब, सूर्य और तारे, क्रमशः। प्रत्येक ने कहा: “चले जाओ! यदि तुम मुझसे अगले स्तर को अपने अधीन कर सकते हो, तो करो, और फिर वापस आकर मुझ पर अधिकार करने की कोशिश करो। यदि तुम उस स्तर को अपने अधीन नहीं कर सकते, तो तुम मुझे भी अपने अधीन नहीं कर सकते!” इस प्रकार जिसका अधिकार सितारों को शामिल नहीं करता, उसका एक भी परमाणु पर अधिकार करने का कोई स्वीकार्य दावा नहीं हो सकता।

मेरा कोई स्वामी नहीं हो सकता, इसलिए मैं तुम पर अपना अधिकार जताता हूँ।" यह सुनकर पृथ्वी सत्य के नाम पर और वास्तविकता की भाषा में गरजती है:

> मूर्ख मत बनो! मैं बिना स्वामी के कैसे घूम सकता हूँ? क्या तुमने कभी मेरे वस्त्र के निर्माण में या उसके किसी छोटे से बिंदु या कपड़े में कोई अव्यवस्था, बुद्धि या कौशल की कमी देखी है, जो तुम यह कहने का साहस करते हो कि मैं बेकार घूमता हूँ? क्या तुम मेरी कक्षा के स्वामी होने का दावा करते हो, जिसे पार करने में मनुष्य की गति से पच्चीस हज़ार साल लगेंगे, लेकिन जिसे मैं अपने वार्षिक चक्कर में पूर्ण अनुशासन और सटीकता के साथ पूरा करता हूँ? क्या तुम मेरे दस साथी ग्रहों के स्वामी होने का दावा करते हो, जो मेरे जैसे ही अपनी-अपनी कक्षाओं में अपने नियत कार्य करते हैं? क्या तुम दावा करते हो कि तुम्हारे पास सूर्य को बनाने और नियंत्रित करने का असीमित विज्ञान और शक्ति है, जो हमारी कक्षाओं को एकत्रित और केंद्रित करता है, वे कक्षाएँ जिनसे हम दया के गुरुत्वाकर्षण के माध्यम से बंधे हैं, और मुझे और अन्य ग्रहों को इसके चारों ओर चक्कर लगाने के लिए मजबूर करता है?

> चूँकि आप इस तरह का दावा नहीं कर सकते, इसलिए मुझे छोड़ दें, क्योंकि मुझे काम करना है। हमारा विस्मयकारी चक्कर, उद्देश्यपूर्ण समर्पण और शानदार अनुशासन दर्शाता है कि हमारा निर्माता एक ऐसा प्राणी है जिसके सामने सभी प्राणी समर्पित हैं, और पूरी तरह से समर्पित हैं - जैसे एक कर्तव्यनिष्ठ सैनिक अपने वरिष्ठ के आदेशों का पालन करता है। वह महामहिम का बुद्धिमान और पूर्ण शासक है, जो सूर्य और ग्रहों को उनके उचित क्रम में उसी तरह रखता है जैसे वह प्रत्येक पेड़ को उसके उचित फलों से सजाता है।

पृथ्वी पर शासन करने में असफल होने पर, ढोंगी सूर्य की ओर इस उम्मीद से मुड़ता है कि वह वहां एक रास्ता खोल सकता है।

चूँकि सूर्य बहुत बड़ी इकाई है, इसलिए वह पृथ्वी पर नियंत्रण पाने के लिए इसका उपयोग करना चाहता है। सर्वशक्तिमान ईश्वर के साथ साझेदारों को जोड़ने के तरीके के नाम पर और शैतानी दर्शन की भाषा में, जैसा कि सूर्य-पूजक करते हैं, ढोंगी सूर्य को संबोधित करते हुए कहता है: "आप एक सम्राट हैं। आप अपने खुद के मालिक हैं। आप जो चाहें कर सकते हैं।"

सूर्य सत्य और वास्तविकता के नाम पर तथा दिव्य ज्ञान की भाषा में उत्तर देता है:

> नहीं, बिलकुल नहीं! तुम ऐसा झूठ कैसे बोल सकते हो! मैं तो एक आज्ञाकारी अधिकारी हूँ, अपने मालिक के गेस्ट हाउस में एक मोमबत्ती से ज़्यादा कुछ नहीं। मैं एक मक्खी, यहाँ तक कि उसके पंख तक का मालिक नहीं बन सकता, क्योंकि इतनी छोटी सी चीज़ में भी ऐसी अमूर्त क्षमताएँ और बेहतरीन, उत्कृष्ट कलाकृतियाँ होती हैं, जैसे उसकी आँख और कान, जो मेरी किसी भी कार्यशाला में नहीं हैं। मैं उनमें से सबसे छोटी चीज़ भी नहीं बना सकता।

---

9 यदि किसी वृत्त का आधा व्यास लगभग 180 मिलियन किलोमीटर है, तो वृत्त 120 मिलियन किलोमीटर की दूरी तय करता है।
लगभग 25,000 वर्षों का अंतराल [पैदल तय करने के लिए, बशर्ते कि कोई व्यक्ति एक घंटे में पांच किलोमीटर (3 मील से कम) की दूरी तय करे और प्रतिदिन 6 घंटे पैदल चले।]

यद्यपि सूर्य द्वारा फटकारे जाने के बावजूद, ढोंगी फिरौन की तरह तर्क करता है, जो अहंकारी प्राणी हैं और खुद को देवता बताते हैं: “मैं कार्य-कारण के नाम पर तुम्हें अपना मानता हूँ, क्योंकि तुम अपने स्वामी नहीं हो, बल्कि केवल एक सेवक हो।” सूर्य सत्य के नाम पर और अपने निर्माता के प्रति आज्ञाकारिता की भाषा में उत्तर देता है: “मैं केवल उसी सत्ता का हो सकता हूँ जिसने मुझे और मेरे जैसे सभी दीप्तिमान सितारों को बनाया है, जिसने उन्हें पूर्ण बुद्धि के साथ उनके पदों पर स्थिर किया है, उन्हें महिमा में घुमाता है और उसके द्वारा विशाल आकाश को सुशोभित करता है।”

फिर ढोंगी तारों के बीच आता है और सोचता है: “शायद मुझे यहाँ कुछ ग्राहक मिल जाएँ।” उनसे कार्य-कारण और उसके भागीदारों के नाम पर और भ्रष्ट दर्शन की भाषा में बात करते हुए, जैसा कि तारा-पूजक करते हैं, वह कहता है: “आप कई अलग-अलग शासकों के नियंत्रण में होंगे, क्योंकि आप एक-दूसरे से इतनी बड़ी दूरी पर स्थित हैं।” इस पर, एक तारा, बाकी सभी की ओर से बोलते हुए, उसे उत्तर देता है:

> आप कितने मूर्ख और नासमझ होंगे, जो हमारे स्वभाव में सृष्टिकर्ता की एकता और उसकी विशिष्टता की छाप के संकेतों को न देख या समझ पा रहे हैं। क्या आप नहीं जानते कि हमारा संगठन कितना निरपेक्ष है, हम जिन नियमों का पालन करते हैं, वे कितने सुरक्षित हैं? आपको लगता है कि हमारे पास कोई व्यवस्था नहीं है। वास्तव में, हम एक अद्वितीय एकता के हाथ और सेवक हैं, जो आकाश (हमारा समुद्र), ब्रह्मांड (हमारा वृक्ष), और अंतरिक्ष की विशालता (हमारा विस्तृत, पैंतरेबाज़ी क्षेत्र) को अपने नियंत्रण में रखता है। मानव उत्सवों को इंगित करने वाले कई-रंगीन दीपों की तरह, हम उसके पूर्ण प्रभुत्व के चमकदार गवाह हैं, उसके साम्राज्य और आधिपत्य के असीम अंतरिक्ष में चमकते हुए शानदार सबूत।
>
> हममें से प्रत्येक समूह उसकी महिमा को, निकट और दूर, इस दुनिया में और अगले में, तथा परे की अनेक दुनियाओं में, उसकी सृष्टि की अनंतता के भीतर प्रदर्शित करने वाले चमकते हुए सेवक हैं। हममें से प्रत्येक एकता के अद्वितीय एक की शक्ति का चमत्कार है, सृष्टि के वृक्ष पर एक पूरी तरह से व्यवस्थित फल है, ईश्वर की एकता का एक उज्ज्वल प्रमाण है, उसके स्वर्गदूतों के लिए एक घर और पहाड़ और मस्जिद है, उच्चतर दुनियाओं का एक सूर्य या एक दीपक है, दिव्य प्रभुता का एक साक्षी है, एक आभूषण है, एक फूल है, आकाशीय क्षेत्र का एक महल है, स्वर्गीय महासागर में एक चमकदार मछली है, और प्रत्येक स्वर्ग के सामने एक सुंदर आंख है।[10] हमारे विशाल समुदाय में शांति, गतिशीलता के बीच गहन मौन विद्यमान है

---

[10] यानी हम सर्वशक्तिमान की रचना के चमत्कारों को देखने वाले संकेतक हैं और दूसरों को भी उन्हें देखने के लिए प्रेरित करते हैं। स्वर्ग असंख्य आँखों से पृथ्वी की दिव्य कलात्मकता के चमत्कारों को देखता है। जैसे देवदूत आकाश में देखते हैं, वैसे ही तारे पृथ्वी को देखते हैं, जो चमत्कारों का एक प्रदर्शन हॉल है, और उनका ऐसा करना सचेत प्राणियों को इसे ध्यान से देखने के लिए प्रेरित करता है।

ज्ञान, राजसी भव्यता के साथ चमकता हुआ आभूषण, पूर्ण सामंजस्य में सबसे विविध सौंदर्य, और पूर्ण संतुलन में सर्वोच्च कला।

इसलिए जब हम असंख्य भाषाओं में अपने सर्व-महान निर्माता की एकता और उनके शाश्वत-प्रार्थना करने वाले होने, साथ ही उनकी पूर्णता, अनुग्रह और सुंदरता के गुणों की घोषणा करते हैं, तो आप हम पर अव्यवस्था और कोई कर्तव्य न होने और कोई स्वामी न होने का आरोप लगाते हैं। चूँकि आप हम पर आरोप लगाते हैं, जो असीम रूप से शुद्ध और आज्ञाकारी सेवक हैं, इसलिए आप अपनी बेतुकी धृष्टता के लिए मुंह पर तमाचा मारने के हकदार हैं!

एक तारा ढोंगी के चेहरे पर शैतान को पत्थर मारने जैसा इशारा करता है, और उसे सितारों के क्षेत्र से नर्क की तह में फेंक देता है। यह प्राकृतिक दर्शन को भी भ्रम की घाटियों में और संयोग को अस्तित्वहीनता के कुएँ में फेंक देता है। यह उन सभी को जो एक ईश्वर के प्रभुत्व में कुछ हिस्सा अपने लिए मानते हैं, असंभवता और असंभवता के घोर अंधकार में और सच्चे धर्म के खिलाफ हर तर्क को सबसे निचले स्तर पर फेंक देता है। फिर तारे एक साथ पवित्र आदेश पढ़ते हैं: यदि आकाश और पृथ्वी में ईश्वर के अलावा कोई अन्य देवता होता, तो दोनों (उन क्षेत्रों में) निश्चित रूप से बर्बाद हो जाते (21:22), और पुष्टि करते हैं: "ईश्वर के साथ किसी भी भागीदार के लिए कोई जगह नहीं है, मक्खी के पंख से लेकर आकाश के दीपक तक।"

तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, अत्यन्त तत्वदर्शी है।

हे ईश्वर, हमारे स्वामी मुहम्मद, जो आपकी सृष्टि की बहुलता के बीच आपकी एकता के दीपक हैं, तथा आपके ब्रह्मांड के प्रदर्शन कक्ष में आपकी एकता के संदेशवाहक हैं, तथा उनके परिवार और साथियों पर शांति और आशीर्वाद प्रदान करें।

एक संक्षिप्त परिशिष्ट

निम्नलिखित श्लोक सुनिए:

क्या वे अपने ऊपर आकाश को नहीं देखते कि हमने उसे किस प्रकार बनाया और सजाया है? (50:6)

---

11 अपनी चूक के बाद, प्रकृति ने पश्चाताप किया। यह समझते हुए कि उसका उचित उद्देश्य और कर्तव्य सक्रिय होना और प्रभाव पैदा करना नहीं है, बल्कि ग्रहण करना और उस पर कार्य किया जाना है, उसने महसूस किया कि यह ईश्वरीय नियति की एक तरह की नोटबुक है, जो परिवर्तन और परिवर्तन के लिए अतिसंवेदनशील है; भगवान की शक्ति का एक प्रकार का कार्यक्रम, जो सर्वशक्तिमान महामहिम द्वारा स्थापित सृष्टि के नियमों के समूह के समान है, उनके नियमों का एक संग्रह है। इसने पूर्ण समर्पण के साथ पूजा का अपना कर्तव्य ग्रहण किया, अपनी पूर्ण शक्तिहीनता को स्वीकार किया और इस प्रकार भगवान की रचना और भगवान की कृति की उपाधि प्राप्त की।

> आकाश के चेहरे को देखो, जहाँ तुम शांत शांति में मौन देखते हो; एक बुद्धिमान, उद्देश्यपूर्ण गति; राजसी में चमक; अलंकरण में मुस्कान; सभी सृष्टि की सुव्यवस्थितता और कला की समरूपता में संयुक्त हैं। इसकी मोमबत्ती की चमक, इसके दीपक की चकाचौंध, और इसके सितारों की चमक उन लोगों के लिए अनंत संप्रभुता प्रकट करती है जिनके पास अंतर्दृष्टि और ठोस तर्क है।

निम्नलिखित आयत (50:6) की व्याख्या में उपरोक्त पंक्तियों को स्पष्ट किया गया है:

यह पद्य आकाश के सुशोभित और सुंदर चेहरे की ओर ध्यान आकर्षित करता है। जो लोग इसे ध्यान से देखते हैं, उन्हें वहां देखी गई असाधारण शांति और स्पष्ट विश्राम में मौन को अवश्य देखना चाहिए, और निष्कर्ष निकालना चाहिए कि आकाश ने एक परम शक्तिशाली के आदेश और अधीनता के माध्यम से यह रूप धारण किया है। यदि आकाशीय पिंड अपने विशाल आकार और गति की गति के साथ बेतरतीब ढंग से घूमते हैं, तो परिणामस्वरूप होने वाला शोर सभी को बहरा कर देगा। वे इतना कोलाहल और भ्रम भी पैदा करेंगे कि ब्रह्मांड ढह जाएगा। यदि बीस भैंसें एक साथ एक ही क्षेत्र में चलती हैं, तो आप अनुमान लगा सकते हैं कि वे कितना बड़ा कोलाहल और भ्रम पैदा करेंगे। हालाँकि, खगोल विज्ञान के अनुसार, कुछ चलते हुए तारे पृथ्वी से एक हजार गुना बड़े होते हैं और तोप के गोले से सत्तर गुना तेज़ गति से चलते हैं। यह देखते हुए, शांति और विश्राम में आकाशीय पिंडों की चुप्पी से, आप सर्व-शक्तिमान, पूर्णता के सर्वशक्तिमान, साथ ही साथ उनकी अधीनता की डिग्री और सितारों की उनके प्रति आज्ञाकारिता की डिग्री को समझ सकते हैं।

एक बुद्धिमान, उद्देश्यपूर्ण गति: श्लोक हमें आकाश में उद्देश्यपूर्ण गति को देखने का आदेश देता है। वह अत्यंत विचित्र और शक्तिशाली गति एक असाधारण सूक्ष्म और व्यापक उद्देश्य पर पूर्ण निर्भरता में होती है। एक कारखाने की विशालता और व्यवस्था जिसके पहिये और मशीनरी बुद्धिमता से, पूर्ण क्रम में और बुद्धिमान उद्देश्यों के लिए घूमते और काम करते हैं, यह दर्शाता है कि उसका इंजीनियर किस हद तक विद्वान और कुशल है। उसी तरह, केंद्र में सूर्य और उसके चारों ओर कई बुद्धिमान उद्देश्यों के लिए एक पूर्ण, सूक्ष्म क्रम में घूमने वाले शक्तिशाली ग्रहों के साथ, सौर मंडल सर्वशक्तिमान की शक्ति और बुद्धि की सीमा को दर्शाता है।

राजसी चमक और श्रृंगार में मुस्कान: आकाश में ऐसी राजसी चमक और ऐसी श्रृंगार में मुस्कान दिखाई देती है कि यह दर्शाता है कि सर्व-महान निर्माता की संप्रभुता कितनी शानदार है और कला कितनी सुंदर है। जिस तरह से राजा की महिमा और उसके देश की उन्नत सभ्यता को दिखाने के लिए विशेष अवसरों पर असंख्य रोशनी का इस्तेमाल किया जाता है, उसी तरह विशाल आकाश में भी राजसी चमक और श्रृंगार में मुस्कान दिखाई देती है।

आकाश, अपने राजसी चमकते तारों के साथ, चौकस आँखों को सर्वशक्तिमान निर्माता की संप्रभुता की पूर्णता और उसकी कला की सुंदरता दिखाता है।

सृष्टि की क्रमबद्धता और कला की समरूपता में ये सभी सम्मिलित हैं: कविता कहती है: आकाश में वस्तुओं के क्रम और सूक्ष्म संतुलन को देखें और जानें कि उनका निर्माता कितना शक्तिशाली और बुद्धिमान है। जब आप किसी को कई अलग-अलग वस्तुओं को एक के बाद एक घुमाते हुए या कई जानवरों को एक सही क्रम में और कई बुद्धिमान उद्देश्यों के लिए एक विशेष, नाजुक संतुलन के साथ निर्देशित करते हुए देखते हैं, तो आप अनुमान लगा सकते हैं कि वह कितना बुद्धिमान, शक्तिशाली और कुशल है।

इसी तरह, अपने अतुल्य आकार और गति वाले असंख्य तारों के साथ, विशाल आकाश ने अपनी विशाल विशालता में अरबों वर्षों से एक निश्चित मापदंड और एक निश्चित, संवेदनशील संतुलन के अनुसार अपने कर्तव्यों का पालन किया है। उन्होंने कभी भी अपनी सीमाओं का उल्लंघन नहीं किया है, और कभी भी थोड़ी सी भी गड़बड़ी नहीं की है। यह चौकस आँखों को दिखाता है कि उनके सर्व-महान निर्माता अपने प्रभुत्व का प्रयोग किस मापदंड के अनुसार करते हैं, यह कितना संवेदनशील और सटीक है। सूरतु'न-नबा' में इसी तरह की आयतों की तरह, अन्य आयतों में, यह आयत इंगित करती है कि सर्व-महान निर्माता ने सूर्य, चंद्रमा और अन्य आकाशीय पिंडों को अपने अधीन कर लिया है।

इसकी मोमबत्ती की चमक, इसके दीपक की चकाचौंध, और इसके सितारों की चमक उन लोगों के लिए अनंत संप्रभुता को प्रकट करती है जिनके पास अंतर्दृष्टि और ठोस तर्क है: सर्वशक्तिमान ईश्वर ने दुनिया की सजी हुई छत पर एक दीपक लटका दिया है - सूर्य - जो गर्मी और रोशनी देता है। वह इसे प्रकाश के एक "बर्तन" के रूप में उपयोग करता है ताकि ऋतुओं के पन्नों पर दिन और रात की तर्ज पर अनन्त रूप से मांगे गए "पत्र" लिखे जा सकें।

एक ऊंची मीनार में लगी घड़ी की फॉस्फोरसेंट घंटे की सुइयों की तरह, उसने स्वर्ग के गुंबद में चाँद को समय की सबसे बड़ी घड़ी की घंटे की सुई बनाया है। वह इसे अपने महलों में एकदम सही माप और बारीक गणना के अनुसार घुमाता है, जैसे कि वह हर रात के लिए एक अलग अर्धचंद्र छोड़ता है और फिर उन सभी को अपने में समेट लेता है (इसे अदृश्य बना देता है)। इसके अलावा, उसने आसमान के खूबसूरत चेहरे को सितारों से चमकाया है जो उस गुंबद में चमकते और मुस्कुराते हैं। यह सब उसके आधिपत्य की असीम संप्रभुता और उसकी दिव्यता की भव्यता की ओर इशारा करता है और सोचने वाले लोगों को उसके अस्तित्व और एकता में विश्वास करने के लिए आमंत्रित करता है।

ब्रह्माण्ड की पुस्तक के रंगीन पृष्ठ को देखो,
और देखो कि शक्ति की स्वर्णिम कलम ने इसे कैसे अंकित किया है!
उन लोगों के लिए कोई भी बिंदु अंधकारमय नहीं छोड़ा गया है
जो अपने हृदय की आँखों से देख सकते हैं।
ऐसा लगता है मानो ईश्वर ने अपनी निशानियाँ प्रकाश से लिखी हों।
देखिये, यह ब्रह्माण्ड ज्ञान का कितना अद्भुत चमत्कार है!

देखिये, ब्रह्माण्ड का अन्तरिक्ष कितना अद्भुत है!
सितारों की बातें सुनें और उनके सुंदर उपदेशों पर ध्यान दें।
देखिये, बुद्धि ने इन प्रकाशमान पत्रों में क्या लिखा है।
वे सभी सत्य की भाषा में यह प्रवचन दे रहे हैं: "हम में से प्रत्येक एक सर्वशक्तिमान महिमावान की राजसी संप्रभुता का एक उज्ज्वल प्रमाण है।

हम सृष्टिकर्ता के अस्तित्व के, तथा उसकी एकता और शक्ति के भी प्रकाश फैलाने वाले साक्षी हैं।

हम उसके सूक्ष्म चमत्कार हैं जो आकाश को स्वर्णिम रूप प्रदान करते हैं, जिस पर स्वर्गदूत भ्रमण करते हैं।
हम स्वर्ग की असंख्य विवेकशील आंखें हैं जो स्वर्ग की ओर निर्देशित हैं, और पृथ्वी की देखरेख करती हैं।
हम सृष्टि के वृक्ष की स्वर्गीय शाखा से जुड़े हुए उत्तम फल हैं; तथा आकाशगंगा की टहनियों से, जो कि महामहिम सर्व-कृपालु के ज्ञान के हाथ से जुड़ी हुई हैं।

स्वर्ग के निवासियों के लिए हम चलती-फिरती मस्जिदें, घूमते हुए घर और ऊंचे घर, प्रकाश फैलाने वाले दीपक, शक्तिशाली जहाज और विमान हैं।

हम सर्वशक्तिमान, सर्वसिद्धिवान, सर्वज्ञानी महात्म्य की शक्ति के चमत्कार हैं।

हममें से प्रत्येक उसकी सृजनात्मक कला का एक आश्चर्य, उसकी बुद्धि की एक दुर्लभता, उसकी सृष्टि का एक चमत्कार, प्रकाश का एक संसार है।
जो लोग वास्तव में मनुष्य हैं, उनके समक्ष हम अनगिनत भाषाओं में अनगिनत प्रमाण
प्रस्तुत करते हैं; भौतिकवादियों की आंखें, वे अंधे हों, कभी हमारा
चेहरा न देखें, न ही उनके कान हमारी बातें सुनें; हम तो सत्य बोलने वाले संकेत हैं।

हम पर भी वही मुहर और मुहर है। हम अपने रब की आज्ञा का पालन करते हैं और उसकी स्तुति करते हैं और इबादत में उसका ज़िक्र करते हैं।
हम आकाशगंगा के सबसे विस्तृत घेरे में आनंदित प्रेमी हैं, वह घेरा जो हमारे प्रभु के नामों का जाप कर रहा है।

तीसरा प्रमाण: प्रकृति पर या खंडन
प्रकृतिवादी नास्तिकता

एक अनुस्मारक: प्रकृतिवादियों का अविश्वासी तरीका अत्यंत तर्कहीन और अंधविश्वासी मान्यताओं पर आधारित है। लेकिन ऐसे प्रसिद्ध, अज्ञानी प्रकृतिवादी दार्शनिक इस तरह के स्पष्ट रूप से अंधविश्वासी विचार को स्वीकार करने में सक्षम क्यों हैं? तथ्य यह है कि वे अपने तरीके की वास्तविकता को नहीं समझ पाते हैं, जो ऐसे अंधविश्वासी विश्वासों को जन्म देने से नहीं रोक सकता, हालाँकि उन तक तर्कसंगत रूप से पहुँचना या उन्हें स्वीकार करना असंभव है। वे कुरान और सत्य और सिद्धांतों पर हिंसक हमला करते हैं।

वे विश्वास के मूलतत्वों को मानते हैं, जो कुछ वे नहीं समझ पाते उसे अंधविश्वास कहकर धिक्कारते हैं और अपने अविश्वास का आधार प्रकृति रखते हैं। कुरान की आयत, उनके रसूलों ने कहा: “क्या आकाशों और पृथ्वी के रचयिता ईश्वर के बारे में कोई संदेह हो सकता है?” (14:10), जो ईश्वर के अस्तित्व और एकत्व की घोषणा करती है, वास्तव में इतनी स्पष्ट है कि इस पर चर्चा की आवश्यकता नहीं है। इसलिए, मैं यह दिखाने की कोशिश करूँगा कि ऐसा क्यों है और प्रकृतिवादी दार्शनिकों ने अपने तरीकों से जो परिणाम निकाले हैं, उनका तर्कसंगत अनुमान लगाना असंभव क्यों है। हालाँकि, चूँकि रिसाले-ए-नूर के कुछ हिस्सों में ईश्वर के अस्तित्व और एकत्व के कई प्रमाणों को विस्तृत किया गया है , इसलिए मैं यहाँ कुछ अन्य प्रमाण प्रस्तुत करूँगा और जहाँ आवश्यक हो, कुछ भिन्न प्रमाणों का संक्षिप्त उल्लेख करूँगा।

परिचय

हे मानव! कुछ ऐसे भयानक वाक्य हैं जो लोगों द्वारा कहे जाते हैं जो अविश्वास को दर्शाते हैं। कुछ विश्वासी भी इनका इस्तेमाल करते हैं, बिना यह जाने कि इनका असल में क्या मतलब है। मैं इनमें से तीन सबसे महत्वपूर्ण वाक्यों के बारे में बताऊँगा।

पहला : “कारणों ने इसे जन्म दिया है।”

दूसरा : “चीजें अपने आप बनी हैं।”

तीसरा : "यह स्वाभाविक है; प्रकृति इसे आवश्यक बनाती है और इसका निर्माण करती है।"

वास्तव में, चूँकि वस्तुएँ निर्विवाद रूप से विद्यमान हैं, और, जैसा कि स्पष्ट रूप से देखा गया है, प्रत्येक वस्तु महान कलात्मकता और अनेक बुद्धिमान उद्देश्यों के साथ अस्तित्व में आती है, और चूँकि कुछ भी शाश्वत या अनादि नहीं है, और प्रत्येक वस्तु समय के भीतर अस्तित्व में आती है, तो हे अविश्वासी, या तो वस्तुएँ, उदाहरण के लिए, वह पशु, निर्जीव, अचेतन, बहरे और अंधे भौतिक कारणों द्वारा एक साथ मिलकर सार्वभौमिक ज्ञान, चेतना और इच्छा की आवश्यकता के अनुसार आविष्कृत की गई हैं, या वे स्वयं ही बनती हैं, या प्रकृति, या जिसे आप प्राकृतिक शक्तियाँ कहते हैं, उसने इसे अस्तित्व में लाया है। एक चौथा विकल्प है जो पूर्ण ज्ञान और इच्छा के साथ मिलकर, महामहिम के सर्वशक्तिमान की शक्ति ने इसका आविष्कार किया है। चूँकि इन चार के अलावा वस्तुओं के अस्तित्व को समझाने का कोई अन्य तरीका नहीं है, यदि पहले तीन को निर्णायक रूप से असंभव साबित किया जा सकता है, तो चौथा तरीका, जो कि ईश्वरीय एकता का तरीका है, अनिवार्य रूप से और निस्संदेह सत्य साबित होगा।

पहला रास्ता

यह सिद्धांत है कि भौतिक कारणों के एक साथ आने से चीजें अस्तित्व में आती हैं। इस तरह के रुख की असत्यता और असंभवता को दर्शाने वाले कई तर्कों में से मैं केवल तीन का उल्लेख करूंगा।

पहली असंभवता

मान लीजिए कि किसी फार्मेसी में सैकड़ों जार हैं, जो अलग-अलग पदार्थों से भरे हैं। हम उनसे किसी तरह की तरल दवा या मलहम बनाना चाहते हैं। इसलिए हम फार्मेसी जाते हैं और पता लगाते हैं कि आवश्यक सामग्री क्या है और हमें प्रत्येक की कितनी मात्रा का उपयोग करना चाहिए। हम देखते हैं कि प्रत्येक सामग्री से एक बहुत ही सटीक मात्रा ली जानी चाहिए। यदि थोड़ी सी भी मात्रा कम या ज्यादा ली जाए, तो दवा और मलहम दोनों अपने विशेष गुणों को खो देंगे और किसी काम के नहीं रहेंगे।

क्या यह संभव या कल्पना योग्य है कि उन जार को तूफ़ान से गिरा दिया जाए और प्रत्येक घटक से बिल्कुल आवश्यक मात्रा में दवा और मरहम बन जाए? क्या इस तरह के संयोग से संभव दंत निर्माण को देखने से ज़्यादा अंधविश्वास या बेतुका कुछ और हो सकता है?

इस उदाहरण में हमें प्रत्येक वस्तु, विशेष रूप से प्रत्येक जीवित वस्तु को एक सजीव मरहम और प्रत्येक पौधे को एक जीवित औषधि के रूप में सोचना चाहिए। वे बहुत सी चीज़ों से अत्यंत सटीक मात्रा में लिए गए असंख्य पदार्थों से बने हैं। भौतिक कारणों के संयोगवश एक साथ आने के कारण उनका होना, किसी भी मरहम या औषधि के निर्माण की तुलना में कहीं अधिक असंभव और अकल्पनीय है, जो पदार्थों के सटीक मात्रा में एक साथ आने के परिणामस्वरूप होता है, जैसा कि उदाहरण में दिखाया गया है।

संक्षेप में, यह केवल एक सर्वव्यापी, असीम बुद्धि, एक अनंत ज्ञान और एक सर्वव्यापी इच्छाशक्ति द्वारा ही संभव है कि ब्रह्मांड की इस विशाल फार्मेसी में कोई भी जीवित चीज़ पदार्थों से अत्यंत सटीक मात्रा में ली गई सामग्री से बनाई जा सकती है और दिव्य नियति या निर्धारण और निर्णय के तराजू पर मापी जा सकती है। जो व्यक्ति यह दावा करता है कि वे अंधे, बहरे और अज्ञानी "प्राकृतिक कारणों और शक्तियों" या बाढ़ जैसे तत्वों का काम हैं, वह उस व्यक्ति से ज़्यादा मूर्ख है जो दावा करता है कि उदाहरण में दवा जार के पलट जाने के परिणामस्वरूप स्वतः ही बन गई है।

दूसरी असंभवता

अगर हर चीज़ को "प्राकृतिक कारणों" के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, न कि सर्वशक्तिमान, एक और अद्वितीय के लिए, तो इसका मतलब है कि कई भौतिक तत्व और कारण हर जीवित चीज़ या प्राणी के शरीर में मौजूद होने चाहिए और काम करने चाहिए। हालाँकि, इतने सारे अलग-अलग और परस्पर विरोधी कारण और तत्व

एक छोटी सी मक्खी जैसे छोटे से छोटे जीव के शरीर में भी अपने आप ही पूर्ण क्रम और अत्यंत सटीक माप के साथ एक साथ आना इतना स्पष्ट रूप से अकल्पनीय है कि थोड़ी सी भी चेतना वाला व्यक्ति भी कह सकता है, "यह अकल्पनीय है; ऐसा नहीं हो सकता।" वास्तव में, एक मक्खी के छोटे से शरीर का ब्रह्मांड के अधिकांश तत्वों और कारणों के साथ संबंध और जुड़ाव है; वास्तव में, यह उनका सारांश या सूचकांक है। यदि इसे शाश्वत, शक्तिशाली व्यक्ति के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जाता है, तो उन तत्वों और भौतिक कारणों को अपने आप ही इसमें मौजूद होना चाहिए और काम करना चाहिए। यह भी आवश्यक है कि वे उसकी आँखों की प्रत्येक कोशिका में मौजूद हों और काम करें, जो उसके शरीर के छोटे नमूने हैं। क्योंकि यदि किसी चीज़ के अस्तित्व के लिए जिम्मेदार कारण या एजेंट भौतिक प्रकृति के हैं, तो उन्हें उसके परिणाम के तत्काल आसपास, बल्कि उसके अंदर मौजूद होना चाहिए। इसलिए, एक मक्खी को "प्राकृतिक" कारणों और तत्वों के लिए जिम्मेदार ठहराने के लिए आवश्यक है कि वे कारण और तत्व उसकी प्रत्येक कोशिका में मौजूद हों और काम करें। यहां तक कि कुतर्क करने वाले सबसे मूर्ख व्यक्ति को भी ऐसी धारणा पर शर्म आएगी।

तीसरी असंभवता

यह एक स्थापित नियम है कि "एक विशेष, अद्वितीय वस्तु जो किसी विशेष व्यक्तित्व की हो, केवल एक ही, अद्वितीय स्रोत से उत्पन्न हो सकती है।" यदि, विशेष रूप से, कोई वस्तु एक जीवित वस्तु है जिसका जीवन पूरी तरह से व्यवस्थित और सबसे संवेदनशील रूप से संतुलित है, तो यह स्वतः स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करेगा कि यह कई, अलग-अलग हाथों से उत्पन्न नहीं हुई है, जो निश्चित रूप से बहुत भ्रम और संघर्ष का कारण बनेगी, बल्कि यह एक सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ व्यक्ति के हाथ से उत्पन्न हुई है। इसके अलावा, किसी चीज़ के अस्तित्व के लिए असंख्य निर्जीव, अज्ञानी, अप्रतिबंधित, अचेतन, अंधे और बहरे "प्राकृतिक" कारणों और तत्वों का यादृच्छिक रूप से एक साथ आना केवल असीमित संभावनाओं के बीच उनके अंधेपन और बहरेपन को बढ़ाएगा। इसलिए, किसी भी प्राणी को, जिसमें असंख्य तत्वों से परिपूर्ण क्रम और सबसे संवेदनशील रूप से संतुलित तरीके से बना एक अद्वितीय, विशेष व्यक्तित्व है, ऐसे कारणों के लिए जिम्मेदार ठहराना उतना ही अनुचित होगा जितना कि एक साथ असंख्य असंभवताओं को स्वीकार करना।

इन असंभवताओं को नज़रअंदाज़ करते हुए, भौतिक कारण या एजेंट या शक्तियाँ सीधे संपर्क के ज़रिए किसी चीज़ को प्रभावित करती हैं। हालाँकि, उनका संपर्क केवल चीज़ों या प्राणियों के बाहरी हिस्सों से होता है। लेकिन हम देखते हैं कि जीवित प्राणियों के अंदरूनी हिस्से, विशेष रूप से, जहाँ भौतिक या "प्राकृतिक" कारणों या एजेंटों के हाथों का कोई संपर्क नहीं होता है, दस गुना बेहतर ढंग से व्यवस्थित, अधिक नाजुक और

उनके बाह्य स्वरूप की तुलना में कलात्मक। सबसे छोटे जीवित प्राणी, सबसे छोटे प्राणी, जिन तक भौतिक या “प्राकृतिक” कारणों और एजेंटों के हाथ नहीं पहुँच सकते और जिनके साथ उनका सीधा संपर्क नहीं होता, यहाँ तक कि उनके बाह्य स्वरूप से भी नहीं, वे कला में सबसे बड़े प्राणियों की तुलना में अधिक विचित्र और अद्भुत हैं और सृजन में अधिक आश्चर्यजनक हैं। ऐसा होने पर, केवल वही व्यक्ति जो निर्जीव, अज्ञानी, अपरिष्कृत, दूर और परस्पर विरोधी कारणों और तत्वों की तुलना में सौ गुना अधिक बहरा और अंधा है, इन प्राणियों को उन कारणों और तत्वों के लिए जिम्मेदार ठहरा सकता है।

दूसरा रास्ता

यह दावा है कि चीज़ें अपने आप बनती हैं। यह कई मायनों में उतना ही अकल्पनीय और असंभव है। उदाहरण के तौर पर, हम उनमें से तीन को समझाएँगे।

पहली असंभवता

हे सृष्टिकर्ता को नकारने वाले! तुम किसी असंभव चीज़ को कई तरीकों से संभव मान सकते हो। क्योंकि तुम अस्तित्व में हो और कोई साधारण, निर्जीव या अपरिवर्तनीय पदार्थ नहीं हो। बल्कि, तुम एक पूरी तरह से सुव्यवस्थित और निरंतर नवीनीकृत कारखाने या एक अद्भुत महल की तरह हो जो निरंतर परिवर्तन और नवीनीकरण से गुजरता है। तुम्हारे शरीर में असंख्य कण निरंतर काम कर रहे हैं, जिनका ब्रह्मांड के साथ संबंध और पारस्परिक संबंध है, विशेष रूप से तुम्हारी प्रजाति के प्रावधान और स्थायित्व के संबंध में। तुम्हारे शरीर में मौजूद कण उन संबंधों और संबंधों को नष्ट न करने के लिए सावधान रहते हैं। ऐसा लगता है जैसे वे पूरे ब्रह्मांड को तुम्हारे साथ संबंधों के परिप्रेक्ष्य से देखते हैं और उसके अनुसार अपनी स्थिति ग्रहण करते हैं। इसलिए, यदि आप यह स्वीकार नहीं करते कि आपके शरीर के कण शाश्वत, सर्वशक्तिमान के नियम के अनुसार चलने वाले छोटे अधिकारी या उसकी सेना के सैनिक या दिव्य नियति की कलम की नोंक या दिव्य शक्ति की कलम की नोंक नहीं हैं, तो आपकी आंख में काम करने वाले प्रत्येक कण में एक ऐसी आंख होनी चाहिए जो आपके पूरे शरीर के साथ-साथ पूरे ब्रह्मांड को देख सके, जिसके साथ आपका शरीर जुड़ा हुआ है और संबंधित है। आपको प्रत्येक कण को सौ प्रतिभाओं के बराबर बुद्धि भी देनी होगी; इसमें आपके पूरे अतीत और भविष्य, आपके पूर्वजों और वंशजों, आपके शरीर को बनाने वाले तत्वों की उत्पत्ति और आपके शरीर के स्रोतों को जानने की क्षमता होनी चाहिए।

आपका पोषण। एक हज़ार प्लेटो की चेतना और ज्ञान को एक अज्ञानी कण के लिए जिम्मेदार ठहराना स्पष्ट रूप से गुमराह करने वाला है।

दूसरी असंभवता

आपका शरीर भी एक अद्भुत महल जैसा है, जिसमें एक हजार गुम्बद हैं, जिनमें से सभी पत्थर एक दूसरे को सहारा देते हैं। बल्कि, आपका शरीर किसी भी महल से हजार गुना अधिक अद्भुत है। क्योंकि आपके शरीर का वह महल निरंतर पूर्ण क्रम में नवीनीकृत होता रहता है। भले ही हम आपकी आत्मा, आपके हृदय और अन्य अमूर्त क्षमताओं को अनदेखा कर दें, जिनमें से प्रत्येक अत्यंत अद्भुत है, आपके शरीर का प्रत्येक अंग एक गुम्बददार महल की तरह है। एक दूसरे को पूर्ण क्रम और संतुलन में सहारा देते हुए, आपके परमाणु कला और शक्ति के चमत्कार बनाते हैं, जैसे कि आंखें और जीभ। यदि वे परमाणु उस ब्रह्मांड के निर्माता के आदेशों का पूर्ण आज्ञाकारिता में काम करने वाले अधिकारी नहीं होते, तो उनमें से प्रत्येक को शरीर के अन्य सभी परमाणुओं पर हावी होना पड़ता और उनके द्वारा हावी होना पड़ता, और कई गुणों का मूल होना पड़ता जो विशेष रूप से अनिवार्य रूप से अस्तित्वमान एक से संबंधित होते हैं, फिर भी एक ही समय में पूरी तरह से स्वतंत्र और आश्रित दोनों होते हैं। इसलिए, किसी भी विद्यमान सत्ता को, जो एकता और अद्वितीयता के एकमात्र परमेश्वर की कृति होने के कारण अद्वितीय व्यक्तित्व रखती है, उसे बनाने वाले असंख्य परमाणुओं के कारण मानना स्पष्ट रूप से सौ गुना असम्भव है।

तीसरी असंभवता

अगर तुम्हारा शरीर उस सर्वशक्तिमान की कलम से न लिखा गया होता जो एक और अद्वितीय है, बल्कि प्रकृति या "प्राकृतिक" कारणों का काम होता, तो प्रकृति के उतने ही मुद्रण-खंड या साँचे होने चाहिए थे जितने उसके कोशिकाएँ और यौगिक आपके शरीर में एक दूसरे के भीतर समाहित हैं। उदाहरण के लिए, तुम्हारे हाथ में जो किताब है, उसे या तो किसी एक मुंशी ने अपने ज्ञान के आधार पर लिखा है, या अगर तुम दावा करते हो कि यह अपने आप या प्रकृति द्वारा बनाई गई है, तो उसमें जितने अक्षर हैं, उतनी ही कुंजियाँ होनी चाहिए। एक छापेखाने में उतने ही लोहे के अक्षर होते हैं जितने वर्णमाला में अक्षर होते हैं। एक शब्द लिखने के लिए उन्हें एक-एक करके व्यवस्थित करना पड़ता है, और इसलिए यह कहा जा सकता है कि एक किताब के जितने अक्षर होते हैं, उतने ही लोहे के अक्षर भी एक किताब के लिए ज़रूरी होते हैं। इसके अलावा, एक तरह की सुलेख कला होती है जिसमें सिर्फ़ एक बड़ा अक्षर होता है, फिर भी, जिसमें, उदाहरण के लिए, पाँच या छह पन्नों का पूरा कुरानिक सूरा लिखा जा सकता है। इसका मतलब यह है कि लिखने के लिए

एक प्रिंटिंग प्रेस में एक अक्षर के लिए, हमें हज़ारों लोहे के अक्षरों की ज़रूरत होती है। इसी तरह, हर जीवित चीज़ या प्राणी ऐसे ही एक अक्षर की तरह है। इसमें ब्रह्मांड में मौजूद लगभग हर चीज़ समाहित है। इसलिए, जिस तरह किसी किताब को खुद से या उसके लोहे के अक्षरों से जोड़ने के लिए उन अक्षरों को प्रिंटिंग प्रेस में सचेत, सार्थक तरीके से खुद से एक साथ आना पड़ता है, अगर हम किसी जीवित चीज़ या प्राणी को खुद से जोड़ते हैं, तो हमें यह स्वीकार करना होगा कि ब्रह्मांड के सभी परमाणु या असंख्य नमूने सचेत रूप से इसे बनाने के लिए एक साथ आए हैं। भले ही हम इस हास्यास्पद विचार को स्वीकार कर लें, जिसमें जीवित प्राणी के कणों, यहाँ तक कि ब्रह्मांड के कणों जितनी ही असंभवताएँ शामिल हैं, यह जीवन और इसकी उत्पत्ति, या एक सचेत जीवित प्राणी की कई अमूर्त क्षमताओं, जैसे कि कारण, चेतना और इच्छाशक्ति को समझाने से असीम रूप से दूर है।

तीसरा रास्ता

यह दावा है कि "यह स्वाभाविक है; प्रकृति ने इसे आवश्यक बनाया है और इसे बनाया है।" इस दावे में कई असंभवताएँ भी शामिल हैं, जिनमें से केवल तीन निम्नलिखित हैं:

पहली असंभवता

यदि जीवित प्राणियों में देखी जाने वाली कला और रचनात्मकता, जो असीम ज्ञान, बुद्धि और इच्छाशक्ति प्रदर्शित करती है, को निर्धारण की कलम और अनन्त सूर्य की शक्ति के लिए नहीं बल्कि अंधी, बहरी और अचेतन प्रकृति और "प्राकृतिक शक्तियों" के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो इसका मतलब है कि हम स्वीकार करते हैं कि या तो प्रकृति को प्रत्येक प्राणी में इसका आविष्कार करने के लिए असंख्य मशीनें या प्रिंटिंग प्रेस मौजूद होने चाहिए या प्रकृति को प्रत्येक प्राणी में ब्रह्मांड बनाने और उसे संचालित करने के लिए पर्याप्त ज्ञान, इच्छाशक्ति, शक्ति और बुद्धि शामिल करनी चाहिए।

मान लीजिए कि हम हर पारदर्शी चीज़ में, हर कांच के टुकड़े में या पानी के बुलबुले में सूरज का प्रतिबिंब देखते हैं। अगर हम हर पारदर्शी चीज़ में दिखने वाले सूरज को आसमान में मौजूद एक और अकेले सूरज के कारण न मानें, तो हमें यह स्वीकार करना होगा कि हर चीज़ में, यहाँ तक कि उन चीज़ों में भी जो इतनी छोटी हैं कि उनमें माचिस की तीली भी नहीं समा सकती, एक छोटा सूरज है जो आसमान में मौजूद सूरज के सभी गुण रखता है। इसके अलावा, हमें यह भी स्वीकार करना होगा कि जितने सूरज का प्रतिबिंब हर कांच के टुकड़े या समुद्र, नदी या झील आदि में मौजूद हर बुलबुले में है, उतने ही सूरज हैं।

ठीक उसी प्रकार, यदि सभी विद्यमान वस्तुएं, सजीव या निर्जीव, शाश्वत सूर्य के नामों की अभिव्यक्तियाँ न मानी जाएँ,

तब हमें यह स्वीकार करना होगा कि हर चीज़, खास तौर पर हर जीवित चीज़ या प्राणी, अपने आप में एक प्रकृति या शक्ति या, सीधे शब्दों में कहें तो, एक देवता है, जिसके पास अनंत ज्ञान, इच्छा, शक्ति और बुद्धि है। ऐसा विचार ब्रह्मांड में असंभवताओं में सबसे झूठा और अंधविश्वासी है। जो कोई भी ब्रह्मांड के निर्माता की कला को अचेतन प्रकृति या निश्चितता के लिए जिम्मेदार ठहराता है, वह ब्रह्मांड के निर्माता की कला को अचेतन प्रकृति या निश्चितता के लिए जिम्मेदार ठहराता है।

नाममात्र की शक्तियों में किसी भी अन्य प्राणी की अपेक्षा चेतना का अभाव अधिक होता है।

दूसरी असंभवता

अगर उन सभी पूरी तरह से व्यवस्थित, और सबसे कलात्मक और बुद्धिमानी से गढ़ी गई चीजों और प्राणियों को एक असीम रूप से शक्तिशाली और बुद्धिमान व्यक्ति के लिए नहीं, बल्कि प्रकृति के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो इसका मतलब यह होगा कि प्रकृति को मिट्टी के हर टुकड़े में उतनी ही फैक्ट्रियाँ और प्रिंटिंग प्रेस होनी चाहिए जितनी यूरोप में हैं ताकि मिट्टी का हर टुकड़ा वहाँ उगने वाले फूलों और फलदार पेड़ों के निर्माण और विकास का साधन बन सके। क्योंकि मिट्टी का एक बर्तन उन कई अलग-अलग फूलों को आकार और रूप देने की वास्तविक क्षमता प्रदर्शित करता है जिनके बीज उसमें दबे होते हैं। इसलिए, अगर उन फूलों को महामहिम के सर्वशक्तिमान व्यक्ति के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जाता है, तो मिट्टी में प्रत्येक फूल के लिए एक अलग मशीन होनी चाहिए।

शुक्राणुओं और अंडों की तरह, सभी बीज एक ही तत्वों से बने होते हैं। प्रत्येक ऑक्सीजन, हाइड्रोजन, कार्बन और नाइट्रोजन से बना होता है, और हवा, पानी, गर्मी और प्रकाश जैसी अचेतन चीजों के प्रभावों के संपर्क में आता है। लेकिन हम देखते हैं कि प्रत्येक फूल का एक विशेष आकार, गंध और रंग होता है, और वह दूसरों से बिल्कुल अलग होता है। इसलिए, इसके लिए आवश्यक है कि उस मिट्टी में उतनी ही फैक्ट्रियाँ हों जितनी यूरोप में हैं ताकि वे सभी अलग-अलग जीवित कपड़े, हज़ारों तरह के कढ़ाई वाले कपड़े बुने जा सकें।

इस प्रकार, आप देख सकते हैं कि प्रकृतिवादियों और भौतिकवादियों के दावे कितने अनुचित हैं, तथा प्रकृति या कारणों या स्वयं वस्तुओं को सृजनात्मकता का श्रेय देना कितना अवैज्ञानिक और अंधविश्वासपूर्ण है।

यदि आप पूछें: आरोप लगाने से उत्पन्न होने वाली कठिनाइयाँ क्या हैं?

प्रकृति के लिए अस्तित्व का क्या अर्थ है जब अस्तित्व को उस अद्वितीय, सभी के लिए शाश्वत रूप से वांछित के रूप में माना जाता है? अस्तित्व, जो प्रकृति के लिए अकल्पनीय है, वह ईश्वर, जो एक और अद्वितीय है, के लिए माना जाने पर कैसे आसान और आवश्यक हो जाता है?

उत्तर: हमने देखा है कि पृथ्वी पर प्रत्येक पारदर्शी चीज़ में एक सूर्य का अस्तित्व है, जिसमें पानी की प्रत्येक बूंद या बुलबुला भी शामिल है।

महासागरों में इतने सारे सूर्यों का होना अकल्पनीय और असंभव है, जितने दिखाई देते हैं। लेकिन अगर हम उन (प्रतिबिंबित) सूर्यों का श्रेय आकाश में मौजूद एक सूर्य को दें, तो उनके अस्तित्व की व्याख्या करना बेहद आसान है। (यह भी कहा जा सकता है कि सूर्य का अस्तित्व असंख्य सूर्यों के अस्तित्व को संभव बनाता है-

(इसी तरह, सभी अस्तित्वमान वस्तुओं को एक अद्वितीय, शाश्वत रूप से सभी के लिए चाहा जाने वाला मानने से उनका अस्तित्व इतना आसान हो जाता है कि हम यह सोचने से खुद को रोक नहीं पाते कि उनका अस्तित्व आवश्यक और अपरिहार्य है। उनके और उस अद्वितीय के बीच एक संबंध उनके अस्तित्व के लिए पर्याप्त है। लेकिन अगर यह संबंध टूट जाए, और हर वस्तु को प्रकृति या खुद पर छोड़ दिया जाए, तो हमें यह स्वीकार करना होगा कि एक मक्खी जैसे छोटे से प्राणी को बनाने के लिए, जो ब्रह्मांड का एक छोटा सा नमूना है, अंधी और बहरी प्रकृति के पास पूरे ब्रह्मांड को बनाने और उसे नियंत्रित करने के लिए पर्याप्त ज्ञान, शक्ति और बुद्धि होनी चाहिए। यह हज़ार गुना असंभव है।

संक्षेप में, जिस प्रकार यह अकल्पनीय और असंभव है कि अनिवार्यतः विद्यमान परमेश्वर का अपने दिव्य सार में कोई साझेदार या उसके जैसा कोई हो, उसी प्रकार उसकी सृष्टि और सृष्टि पर प्रभुत्व में अन्यों की भागीदारी या हस्तक्षेप भी अकल्पनीय और असंभव है।

जहाँ तक प्रश्न के दूसरे भाग का प्रश्न है, जैसा कि रिसाले-ए-नूर के कई अन्य भागों में कहा गया है, जब अस्तित्व को अद्वितीयता वाले एकमात्र को जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो सभी चीजों का अस्तित्व उतना ही आसान हो जाता है जितना कि एक चीज का।

लेकिन अगर इसे “प्राकृतिक” कारणों या प्रकृति के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो प्रत्येक चीज़ का अस्तित्व में रहना उतना ही कठिन हो जाता है जितना कि सभी चीज़ों का।

जब कोई व्यक्ति सेना में शामिल होता है या राज्य से अधिकारी के रूप में जुड़ा होता है, तो वह व्यक्ति उन कर्तव्यों की पूर्ति का साधन बन सकता है जो उसकी अपनी व्यक्तिगत शक्ति और प्रभाव से लाखों गुना अधिक हैं। वे राज्य के नाम पर किसी राजा को बंदी भी बना सकते हैं। फिर भी यह व्यक्ति उन सभी कर्तव्यों को पूरा करने के लिए आवश्यक उपकरण और शक्ति नहीं रखता है, न ही उसे ऐसा करने के लिए बाध्य किया जाता है, जिनमें वह भूमिका निभाता है। अपने संबंध के कारण, सेना, जो उनका सहारा है, ऐसी आवश्यकताओं को पूरा करती है। इसलिए, इस एक व्यक्ति द्वारा किए जाने वाले कोई भी कर्तव्य सेना या राज्य के कर्तव्यों जितने ही महान हो सकते हैं। यह ठीक वैसा ही है जैसे एक चींटी भगवान के अधिकारी के रूप में फिरौन के महल को नष्ट करने में सक्षम हो, या एक मक्खी निम्रोद को मार डाले, या एक चीड़ का बीज, जो गेहूँ के दाने के आकार का हो, एक विशाल चीड़ के पेड़ के सभी भागों को उत्पन्न कर दे।12 यदि परमेश्वर के साथ संबंध है, तो यह एक व्यक्ति के लिए एक महान कर्तव्य है।

---

[12] सृष्टिकर्ता से सम्बन्ध होने के कारण वह बीज ईश्वरीय नियति-नियति या निर्धारण के आदेशानुसार कार्य करता है तथा अनेक असाधारण कर्तव्यों की पूर्ति का साधन बनता है। यदि वह सम्बन्ध टूट जाए तो बीज के निर्माण के लिए अधिक क्षमता, उपकरण तथा अन्य साधनों की आवश्यकता होती है।

सेना से जुड़े किसी व्यक्ति को अलग कर दिया जाए, तो उसे अपनी मर्जी से काम करने दिया जाएगा, फिर या तो उसकी शक्ति उसके पास सीमित हो जाएगी, या फिर उसे सेना से जुड़े सभी उपकरण ले जाने होंगे और सेना की शक्ति अपने पास रखनी होगी, अगर उसे सेना के सदस्य के रूप में वही कर्तव्य निभाने होंगे जो वह करता है। यहां तक कि जोकर जो लोगों को हंसाने के लिए कहानियां और कल्पनाएं गढ़ते हैं, वे भी दूसरे मामले को बताने में शर्म महसूस करेंगे।

संक्षेप में कहें तो, जब सभी चीजों का अस्तित्व अनिवार्य रूप से अस्तित्वमान एक के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो उसे आवश्यक और अपरिहार्य माना जाता है। लेकिन जब सभी चीजों का अस्तित्व प्रकृति के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो वह अतार्किक, असंभव और अकल्पनीय हो जाता है।

तीसरी असंभवता

निम्नलिखित दो तुलनाएँ, जिनका उल्लेख रिसाले-ए-नूर के कुछ अन्य भागों में किया गया है, इस असंभवता की व्याख्या करती हैं:

पहली तुलना: एक जंगली, अशिक्षित आदमी एक महल में प्रवेश करता है जो
एक विशाल रेगिस्तान में बनाया गया है और सभ्यता के सभी फलों से सजाया गया है-

हजारों अद्भुत, कलात्मक रूप से निर्मित वस्तुओं की जांच करने के बाद, चूंकि महल में कोई भी नहीं है और अपनी अज्ञानता और पर्याप्त बुद्धि की कमी के कारण, वह सोचता है कि महल में मौजूद वस्तुओं में से किसी ने महल को बनाया होगा, जो कुछ भी इसमें है। लेकिन वह जिस भी वस्तु की जांच करता है, वह अपनी कच्ची और अशिक्षित बुद्धि को भी यह विश्वास नहीं दिला पाता है कि उस वस्तु ने महल का निर्माण किया है।

बाद में, उसे एक नोटबुक मिलती है जिसमें महल की विस्तृत योजना, इसकी सामग्री की सूची और इसके प्रबंधन के नियम लिखे होते हैं। यह भी असंभव है कि जिस नोटबुक में हाथ, आंखें या औजार नहीं हैं, उसने महल का निर्माण और सजावट की हो। हालाँकि, उसे ऐसा कुछ भी दिखाई नहीं देता जिससे वह महल के अस्तित्व का श्रेय ले सके, और चूँकि अन्य वस्तुओं की तुलना में वह नोटबुक, जिसमें महल के निर्माण, सजावट और प्रबंधन के नियम हैं, उसके अस्तित्व को समझाने में अधिक सक्षम लगती है, इसलिए वह व्यक्ति यह कहने के लिए बाध्य होता है, “यह वह नोटबुक है जिसने महल का डिज़ाइन बनाया और बनाया, और इसे सजाया।

एक विशाल चीड़ के पेड़ को बनाने में जितनी कुशलता की आवश्यकता होती है, उससे कहीं अधिक कुशलता की आवश्यकता होती है। चीड़ के पेड़ के सभी भाग, जो ईश्वरीय शक्ति का कार्य है, संभावित पेड़ में मौजूद होंगे - बीज, जो ईश्वरीय नियति का कार्य है। पेड़ को पैदा करने वाली फैक्ट्री एक बीज है। नियति द्वारा बीज में समाहित पेड़ उस शक्ति के साथ एक पेड़ में विकसित होता है।

वे सभी वस्तुएं, जिन्हें उसने बनाया था और इस महल में रखा था।” क्या यह सरासर मूर्खता और बकवास नहीं है?

जैसा कि इस तुलना में, ईश्वर को नकारने वाला प्रकृतिवादी ब्रह्मांड के इस महल में प्रवेश करता है, जो कि ऊपर वर्णित तुलना में महल की तुलना में असीम रूप से अधिक सुव्यवस्थित और अधिक परिपूर्ण है, और जो पूरे ब्रह्मांड में ज्ञान के चमत्कारों से सुसज्जित है। यह न सोचते हुए कि यह अनिवार्य रूप से विद्यमान प्राणी की कला का कार्य है, जो आकस्मिकता के क्षेत्र से परे है, और उस विचार से बचते हुए, वह उस पर ध्यान केंद्रित करता है जिसे वे गलत तरीके से "प्रकृति" कहते हैं। प्रकृति, वास्तव में, आकस्मिकता के क्षेत्र में दिव्य नियति या निर्धारण का एक बोर्ड है। दिव्य नियति या निर्धारण इसका उपयोग अपने निर्णयों को लिखने और मिटाने के लिए करता है। दूसरे दृष्टिकोण से, प्रकृति दिव्य शक्ति के नियमित कार्यों के शीर्षकों या नियमों की एक निरंतर बदलती नोटबुक है, और दुनिया के भगवान के रूप में उनकी कला के कार्यों की एक सूची है। हालाँकि, ब्रह्मांड के महल में प्रवेश करने वाला प्रकृतिवादी कहता है: "इन सभी चीजों को अपने अस्तित्व के लिए एक कारण की आवश्यकता होती है। इस 'नोटबुक' से अधिक उपयुक्त कोई भी दृश्य वस्तु नहीं है, जिस पर इस महल का निर्माण करने का आरोप लगाया जा सके। यद्यपि इस अंधे, अचेतन, अज्ञानी और शक्तिहीन 'नोटबुक' को ब्रह्मांड के महल का निर्माता मानना पूरी तरह से अनुचित है, जिसके अस्तित्व के लिए स्पष्ट रूप से अनंत ज्ञान और शक्ति की आवश्यकता है, क्योंकि मैं शाश्वत निर्माता के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करता, इसलिए मैं यह कहना बेहतर समझूंगा कि इस 'नोटबुक' ने इस महल का निर्माण किया है।" जिस पर हम उत्तर देते हैं:

> हे मूर्ख! प्रकृतिवाद के दलदल से अपना सिर बाहर निकालो और घूमो! तुम महिमा के निर्माता को देखोगे, जिसकी गवाही परमाणुओं से लेकर आकाशगंगाओं तक सभी चीजें देती हैं, प्रत्येक अपनी जीभ से, और जिसकी ओर वे अपनी उंगली से इशारा करते हैं। उस शाश्वत निर्माता के प्रकटीकरण को देखो, जिसने उस महल को बनाया है और उसका कार्यक्रम उस "नोटबुक" में लिखा है! उसकी पुस्तक - कुरान - पर कान लगाओ और अपने निरर्थक शब्दों से बचो!

दूसरी तुलना: एक बेहद असभ्य, अशिक्षित व्यक्ति एक शानदार बैरक में प्रवेश करता है। वह एक शानदार ढंग से व्यवस्थित सेना के अनुशासित कार्यों को देखता है जो अपनी ड्रिल कर रही है। एक रेजिमेंट, एक बटालियन और एक सेना कोर बैठते हैं, खड़े होते हैं, मार्च करते हैं, और हथियार उठाते और डालते हैं जैसे कि वे एक ही निजी हों। चूँकि उसका कच्चा दिमाग यह नहीं समझ सकता और इस तरह से इनकार करता है कि सेना राज्य के कानूनों के अनुसार काम करने वाले कमांडर के आदेशों के तहत काम कर रही है, वह कल्पना करता है कि सभी सैनिक

एक दूसरे से डोरी से बंधे हुए हैं। वह सोचता है कि यह कितनी अद्भुत डोरी होगी, और आश्चर्यचकित हो जाता है।

बाद में शुक्रवार को, वह एक शानदार मस्जिद में जाता है, उदाहरण के लिए अयासोफ़िया (हागिया सोफिया)। वह देखता है कि शुक्रवार की सामूहिक प्रार्थना करने वाले मुसलमानों की मंडली एक व्यक्ति की आवाज़ पर उठती है, झुकती है, सजदा करती है और बैठ जाती है। चूँकि वह शरिया को नहीं जानता है, जो पवित्र ईश्वरीय कानूनों और सिद्धांतों का संग्रह है जो मुसलमानों के जीवन और पूजा का मार्गदर्शन करता है, वह कल्पना करता है कि मंडली के सदस्य एक दूसरे से डोरियों से बंधे हैं जो उन्हें नियंत्रित करती हैं और उन्हें कठपुतलियों की तरह घुमाती हैं। अपने दिमाग में इस सबसे हास्यास्पद विचार के साथ, वह वहाँ से चला जाता है।

मस्जिद.

इस तुलना की तरह, ईश्वर का एक प्रकृतिवादी इनकार करनेवाला इस दुनिया में प्रवेश करता है, जो एक तरह से अनंत काल के प्रभु की अपनी असंख्य सेनाओं के लिए एक शानदार छावनी है, और दूसरी तरह से, अपने सेवकों के लिए शाश्वत, सर्व-पूज्य की एक सुव्यवस्थित मस्जिद है। वह कल्पना करता है कि ब्रह्मांड के क्रम और संचालन के लिए शाश्वत प्रभु की बुद्धि ने जो नियम स्थापित किए हैं - वे नियम जिनका केवल नाममात्र का अस्तित्व है और वास्तव में ब्रह्मांड के प्रशासन में उसके कार्यों के शीर्षक हैं -

भौतिक अस्तित्व है और पूरे ब्रह्मांड को संचालित करने के लिए पर्याप्त ज्ञान और शक्ति है। इन्हें ईश्वरीय शक्ति के लिए जिम्मेदार ठहराने के बजाय, वह ब्रह्मांड के अस्तित्व और संचालन को नाममात्र अस्तित्व के इन नियमों के लिए जिम्मेदार ठहराता है, जिन्हें वह "प्रकृति" कहता है - और जिनमें कोई शक्ति, ज्ञान, बुद्धि, चेतना और इच्छा नहीं है - और जिन्हें वह "प्राकृतिक शक्तियाँ" कहता है, जो वास्तव में ईश्वरीय शक्ति की अभिव्यक्ति हैं। वह इन शक्तियों को एक स्वतंत्र शक्ति मानता है जो ब्रह्मांड को निर्देशित करने में सक्षम है। यह उपर्युक्त तुलना में मनुष्य के अज्ञान से हज़ार गुना अधिक अपमानजनक अज्ञान है।

संक्षेप में, यदि वह चीज जिसे प्रकृतिवादी "प्रकृति" कहते हैं, उसकी कोई बाह्य वास्तविकता है, तो वह अधिक से अधिक एक कलाकृति हो सकती है, कोई कलाकार नहीं; वह एक डिजाइन हो सकती है, कोई डिजाइनर नहीं; वह आदेशों का एक समूह हो सकती है, आदेशों का जारीकर्ता नहीं; वह ब्रह्मांड के निर्माण और संचालन के नियमों का एक समूह हो सकती है, कोई कानून निर्माता नहीं; ईश्वर की गरिमा के समक्ष एक निर्मित पर्दा हो सकती है, कोई निर्माता नहीं; वह ईश्वर के कार्य करने के तरीके के अनुसार उत्पन्न हुई कोई चीज हो सकती है, कोई सृजक नहीं; केवल एक कानून हो सकती है, कोई स्वतंत्र, सचेतन या शक्तिशाली शक्ति नहीं; और वह अंकित करने के लिए रेखाओं का एक समूह हो सकती है, कोई स्रोत, उत्पत्ति या लेखक नहीं।

निष्कर्ष के तौर पर, चूँकि वस्तुएँ और प्राणी अस्तित्व में हैं और जैसा कि इस ग्रंथ के "प्रस्तावना" में कहा गया है, उनके अस्तित्व को समझाने का कोई और तरीका नहीं हो सकता है।

ऊपर बताए गए चार तरीकों से अधिक कठिन है, और चूंकि इनमें से पहले तीन तरीके स्पष्ट की गई असंभवताओं के कारण अमान्य साबित हुए हैं, तो अनिवार्य रूप से और स्वतःसिद्ध रूप से, चौथा तरीका स्पष्ट रूप से एकमात्र वैध तरीका है। यह दिव्य अस्तित्व और एकता का रास्ता है। यह शुरुआत में उद्धृत आयत से संकेत मिलता है, "क्या ईश्वर, जो आकाश और पृथ्वी का निर्माता है, के बारे में कोई संदेह हो सकता है?" (14: 10), जो स्पष्ट रूप से और निस्संदेह बताता है कि ईश्वर के अस्तित्व या एकता के बारे में कोई संदेह नहीं हो सकता है, और यह कि सब कुछ सीधे उसकी शक्ति के हाथ से निकलता है, और आकाश और पृथ्वी उसके सर्वोच्च नियंत्रण और निर्देशन की मुट्ठी में हैं।

हे प्रकृति और प्राकृतिक कारणों को सृजनात्मकता का श्रेय देने वाले!

हर चीज़ की प्रकृति, चीज़ों की तरह ही, बनाई गई है, क्योंकि यह कला से भरपूर, मौलिक और अपने आप में विशिष्ट है। इसके अलावा, हर चीज़ की तरह, जो किसी कारण का परिणाम है, इसका स्पष्ट कारण भी बनाया गया है। इसके अलावा, हर चीज़ का अस्तित्व कई "उपकरणों" के अस्तित्व पर निर्भर करता है। इसलिए, एक परम शक्तिशाली होना चाहिए जो चीज़ों और उनकी प्रकृति और कारणों, और आवश्यक उपकरणों दोनों को बनाता है। और उस सर्वशक्तिमान को अपनी रचनात्मकता और अस्तित्व पर आधिपत्य में नपुंसक कारणों को साझा करने की क्या ज़रूरत है? भगवान ऐसे विचार को मना करें! बल्कि, वह चीज़ों को उनके कारणों के साथ बनाता है ताकि वह अपने नामों और अपनी बुद्धि की अभिव्यक्तियों को प्रदर्शित करे। ऐसा करके, वह एक स्पष्ट, व्यवस्थित कारण-और-प्रभाव संबंध स्थापित करता है, और स्पष्ट कारणों को लोगों की नज़र में उसकी गरिमा और लोगों को चीज़ों में दया के साथ दोषपूर्ण या असंगत के रूप में दिखाई देने वाली चीज़ों के बीच एक पर्दा बना देता है।

घटनाएँ.

घड़ी बनाने वाले के लिए कौन सा विकल्प ज़्यादा आसान और उचित है? घड़ी के काग बनाना और फिर उन्हें घड़ी बनाने के लिए व्यवस्थित करना, या कागों के अंदर एक अद्भुत मशीन डालना और फिर घड़ी बनाने का काम मशीन के बेजान हाथों पर छोड़ देना? क्या दूसरा विकल्प ज़्यादा आसान और उचित है या अकल्पनीय और असंभव? अपने विवेक का इस्तेमाल करके निर्णय लें!

या फिर एक लेखक एक किताब लिखने के लिए कलम, कागज़ और स्याही तैयार करता है। क्या उसके लिए खुद किताब लिखना ज़्यादा आसान और उचित है, या कलम, कागज़ और स्याही के अंदर एक मशीन का आविष्कार करना, जो किताब से ज़्यादा कलात्मक और ज़्यादा परेशानी वाली हो, और फिर उस अचेतन मशीन को किताब लिखने के लिए कहना, जबकि वह उसमें हस्तक्षेप नहीं करता? क्या यह ज़्यादा उचित नहीं है कि वह खुद किताब लिखे?

क्या दूसरा विकल्प पहले से सौ गुना अधिक कठिन है?

अगर आप कहें: यह सच है कि किताब लिखने के लिए मशीन का आविष्कार करना, किताब लिखने से सौ गुना ज़्यादा मुश्किल है। लेकिन इसमें एक आसानी भी है क्योंकि उस मशीन से एक ही किताब की कई प्रतियाँ बनाई जा सकती हैं।

उत्तर: अपने नामों की असीम अभिव्यक्तियों और प्रभावों को अपनी असीम शक्ति के माध्यम से निरंतर नवीनीकृत करके, उन्हें हमेशा अलग-अलग तरीकों से प्रदर्शित करने के लिए, शाश्वत डिजाइनर और लेखक ऐसी विशेष पहचान और विशेषताओं के साथ चीजों का निर्माण करता है कि शाश्वत रूप से सभी के लिए प्रार्थना करने वाले के कोई भी संदेश और भगवान की किताबें दूसरों के समान नहीं हैं।

विभिन्न अर्थ प्रदर्शित करने के लिए, प्रत्येक वस्तु की अपनी अलग पहचान और विशिष्ट विशेषताएं होनी चाहिए।

यदि आपके पास आँखें हैं, तो मानव मुख को देखिए: आप देखेंगे कि यद्यपि आदम के समय से सभी मानव चेहरों की संरचना और अंग एक जैसे हैं, फिर भी प्रत्येक में कुछ विशेष विशेषताएँ हैं जो उसे अन्य सभी से अलग करती हैं। इसलिए, प्रत्येक मानव चेहरा एक अलग, विशेष पुस्तक है। प्रत्येक को उसकी विशेष विशेषताओं के साथ बनाने के लिए एक अलग लेखन-सेट और एक अलग रचना की आवश्यकता होती है। प्रत्येक के लिए आवश्यक सामग्री एकत्र करने और प्रत्येक को उसके स्थान पर ठीक से स्थापित करने के लिए, एक पूरी तरह से अलग कार्यशाला होनी चाहिए। भले ही हम, जो असंभव है उसे संभव मानते हुए, प्रकृति को एक प्रिंटिंग प्रेस के रूप में सोचें, प्रत्येक लेखन के लिए अक्षरों की लौह कुंजियों की एक नई व्यवस्था बनाने के अलावा, प्रत्येक शरीर के अस्तित्व के लिए आवश्यक सभी कणों को "प्रकृति" के सभी कोनों से सटीक मात्रा और विशिष्ट अनुपात में एकत्र किया जाना चाहिए और उसमें सही क्रम में व्यवस्थित किया जाना चाहिए; यह प्रत्येक लेखन के लिए अक्षरों की लौह कुंजियों को व्यवस्थित करने से सौ गुना अधिक कठिन है। इन सभी चीजों को करने के लिए, अभी भी परम शक्तिशाली के सर्वव्यापी ज्ञान, इच्छा और शक्ति की नितांत आवश्यकता है। इसलिए, मशीन की यह परिकल्पना पूरी तरह से निरर्थक कल्पना है।

घड़ी और किताब की इन तुलनाओं की तरह, महिमा का निर्माता, सर्वशक्तिमान दोनों कारणों और उनके प्रभावों को एक साथ बनाता है, और अपनी बुद्धि से प्रभावों के अस्तित्व को उनके कारणों पर निर्भर बनाता है। ब्रह्मांड के निर्माण और संचालन के लिए उनके पास नियमों का एक समूह है, जो वास्तव में उनके सृजन और निर्देशन के कार्यों के शीर्षक हैं। अपनी इच्छा से, उन्होंने उन कार्यों या नियमों के दर्पण के रूप में प्रत्येक चीज़ के लिए एक प्रकृति नियुक्त की है, और अपनी शक्ति से वह प्रत्येक चीज़ को उसकी प्रकृति के अनुसार बनाता है।

इसलिए, क्या इस सत्य को स्वीकार करना आसान है, जो पूरी तरह से तर्कसंगत है और असंख्य तर्कसंगत प्रमाणों का निष्कर्ष है, हमारे पास इसे स्वीकार करने के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं है, या यह मान लेना है कि जिसे आप प्रकृति और प्रकृति कहते हैं-

क्या यह दूसरा विकल्प सभी संभावनाओं से परे, यहां तक कि अकल्पनीय नहीं है?

अविश्वासी प्रकृतिवादी उत्तर देता है: भले ही मैं आपकी व्याख्याओं के प्रकाश में यह स्वीकार कर लूं कि आज तक मैंने जिस तरह की सोच को अपनाया है, वह तर्क से परे और अस्वीकार्य है, और 'आवश्यक रूप से विद्यमान' को सभी चीजों का निर्माता मानता हूं, और कहता हूं कि 'विश्वास के लिए सभी प्रशंसा ईश्वर की है,' फिर भी मुझे एक संदेह है। हालाँकि हम स्वीकार करते हैं कि ईश्वर निर्माता है, लेकिन ईश्वर के प्रभुत्व की संप्रभुता के संबंध में कुछ चीजों के निर्माण में कुछ महत्वहीन कारणों की एक निश्चित भूमिका निभाने में क्या बुराई हो सकती है? क्या इसका मतलब उसकी संप्रभुता की ओर से कोई दोष है?

जवाब: जैसा कि रिसाले-ए-नूर के कुछ हिस्सों में स्पष्ट रूप से बताया गया है , संप्रभुता अपने स्वभाव से ही हस्तक्षेप को अस्वीकार करती है। यहां तक कि एक महत्वहीन निदेशक या अधिकारी भी अपने बच्चे के हस्तक्षेप को बर्दाश्त नहीं करता है

अपने अधिकार के साथ। इतिहास में कुछ धार्मिक शासकों ने अपने मासूम बेटों को इस डर से मार डाला कि कहीं उनके बेटे उनके शासन में हस्तक्षेप करने की कोशिश न करें, यह दर्शाता है कि शासन में "हस्तक्षेप की अस्वीकृति का कानून" कितना मौलिक है। "दूसरों की भागीदारी को रोकने का कानून", जो संप्रभुता की स्वतंत्रता की मांग करता है, एक ही समय में एक ही स्थान पर दो संप्रभुओं के अस्तित्व को अस्वीकार करता है, चाहे वह देश हो या शहर। इसने मानव इतिहास में उथल-पुथल के माध्यम से अपनी महान शक्ति दिखाई है।

इस प्रकार, यदि मानवता में सापेक्ष और क्षणिक शासन और संप्रभुता की भावना, जो शक्तिहीन है और जिसे सहायता की आवश्यकता है, दूसरों के हस्तक्षेप और भागीदारी को अस्वीकार करती है, और अपनी स्थिति में अपनी स्वतंत्रता को इतनी ईर्ष्या से बनाए रखना चाहती है, तो, यदि आप तुलना कर सकते हैं, तो हस्तक्षेप की अस्वीकृति और भागीदारी को रोकना सर्वशक्तिमान के लिए कितना अपरिहार्य है, जिसकी पूर्ण संप्रभुता सृष्टि पर उसके पूर्ण प्रभुत्व पर आधारित है या उससे उत्पन्न होती है, जिसका पूर्ण शासन उसकी दिव्यता से उत्पन्न होता है, जिसकी पूर्ण स्वतंत्रता उसकी पूर्ण एकता और विशिष्टता से उत्पन्न होती है, और जिसकी पूर्ण आत्मनिर्भरता उसकी निरपेक्षता से उत्पन्न होती है।

ल्यूट पावर.

जहाँ तक आपके संदेह के दूसरे भाग का प्रश्न है, जो यह है कि यदि कुछ तुच्छ वस्तुओं के निर्माण और नियंत्रण में कुछ अंशों का योगदान कुछ तुच्छ कारणों से माना जाता है, और वे वस्तुएँ अपनी पूजा का कुछ अंश उन कारणों को देती हैं, तो इससे कणों से लेकर आकाशगंगाओं तक सभी प्राणियों की पूजा में क्या हानि होती है, जो कि अनिवार्यतः विद्यमान सत्ता को समर्पित है, जो कि पूजा का परम उद्देश्य है?

उत्तर: ब्रह्माण्ड के सर्वज्ञ रचयिता ने ब्रह्माण्ड को एक वृक्ष की तरह बनाया है, जिसका सबसे उत्तम फल चेतन प्राणी है, तथा चेतन प्राणियों में सबसे व्यापक फल मानवता है। क्या उस परम प्रभुता सम्पन्न तथा सर्व-स्वतंत्र शासक, उस अद्वितीय एकेश्वर, जिसने ब्रह्माण्ड को इसलिए बनाया है कि उसे जाना जाए तथा उससे प्रेम किया जाए, को दूसरों को मानवता, जो कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का फल है, का स्वामित्व लेने देना चाहिए? क्या वह मानवता के धन्यवाद तथा आराधना को, जिसके लिए उसे बनाया गया है, तथा जो कि उसका सबसे श्रेष्ठ फल है, दूसरों को समर्पित करने की अनुमति देगा? क्या वह, अपनी बुद्धि के सर्वथा विपरीत, सृष्टि के परिणाम तथा ब्रह्माण्ड के फल को व्यर्थ तथा व्यर्थ बना देगा? भगवान ऐसा विचार न करें!

इसके अलावा, क्या वह दूसरों को समर्पित प्राणियों की पूजा की अनुमति देगा, जिसका अर्थ होगा उसकी बुद्धि और प्रभुत्व का इन्कार?
जबकि वह अपने कार्यों के माध्यम से प्रदर्शित करता है कि वह चाहता है कि लोग उसे जानें और असीम सीमा तक उससे प्रेम करें, क्या वह स्वयं को भुला देगा और सभी प्राणियों की कृतज्ञता, प्रेम और पूजा को उसके अलावा किसी अन्य के प्रति निर्देशित करने की अनुमति देकर ब्रह्मांड के अस्तित्व के लिए अपने सबसे उच्च उद्देश्यों को अस्वीकार कर देगा?

हे मित्र, तूने प्रकृतिवाद त्याग दिया है! अब बोलने की बारी तेरी है! वह उत्तर देता है:

> ईश्वर की कृपा हो, मेरे ये दो संदेह दूर हो गये।
> आपने बहुत ही विश्वासपूर्वक समझाया है कि ईश्वर एक है और क्यों वह ही पूजा का सच्चा पात्र है,
> तथा उसके अलावा किसी और को पूजा का अधिकार नहीं है और वह पूजा के योग्य नहीं है। इसलिए,
> इस सत्य को नकारना सूर्य और दिन को नकारने की हद तक अहंकार होगा।

निष्कर्ष

जिस व्यक्ति ने प्रकृतिवाद को त्यागकर ईश्वर में विश्वास स्वीकार कर लिया है, उसने कहा, "ईश्वर की स्तुति हो; ईश्वर के अस्तित्व और एकत्व के विषय में अब मुझे कोई संदेह नहीं है, परन्तु फिर भी मेरे पास कुछ प्रश्न हैं।"

पहला प्रश्न

हम सुनते हैं कि रोज़ाना नमाज़ अदा करने में आलस करने वाले बहुत से लोग पूछते हैं: सर्वशक्तिमान ईश्वर को हमारी इबादत की क्या ज़रूरत है? कुरान में वह उन लोगों को क्यों सख़्ती से फटकारता है जो इबादत नहीं करते और उन्हें नरक जैसी भयानक सज़ा की धमकी क्यों देता है? कुरान की संयमित, सौम्य और संतुलित शैली को एक मामूली गलती के सामने इतनी गंभीरता दिखाना कैसे शोभा देता है?

उत्तर: सच में, सर्वशक्तिमान ईश्वर को आपकी पूजा की बिल्कुल भी आवश्यकता नहीं है, न ही किसी और चीज़ की। लेकिन आपको पूजा करने की ज़रूरत है, क्योंकि वास्तव में आप आध्यात्मिक रूप से बीमार हैं। हमने रिसाले-ए-नूर के कई हिस्सों में संकेत दिया है कि पूजा मानवता के कई आध्यात्मिक घावों का इलाज है। अगर कोई मरीज़ किसी दयालु डॉक्टर से यह कहते हुए प्रतिक्रिया करता है कि उसे अपनी बीमारी के लिए निर्धारित दवाएँ लेनी चाहिए, तो वह कहता है, “आपको दवा की क्या ज़रूरत है?

आप इस तरह से क्यों जोर दे रहे हैं?”, आप समझ सकते हैं कि यह कितना मूर्खतापूर्ण होगा।

जहाँ तक इबादत के कर्तव्य को पूरा न करने के विरुद्ध कुरान की कठोर धमकियों का प्रश्न है, तो वह इस प्रकार है: अपनी प्रजा के अधिकारों की रक्षा के लिए, एक राजा एक साधारण व्यक्ति को उसके अधिकारों के उल्लंघन के अनुसार दण्ड देता है। इसी प्रकार, जो व्यक्ति इबादत नहीं करता, विशेष रूप से नमाज़ नहीं पढ़ता, वह उन प्राणियों के अधिकारों का गंभीर उल्लंघन करता है, जो अनंत काल के पूर्ण प्रभु की प्रजा के समान हैं।

क्योंकि जीवों की पूर्णता महिमामंडन और अन्य प्रकार की पूजा के माध्यम से प्रकट होती है जो निर्माता के साथ उनके संबंध द्वारा प्रकट होती है। जो व्यक्ति पूजा नहीं करता है, वह अपनी पूजा को नहीं देख सकता है, बल्कि उसे नकार भी देता है। जीवों को उनकी स्थिति से हटाकर, जो कि हर एक प्राणी है, जो कि अनंत काल से सभी के लिए प्रार्थना किए जाने वाले ईश्वर का एक मिथ्या-प्रधान और उनके नामों का दर्पण है, उनकी पूजा के कारण उन्हें महत्वहीन, निर्जीव, अर्थहीन, लक्ष्यहीन और बेतरतीब ढंग से अस्तित्व में रहने वाली चीज़ों की श्रेणी में लाकर, इस व्यक्ति ने उनका अपमान किया है और उनकी पूर्णता को नकार दिया है।

दरअसल, हर कोई ब्रह्मांड को अपने आईने में देखता है। सर्वशक्तिमान ईश्वर ने मानवता को ब्रह्मांड के लिए एक माप और पैमाने के रूप में बनाया है। उसने प्रत्येक व्यक्ति को ब्रह्मांड से बाहर एक विशेष, निजी दुनिया दी है। प्रत्येक व्यक्ति की विशेष दुनिया उसके दिल का रंग लेती है। उदाहरण के लिए, एक हताश, रोता हुआ व्यक्ति प्राणियों को रोते हुए और निराश देखता है, जबकि एक खुशमिजाज, आशावादी व्यक्ति उन्हें भी खुश और मुस्कुराते हुए देखता है।

जो व्यक्ति गम्भीरतापूर्वक, चिन्तनशील ढंग से ईश्वर की आराधना करता है, वह ईश्वर की भक्ति से वंचित रह सकता है।

प्राणियों की वास्तविक पूजा और महिमा के बारे में कुछ हद तक चिंता करें, जबकि जो व्यक्ति पूजा नहीं करता है, वह या तो असावधानी या इनकार के कारण, प्राणियों के बारे में किसी भी सत्य से रहित और उनकी वास्तविक पूर्णता के पूरी तरह विपरीत तरीके से सोचता है, और इस प्रकार उनके अधिकारों का उल्लंघन करता है।

इसके अलावा, कोई भी अपना खुद का निर्माता और मालिक नहीं है; हर कोई सर्वशक्तिमान ईश्वर का सेवक है। इसलिए, जो लोग निर्धारित प्रार्थनाएँ नहीं करते हैं, वे अपनी शारीरिक, दुष्ट-आज्ञाकारी आत्मा से पराजित होकर, खुद को गलत करते हैं, हालाँकि वे अपने स्वामी और मालिक के सेवक हैं। इसलिए, उनके स्वामी दुष्ट-आज्ञाकारी आत्मा के खिलाफ अपने सेवक के अधिकारों की रक्षा करने और उन्हें बहाल करने के लिए गंभीर धमकियाँ देते हैं। इसके अलावा, जो व्यक्ति पूजा नहीं करता है, जो कि ईश्वर की अपनी रचना के लिए उद्देश्य या किसी व्यक्ति के अस्तित्व का अंतिम कारण है, वह ईश्वरीय इच्छा और बुद्धि का उल्लंघन कर रहा है, और इसलिए दंड का हकदार है।

संक्षेप में, जो लोग उपासना नहीं करते, वे न केवल स्वयं ईश्वर के सेवकों के साथ अन्याय करते हैं, बल्कि ईश्वर के सेवकों के रूप में उनके द्वारा प्राप्त की गई पूर्णता से उत्पन्न प्राणियों के अधिकारों के साथ अन्याय करते हैं और उनका उल्लंघन करते हैं। जिस प्रकार अविश्वास प्राणियों का अपमान है, उसी प्रकार उपासना के कर्तव्य को पूरा न करना प्राणियों द्वारा साझा की गई पूर्णता का खंडन है। इसी प्रकार, यह ईश्वरीय ज्ञान के विरुद्ध अपराध है और इसके लिए कठोर धमकियाँ और दंड दिए जाने चाहिए। इस सत्य को व्यक्त करने के लिए ही चमत्कारी अभिव्यक्ति के कुरान ने चर्चा के अंतर्गत कठोर शैली को चुना है, जो वाक्पटुता के साथ पूर्ण रूप से मेल खाते हुए, स्थिति की आवश्यकताओं के अनुरूप है।

दूसरा प्रश्न

वह व्यक्ति जिसने प्रकृतिवाद को त्याग दिया है और जो ईमान पर आ गया है, वह पूछता है: यह आश्चर्यजनक है कि जो कुछ भी उसके पास है और जो कुछ भी वह करता है, और हर पहलू में, सब कुछ पूरी तरह से ईश्वरीय इच्छा और शक्ति पर निर्भर करता है। अनंत प्रचुरता, जिसे हम अस्तित्व में स्पष्ट रूप से देखते हैं, और उन चीजों के निर्माण में असीम सहजता जो एक ईश्वर द्वारा उनके निर्माण से उत्पन्न होती हैं, और जिसे कुरान की ऐसी आयतों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है जैसे

> तुम्हारी रचना और तुम्हारा पुनरुत्थान एक ही आत्मा के समान है (31:28), और

> प्रलय का विषय ईश्वर से सम्बन्धित है।
> शक्ति) लेकिन पलक झपकते ही, या उससे भी जल्दी (16: 77),

यह सर्वोच्च, आश्चर्यजनक तथ्य पूरी तरह से स्वीकार्य और तर्कसंगत है। हालाँकि, हम इस सर्वोच्च, आश्चर्यजनक तथ्य को समझ नहीं सकते हैं।

आप इस सहजता को कैसे समझाएंगे?”

उत्तर: बीसवें पत्र के दसवें वाक्य , 'वह सभी चीज़ों पर शक्तिशाली है' पर टिप्पणी करते हुए इसे स्पष्ट और ठोस तरीके से समझाया गया था। विशेष रूप से, उस पत्र के परिशिष्ट में इसे और भी स्पष्ट रूप से समझाया गया था कि जब सभी चीज़ों को एक, एकल निर्माता के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो उनका अस्तित्व एक ही चीज़ के अस्तित्व जितना आसान हो जाता है। यदि उन्हें अद्वितीयता वाले एक ही व्यक्ति के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जाता है, तो एक भी चीज़ का अस्तित्व सभी चीज़ों के अस्तित्व जितना मुश्किल हो जाता है; वास्तव में, एक बीज का अस्तित्व एक पेड़ के अस्तित्व जितना मुश्किल हो जाता है।

लेकिन अगर सभी चीज़ों को उनके सच्चे निर्माता के लिए जिम्मेदार ठहराया जाए, तो ब्रह्मांड का अस्तित्व एक पेड़ के अस्तित्व की तरह आसान हो जाता है, और पेड़ का अस्तित्व एक बीज की तरह, और जन्नत का अस्तित्व वसंत की तरह, और वसंत का अस्तित्व एक फूल की तरह हो जाता है। रिसाले-ए-नूर के कुछ हिस्सों में, हमने अस्तित्व में अनंत प्रचुरता के बावजूद चीजों के असीमित मूल्य के पीछे कई कारणों और बुद्धिमत्ता के कई उदाहरणों का उल्लेख किया है, और चीजों के अस्तित्व में आने में असीमित सुविधा और गति के बावजूद हर चीज में पूर्ण कलात्मकता है। हम उनमें से केवल कुछ को संक्षेप में इस प्रकार इंगित करेंगे:

उदाहरण के लिए, यदि सौ निजी सैनिकों की कमान एक अधिकारी को दी जाए, तो उनकी कमान सौ अधिकारियों द्वारा एक निजी सैनिक की कमान संभालने से सौ गुना आसान होगी। इसी तरह, एक केंद्र या कारखाने या सरकार द्वारा सेना को सुसज्जित करना एक सैनिक को सुसज्जित करने जितना ही आसान है, जबकि कई अलग-अलग कमान केंद्रों या कारखानों द्वारा एक सैनिक को सुसज्जित करना पूरी सेना को सुसज्जित करने जितना ही कठिन है। क्योंकि सेना के लिए जितने उपकरण होंगे, उतनी ही फैक्ट्रियाँ भी होनी चाहिए।

यह देखा गया है कि एक ही बीज से और एक ही जड़ पर उगने तथा एक ही नियम से बढ़ने और पोषण पाने के कारण, हज़ारों फल देने वाले पेड़ की वृद्धि एक ही फल की वृद्धि जितनी आसान है। लेकिन अगर एक पेड़ अपनी वृद्धि के लिए कई स्रोतों पर निर्भर हो, जिसके परिणामस्वरूप प्रत्येक फल के लिए ज़रूरी सभी ज़रूरतें अलग-अलग जगहों से उपलब्ध करानी पड़ें, तो प्रत्येक फल का उत्पादन एक पेड़ जितना ही मुश्किल हो जाएगा। एक भी बीज पैदा करना, जो पेड़ का नमूना और सूचकांक है, पेड़ के उत्पादन जितना ही मुश्किल होगा। क्योंकि पेड़ की वृद्धि और जीवन के लिए सभी पदार्थ बीज के लिए भी ज़रूरी हैं।

इस प्रकार, ऐसे सैकड़ों उदाहरण हैं जो दर्शाते हैं कि एक ही स्रोत पर निर्भर हज़ारों चीज़ों का अस्तित्व में आना, कई स्रोतों पर निर्भर एक ही चीज़ के अस्तित्व में आने से कहीं ज़्यादा आसान है। रिसाले -ए-नूर के कुछ अन्य भागों का संदर्भ देते हुए

इस तथ्य की विस्तृत व्याख्या के लिए हम यहाँ केवल इसके एक महत्वपूर्ण पहलू की व्याख्या करेंगे जो ईश्वरीय ज्ञान, शक्ति और भाग्य से संबंधित है। यह इस प्रकार है:

आप एक अस्तित्ववान प्राणी हैं। यदि आप खुद को शाश्वत, सर्वशक्तिमान मानते हैं, तो आप समझ जाएँगे कि कैसे उसने आपको एक ही आदेश से शून्य से बनाया है, जैसे माचिस जलाना। हालाँकि, यदि आप खुद को उसके नहीं, बल्कि भौतिक कारणों और प्रकृति के लिए मानते हैं, तो चूँकि आप एक सुव्यवस्थित सारांश, एक फल और ब्रह्मांड का एक लघु सूचकांक हैं, इसलिए आपको बनाने के लिए, आपके शरीर के निर्माण के लिए आवश्यक सभी पदार्थों को ब्रह्मांड से बारीक तरीके से छानना होगा और सटीक माप में इसके सभी कोनों से एकत्र करना होगा। क्योंकि भौतिक पदार्थों का उपयोग केवल निर्माण या रचना के लिए किया जाता है, और भौतिक कारण केवल उनके संग्रह के साधन के रूप में काम कर सकते हैं। हर समझदार व्यक्ति जानता है और मानता है कि वे शून्य से वह नहीं बना सकते जो उनके पास खुद नहीं है।

इसलिए उन्हें एक सूक्ष्म जीव के शरीर के लिए आवश्यक सभी पदार्थों के कण विश्व के सभी कोनों से एकत्र करने होंगे।

कविता.

अब समझो कि ईश्वरीय एकता और सब कुछ उसी को सौंपने में कितनी आसानी है, और गुमराही में, ईश्वर के साथ साझीदार जोड़ने में कितनी कठिनाइयाँ हैं!

दूसरा, जब सब कुछ एक ही रचयिता को माना जाता है, तो ईश्वरीय ज्ञान के दृष्टिकोण से अस्तित्व असीम रूप से आसान हो जाता है। यह इस प्रकार है:

भाग्य एक मामले में ज्ञान के समान है। यह प्रत्येक वस्तु के लिए एक निश्चित मापदंड नियुक्त करता है, जिसे उसका विशिष्ट, अमूर्त साँचा माना जा सकता है। भाग्य द्वारा नियुक्त वह मापदंड या साँचा उसके अस्तित्व के लिए एक आदर्श का काम करता है। जब दिव्य शक्ति सृजन करती है, तो वह उस नियुक्त माप के अनुसार अत्यंत सहजता से ऐसा करती है। अब, यदि उस सत्ता को असीमित, सर्वव्यापी, शाश्वत ज्ञान वाले सर्वशक्तिमान महामहिम के अधीन न किया जाए, तो न केवल हजारों कठिनाइयाँ सामने आती हैं, बल्कि उसका अस्तित्व सौ गुना अधिक अकल्पनीय हो जाता है। क्योंकि यदि दिव्य भाग्य या ज्ञान द्वारा नियुक्त मापदंड न होता, तो भौतिक जगत में बनाए गए हजारों भौतिक साँचों को एक सूक्ष्म जीव के शरीर में उपयोग करना पड़ता।

तो, समझिए कि हर चीज़ को एक ही स्रोत से जोड़ने में असीम आसानी क्यों है, और क्यों कई स्रोतों को स्वीकार करने या ईश्वर के साथ साझेदार जोड़ने में अंतहीन कठिनाइयाँ हैं। साथ ही, यह भी समझिए कि आयत द्वारा कितना वस्तुनिष्ठ, निर्विवाद, स्पष्ट और उच्च सत्य कहा गया है, क़यामत का मामला (ईश्वरीय शक्ति के संबंध में) पलक झपकने के बराबर है, या उससे भी जल्दी (16: 77)।

तीसरा प्रश्न

जिस मित्र को सही मार्गदर्शन मिला है, वह पूछता है: दार्शनिकों में सबसे प्रसिद्ध लोग दावा करते हैं कि कुछ भी शून्य से नहीं बनाया जा सकता है, और कुछ भी पूरी तरह से विलुप्त नहीं होता है। ब्रह्मांड का कारखाना संयोजन और विघटन के चक्र पर चलता है। क्या यह सच है?

उत्तर: दार्शनिकों में सबसे प्रसिद्ध वे लोग जो सृष्टि को कुरान की रोशनी में नहीं देखते, वे प्रकृति और भौतिक कारणों से जीवों के निर्माण और अस्तित्व को अकल्पनीय रूप से कठिन मानते हैं और वे दो समूहों में विभाजित हैं। एक समूह सोफिस्ट है। तर्क को त्यागकर, जो मानवता के लिए अनन्य है, वे प्रकृति और भौतिक कारणों को रचनात्मकता का श्रेय देने वाले गुमराह करने वाले मार्ग पर चलने की तुलना में ब्रह्मांड, जिसमें उनका अपना भी शामिल है, के अस्तित्व को नकारना आसान पाते हैं। इसलिए, अपने और ब्रह्मांड के अस्तित्व को नकारते हुए, वे पूर्ण अज्ञानता में उतर जाते हैं।

दूसरा समूह इस तथ्य से अवगत है कि प्रकृति और भौतिक कारणों को रचनात्मकता का श्रेय देना, मक्खी या बीज जैसे छोटे से प्राणी के अस्तित्व के लिए भी अंतहीन मुश्किलें पैदा करता है, और इसलिए यह तर्कहीन है। यह उन्हें सृजन के कार्य को नकारने के लिए प्रेरित करता है, और दावा करता है कि कुछ भी शून्य से अस्तित्व में नहीं आ सकता है, और विनाश असंभव है। वे कल्पना करते हैं कि सब कुछ संयोजन, विघटन और पुनः संयोजन के चक्र में निहित है, जो परमाणुओं की यादृच्छिक गति और संयोग की हवाओं पर निर्भर है।

अब, अपने को सबसे बुद्धिमान समझने वालों की अज्ञानता देखिए और समझिए कि गुमराही लोगों को बौद्धिक दरिद्रता के किस बिंदु तक ले जा सकती है!

एक शाश्वत शक्ति पर विचार करें जिसने छह दिनों में ब्रह्मांड का निर्माण किया, और हर साल पृथ्वी पर सैकड़ों हज़ारों प्रजातियों के एक साथ निर्माण और पुनः निर्माण में खुद को प्रकट करती है, और हर वसंत में छह सप्ताह में दुनिया को एक नए से बदल देती है जो पहले से कहीं ज़्यादा कला और ज्ञान से भरपूर होती है! अदृश्य लेखन को दृश्यमान बनाने के लिए उस पर रसायन लगाने की तरह, यह शक्ति चीज़ों और प्राणियों के मूलरूपों को बाहरी अस्तित्व देती है

दिव्य ज्ञान में दिव्य नियति द्वारा पहले से ही निर्धारित और पहचान की गई है। इसलिए, इस शक्ति को सृजन की क्षमता से इनकार करना और सृजन के कार्य को अस्वीकार करना सोफिस्टों की तुलना में अधिक मूर्खतापूर्ण और अज्ञानी होगा। चूंकि ये दोनों दुर्भाग्यपूर्ण समूह, जो स्वयं में बिल्कुल नपुंसक हैं और जिनके पास आंशिक इच्छाशक्ति के अलावा कुछ भी नहीं है, फिर भी वे फिरौन से अधिक अभिमानी और विद्रोही हैं, और प्रकृति और भौतिक कारण, जिन पर वे भरोसा करते हैं, कुछ भी नहीं से कुछ बनाने और इसे पूरी तरह से नष्ट करने में असमर्थ हैं, वे दावा करते हैं कि कुछ भी नहीं से कुछ भी नहीं है, और जो कुछ भी अस्तित्व में है वह अस्तित्वहीन नहीं होता है, इस प्रकार वे परम सर्वशक्तिमान एक सृजन को अस्वीकार करते हैं और अस्तित्वहीनता में भेजते हैं-

तनाव.

सर्वशक्तिमान परमेश्वर के पास दो तरह की रचनाएँ हैं। एक है उत्पत्ति और आविष्कार। यानी, वह किसी भी चीज़ को शून्य से अस्तित्व में लाता है, साथ ही उसके लिए जो कुछ भी ज़रूरी है, उसे भी। दूसरा है बनाना और रचना करना। यानी, अपनी बुद्धि की पूर्णता और उसके कई सूक्ष्म उदाहरणों को प्रदर्शित करने के लिए, जैसे कि अपने कई नामों की अभिव्यक्तियाँ प्रदर्शित करना, वह ब्रह्मांड के तत्वों से कुछ चीज़ें बनाता है। सर्व-प्रदाता होने के नाते, वह अपने आदेश के अधीन परमाणुओं और पदार्थों को भी उनके पास भेजता है, और उन्हें अपने भीतर संचालित करता है।

इस प्रकार, अस्तित्व से अस्तित्व में लाना और अस्तित्व में भेजना, परम सर्वशक्तिमान की दो निरंतर, असीम रूप से आसान प्रथाएं हैं, जो आविष्कार या उत्पत्ति तथा निर्माण या रचना दोनों करते हैं।

जो व्यक्ति यह दावा करता है कि वह शक्ति जो प्रत्येक वसंत में शून्य से लाखों जीवित प्रजातियों के रूपों और गुणों को उनकी सभी स्थितियों और अवस्थाओं के साथ बनाती है, वह उस चीज़ को अस्तित्व नहीं दे सकती जो अस्तित्व में नहीं है, वह अस्तित्वहीनता का हकदार है।

जो व्यक्ति प्रकृतिवाद को त्यागकर सत्य को स्वीकार करता है, वह निष्कर्ष निकालता है: सर्वशक्तिमान ईश्वर की स्तुति और धन्यवाद, मैंने अस्तित्व के कण-कण तक पूर्ण विश्वास प्राप्त कर लिया है, और निराधार अनुमानों और गुमराही से बच गया हूँ। और मेरा एक भी संदेह दूर नहीं हुआ है।

अवशेष।

इस्लाम धर्म और विश्वास की पूर्णता के लिए ईश्वर की प्रशंसा हो!

तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, अत्यन्त तत्वदर्शी है।

चौथा प्रमाण:
वह दिव्य नाम जो सर्व-न्यायमय है

> कोई चीज़ ऐसी नहीं जो हमारे पास ख़ज़ाने के अलावा कुछ न हो। और हम उसे निश्चित मात्रा में ही उतारते हैं। (15:21)

उपर्युक्त श्लोक के अर्थ का एक पहलू और ईश्वरीय नाम सर्व-न्याय का एक प्रकटीकरण, जो ईश्वरीय नामों में से एक है, जो सर्वव्यापी अभिव्यक्तियों में से एक है या ईश्वर के सर्वव्यापी नाम की छह ज्योतियों में से एक है, मुझे एस्कीशेहर जेल में दूर से दिखाई दिया। इसे समझने योग्य बनाने के लिए, फिर से तुलना के माध्यम से, हम निम्नलिखित कहते हैं:

ब्रह्मांड एक ऐसा महल है जिसमें एक शहर है जो लगातार विनाश और मरम्मत से हिल रहा है। और शहर में एक "देश" है जो लगातार युद्ध और पलायन में बढ़ रहा है। और देश के भीतर एक "दुनिया" है जो लगातार मृत्यु और जीवन के बीच घूम रही है। लेकिन महल, शहर, देश और दुनिया में ऐसा आश्चर्यजनक संतुलन, संतुलन और व्यवस्था की क्रिया विद्यमान है कि यह स्पष्ट रूप से साबित होता है कि इन असंख्य प्राणियों में होने वाले सभी परिवर्तन, आने-जाने वाले सभी एक ही प्राणी के तराजू पर मापे और तौले जाते हैं जो हर पल पूरे ब्रह्मांड को देखता और उसकी देखरेख करता है। क्योंकि, उदाहरण के लिए, यह विचार करते हुए कि एक मछली एक बार में एक हजार अंडे देती है और खसखस जैसा एक फूल बीस हजार बीज पैदा करता है, यदि कारण - सभी प्राणी - स्वतंत्र और अनियंत्रित होते, जो निरंतर परिवर्तनों और बाढ़ में बहने वाले तत्वों के हमले के माध्यम से संतुलन को नष्ट करने और सब कुछ खत्म करने में सक्षम होते; या यदि वे लक्ष्यहीन, उद्देश्यहीन "संयोग", अराजक अंधी शक्तियों या अचेतन अंधकारमय प्रकृति के नियंत्रण में होते; तो प्राणियों में संतुलन या पूरे ब्रह्मांड का संतुलन इतना नष्ट हो गया होता कि एक वर्ष के भीतर, वास्तव में एक दिन के भीतर, अराजकता हो गई होती। समुद्र पूरी तरह से अव्यवस्थित और भ्रमित चीजों से भर गए होते और सड़े हुए हो गए होते; वायुमंडल हानिकारक गैसों से जहरीला हो गया होता और पृथ्वी कूड़े के ढेर, वधशाला या दलदल में बदल गई होती। दुनिया का दम घुट गया होता।

इस प्रकार, सजीव शरीर की कोशिकाओं से लेकर रक्त में लाल और सफेद कणिकाओं, परमाणुओं की गति और परिवर्तन, तथा शरीर के अंगों के बीच अनुपात और संबंध से लेकर ब्रह्मांड में सब कुछ एक ही है।

समुद्रों का आना-जाना, धरती के नीचे झरनों की आय-व्यय, जानवरों और पौधों का जन्म और मृत्यु, शरद ऋतु का विनाश और वसंत का पुनर्निर्माण, ब्रह्मांडीय तत्वों और सितारों के कर्तव्य और गति, और मृत्यु और जीवन, प्रकाश और अंधकार, और गर्मी और ठंड के बीच होने वाले परिवर्तन, संघर्ष और टकराव, इन सभी को इतने संवेदनशील संतुलन, इतने महीन माप के साथ व्यवस्थित और तौला जाता है कि मानव मन कहीं भी कोई बर्बादी या व्यर्थता नहीं देख सकता, ठीक वैसे ही जैसे मानव विज्ञान हर जगह सबसे उत्तम व्यवस्था और सुंदर संतुलन को देखता है। वास्तव में, मानव विज्ञान उस व्यवस्था और संतुलन की अभिव्यक्ति और व्याख्याकार है।

तो, आइए और सूर्य और उसके बारह ग्रहों के बीच संतुलित संबंध पर विचार करें। क्या यह सूर्य की तरह ही स्पष्ट रूप से उस सर्वशक्तिमान की ओर संकेत नहीं करता जो सर्व-न्यायप्रिय और सर्व-शक्तिमान है? और विशेष रूप से हमारा यान, यानी पृथ्वी, जो ग्रहों में से एक है, एक वर्ष में मानव दूरी में लगभग अस्सी हज़ार वर्ष की परिक्रमा करता है। उस असाधारण गति के बावजूद, यह अपने चेहरे पर ढेर या व्यवस्थित चीजों को तितर-बितर या हिलाता नहीं है, न ही उन्हें अंतरिक्ष में फेंकता है। यदि इसकी गति एक निश्चित सीमा तक कम या अधिक होती, तो यह अपने निवासियों को अंतरिक्ष में फेंक देता और उन्हें तितर-बितर कर देता। और यदि इसकी गति और स्थिति में संतुलन एक मिनट या एक सेकंड के लिए भी नष्ट हो जाए, तो यह दुनिया को नष्ट कर देगा।

दरअसल, यह किसी अन्य पिंड से टकराएगा और समग्र विनाश का कारण बनेगा।

विशेष रूप से, पृथ्वी पर लाखों पौधों और पशु प्रजातियों के जन्म, मृत्यु, आजीविका और जीवन में करुणामय संतुलन एक सर्व-न्यायप्रिय और सर्व-करुणामय ईश्वर को उसी स्पष्टता से दर्शाता है, जिस स्पष्टता से प्रकाश सूर्य को दर्शाता है।

और विशेष रूप से उन प्रजातियों के असंख्य सदस्यों में से केवल एक के अंग, क्षमताएं और इंद्रियां एक दूसरे से इतने संवेदनशील संतुलन में जुड़ी हुई हैं कि यह स्पष्ट रूप से एक सर्व-बुद्धिमान और सर्व-न्यायपूर्ण निर्माता को इंगित करता है।

और विशेष रूप से, पशुओं के शरीर में कोशिकाएं और रक्त वाहिकाएं, और रक्त में कणिकाएं, और कणिकाओं में कण इतने संवेदनशील रूप से संतुलित होते हैं और एक दूसरे के साथ इतने अच्छे संबंध रखते हैं कि यह स्पष्ट रूप से साबित होता है कि उन्हें एक ही सर्व-न्यायप्रिय और सर्व-बुद्धिमान निर्माता के संतुलन, कानून और व्यवस्था के माध्यम से बनाए रखा और प्रशासित किया जा रहा है, जिसके हाथों में सभी चीजों की लगाम है, और सभी चीजों की कुंजी है, और वह सभी चीजों को एक चीज की तरह आसानी से निर्देशित करता है, बिना किसी एक चीज की दिशा दूसरों की दिशा में बाधा डाले।

यदि कोई व्यक्ति, जो इसे असंभव मानता है, यह विश्वास नहीं करता कि जिन्न और मनुष्य के कर्मों को अंतिम निर्णय के समय न्याय के सर्वोच्च तराजू पर तौला जाएगा, इस विशाल तराजू को ध्यान से देखता है, जिसे वे इस दुनिया में अपनी आँखों से देख सकते हैं, तो वे निश्चित रूप से इसे असंभव नहीं मानेंगे।

हे अपव्ययी, अन्यायी, गंदे, मितव्ययिता, न्याय और स्वच्छता का अनादर करने वाले! चूँकि तुम मितव्ययिता, स्वच्छता या न्याय का पालन न करके पूरे ब्रह्मांड का विरोध करते हो, जिन्हें पूरा ब्रह्मांड और सभी अन्य प्राणी अपने कार्यों में मूल सिद्धांत के रूप में मानते हैं, इसलिए तुम उनके क्रोध और घृणा के पात्र बन गए हो। तुम किस पर आधारित हो और किस पर भरोसा करते हो कि तुम अपने गलत कामों, असंतुलन, अपव्यय और अस्वच्छता के माध्यम से सभी प्राणियों को क्रोधित करते हो?

वास्तव में, ब्रह्मांड में सार्वभौमिक ज्ञान, जो ईश्वरीय नाम सर्वज्ञ की सबसे व्यापक अभिव्यक्ति से निकलता है, मितव्ययिता और अपव्यय की कमी को देखता है, और मितव्ययिता का आदेश देता है। और ब्रह्मांड में सर्वव्यापी न्याय जो सर्व-न्यायपूर्ण नाम की सबसे व्यापक अभिव्यक्ति से निकलता है, सभी चीजों के संतुलन को प्रशासित करता है और मानवता को न्याय का आदेश देता है। सूरतुर-रहमान की निम्नलिखित आयतों में "संतुलन" शब्द का चार बार उल्लेख किया गया है:

> और आकाश को भी उसी ने ऊँचा बनाया है और तराजू को स्थिर किया है, अतः तुम तराजू से आगे न बढ़ो, और तराजू का पूरा ध्यान रखो और तराजू में कमी न करो। (55:7-9)

यह चार डिग्री और चार प्रकार के संतुलन को दर्शाता है, जो ब्रह्मांड में इसके सर्वोच्च महत्व को दर्शाता है। जिस तरह किसी भी चीज़ में कोई अपव्यय नहीं है, उसमें कोई विकार या असंतुलन भी नहीं है। इसी तरह, परम पावन नाम से निकलने वाली सफाई और स्वच्छता का कार्य ब्रह्मांड में सभी प्राणियों को साफ और सुंदर बनाता है। जब तक मानवता का प्रदूषणकारी हाथ हस्तक्षेप नहीं करता, तब तक शब्द के सही अर्थों में किसी भी चीज़ में कोई अशुद्धता या कुरूपता नहीं होती।

इसलिए आप इस बात से समझ सकते हैं कि न्याय, अर्थव्यवस्था और स्वच्छता के सिद्धांत मानव जीवन के लिए कितने मौलिक हैं; ये कुरान और इस्लामी सिद्धांतों के सत्य हैं। और जानें कि कुरान की आज्ञाएँ ब्रह्मांड के साथ कितनी निकटता से जुड़ी हुई हैं; उन्होंने हर जगह अपनी मज़बूत जड़ें फैलाई हैं और इसके सभी कोनों को घेर लिया है। जान लें कि इन सत्यों को नष्ट करना उसी तरह असंभव है जैसे ब्रह्मांड को नष्ट करना या उसका रूप बदलना असंभव है।

इसके अलावा, इन तीन सबसे व्यापक प्रकाशों की तरह, सैकड़ों अन्य व्यापक वास्तविकताएँ, जैसे दया, उदारता, और रिकॉर्ड करना और संरक्षित करना, पुनरुत्थान और परलोक की आवश्यकता होती है। इसलिए क्या यह संभव है कि पुनरुत्थान नहीं होगा और परलोक स्थापित नहीं होगा, और इसलिए ये सभी शक्तिशाली और व्यापक वास्तविकताएँ, अर्थात् दया, उदारता, न्याय, ज्ञान, अर्थव्यवस्था और स्वच्छता, जो न केवल ब्रह्मांड में बल्कि सभी प्राणियों के साथ भी प्रबल हैं, निर्दयता, अन्याय, ज्ञान की कमी, अपव्यय, अशुद्धता और निरर्थकता में बदल जाती हैं?

भगवान न करे, एक लाख बार, भगवान न करे! क्या वह दया और बुद्धि जो एक मक्खी के जीवन के अधिकारों को दयालुतापूर्वक संरक्षित करती है, पुनरुत्थान न लाकर सभी सचेत प्राणियों के जीवन के अंतहीन अधिकारों या असंख्य अन्य प्राणियों के असीम अधिकारों का उल्लंघन करेगी? और यदि ऐसा कहना जायज़ है, तो क्या उस प्रभुत्व की महिमा और वैभव जो दया, करुणा, न्याय और बुद्धि के संबंध में असीम संवेदनशीलता और देखभाल दिखाती है, और उस देवता की संप्रभुता जो अपनी पूर्णता को प्रदर्शित करने और खुद को ज्ञात और प्यार करने के लिए ब्रह्मांड को अपनी अनगिनत अद्भुत कलाओं और उपहारों से सुशोभित करती है, पुनरुत्थान की अनुपस्थिति की अनुमति देगी, जो इस ब्रह्मांड के सभी प्राणियों और पूर्णताओं को कम कर देगी, जिससे इन पूर्णताओं का खंडन होगा? भगवान न करे! ऐसा पूर्ण सौंदर्य और अनुग्रह स्पष्ट रूप से ऐसी पूर्ण कुरूपता की अनुमति नहीं देगा।

वास्तव में, जो व्यक्ति परलोक को नकारने का प्रयास करता है, उसे पहले पूरी दुनिया को उसकी सभी वास्तविकताओं के साथ नकारना चाहिए। अन्यथा, अपनी सभी वास्तविकताओं के साथ, दुनिया एक लाख आवाज़ों के साथ उनका खंडन करेगी, यह साबित करते हुए कि वे एक लाख बार झूठे हैं। दसवाँ वचन (शब्दों में शामिल) कुछ प्रमाणों के साथ साबित करता है कि परलोक का अस्तित्व इस दुनिया के अस्तित्व की तरह ही निश्चित और निर्विवाद है।

पांचवां प्रमाण:
वह दिव्य नाम जो सर्वज्ञ है

अपने रब के मार्ग की ओर बुद्धि से बुलाओ (16:125)।

उपर्युक्त श्लोक के अर्थ का एक पहलू और दिव्य नाम सर्वज्ञ का एक प्रकटीकरण, जो उन दिव्य नामों में से एक है जिनकी सर्वव्यापी अभिव्यक्तियाँ हैं या सर्वशक्तिमान ईश्वर की छह ज्योतियों में से एक है।

पवित्र रमजान महीने में ईश्वर का सर्वव्यापक नाम मेरे सामने प्रकट हुआ।

इसे इंगित करने के लिए निम्नलिखित पांच बिंदु जल्दबाजी में लिखे गए हैं।

पहला बिंदु

जैसा कि दसवें वचन में बताया गया है, सर्वज्ञ ईश्वरीय नाम की सर्वव्यापी अभिव्यक्ति ने ब्रह्माण्ड को एक ऐसी पुस्तक बना दिया है जिसके प्रत्येक पृष्ठ पर सैकड़ों पुस्तकें लिखी गई हैं, तथा इसकी प्रत्येक पंक्ति में सैकड़ों पृष्ठ समाहित हैं, तथा इसके प्रत्येक शब्द में सैकड़ों पंक्तियाँ हैं, तथा इसके प्रत्येक अक्षर में सैकड़ों शब्द हैं, तथा प्रत्येक बिन्दु पर पुस्तक की एक संक्षिप्त अनुक्रमणिका पाई जाती है। पुस्तक के पृष्ठ और पंक्तियाँ, बिन्दुओं तक, सैकड़ों मामलों में इसके रचयिता और लेखक को इतनी स्पष्टता से प्रदर्शित करती हैं कि ब्रह्माण्ड की उस पुस्तक का अवलोकन उसके रचयिता के अस्तित्व और एकता को उस सीमा तक स्थापित करता है जो पुस्तक के स्वयं के अस्तित्व के प्रमाण से सैकड़ों गुना अधिक है। क्योंकि यदि एक अक्षर अपने अस्तित्व को एक अक्षर की सीमा तक प्रदर्शित करता है, तो वही अक्षर अपने रचयिता को एक पंक्ति की सीमा तक प्रदर्शित करता है।

इस मैक्रो-बुक का एक पन्ना धरती का चेहरा है। जितनी किताबें हैं, उतनी ही पौधे और पशु प्रजातियाँ इस पन्ने पर वसंत ऋतु में एक के अंदर एक लिखी हुई देखी जा सकती हैं, एक साथ, एक ही समय में, बिना किसी त्रुटि के, और सबसे उत्तम रूप में।

पृष्ठ की एक पंक्ति एक बगीचा है। हम अपनी आँखों से देखते हैं कि इस पृष्ठ पर बगीचे में फूलों, पेड़ों और जानवरों की संख्या के लिए अच्छी तरह से रचित स्तुति एक साथ लिखी गई है, एक दूसरे के भीतर और बिना किसी

गलती।

इस पंक्ति का एक शब्द है एक पेड़ जो खिल गया है और अपने पत्ते फैलाकर फल देने लगा है। इस शब्द में अर्थपूर्ण अंश शामिल हैं जो अपने व्यवस्थित, सुसंतुलित, सुशोभित पत्तों, फूलों और फलों की संख्या के अनुसार सर्वज्ञ महामहिम की प्रशंसा और स्तुति करते हैं। ऐसा लगता है मानो, अन्य सभी पेड़ों की तरह, यह पेड़ भी एक अच्छी तरह से रचित स्तुति है, जो अपने लेखक की प्रशंसा गा रहा है।

यह भी ऐसा है मानो सर्वशक्तिमान परमेश्वर हजारों आँखों से अपने अद्भुत, पूजनीय कार्यों को देखना चाहते हैं, तथा उन्हें पृथ्वी की प्रदर्शनी में प्रदर्शित करना चाहते हैं।

और ऐसा लगता है जैसे उस शाश्वत सम्राट द्वारा वृक्ष को दिए गए आभूषणों से सुसज्जित उपहार, सजावट और वर्दी को अविश्वसनीय रूप से अलंकृत, सुव्यवस्थित, और अर्थपूर्ण रूपों में बनाया गया है।

ताकि वे वसंत ऋतु में, वृक्ष के विशेष उत्सव और परेड में उसके सामने प्रस्तुत किए जा सकें, ताकि इनमें से प्रत्येक उपहार, सजावट और वर्दी - फूल, पत्ते और फल - कई तरीकों से और कई प्रमाणों के साथ, एक के भीतर एक, लेखक के अस्तित्व और नामों की गवाही दें।

उदाहरण के लिए, प्रत्येक फूल या फल एक परिपूर्ण व्यवस्था और संतुलन प्रदर्शित करता है। संतुलन को निरंतर और हमेशा नए सिरे से व्यवस्थित करने के कार्य के माध्यम से बनाए रखा जाता है; व्यवस्थित करने का कार्य परिपूर्ण कला और सजावट का अनुसरण करता है, और यह कला और सजावट असाधारण सुगंध और उद्देश्यपूर्ण स्वाद के साथ संयुक्त होती है। इस प्रकार, प्रत्येक फूल पेड़ पर फूलों की संख्या के लिए महामहिम के सर्वज्ञ एक को इंगित करता है।

वृक्ष, जो स्वयं एक शब्द है, एक बीज से उगता है, जो एक अक्षर है।
यह अक्षर एक छोटा-सा सन्दूक है, जिसमें सम्पूर्ण वृक्ष की भावी विषय-वस्तु और कार्यक्रम समाहित है। इसी प्रकार आगे भी यही कहा जा सकता है कि सर्वज्ञ नाम का प्रकटीकरण न केवल ब्रह्माण्ड की पुस्तक के प्रत्येक पृष्ठ को बनाता है, बल्कि वह उसकी रेखाओं, शब्दों, अक्षरों और बिन्दुओं को भी चमत्कार के रूप में निर्मित करता है; इस प्रकार यदि सभी कारण - सजीव या निर्जीव - एकत्र भी हो जाएं, तो भी वे एक बिन्दु के समान नहीं बन सकते, न ही उससे प्रतिस्पर्धा करने का साहस कर सकते हैं।

चूँकि इस ब्रह्मांड के शक्तिशाली कुरान के प्रत्येक सृजनात्मक चिह्न अपने अंकों और अक्षरों की संख्या के अनुसार चमत्कार प्रदर्शित करते हैं, तो निश्चित रूप से, उद्देश्यहीन संयोग, अंध शक्ति, लक्ष्यहीन, अराजक, अचेतन प्रकृति किसी भी तरह से उस बुद्धिमान, अंतर्दृष्टिपूर्ण और विशेष संतुलन या सबसे संवेदनशील व्यवस्था में हस्तक्षेप नहीं कर सकती। यदि वे हस्तक्षेप करने में सक्षम होते, तो निश्चित रूप से भ्रम के कुछ निशान दिखाई देते। हालाँकि, कहीं भी अव्यवस्था का कोई निशान नहीं देखा जाना चाहिए।

दूसरा बिन्दु

इसमें दो बातें शामिल हैं।

पहला मामला: जैसा कि दसवें वचन में बताया गया है, यह "स्वाभाविक" और "अपरिहार्य" है कि एक असीम रूप से परिपूर्ण सौंदर्य और असीम रूप से सुंदर पूर्णता स्वयं को देखने और प्रकट करने की प्रवृत्ति रखती है। यह इस बुनियादी सार्वभौमिक नियम या प्रवृत्ति के कारण है कि ब्रह्मांड की शक्तिशाली पुस्तक का शाश्वत लेखक अपनी कृपा और पूर्णता के साथ खुद को ज्ञात करता है, और ब्रह्मांड के माध्यम से, इसके सभी पृष्ठों, पंक्तियों और यहां तक कि अक्षरों और पूर्ण विरामों के माध्यम से खुद को प्यार करता है।

अतः हे असावधान मानव! जबकि महात्म्य और कृपा का स्वामी परमेश्वर अपने प्रत्येक प्राणी के द्वारा तुम्हें अपने बारे में ज्ञात कराना चाहता है और तुमसे प्रेम करना चाहता है, ऐसे उज्ज्वल और अनंत तरीकों से, यदि तुम उसके बदले में उसे विश्वास से नहीं पहचानते या अपनी पूजा से उसे प्रेम करने योग्य नहीं बनाते, तो तुम्हें जान लेना चाहिए कि यह कितना अथाह, जटिल अज्ञान है और इससे कितनी हानि होगी; अतः होश में आओ!

दूसरा मामला: ब्रह्मांड के सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ निर्माता के प्रभुत्व में साझेदारी के लिए कोई जगह नहीं है। क्योंकि, हर चीज में एक असीम रूप से परिपूर्ण व्यवस्था कायम है, इसलिए इसमें साझेदारों को शामिल नहीं किया जा सकता। क्योंकि, अगर एक मामले में कई हाथ हस्तक्षेप करते हैं, तो वे इसे भ्रमित कर देंगे। अगर किसी देश में दो राजा हों, किसी शहर में दो राज्यपाल हों या किसी गांव में दो मुखिया हों, तो देश, शहर या गांव के सभी मामलों में अव्यवस्था का बोलबाला रहेगा। इसके अलावा, यह तथ्य कि सबसे छोटा अधिकारी भी अपने कर्तव्यों में दूसरों के हस्तक्षेप को स्वीकार नहीं करता है, हमें दिखाता है कि सबसे आवश्यक विशेषता यह है कि

प्रभुत्व और संप्रभुता का अर्थ है स्वतंत्रता। इसका मतलब है कि व्यवस्था के लिए एकता की आवश्यकता होती है, और संप्रभुता के लिए स्वतंत्रता की आवश्यकता होती है।

यदि सहायता की आवश्यकता वाले शक्तिहीन मनुष्यों पर प्रकट संप्रभुता की ऐसी अस्थायी छाया हस्तक्षेप को अस्वीकार करती है, तो निश्चित रूप से संपूर्ण ब्रह्मांड पर आधिपत्य की डिग्री पर एक पूर्ण शक्तिशाली द्वारा प्राप्त पूर्ण संप्रभुता निश्चित रूप से अपनी पूरी शक्ति के साथ हस्तक्षेप को अस्वीकार करेगी। यदि सबसे छोटा हस्तक्षेप भी हुआ, तो व्यवस्था बिगड़ जाएगी।

लेकिन ब्रह्माण्ड इस तरह से बनाया गया है कि एक बीज के निर्माण के लिए उतनी ही शक्ति की आवश्यकता होती है जितनी कि पूरे वृक्ष के निर्माण के लिए। और एक वृक्ष के निर्माण के लिए उतनी ही शक्ति की आवश्यकता होती है जितनी कि पूरे ब्रह्माण्ड के निर्माण के लिए। और यदि कोई ऐसा भागीदार होता जो ब्रह्माण्ड में हस्तक्षेप करता, तो उसे सबसे छोटे बीज के अस्तित्व में भाग लेना पड़ता। क्योंकि बीज ब्रह्माण्ड का एक नमूना है। इसलिए, दो अलग-अलग प्रभुताएँ, जिनके लिए इस विशाल ब्रह्माण्ड में थोड़ी भी जगह नहीं है, उन्हें एक बीज में या यहाँ तक कि एक छोटे कण में भी अपने लिए जगह ढूँढनी होगी। यह सबसे अकल्पनीय और अर्थहीन असंभवता और मिथ्या धारणा है। अविश्वास और ईश्वर के साथ भागीदार बनाने का अर्थ है उस परम शक्तिशाली को शक्तिहीन मानना, जो पूरे ब्रह्माण्ड को उसकी सभी अवस्थाओं और परिस्थितियों में, अपने न्याय और अपनी बुद्धि के संतुलन में, यहाँ तक कि एक बीज के निर्माण तक भी धारण और बनाए रखता है। इससे जान लीजिए कि यह सत्य के प्रति कितना असीम विरोध, (कितनी और अक्षम्य) भूल, और (कितनी बड़ी) बुराई है।

राक्षसी) झूठ अविश्वास और ईश्वर के साथ भागीदार बनाना है, और ईश्वरीय एकता और उसमें विश्वास कितना असीम रूप से मिश्रित सत्य और वास्तविकता है। इसे जानें और कहें, "विश्वास के लिए ईश्वर की सभी प्रशंसा और धन्यवाद!"

तीसरा बिन्दु

अपने नाम के माध्यम से, सर्वशक्तिमान निर्माता ने इस दुनिया में हजारों सुव्यवस्थित दुनियाओं को शामिल किया है। उन दुनियाओं के बीच, उसने मानवता को एक केंद्र और धुरी के रूप में बनाया है जिसमें उसकी बुद्धि के उदाहरण और ब्रह्मांड के अस्तित्व के पीछे के उद्देश्य केंद्रित हैं।

बुद्धि और उद्देश्यों के इन उदाहरणों में सबसे महत्वपूर्ण मानवता से संबंधित हैं; उसने प्रावधान को मानवीय क्षेत्र का केन्द्र बिन्दु बनाया है।

मानव जगत में जिन उद्देश्यों का पालन किया जाता है और ज्ञान के उदाहरण हैं, उनमें से अधिकांश प्रावधान से संबंधित हैं और इसके माध्यम से प्रकट होते हैं। मानवता में चेतना और आनंद प्रावधान एक शानदार तरीके से सर्वज्ञ नाम की अभिव्यक्ति को प्रदर्शित करता है। और मानव चेतना के माध्यम से आविष्कार किए गए सैकड़ों विज्ञानों में से प्रत्येक अस्तित्व के एक पहलू में सर्वज्ञ नाम की एक अभिव्यक्ति का वर्णन करता है।

उदाहरण के लिए, अगर चिकित्सा विज्ञान से पूछा जाए, “ब्रह्मांड क्या है?” तो वह निश्चित रूप से उत्तर देगा: “यह एक असाधारण रूप से व्यवस्थित और परिपूर्ण विशाल फार्मेसी है। सभी उपचार सबसे अच्छे और सबसे उचित तरीके से इसमें तैयार और संग्रहीत किए जाते हैं।”

और यदि रसायन विज्ञान से पूछा जाए कि, "पृथ्वी क्या है?" तो
जवाब होगा: "यह एक उत्तम, असाधारण रूप से व्यवस्थित दवा की दुकान है।"

और इंजीनियरिंग का विज्ञान जवाब देगा: "यह एक उत्तम कारखाना है, इसमें कोई दोष नहीं है।"

और कृषि विज्ञान उत्तर देगा: "यह एक असीम उत्पादक, सुव्यवस्थित क्षेत्र और उद्यान है जो समय पर सभी प्रकार की फसलें पैदा करता है।"

व्यापार का विज्ञान उत्तर देगा: "यह एक अत्यंत सुव्यवस्थित प्रणाली है।"
प्रदर्शनी, व्यवस्थित बाज़ार और सबसे कलात्मक सामानों से भरी दुकान।”

अर्थशास्त्र का विज्ञान उत्तर देगा: “यह एक अत्यंत सुव्यवस्थित गोदाम है जिसमें हर प्रकार का सामान मौजूद है।”

आहार विज्ञान का उत्तर होगा: "यह भगवान द्वारा निर्मित और तैयार किया गया रसोईघर है तथा सर्वदयालु द्वारा बनाया और भरा गया एक कड़ाहा है जिसमें लाखों प्रकार के सबसे स्वादिष्ट भोजन एक साथ सबसे व्यवस्थित ढंग से पकाए जाते हैं।"

सैन्य मामलों का विज्ञान उत्तर देगा: "पृथ्वी एक सैन्य शिविर है। यद्यपि हर वसंत में उस सेना में सैकड़ों हज़ारों अलग-अलग राष्ट्र नए हथियारों से लैस होकर धरती पर अपने तंबू गाड़ते हैं, उन्हें उनके राशन, वर्दी, हथियार, प्रशिक्षण और छुट्टी दी जाती है, जो प्रत्येक राष्ट्र के लिए अलग-अलग और विशेष होती है, एकदम सही क्रम में, बिना किसी भ्रम के और किसी को भी भुलाए बिना, एक ही सेनापति के आदेश, शक्ति और करुणा के माध्यम से, उसके खजाने से; वे सभी सबसे नियमित तरीके से प्रशासित होते हैं।"

और यदि विद्युत विज्ञान से पूछा जाए कि यह जगत क्या है? तो वह अवश्य उत्तर देगा कि इस ब्रह्माण्ड के भव्य भवन की छत पर असंख्य, असाधारण रूप से सुसज्जित तथा व्यवस्थित विद्युत दीप लगे हुए हैं। उनकी रचना और व्यवस्था में ऐसा असाधारण क्रम और संतुलन है कि यद्यपि ये सभी दिव्य दीप, मुख्यतः सूर्य, जो पृथ्वी से हजार गुना बड़ा है, निरंतर जलते रहते हैं, फिर भी वे अपना संतुलन नहीं बिगाड़ते, न ही फटते या आग नहीं लगाते। उनका व्यय असीमित है, तो उनकी आय या ईंधन कहाँ से आता है? वे अपने स्रोत का उपभोग क्यों नहीं करते? उनके जलने में जो संतुलन है, वह क्यों नष्ट नहीं होता? यदि नियमित रूप से उसकी देखभाल न की जाए तो एक छोटा-सा दीप बुझ जाता है। उस सर्वज्ञ महामहिम की बुद्धि और शक्ति पर विचार करो, जो सूर्य को, जिसके बारे में खगोलशास्त्र हमें बताता है कि वह पृथ्वी से लाखों गुना बड़ा है और करोड़ों वर्ष पुराना है, बिना बुझे निरंतर जलाता है,13 और कहता है, "सर्व-महिमावान ईश्वर है!" सूर्य की आयु के सेकंडों की संख्या से कहो, "भगवान क्या कमाल करते हैं! जो कुछ भी और जिस तरह से वे चाहते हैं! भगवान इसे कितनी अच्छी तरह से करते हैं, और वे कितने धन्य और सर्वोच्च हैं! उनके अलावा कोई देवता नहीं है!" और सोचो: ये स्वर्गीय दीपक एक अद्भुत क्रम में हैं, और उन्हें सबसे बड़ी सावधानी से रखा जाता है। ऐसा लगता है जैसे इन विशाल, असंख्य अग्नि पिंडों का बॉयलर, ये प्रकाश फैलाने वाले दीपक, एक नर्क है जिसकी गर्मी कभी समाप्त नहीं होती; यह उन्हें प्रकाशहीन गर्मी प्रदान करता है। जबकि उन बिजली के लैंपों की मशीनरी और केंद्रीय कारखाना एक शाश्वत स्वर्ग है; यह उन्हें प्रकाश प्रदान करता है;

---

१३ आइए हम इस बात का अंदाजा लगाएं कि सूर्य के चूल्हे या दीपक के लिए कितना ईंधन आवश्यक होगा, जो दुनिया के महल को गर्म और रोशन करता है। खगोल विज्ञान के अनुसार, इसे हर दिन जलाने के लिए दस लाख पृथ्वी और हजारों महासागरों के तेल के बराबर लकड़ियों की आवश्यकता होगी। अब सोचें और कहें, "ईश्वर सर्व-महिमावान है! ईश्वर क्या चमत्कार चाहता है! जो कुछ भी और जैसे भी वह चाहता है! ईश्वर इसे कितनी अच्छी तरह से करता है, और वह कितना धन्य और सर्वोच्च है! महामहिम, बुद्धि और शक्ति के सामने सूर्य के कणों की संख्या के लिए, जो इसे निरंतर प्रकाश देता है।

और सर्वज्ञ नाम की व्यापकतम अभिव्यक्ति के माध्यम से वे सुव्यवस्थित रूप से जलते रहते हैं।"

और इसी तरह। जैसा कि इस तरह के सैकड़ों विज्ञान निश्चित रूप से गवाही देते हैं, ब्रह्मांड को ज्ञान और उपयोगिता के असंख्य उदाहरणों और एक दोषरहित, परिपूर्ण व्यवस्था के भीतर उद्देश्यों से सजाया गया है। और अपनी सर्वव्यापी बुद्धि के माध्यम से, वह व्यवस्था और ज्ञान के उन्हीं उदाहरणों का अनुसरण करता है जैसा कि उसने पूरे ब्रह्मांड के लिए बीजों और सबसे छोटे जीवित प्राणियों के लिए छोटे-छोटे उपायों में किया है। यह स्पष्ट है कि कुछ लक्ष्यों, उद्देश्यों, ज्ञान के उदाहरणों या लाभों को प्राप्त करने में एक उद्देश्यपूर्ण विकल्प या इच्छा और इरादा होता है। इसलिए, ये इच्छित उद्देश्य, ज्ञान के उदाहरण और आशीर्वाद कभी भी अचेतन कारणों या प्रकृति का काम नहीं हो सकते हैं, जिनमें इच्छा, विकल्प और उद्देश्य का अभाव होता है; न ही वे उनमें हस्तक्षेप कर सकते हैं।

परिणामस्वरूप, यह वर्णन नहीं किया जा सकता कि यह कितना हास्यास्पद अज्ञान है कि उस सर्वज्ञ निर्माता को न पहचानना या नकारना कितना मूर्खतापूर्ण है, जो अपनी इच्छानुसार सब कुछ करता है, और जिसकी आवश्यकता ब्रह्मांड को है और जो अपने सभी प्राणियों में देखी जाने वाली व्यवस्था और बुद्धि के अनंत उदाहरणों के साथ प्रदर्शित करता है। वास्तव में, यदि कोई ऐसी चीज है जिसे हम दुनिया में सबसे चौंकाने वाली चीज कह सकते हैं, तो वह है ऐसा इनकार। क्योंकि ब्रह्मांड के सभी प्राणियों में सबसे उत्तम व्यवस्था और बुद्धि के अनंत उदाहरण उसके अस्तित्व और एकता की गवाही देते हैं, यहां तक कि अज्ञानता और अंधेपन में सबसे अनंत लोग भी समझते हैं कि उसे न देखना या न पहचानना कैसा अंधापन और अज्ञान है। मैं यह भी कह सकता हूं कि अविश्वास के लोगों में, सोफिस्ट, जिन्हें ब्रह्मांड के अस्तित्व को नकारने के कारण मूर्ख माना जाता है, सबसे बुद्धिमान हैं। क्योंकि जब उन्होंने देखा कि ब्रह्मांड के निर्माता, ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास किए बिना ब्रह्मांड के अस्तित्व की व्याख्या करना संभव नहीं था, तो उन्होंने ब्रह्मांड के अस्तित्व को नकार दिया। उन्होंने खुद को भी नकार दिया। यह दावा करते हुए कि, "कुछ भी अस्तित्व में नहीं है," उन्होंने अपनी बुद्धि का त्याग कर दिया, और खुद को अन्य इनकार करने वालों की असीमित तर्कहीनता से बचा लिया - जो तर्कवाद की आड़ में थी; एक अर्थ में वे तर्कसंगतता के करीब पहुँच गए।

चौथा बिंदु

जैसा कि दसवें वचन में बताया गया है, कोई भी चेतना संपन्न व्यक्ति यह स्वीकार नहीं कर सकता कि एक बुद्धिमान कुशल निर्माता अपने द्वारा बनाए गए महल के प्रत्येक पत्थर में बुद्धिमत्ता के सैकड़ों उदाहरणों का ध्यानपूर्वक अनुसरण करता है, लेकिन फिर भी वह महल का निर्माण करने में विफल रहता है।

इक्का की छत को गिराना, उसे बर्बाद होने देना और इस तरह ज्ञान के सभी असंख्य उद्देश्यों और उदाहरणों को खोना। इसी तरह, एक असाधारण रूप से बुद्धिमान व्यक्ति के लिए यह संभव नहीं है कि वह एक छोटे से बीज में सैकड़ों लाभ और उद्देश्यों की तलाश करे और फिर उसमें से एक फल प्राप्त करके पेड़ पर किए गए अपने सभी खर्च को बर्बाद होने दे, इस प्रकार एक पूरी तरह से बेकार रास्ता अपनाए जो ज्ञान के विपरीत है।

ठीक उसी तरह, सर्वज्ञ निर्माता ब्रह्मांड के महल में प्रत्येक प्राणी को बुद्धि के सैकड़ों उदाहरण देता है, और उन्हें सैकड़ों कर्तव्यों से सुसज्जित करता है, प्रत्येक वृक्ष को उसके फलों और फूलों की संख्या के अनुसार बुद्धि और कर्तव्यों के उदाहरण देता है। इसलिए, उसका पुनरुत्थान न करने का अर्थ होगा बुद्धि और कर्तव्यों के असंख्य उदाहरणों को निरर्थक, बेकार या निष्फल मानना और उन सभी को बर्बाद होने देना, इस प्रकार उसकी पूर्ण, परिपूर्ण शक्ति को पूर्ण नपुंसकता, उसकी पूर्ण बुद्धि को निरर्थकता और उद्देश्यहीनता, उसकी पूर्ण और परिपूर्ण सुंदरता और कृपा को पूर्ण कुरूपता और उसके न्याय को असीम अन्याय देना। यह उस बुद्धि, दया और न्याय को नकारने के समान होगा जिसे ब्रह्मांड में हर कोई देखता है। यह सबसे विचित्र अकल्पनीयता है, जिसमें अंतहीन भ्रांतियाँ हैं। तो, गुमराह लोगों , अंतर्गत को चाहिए कि वे आकर देखें कि उनकी गुमराही में कितना भयानक अंधकार है और यह कैसा साँपों और बिच्छुओं का बसेरा है, ठीक वैसे ही जैसे उनकी कब्रें होंगी। तो, उन्हें बता देना चाहिए कि आख़िरत पर ईमान एक ऐसा रास्ता है जो जन्नत की तरह सुंदर और प्रकाशमान है, और इस प्रकार ईमान को अपना लें।

पांचवां बिंदु

इसमें दो बातें शामिल हैं।

पहला मामला: अपने नाम सर्वज्ञ की अभिव्यक्ति के रूप में, सर्व-प्रतापी निर्माता हर चीज में सबसे हल्का रास्ता, सबसे छोटा रास्ता, सबसे आसान तरीका, सबसे लाभकारी रूप अपनाता है । इससे पता चलता है कि चीजों की प्रकृति में कोई अपव्यय, व्यर्थता या लाभों की अनुपस्थिति नहीं है। चूँकि अपव्यय ईश्वरीय नाम सर्वज्ञ के विपरीत है, इसलिए इस नाम की अभिव्यक्ति के लिए मितव्ययिता की आवश्यकता होती है, जो इसके मूलभूत सिद्धांतों में से एक है।

हे फिजूलखर्च इंसान! जान लो कि तुम मितव्ययिता का पालन न करके सच्चाई के कितने विपरीत काम करते हो, जो कि ब्रह्मांड में सबसे बुनियादी सिद्धांतों में से एक है! और समझो कि आयत द्वारा सिखाया गया एक आवश्यक, व्यापक सिद्धांत क्या है, खाओ और पियो, लेकिन फिजूलखर्ची मत करो (7: 31)।

दूसरा विषय: 'अत्यंत बुद्धिमान ' का नाम स्पष्ट रूप से सबसे श्रेष्ठ रसूल (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की संदेशवाहक बनने की ओर संकेत करता है और उसे आवश्यक बनाता है।

वास्तव में, चूँकि एक सबसे सार्थक पुस्तक को पढ़ाने के लिए एक शिक्षक की आवश्यकता होती है, और एक उत्कृष्ट सौंदर्य को देखने और खुद को प्रतिबिंबित करने के लिए एक दर्पण की आवश्यकता होती है, और एक सबसे उत्तम कला को इसकी घोषणा करने के लिए एक संदेशवाहक की आवश्यकता होती है, निश्चित रूप से मानव जाति के बीच एक पूर्ण मार्गदर्शक, एक सर्वोच्च शिक्षक होगा, जिसे ब्रह्मांड की शक्तिशाली पुस्तक द्वारा संबोधित किया जाता है, जिसके प्रत्येक अक्षर में सैकड़ों अर्थ और ज्ञान के उदाहरण हैं। यह शिक्षक पुस्तक में निहित पवित्र और सच्ची बुद्धि को दिखाएगा और सिखाएगा, और वह ब्रह्मांड के निर्माण के लिए भगवान के उद्देश्यों के प्रकट होने या यहां तक कि साकार होने का साधन होगा। वह सृष्टिकर्ता की उत्तम कला और उसके नामों की सुंदरता को भी प्रतिबिम्बित करेगा और प्रकट करेगा, जिसे वह विशेष रूप से पूरे ब्रह्मांड में प्रदर्शित करना चाहता है।

और चूँकि सृष्टिकर्ता अपने सभी प्राणियों के माध्यम से खुद को प्यार करना चाहता है और चाहता है कि उसके चेतन प्राणी प्रेम और उपासना के साथ जवाब दें, इसलिए उनमें से कोई एक अवश्य ही उन सभी के नाम पर व्यापक उपासना के साथ जवाब देगा, जो सर्वव्यापी प्रभुता के प्रकटीकरण के सामने होगा। एक शानदार तरीके से प्रकट करने और महिमामंडन के माध्यम से, जो भूमि और समुद्र को परमानंद में ले जाएगा और आकाश और पृथ्वी को गुंजायमान कर देगा, वह इन चेतन प्राणियों की निगाहों को इन सभी प्राणियों के निर्माता की ओर भी मोड़ देगा जो कला से भरे हुए हैं। फिर, वह एक पवित्र निर्देश और शिक्षा के माध्यम से सभी प्राणियों का ध्यान अपनी ओर मोड़ देगा। सबसे महान रसूल, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ने यह सब शक्तिशाली कद के कुरान के माध्यम से किया, साथ ही उस सर्वज्ञ निर्माता (ब्रह्मांड और मानवता के अस्तित्व के लिए) के उद्देश्यों को सबसे अच्छे तरीके से प्रदर्शित किया। उन्होंने अपनी बुद्धि और अपनी कृपा और महिमा के सभी उदाहरणों की अभिव्यक्तियों के लिए सबसे सही तरीके से जवाब दिया। संक्षेप में, ऐसे व्यक्ति का अस्तित्व ब्रह्मांड के लिए उतना ही आवश्यक है, जितना कि सूर्य का अस्तित्व। यह वास्तविकता है, ब्रह्मांड में सभी ज्ञान मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के संदेशवाहक होने के लिए आवश्यक हैं, जितना कि सूर्य को प्रकाश की आवश्यकता है, और प्रकाश को दिन की।

जिस प्रकार अपने सबसे व्यापक प्रकटीकरणों के माध्यम से, सर्वज्ञ नाम अधिकतम सीमा तक मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की संदेशवाहकता को आवश्यक बनाता है, उसी प्रकार, ब्रह्मांड में देखे गए अपने सबसे व्यापक प्रकटीकरणों के माध्यम से, अनेक सर्व-सुंदर तत्व भी अधिकतम सीमा तक मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की संदेशवाहकता को आवश्यक बनाते हैं।

ईश्वर, दयालु, दयावान, सर्वप्रेमी, कृपालु, दान देने वाला, दयावान, कृपालु और प्रभु जैसे नाम, मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के संदेशवाहक होने को अधिकतम सीमा तक और पूर्ण निश्चितता के साथ आवश्यक बनाते हैं।

उदाहरण के लिए, सर्वव्यापी दया जो कि दयालु नाम की अभिव्यक्ति है, सबसे पहले, उस व्यक्ति के माध्यम से प्रकट होती है जिसे "सभी संसारों के लिए दया" के रूप में भेजा गया था, उस पर शांति और आशीर्वाद हो। और सर्वशक्तिमान ईश्वर की इच्छा कि वह खुद को सर्व-प्रेमी नाम की अभिव्यक्ति के रूप में जाने और प्यार करे, सभी संसारों के भगवान के उस प्रिय के माध्यम से फल देती है, और उसमें प्रतिक्रिया पाती है। और सुंदरता के सभी उदाहरण, जो कि सर्व-सुंदर और दयालु नाम की अभिव्यक्ति हैं, यानी दिव्य सार की सुंदरता, दिव्य नामों की सुंदरता, उनकी कला की सुंदरता और प्राणियों की सुंदरता, मुहम्मद के दर्पण में देखी और प्रदर्शित की जाती है, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। और ईश्वरत्व की भव्यता और ईश्वरीयता की अभिव्यक्तियाँ जानी जाती हैं, दिखाई देती हैं और समझी जाती हैं, और प्रभुत्व के प्रभुत्व के अग्रदूत मुहम्मद के संदेशवाहक के माध्यम से पुष्टि की जाती हैं, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। और इसी तरह। इन उदाहरणों की तरह, अधिकतर सुन्दर नाम मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की पैगम्बरी के लिए एक चमकदार प्रमाण हैं।

संक्षेप में: चूंकि ब्रह्मांड मौजूद है और उसे नकारा नहीं जा सकता, तो निश्चित रूप से, ज्ञान, उदारता, दया, सौंदर्य, व्यवस्था, संतुलन और अलंकरण जैसी अवलोकनीय वास्तविकताएं, जो वास्तव में ब्रह्मांड के रंग, अलंकरण, प्रकाश, कला, जीवन और बंधन हैं, को किसी भी तरह से नकारा नहीं जा सकता।

चूँकि इन गुणों और कार्यों का खंडन करना संभव नहीं है, इसलिए निश्चित रूप से वह जो अनिवार्य रूप से विद्यमान है, सर्वज्ञ, सर्व-दयालु, सर्व-दयालु, सर्व-सुंदर और कृपालु, और सर्व-न्याय करने वाला, जो इन गुणों से प्रकट होता है, और जो इन कार्यों का कर्ता है, और इन प्रकाशों का सूर्य और स्रोत है, उसे किसी भी तरह से अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। और निश्चित रूप से मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की रसूलियत, जो सर्वोच्च मार्गदर्शक, सबसे पूर्ण शिक्षक, सबसे श्रेष्ठ संदेशवाहक, अस्तित्व की पहेली को सुलझाने वाला, शाश्वत रूप से सभी के लिए मांगे जाने वाले का दर्पण, सर्व-दयालु का प्रिय, और इन गुणों और कार्यों के प्रकट होने का साधन, वास्तव में उनकी पूर्णता, और यहाँ तक कि उनके साकार होने का भी, किसी भी तरह से अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। वास्तविकता की दुनिया और ब्रह्मांड की वास्तविकता की रोशनी की तरह, उनकी रसूलियत ब्रह्मांड की सबसे तेज रोशनी है।

उन पर, उनके परिवार और साथियों पर, दिन के सेकंडों की संख्या और प्राणियों के कणों तक आशीर्वाद और शांति हो।

तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, अत्यन्त तत्वदर्शी है।

छठा प्रमाण:

परमेश्वर का सर्वव्यापी होना और वह जो मरने का कारण बनता है

भगवान इस विशाल पृथ्वी को तब पुनर्जीवित करते हैं जब यह मृत और सूखी होती है, जिससे अनगिनत प्रजातियों को पुनर्जीवित करके अपनी शक्ति प्रदर्शित होती है, जिनमें से प्रत्येक मानवता के पुनरुत्थान के वादे के समान ही असाधारण है। वह इन प्राणियों के अनंत भेदों और उनके जटिल अंतर्संबंधों के भीतर भिन्नताओं में अपना सर्वव्यापी ज्ञान दिखाता है। साथ ही, वह अपने सेवकों का ध्यान अपने स्वर्गीय आदेशों में उनके पुनरुत्थान का वादा करके अनंत सुख की ओर मोड़ता है, और अपने सभी प्राणियों को एक दूसरे की मदद और सहयोग करने और उन्हें अपने आदेश और इच्छा की कक्षा में निर्देशित करके अपने प्रभुत्व की महिमा प्रदर्शित करता है। इसके अलावा, वह हमें सृष्टि के वृक्ष के सबसे व्यापक, सूक्ष्मतम, सबसे योग्य और सबसे मूल्यवान फल के रूप में बनाकर; हमें सीधे संबोधित करके; और सभी चीजों को हमारे अधीन करके हमें जो मूल्य देता है, उसे दर्शाता है। तो, क्या एक सर्वशक्तिमान और दयालु, सर्वज्ञ और बुद्धिमान, जो ये सब करता है, पुनरुत्थान नहीं ला सकता (या करने में असमर्थ)? क्या वह अपना सर्वोच्च न्यायालय स्थापित नहीं कर सकता और स्वर्ग और नर्क नहीं बना सकता? ऐसे विचार अकल्पनीय हैं.

वास्तव में, इस दुनिया के मामलों का सर्वशक्तिमान निपटानकर्ता लगातार इस सीमित, क्षणभंगुर पृथ्वी पर सर्वोच्च सभा और पुनरुत्थान के मैदान के असंख्य संकेत, उदाहरण और संकेत बनाता है। हर वसंत में हम कुछ ही दिनों में अनगिनत जानवरों और पौधों की प्रजातियों को पुनर्जीवित होते देखते हैं। सभी पेड़ और पौधों की जड़ें, साथ ही कुछ जानवर, पुनर्जीवित हो जाते हैं और ठीक वैसे ही बहाल हो जाते हैं जैसे वे थे। अन्य जानवरों को लगभग समान रूपों में फिर से बनाया जाता है। बीज जो इतने समान दिखते हैं, असाधारण तेज़ी और आसानी से, पूर्ण क्रम और सामंजस्य के साथ पूर्ण शक्ति में लाए जाने के बाद जल्दी से अलग और विभेदित संस्थाओं में विकसित होते हैं। जो ऐसा करता है उसके लिए कुछ भी मुश्किल कैसे हो सकता है? वह छह दिनों में स्वर्ग और पृथ्वी का निर्माण कैसे कर सकता है और फिर भी एक ही विस्फोट से मानवता को पुनर्जीवित करने में असमर्थ है?

मान लीजिए कि एक प्रतिभाशाली लेखक एक घंटे में अनगिनत पुस्तकों को बिना किसी त्रुटि या चूक के फिर से लिख सकता है जिनके अक्षर कागज के एक पन्ने पर उलझे हुए या मिट गए थे।

पूरी तरह से और बेहतरीन शैली में। अगर कोई आपसे कहे कि वह एक मिनट में अपनी याददाश्त से एक किताब फिर से लिख सकता है जो उसने लिखी थी और पानी में गिर गई थी, तो आप कैसे कह सकते हैं कि वह ऐसा नहीं कर सकता? या एक राजा के बारे में सोचें जो अपनी शक्ति दिखाने या चेतावनी देने या मनोरंजन के लिए एक आदेश से पहाड़ों को हटा देता है, अपने राज्य को बदल देता है, और समुद्र को सूखी जमीन में बदल देता है।

फिर आप देखते हैं कि एक बड़ा पत्थर उसके स्वागत समारोह में जाने वाले मेहमानों के रास्ते में बाधा बन रहा है। अगर कोई कहे कि राजा आदेश देकर पत्थर हटा देगा, तो क्या आप कहेंगे कि वह ऐसा नहीं कर सकता? या कल्पना करें कि कोई व्यक्ति एक दिन में एक बड़ी सेना इकट्ठी कर लेता है, और आपसे कहा जाता है कि वह उन्हें आराम करने के लिए विदा करने के बाद तुरही बजाकर उसे फिर से बटालियनों में इकट्ठा कर लेगा, तो क्या आप अविश्वास से जवाब देंगे?
यदि आपने ऐसा किया तो आपकी गलती बहुत बड़ी होगी।

अब, देखें कि कैसे शाश्वत निर्माता हमारी आँखों के सामने सर्दियों के सफ़ेद पन्नों को बंद करता है और वसंत और गर्मियों के हरे पन्नों को खोलता है। शक्ति और नियति की कलम से, वह पृथ्वी के पृष्ठ पर अनंत प्रजातियों को सबसे सुंदर शैली में अंकित करता है। वे सभी आपस में मिले हुए हैं लेकिन वह उन्हें बिना किसी भ्रम और त्रुटि के अंकित करता है, प्रत्येक को उसका विशिष्ट रूप देता है। एक को अंकित करने से दूसरे के अंकित होने में बाधा नहीं होती। क्या यह पूछना उचित है कि सर्वज्ञ और सर्वरक्षक, जो एक बड़े वृक्ष के अस्तित्व को एक बिंदु के आकार के बीज में समेट देता है, वह मरने वालों की आत्माओं को कैसे सुरक्षित रखता है; कैसे सर्वशक्तिमान, जो पृथ्वी को गोफन में कंकड़ की तरह घुमाता है, अपने मेहमानों के परलोक की यात्रा के मार्ग से पृथ्वी को हटा देगा?

क्या उस सर्वशक्तिमान परमेश्वर के विषय में यह पूछना उचित है कि, जो समस्त जीवों के परमाणुओं को ' हो!' की आज्ञा से पूर्ण व्यवस्थितता के साथ उनके शरीरों में स्थापित करता है, तथा इस प्रकार अनुशासित, सुव्यवस्थित सेनाओं का निर्माण करता है - क्या यह पूछना उचित है कि वह इन परमाणुओं और शारीरिक अंगों को, जो पहले से ही एक दूसरे को पूर्णतः संगठित शरीरों के रूप में जानते हैं, बिखर जाने के बाद पुनः कैसे एकत्रित कर सकता है?

आप अपनी आँखों से ईश्वर द्वारा पुनरुत्थान के संकेतों, समानताओं और सादृश्यों के रूप में बनाए गए असंख्य डिज़ाइनों को देखते हैं। वह उन्हें हर युग में, दिन और रात के परिवर्तन में, यहाँ तक कि बादलों के आने और जाने में भी प्रदर्शित करता है। यदि आप अपने आप को 1,000 साल पहले की कल्पना करते हैं और फिर अतीत और भविष्य की तुलना करते हैं, तो आपको पुनरुत्थान के उतने ही उदाहरण और सादृश्य दिखाई देंगे जितने सदियाँ और दिन बीते हैं। यदि, इसके बाद भी, आप शारीरिक पुनरुत्थान को असंभव और तर्क के लिए अस्वीकार्य मानते हैं, तो आपकी तर्क शक्ति में कुछ गंभीर गड़बड़ी है।

इस सत्य के विषय में सर्वोच्च आदेश कहता है:

> अल्लाह की दयालुता के चिह्नों को देखो, कि वह किस प्रकार धरती को उसके मरने के पश्चात जीवित करता है। वही है जो मुर्दों को जीवित करेगा। वह हर चीज़ पर पूर्ण सामर्थ्य रखता है। (30:50)

संक्षेप में, ऐसा कुछ भी नहीं है जो पुनरुत्थान को असंभव बनाता है, और इसमें बहुत कुछ अनिवार्य है।

वह महिमामय और शाश्वत प्रभुता, सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापी प्रभुता, जो इस विशाल और अद्भुत पृथ्वी को जीवन और मृत्यु देता है, मानो यह एक ही जीव हो; जिसने इसे मानवता और पशुओं के लिए एक सुखद पालना और सुंदर शिल्प बनाया है; जिसने सूर्य को एक दीपक बनाया है जो उसे प्रकाश और गर्मी दोनों देता है; जिसने ग्रहों को अपने स्वर्गदूतों के लिए परिवहन बनाया है - ऐसा प्रभुत्व और संप्रभुता एक परिवर्तनशील, क्षणभंगुर, अस्थिर, तुच्छ और अपूर्ण दुनिया तक सीमित नहीं हो सकती। इस प्रकार एक और क्षेत्र है, जो उसके योग्य है, अपरिवर्तनीय, स्थायी, स्थिर, महान और परिपूर्ण है। वह हमें इस क्षेत्र के लिए काम करने के लिए प्रेरित करता है और हमें इसके लिए बुलाता है। जो लोग बाहरी दिखावे से सत्य तक पहुँच गए हैं, जो दिव्य उपस्थिति के निकटता से प्रतिष्ठित हो गए हैं, सभी आध्यात्मिक "ध्रुव" प्रकाश से भरे दिलों से संपन्न हैं, और जिनके पास प्रबुद्ध दिमाग हैं, वे गवाही देते हैं कि वह हमें उस दूसरे राज्य में स्थानांतरित कर देगा। वे हमें सिखाते हैं कि उसने हमारे लिए वहाँ एक इनाम और प्रतिफल तैयार कर रखा है, और वह हमें अपने दृढ़ वादे और कड़ी चेतावनियाँ देता है।

वादा तोड़ना बहुत बड़ा अपमान है और इसलिए यह उसकी पवित्रता की महिमा के साथ मेल नहीं खाता। धमकी को पूरा न करना या तो क्षमा या नपुंसकता (अज्ञानता) से उत्पन्न हो सकता है। अविश्वास एक अक्षम्य अपराध है।14 सर्वशक्तिमान सभी नपुंसकता से मुक्त है और उससे कहीं ऊपर है। जो लोग यह सिखाते हैं और इसकी गवाही देते हैं, वे सभी इस मूलभूत बात पर सहमत हैं, भले ही वे विचार और दृष्टिकोण के अलग-अलग रास्तों का अनुसरण करते हों। उनकी गवाही में विद्वान सर्वसम्मति का अधिकार है। उनमें से प्रत्येक मानवता का मार्गदर्शक प्रकाश है, लोगों का प्रिय व्यक्ति और उनकी श्रद्धा का विषय है।

---

14 अविश्वास पूरी सृष्टि का अपमान है क्योंकि यह उसे नीचा दिखाता है, यह आरोप लगाता है कि इसका कोई अर्थ और मूल्य नहीं है। यह ईश्वरीय नामों का भी अनादर करता है क्योंकि यह प्राणियों के दर्पणों में उनके प्रकटीकरण को नकारता है। यह सभी प्राणियों द्वारा ईश्वर की एकता के लिए दी गई गवाही को भी अस्वीकार करता है, और इस तरह उन्हें झूठ देता है। इसलिए, अविश्वास हमारी क्षमताओं को इतना भ्रष्ट कर देता है कि हम सुधार नहीं कर पाते और अच्छे के प्रति ग्रहणशील नहीं रह पाते। यह पूर्ण अन्याय का कार्य भी है, ईश्वर के नामों और सृष्टि के अधिकारों के विरुद्ध एक अपराध है। उन अधिकारों की रक्षा, और एक अविश्वासी की अपूरणीय स्थिति, यह मांग करती है कि अविश्वास अक्षम्य हो। ईश्वरीय घोषणा, ईश्वर के साथ भागीदार बनाना वास्तव में एक बहुत बड़ा गलत काम है (31:13), इसे व्यक्त करती है।

महत्व के कारण, प्रत्येक व्यक्ति इस मामले में विशेषज्ञ और अधिकारी है। किसी भी कला या विज्ञान में, दो विशेषज्ञों को हज़ारों गैर-विशेषज्ञों के मुक़ाबले प्राथमिकता दी जाती है, और एक रिपोर्ट के प्रसारण में दो सकारात्मक पुष्टिकर्ताओं को हज़ारों नकारात्मक लोगों के मुक़ाबले प्राथमिकता दी जाती है। उदाहरण के लिए, दो सक्षम व्यक्तियों की गवाही कि उन्होंने रमज़ान की शुरुआत को चिह्नित करने वाले अर्धचंद्र को देखा है, हज़ारों इनकार करने वालों के इनकार को नकार देता है।

संक्षेप में, इस दुनिया में इससे ज़्यादा सच्ची रिपोर्ट, मज़बूत दावा या ज़्यादा स्पष्ट सत्य नहीं है। दुनिया एक खेत है, और पुनरुत्थान एक खलिहान है, अनाज की कटाई का मैदान है जिसे स्वर्ग या नर्क में संग्रहीत किया जाएगा।

सातवां प्रमाण:
स्वर्ग और पृथ्वी की परमेश्वर के प्रति गवाही

निस्संदेह आकाशों और धरती में ईमानवालों के लिए निशानियाँ हैं। (45:3)

निम्नलिखित बिंदुओं पर विचार करें:

• वसंत और गर्मियों के दौरान हम चीजों के निर्माण में असीम उदारता और पूर्ण उदारता देखते हैं, जिससे अनंत व्यवस्था और सामंजस्य के भीतर अव्यवस्था और भ्रम पैदा होने की उम्मीद की जा सकती है। पृथ्वी के चेहरे को सजाने वाले सभी पौधों को देखें।

• चीजों को बनाने में पूर्ण गति, जो सामान्य रूप से असंतुलन और शिष्टाचार की हानि का परिणाम होती है, एक पूर्ण संतुलन और अनुपात के भीतर देखी जाती है। पृथ्वी के चेहरे को सजाने वाले सभी फलों को देखें।

• वह पूर्ण बहुलता और विविधता, जो सामान्य रूप से तुच्छता और यहां तक कि कुरूपता भी लाती है, कला की संपूर्ण सुंदरता में स्पष्ट है। धरती के चेहरे पर चमकते सभी फूलों को देखें। • चीजों को बनाने में पूर्ण सहजता, जो सामान्य रूप से सादगी और कला की कमी का कारण बनती है, अनंत डिग्री की कला, कौशल

और ध्यान के भीतर देखी जाती है। सभी बीजों को देखें, जो सभी पौधों और पेड़ों के छोटे कंटेनर और प्रोग्राम की तरह हैं, और उनके जीवन-इतिहास को समाहित करने वाले छोटे केस की तरह भी हैं।

• महान दूरियां, जिनके लिए सामान्यतः अंतर और विविधता की आवश्यकता होती है, पूर्णतः अनुरूपता और अनुरूपता के अंतर्गत आती हैं।
दुनिया भर में बोई जाने वाली अनाज की सभी किस्मों को देखें।

• पूर्ण अंतर्संबंध, जो सामान्य रूप से भ्रम और गड़बड़ी का कारण बनता है, पूर्ण विभेदन और पृथक्करण के भीतर देखा जाता है। विचार करें कि कैसे बीज, जमीन में डाले गए सभी एक साथ मिश्रित होते हैं और अपने पदार्थ के संबंध में एक दूसरे से मिलते-जुलते हैं, जब वे अंकुरित होने वाले होते हैं तो पूरी तरह से विभेदित होते हैं। देखें कि पेड़ों में प्रवेश करने वाले विभिन्न पदार्थ पत्तियों, फूलों और फलों के लिए पूरी तरह से अलग कैसे होते हैं, और कैसे पेट में प्रवेश करने वाले सभी खाद्य पदार्थ एक साथ मिश्रित होकर शरीर के अंगों और कोशिकाओं के लिए पूरी तरह से अलग हो जाते हैं। इन सब पर विचार करें और पूर्ण ज्ञान के भीतर पूर्ण शक्ति देखें। • अनंत प्रचुरता और प्रचुरता, जो सामान्य रूप से तुच्छता और बेकारपन का कारण बनती है, पृथ्वी के प्राणियों और कला के संबंध में सबसे मूल्यवान और सबसे सार्थक दिखाई देती है।

कला के उन असंख्य आश्चर्यों में से केवल शहतूत की किस्मों पर विचार करो, जो पृथ्वी पर परम दयालु दिव्य शक्ति की मिठाई है, और उत्तम कला के साथ संयुक्त उत्तम दया का , की मेज पर निरीक्षण करो।

जैसे दिन का प्रकाश और प्रकाश सूर्य को दर्शाता है, अनंत प्रचुरता के बावजूद महान मूल्य; अनंत प्रचुरता के भीतर, असीम अंतर्संयोजन के बावजूद अनंत भेद और पृथक्करण; अनंत भेद और पृथक्करण के भीतर, महान दूरियों के बावजूद अनंत अनुरूपता और समानता; अनंत समानता के भीतर, अनंत आसानी और सुविधा के बावजूद निर्माण में अनंत देखभाल और ध्यान; सबसे सुंदर निर्माण के भीतर, पूर्ण गति और द्रुतता के बावजूद अनंत संतुलन, संतुलन और अपव्यय का अभाव; अपव्यय के अत्यंत अभाव के भीतर, अत्यंत प्रचुरता और बहुलता के बावजूद कला की सुंदरता की सर्वोच्च डिग्री; कला की सर्वोच्च डिग्री के भीतर, अत्यंत उदारता के बावजूद पूर्ण व्यवस्था और सामंजस्य - ये सभी एक सर्वशक्तिमान महामहिम, एक सर्वज्ञानी पूर्णता, कृपा और सौंदर्य के एक परम दयालु व्यक्ति और उनकी शक्ति की पूर्णता और उनके प्रभुत्व की कृपा और सुंदरता के आवश्यक अस्तित्व, एकता और एकरूपता के साक्षी हैं। वे इसका अर्थ बताते हैं: उसके नाम अत्यंत सुन्दर हैं (20:8)।

तो, अभागे, जिद्दी और असावधान! तुम इस महान सत्य की व्याख्या कैसे कर सकते हो या इस असीम चमत्कारी और अद्भुत स्थिति की व्याख्या कैसे कर सकते हो? तुम इन असाधारण कलाओं का श्रेय किसको दे सकते हो? इस धरती जितनी चौड़ी खिड़की पर तुम असावधानी का कौन-सा पर्दा डाल सकते हो और फिर उसे बंद कर सकते हो? तुम्हारा मौका और संयोग कहाँ है? तुम्हारी असंयमिता कहाँ है?

क्या आप उस समझदार साथी पर भरोसा करते हैं और जिसे आप "प्रकृति" कहते हैं, जो आपका मित्र है और गुमराही में आपका सहारा है? क्या इन मामलों में संयोग और संयोग का हाथ होना पूरी तरह असंभव नहीं है? क्या प्रकृति को इसके लिए जिम्मेदार ठहराना अकल्पनीय नहीं है

क्या इन चीज़ों को ऑर्डर करने का एक छोटा सा अंश भी संभव है? या क्या निर्जीव, अज्ञानी, अचेतन प्रकृति में प्रत्येक चीज़ के भीतर मशीनें और प्रिंटिंग प्रेस हैं, जो प्रत्येक से बनी हैं, और अलग-अलग चीज़ों की संख्या के बराबर हैं?

आठवां प्रमाण:
एक प्रार्थना

यह ग्रंथ विश्वास के सबसे महत्वपूर्ण मूल सिद्धांतों को निर्णायक रूप से साबित करता है, जैसे कि ईश्वर का अस्तित्व, उसकी एकता और
एकता, उनके आधिपत्य की भव्यता, उनकी विशालता
शक्ति , उसकी दया की व्यापकता, उसकी संप्रभुता की सार्वभौमिकता, उसके ज्ञान की सर्व-समावेशीता और उसकी बुद्धि की सर्वव्यापी प्रकृति। पुनरुत्थान के इसके संकेत, विशेष रूप से अंत में जिन पर जोर दिया गया है, वे भी शक्तिशाली हैं।

इस विश्वास के प्रमाण का प्रत्येक परिचयात्मक अंश इस निष्कर्ष पर पहुँचता है आठ निष्कर्ष, साथ ही उन्हें साबित करने के लिए इस्तेमाल किए गए साक्ष्य।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

आकाशों और धरती को पैदा करने में, रात और दिन के आने-जाने में, समुद्र में चलने वाली नावों में, लोगों को लाभ पहुँचाने वाली नावों में, और पानी में भी, जिसे अल्लाह ने आकाश से बरसाया, फिर उससे धरती को उसके मरने के पश्चात जिलाया और उसमें हर प्रकार के जीव-जन्तु फैला दिए, और हवाओं को चलाने में, और धरती और आकाश के बीच बादलों को वश में करने में, इन सबमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं, जो बुद्धि से काम लें। (2:164)

हे ईश्वर, हे मेरे प्रभु!

मैं ईमान की आँखों से कुरान की शिक्षा और प्रकाश को, ईश्वर के सबसे महान् रसूल - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - की शिक्षा को, तथा उस दिव्य नाम के मार्गदर्शन को देखता हूँ जो सर्वज्ञ है:

आकाश में एक भी हलचल नहीं है लेकिन यह आपके संकेत देता है अस्तित्व अपनी व्यवस्थितता के माध्यम से;

ऐसा कोई भी आकाशीय पिंड नहीं है जो आपके अस्तित्व का संकेत या गवाही न देता हो। प्रभुत्व और एकता को चुपचाप अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए और बिना किसी दृश्य समर्थन के खड़े होकर;

ऐसा एक भी तारा नहीं है जो अपनी सर्वाधिक आनुपातिक संरचना, अपनी सटीक क्रमबद्ध स्थिति, अपने उज्ज्वल मुखमंडल, तथा अन्य सभी तारों से अपनी समानता की छाप के माध्यम से आपकी एकता या आपकी दिव्यता की भव्यता को प्रदर्शित या साक्ष्य न देता हो;

बारह ग्रहों में से एक भी ऐसा नहीं है जो आपके परम आवश्यक अस्तित्व की गवाही न देता हो और अपनी बुद्धिमत्तापूर्ण गति, आपके कानून के अधीनता, अपने व्यवस्थित कर्तव्यों और उनकी परिक्रमा करने वाले उपग्रहों के माध्यम से आपकी दिव्यता के प्रभुत्व को इंगित न करता हो।

वास्तव में, जिस प्रकार प्रत्येक आकाश आपके परम आवश्यक अस्तित्व की गवाही देता है, उसी प्रकार हे आकाश और पृथ्वी के रचयिता, समस्त आकाश, समग्र रूप से, आपके अस्तित्व की परम आवश्यकता की स्पष्ट रूप से गवाही देते हैं। हे आप जो सभी परमाणुओं और उनके द्वारा निर्मित यौगिकों को नियंत्रित करते हैं और जिन्होंने सभी ग्रहों को अपने अधीन कर रखा है, उन्हें उनके उपग्रहों के साथ परिक्रमा करवाते हैं, ये सभी आपकी एकता और एकरूपता की इतनी शक्तिशाली गवाही देते हैं कि आकाश में तारों की संख्या के चमकदार प्रमाण उनकी गवाही की पुष्टि करते हैं।

अपने असाधारण रूप से विशाल पिंडों के साथ, जो आश्चर्यजनक गति से चलते हैं, ये बेदाग आकाश एक व्यवस्थित सेना या कई बिजली के दीपों से प्रकाशित शाही उत्सव जैसा दिखते हैं। वे सबसे स्पष्ट रूप से उस जादू को इंगित करते हैं-जिसने बनाया है-

आपकी प्रभुता की महिमा और आपकी शक्ति की महानता ने सभी चीजों को प्रभावित,
किया; वे आपके प्रभुत्व के असीम विस्तार को इंगित करते हैं, जो स्वर्ग पर हावी है, और आपकी दया, जो सभी जीवित प्राणियों को गले लगाती है। वे अत्यंत निश्चितता के साथ, आपके ज्ञान की सर्वव्यापी प्रकृति की गवाही देते हैं, जो स्वर्गीय प्राणियों के सभी कार्यों और स्थितियों में प्रवेश करती है और उन्हें नियंत्रित करती है, और आपकी बुद्धि की व्यापकता की गवाही देते हैं। यह गवाही और संकेत इतना स्पष्ट है कि ऐसा लगता है जैसे तारे स्वर्ग की गवाही के शब्द और उनके मूर्त चमकदार प्रमाण हों।

जहाँ तक सितारों की बात है, जो आज्ञाकारी सैनिकों, सुव्यवस्थित जहाजों, असाधारण विमानों और आश्चर्यजनक दीपों की तरह हैं, वे आपकी दिव्यता के प्रभुत्व की महिमा को प्रदर्शित करते हैं। जैसा कि हम सूर्य से देख सकते हैं, जो सितारों की सेना में एक सैनिक है, और जो कर्तव्य वह हमारी पृथ्वी और उसके अधीन अन्य ग्रहों के संबंध में निभाता है, कुछ साथी सितारे जो सितारों की सेना में एक सैनिक है, और जो कर्तव्य वह हमारी पृथ्वी और उसके अधीन अन्य ग्रहों के संबंध में निभाता है, वे आपके दिव्यता के प्रभुत्व की महिमा को प्रदर्शित करते हैं।

सूर्य का परलोक की दुनिया से सम्बन्ध है, और वास्तव में वे अनन्त दुनिया के सूर्य हो सकते हैं।

हे अनिवार्यतः विद्यमान, हे एकल, अद्वितीय!

इन अद्भुत सितारों, इन लुभावने सूर्यों और चंद्रमाओं को आपके आदेश, शक्ति, शासन और प्रबंधन के माध्यम से आपके क्षेत्र और आपके स्वर्ग में विभिन्न कर्तव्यों के साथ वशीभूत, आदेशित और सौंपा गया है।

वे सभी आकाशीय पिंड उस एकमात्र रचयिता की महिमा करते हैं, जिसने उन्हें बनाया है, जो उनका प्रशासन करता है, और जो उन्हें घुमाता है; वे उसकी महिमा करते हैं, और अपने स्वभाव की जीभ से कहते हैं, "आप सर्व-महिमावान हैं!", और "ईश्वर सर्व-महान है।" मैं भी उनकी महिमा के माध्यम से आपको सर्व-पवित्र घोषित करता हूँ।

हे सर्वशक्तिमान, जो अपनी प्रबलता के कारण छिपे हुए हैं।
उनकी महानता के कारण वे प्रकट और छिपे हुए हैं!

मैंने कुरान की शिक्षाओं और ईश्वर के सबसे महान् रसूल - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - के निर्देश के माध्यम से यह समझा है कि:

जिस प्रकार आकाश अपने सभी तारों के साथ आपके अस्तित्व और एकता की गवाही देता है, उसी प्रकार वायुमंडल भी अपने बादलों, बिजली, गड़गड़ाहट, हवा और तूफानों के माध्यम से आपके परम आवश्यक अस्तित्व और एकता की गवाही देता है।

बारिश।

वास्तव में, यह केवल आपकी दया और बुद्धि से ही संभव है कि निर्जीव और अचेतन बादल, जीवन के जल के रूप में वर्षा करते हैं, ताकि जीवित प्राणियों को इसकी आवश्यकता हो; इसमें संयोग का कोई महत्व नहीं है।

इसके अलावा, बिजली का सबसे चमकीला और सबसे शक्तिशाली रूप होने के कारण, इसकी प्रकाश देने वाली गुणवत्ता के कारण हमें इससे लाभ उठाने का आग्रह करते हुए, बिजली स्वर्ग में आपकी शक्ति पर प्रकाश डालती है।

इसके अतिरिक्त, वह गड़गड़ाहट, जो वर्षा के आने का शुभ समाचार देती है, विशाल आकाश को बोलने पर मजबूर कर देती है, तथा जिसकी महिमा का गरजना आकाश में गूंजता है, अपनी स्वभाव की जीभ से यह घोषणा करती है कि आप परम पवित्र हैं तथा समस्त सृष्टि के स्वामी होने का प्रमाण देती है।

पुनः, अनेक कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए, जैसे कि जीवों को उनका महत्वपूर्ण पोषण प्रदान करना, उन्हें सांस लेने तथा तरोताजा करने का कार्य करना, वायुमण्डल को कुछ दिव्य प्रयोजनों के लिए एक प्रकार की "मिटाने और पुष्टि करने या लिखने और मिटाने की पट्टिका" में परिवर्तित कर देती है, इस प्रकार आपकी शक्ति की गतिविधियों का संकेत देती है तथा आपके अस्तित्व की गवाही देती है।

इसके अलावा, बादलों से दुहकर आपकी दया के माध्यम से जीवों तक भेजी गई बूंदों के व्यवस्थित शब्दों के माध्यम से, वर्षा, जो जीवों के लिए आपकी दया का मूर्त रूप है, आपकी दया और आपके व्यापक स्नेह की व्यापकता की गवाही देती है।

हे सर्वदा सक्रिय रहने वाले, हे सर्वगुण संपन्न करने वाले, हे सर्वगुण संपन्न करने वाले!

जबकि बादल, बिजली, गरज, हवा और बारिश व्यक्तिगत रूप से आपके अस्तित्व की परम आवश्यकता की गवाही देते हैं, कुल मिलाकर, वे इस तथ्य के माध्यम से आपकी एकता और एकरूपता का एक शक्तिशाली संकेत देते हैं कि, प्रकृति में उनके अंतर के बावजूद, वे मौजूद हैं और एक साथ सद्भाव में काम करते हैं और अपने कार्यों में एक-दूसरे की मदद करते हैं। वे आपके प्रभुत्व की भव्यता की भी गवाही देते हैं, जो विशाल वातावरण को चमत्कारों का प्रदर्शन बनाती है और बार-बार इसे भरती और खाली करती है; और आपकी शक्ति की महानता और व्यापकता के लिए "लिखने और मिटाने" की एक पट्टिका और एक स्पंज थे जिसके माध्यम से आप पृथ्वी के बगीचे को सींचते हैं। वे आपकी दया और प्रभुत्व की अकल्पनीय रूप से विशाल और सर्वव्यापी प्रकृति की भी गवाही देते हैं, जो वातावरण के पर्दे के नीचे सभी प्राणियों को गले लगाती और बनाए रखती है। , जो वायुमंडल का उपयोग इस प्रकार करता है मानो वह

इसके अतिरिक्त, वायु का अनेक बुद्धिमत्तापूर्ण कार्यों में उपयोग तथा बादलों और वर्षा का अनेक लाभों के लिए उपयोग, जिनके लिए सर्वव्यापी ज्ञान की आवश्यकता होती है, यह स्पष्ट कर देता है कि यदि सर्वव्यापी बुद्धि और सर्वव्यापी ज्ञान न होता, तो उनका इस प्रकार उपयोग नहीं किया जा सकता था।

ऐ वह जो चाहता है, करता है!

आपकी शक्ति , जो कि लगातार वातावरण में पुनरुत्थान के नमूने प्रदर्शित करता है, तथा ग्रीष्म ऋतु को शीत ऋतु में बदल देता है, तथा एक नई दुनिया को जन्म देता है, तथा एक अन्य दुनिया को अदृश्य के क्षेत्र में भेज देता है, यह सब एक घंटे के भीतर करता है, तथा यह संकेत देता है कि वह इस दुनिया को परलोक में बदल देगा तथा इसमें अनंत क्रियाशीलता प्रदर्शित करेगा।

हे सर्वशक्तिमान महामहिम!

वायु, बादल, वर्षा, बिजली और वायुमंडल में गड़गड़ाहट आपके आदेश और आपकी शक्ति के माध्यम से आपके क्षेत्र में अधीनस्थ और कर्तव्यपरायण हैं। ये वायुमंडलीय प्राणी, जो स्वभाव में भिन्न हैं, अपने कमांडर और संप्रभु को पवित्र करते हैं, जो उन्हें तत्काल आदेशों का पालन तेजी से करवाते हैं, और वे आपकी दया की प्रशंसा करते हैं।

हे आकाशों और धरती के सर्वशक्तिमान रचयिता!

आपके ज्ञानपूर्ण कुरान की शिक्षा और महानतम रसूल - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - की शिक्षाओं के माध्यम से, मैं निम्नलिखित बातों पर विश्वास करने और समझने में सक्षम हुआ हूँ:

जिस प्रकार आकाश अपने तारों के माध्यम से, तथा वायुमंडल अपने तत्वों के माध्यम से आपके अस्तित्व और एकत्व की परम आवश्यकता की गवाही देता है, उसी प्रकार पृथ्वी भी अपने सभी प्राणियों और परिस्थितियों के माध्यम से, तथा उसमें विद्यमान प्राणियों की संख्या के माध्यम से आपके अस्तित्व और एकत्व की गवाही देती है।

पृथ्वी पर कोई परिवर्तन नहीं होता, न ही इसके पेड़-पौधों और जानवरों में कोई परिवर्तन होता है - चाहे वे सार्वभौमिक हों या विशेष - जैसे कि हर साल नए वस्त्र पहनना, लेकिन वे आपके अस्तित्व और एकता के साक्षी होते हैं।

ऐसा कोई भी प्राणी नहीं है जो आपके अस्तित्व और एकत्व की गवाही न देता हो, क्योंकि उसे दयापूर्वक और उसकी आवश्यकताओं और कमजोरियों के अनुपात में पोषण दिया जाता है, तथा उसे अस्तित्व के लिए आवश्यक वस्तुओं से बुद्धिमानीपूर्वक सुसज्जित किया जाता है।

इसके अलावा, ऐसा कोई भी पौधा या जानवर नहीं है जो हर वसंत में हमारी आंखों के सामने पुनर्जीवित या उत्पन्न होता है, लेकिन यह आपको अपनी उल्लेखनीय कला, इसके उत्कृष्ट घटक भागों, इसकी विशिष्ट विशेषताओं और इसकी संरचना और जीवन में सही क्रम और अनुपात के माध्यम से ज्ञात कराता है।

ये सभी पौधे और जानवर जो आपकी शक्ति के चमत्कार के रूप में पृथ्वी पर फैले हुए हैं, पूर्ण विभेदन और समृद्ध अलंकरण के साथ बनाए गए हैं, और इनमें कोई दोष या खामी नहीं है, ये अंडे या बीज से बने हैं जो एक दूसरे से मिलते जुलते हैं और जो लगभग एक ही पदार्थ से बने हैं। इस प्रकार, उनके सर्वज्ञ निर्माता के अस्तित्व, एकता, बुद्धि और असीम शक्ति के बारे में उनकी गवाही ऐसी है कि यह गवाही सूर्य के अस्तित्व की गवाही देने वाले प्रकाश से भी अधिक शक्तिशाली और चमकदार है।

इसके अलावा, सृष्टि में कोई भी तत्व, जैसे कि हवा, पानी, प्रकाश, अग्नि, या मिट्टी, नहीं है, लेकिन यह आपके अस्तित्व और एकता का साक्ष्य देता है, उन पूर्ण कार्यों को करके जिनके लिए उनकी निर्जीवता के बावजूद चेतना की आवश्यकता होती है, और उनकी सादगी और उनके प्रतीत होने वाले यादृच्छिक वितरण के बावजूद, अदृश्य के खजाने से सभी प्रकार के पूर्ण रूप से विकसित फल और फसलें लाकर।

एक विशाल क्षेत्र पर कब्जा।

हे सर्वशक्तिमान सृजक, हे सर्वज्ञ खोलने वाले, हे सदा कार्य करने वाले सृष्टिकर्ता!

जिस प्रकार पृथ्वी अपने सभी निवासियों के साथ मिलकर अपने निर्माता के पूर्णतः आवश्यक अस्तित्व की गवाही देती है, उसी प्रकार हे एकल और अद्वितीय!
हे सर्वदयालु, हे सर्वकल्याणकारी, हे सर्वदाता, सर्वप्रथम इसके मुख पर लगी मुहर तथा इसके निवासियों के मुख पर लगी मुहर के द्वारा, तथा उनके सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व तथा परस्पर सहायता के द्वारा, भले ही वे व्यापक रूप से फैले हुए हों, तथा आपके नामों तथा कार्यों के द्वारा, जो उन्हें इस प्रकार से संबोधित करते हैं कि आप ही उनके प्रभु हैं, पृथ्वी स्पष्ट रूप से आपकी एकता तथा एकरूपता की गवाही देती है, जो कि पृथ्वी के सभी प्राणियों में व्याप्त है।

उस पर जीव.

साथ ही, यह तथ्य कि पृथ्वी एक सैन्य छावनी, एक प्रदर्शनी, निर्देश और अभ्यास का स्थान है, और यह कि इस वैश्विक सेना का निर्माण करने वाले लाखों पौधे और पशु प्रभागों को उनके लिए आवश्यक सटीक घटक भागों या उपकरणों के साथ सही क्रम में प्रदान किया जाता है, आपके प्रभुत्व की भव्यता को दर्शाता है और दिखाता है कि आपकी शक्ति एक ही समय में सभी को नियंत्रित करती है। इसी तरह, यह तथ्य कि असंख्य जीवित प्राणियों को दयालुता और उदारता से सरल मिट्टी से ठीक सही समय पर उनका पोषण प्रदान किया जाता है, और यह कि वे सभी आपके प्रभु के आदेशों का पूरी तरह से पालन करते हैं, आपकी दया और प्रभुत्व की सर्वव्यापी प्रकृति को दर्शाता है।

इसके अलावा, यह केवल एक सर्वव्यापी ज्ञान और एक सर्व-प्रशासक बुद्धि के कारण ही संभव है कि प्राणियों के अंतहीन काफिले और जीवन और मृत्यु के सभी उदाहरण पृथ्वी पर एक दूसरे के पीछे इतने सही क्रम में चलते रहें, और सभी पौधों, पेड़ों और जानवरों को इतनी पूर्णता और नियमितता के साथ प्रशासित किया जाए। यह स्पष्ट रूप से आपके ज्ञान और बुद्धि की सर्वव्यापी प्रकृति को इंगित करता है।

इसके अलावा, यद्यपि मानवता को असीमित कर्तव्य सौंपे गए हैं, जिसमें पृथ्वी पर अन्य सभी प्राणियों की देखभाल करना भी शामिल है, और यद्यपि उन्हें इतनी विशाल क्षमताएँ और संभावनाएँ प्रदान की गई हैं कि उन्हें पूरा करने के लिए पृथ्वी पर अनंत काल लग सकता है, फिर भी पृथ्वी पर मनुष्य का प्रवास वास्तव में बहुत ही संक्षिप्त है। इसलिए हमें यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि मानवता को दिया गया महत्व, उनके लिए प्रदान किया गया असीमित व्यय, उन्हें सर्व-महिमावान के अभिभाषक के रूप में प्रदान की गई दिव्य प्रभुता की असीम अभिव्यक्तियाँ, और उन पर बरसाई गई दिव्य कृपाओं की अनंत मात्रा - इनमें से कोई भी केवल उनके लिए अभिप्रेत नहीं हो सकती है।

दुनिया के इस प्रशिक्षण-स्थल में यह संक्षिप्त, क्षणभंगुर, दर्दनाक और विपत्ति-ग्रस्त जीवन, पृथ्वी का यह अस्थायी सैन्य शिविर, यह क्षणभंगुर प्रदर्शन। बल्कि, चूँकि ये चीज़ें केवल दूसरे, शाश्वत जीवन, खुशी के एक शाश्वत क्षेत्र के लिए ही अभिप्रेत हो सकती हैं, इसलिए वे परलोक के क्षेत्र में दूसरी दुनिया के उपहारों का संकेत देती हैं, यहाँ तक कि उनकी गवाही भी देती हैं।

हे सभी चीज़ों के निर्माता!

पृथ्वी के सभी प्राणी इस पृथ्वी पर आपकी शक्ति, सामर्थ्य, ज्ञान, इच्छा और बुद्धि के अधीन हैं और उनके द्वारा संचालित हैं, जो आपकी संपत्ति है। और आपके प्रभुत्व - आपके सृजन, रखरखाव, प्रावधान, पालन और प्रशासन के कार्य - जो पृथ्वी पर देखे जा सकते हैं, ऐसी विशालता और व्यापकता प्रदर्शित करते हैं, और इस प्रभुत्व के भीतर प्रशासन, प्रावधान और पालन-पोषण इतने परिपूर्ण और संवेदनशील हैं, और इसके कार्य और संचालन ऐसी एकता, समानता और समन्वय से परिपूर्ण हैं कि आपका प्रभुत्व स्पष्ट रूप से सार्वभौमिक और अविभाज्य है। इसके अलावा, पृथ्वी, अपने सभी निवासियों के साथ और अनगिनत भाषाओं के माध्यम से जो मानवता की वाणी से अधिक स्पष्ट हैं, अपने निर्माता की महिमा करती है और उसे परम-पवित्र घोषित करती है; उनकी असीम उदारता की जीभ के माध्यम से पृथ्वी अपने सर्व-प्रदाता महामहिम की प्रशंसा और गुणगान करती है।

हे सर्वपवित्र! जो अपनी अभिव्यक्ति की तीव्रता के कारण छिपे हुए हैं और अपनी महिमा के कारण छिपे हुए हैं!

पृथ्वी द्वारा आपके महिमामंडन तथा आपको सर्व-पवित्र घोषित करने के साथ, मैं भी घोषणा करता हूँ कि आप सभी दोषों, नपुंसकता या साझीदारों के आरोपण से सर्वथा ऊपर हैं, तथा मैं आपकी स्तुति करता हूँ तथा उनकी सभी स्तुतियों के साथ आपको धन्यवाद देता हूँ।

हे भूमि और समुद्र के स्वामी!

मैंने कुरान की शिक्षाओं और महानतम रसूल - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - की शिक्षाओं के माध्यम से यह समझा है कि जिस तरह पृथ्वी, वायुमंडल और आकाश आपके अस्तित्व और एकता की गवाही देते हैं, उसी तरह नदियाँ, झरने और जलधाराएँ भी आपके अस्तित्व और आपकी एकता की पूर्ण आवश्यकता की स्पष्ट रूप से गवाही देती हैं।

वास्तव में, ऐसा एक भी प्राणी नहीं है, वास्तव में, समुद्र में पानी की एक भी बूंद नहीं है, जो वास्तव में हमारे ग्लोब के भाप बॉयलर और अनगिनत आश्चर्यों का स्रोत है, लेकिन यह अपने अस्तित्व, सुव्यवस्था, स्थिति और लाभों के माध्यम से अपने निर्माता को ज्ञात नहीं कराता है।

इन अद्भुत प्राणियों में से एक भी ऐसा नहीं है, जिसका भरण-पोषण साधारण रेत या पानी से होता हो, इनमें से एक भी समुद्री जीव नहीं है-

प्रत्येक मछली को अत्यंत व्यवस्थित ढंग से बनाया गया है, यह मछलियों की असंख्य प्रजातियों में से एक नहीं है, जिनमें से प्रत्येक दस लाख या उससे अधिक अंडे देती है, लेकिन यह अपने सृजन, अपने कर्तव्यों और जिस तरह से इसे प्रशासित किया जाता है, प्रदान किया जाता है और बनाए रखा जाता है, उसके माध्यम से अपने निर्माता को इंगित करता है और अपने प्रदाता की गवाही देता है।

इसके अलावा, समुद्र में एक भी ऐसा कीमती, अलंकृत पदार्थ या रत्न नहीं है, जो विशिष्ट विशेषताओं वाला हो, लेकिन यह आपको अपनी सूक्ष्म रचना, आकर्षक संरचना और लाभकारी गुणों के माध्यम से ज्ञात कराता है।

ये सभी उपर्युक्त प्राणी व्यक्तिगत रूप से आपकी गवाही देते हैं। साथ ही, यद्यपि वे अत्यंत विविधता और संख्या में मौजूद हैं, तथा यद्यपि सभी एक दूसरे के साथ मिश्रित हैं, जिस सुविधा से वे अस्तित्व में आए हैं तथा उनके निर्माण द्वारा प्रदर्शित एकता की छाप आपकी एकता की गवाही देती है। इसके अलावा, पृथ्वी अंतरिक्ष में लटकी रहती है तथा बिना अपनी भूमि या समुद्रों के एक दूसरे के साथ मिश्रित हुए या भूमि पर आक्रमण किए बिना बहुत तेज गति से सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है। इसके अलावा, इसके सभी खनिज तथा अन्य पदार्थ, तथा इसके सभी स्थलीय और समुद्री जीवन अच्छी तरह से निर्मित तथा अत्यंत विविध हैं: साधारण जल या मिट्टी से निर्मित, इन सभी प्राणियों का प्रशासन तथा पालन-पोषण पूर्ण व्यवस्था के साथ किया जाता है। इसके अलावा, उनके अत्यंत प्रचुर अस्तित्व तथा इस तथ्य के बावजूद कि प्रतिदिन उनमें से असंख्य लोग मरते हैं, उनकी कोई भी लाश लंबे समय तक पृथ्वी या समुद्र में नहीं रहती, जिसके परिणामस्वरूप पृथ्वी तथा समुद्र दोनों का चेहरा हमेशा स्वच्छ और शुद्ध रहता है। इसलिए, पृथ्वी आपके अस्तित्व तथा इस तथ्य की गवाही देती है कि आप इसके प्राणियों की संख्या के लिए अनिवार्य रूप से विद्यमान प्राणी हैं।

जिस तरह से ये सभी जीव आपके प्रभुत्व की महिमा और आपकी सर्वव्यापी शक्ति की विशालता को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं, उसी तरह ये आपकी दया और प्रभुत्व की असीम व्यापकता को भी दर्शाते हैं, जो सब कुछ को अपने में समाहित कर लेती है—ऊपर आकाश में अत्यंत विशाल सितारों से लेकर महासागरों की तलहटी में छोटी मछलियों तक। साथ ही, अपने संपूर्ण संगठन और व्यवस्थित अस्तित्व के माध्यम से, उनके द्वारा दिए जाने वाले लाभों और उनके द्वारा प्रदर्शित की जाने वाली बुद्धिमत्ता के उदाहरणों के माध्यम से, और उनकी सुसंगठित संरचना और संयोजन के माध्यम से, वे आपके सर्वव्यापी ज्ञान और आपकी सर्वव्यापी बुद्धि को दर्शाते हैं।

इस संसार रूपी अतिथिगृह में यात्रियों के लिए आपके पास दया के सरोवर हैं और आपने इन सरोवरों को उनके लाभ के लिए तथा उनके जहाज के लिए वश में कर दिया है, ताकि वे यात्रा कर सकें। यह इस बात का संकेत है कि जो अपने मेहमानों को समुद्र से एक रात के लिए एक किनारे की सराय में इतने सारे उपहार प्रदान करता है—

संसार में निश्चय ही उसकी प्रभुता के शाश्वत क्षेत्र में दया के अनन्त महासागर होंगे, और यहाँ जो हैं वे तो उनके छोटे, क्षणिक नमूने मात्र हैं।

इस प्रकार, जिस तरह से समुद्र इस तरह के असाधारण तरीके से भूमि को घेरे हुए हैं, और उनकी गहराई में रहने वाले जीवों का अद्भुत पोषण और पोषण, यह सब स्वतः स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है कि वे आपकी इच्छा, शक्ति के माध्यम से आपके क्षेत्र में आपकी आज्ञा के अधीन हैं। इन सभी तथ्यों की भाषा के माध्यम से, वे आपको अपना सर्व-पवित्र निर्माता घोषित करते हैं, और कहते हैं कि "ईश्वर सर्व-महान है।" , और प्रशासन-

हे सर्वशक्तिमान महामहिम, जिन्होंने पर्वतों को खजाना बना दिया है-
पृथ्वी के जहाज़ के लिए मस्तूल भर दिए!

मैंने ईश्वर के सबसे महान रसूल (सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम) की शिक्षा और कुरान की शिक्षाओं से यह समझा है कि जिस तरह समुद्र आपको पहचानते हैं और अपने चमत्कारों के माध्यम से आपको पहचानते हैं, उसी तरह पहाड़ भी आपको पहचानते हैं और अपने अस्तित्व में मौजूद बुद्धिमत्ता के उदाहरणों और उनके द्वारा प्रदान किए जाने वाले लाभों के माध्यम से आपको पहचानते हैं। उदाहरण के लिए, वे धरती की सेवा करते हैं, इसे समुद्र के आक्रमण से अप्रभावित और ठोस बनाए रखते हैं और भूकंपों और इसके भीतर होने वाली तूफानी हलचलों के बावजूद इसकी स्थिरता को बनाए रखते हैं। वे हानिकारक गैसों से हवा को शुद्ध करते हैं, पानी को संग्रहीत और संरक्षित करते हैं और जीवित प्राणियों के लिए आवश्यक खनिजों और धातुओं के विशाल खजाने के रूप में कार्य करते हैं।

वास्तव में, पहाड़ों में एक भी चट्टान या कीमती पत्थर नहीं है, दवाओं के लिए सामग्री के रूप में उपयोग किए जाने वाले असंख्य प्रकार के पदार्थों में से एक भी नहीं है, सामान्य रूप से जीवित प्राणियों और विशेष रूप से मानव जाति के लिए अत्यंत विविध प्रकार के खनिजों या धातुओं में से एक भी नहीं है, पौधों और पेड़ों की अनगिनत किस्मों में से एक भी नहीं है जो अपने फूलों से पहाड़ों, मैदानों और खेतों को सुशोभित करते हैं, अपने फलों से उन्हें समृद्ध बनाते हैं - इनमें से एक भी ऐसा नहीं है जो अपनी बुद्धिमत्ता के उदाहरणों, उनकी सूक्ष्म व्यवस्था और संरचना, उनकी अच्छी रचना, उनके असंख्य लाभों और उनके स्वाद और स्वभाव की अत्यधिक विविधता के माध्यम से, एक असीम शक्तिशाली, दयालु और उदार निर्माता के अस्तित्व की पूर्ण आवश्यकता को अत्यंत स्पष्टता से प्रमाणित नहीं करता है, भले ही वे सतह पर समान दिखाई दें। इसके अलावा, फूलों और फलों की अपनी विविधता के माध्यम से निर्माता की गवाही देने के अलावा, जो इस तथ्य के बावजूद अत्यधिक विविधता दिखाते हैं कि वे सभी सरल, समान मिट्टी में उगते हैं और एक ही, सरल पानी से पोषित होते हैं, पेड़ और फूल भी अपने प्रशासन, रखरखाव, उत्पत्ति, आवास, निर्माण और कलात्मकता की समानता के माध्यम से उनकी एकता और एकता की गवाही देते हैं। वे अपनी प्रचुरता और गति और सुविधा के माध्यम से उनकी एकता और एकता की ओर भी इशारा करते हैं।

जिस भावना से वे निर्मित किए गए हैं, यद्यपि उनमें से प्रत्येक कला का एक अद्वितीय कार्य है और अमूल्य मूल्य का है।

इसके अलावा, यह तथ्य कि दुनिया के सभी पर्वतों की संरचना लगभग एक जैसी है और सभी प्रकार के प्राणियों को बिना किसी दोष के, एक ही तरह से, कल्पना की जा सकने वाली सबसे कम अवधि में, और एक व्यक्ति और प्रजाति के निर्माण और पोषण को दूसरे के साथ भ्रमित किए बिना या बाधा डाले बिना, पूरी तरह से बनाया गया है - यह सब आपके प्रभुत्व की भव्यता और आपकी शक्ति की विशालता को इंगित करता है। इसके अलावा, पहाड़ों में असंख्य प्रकार के जीवित प्राणियों की अंतहीन जरूरतों, स्वाद और भूख को पूरा करने के लिए कई अलग-अलग प्रकार के पौधे, पेड़ और खनिज होते हैं; वे अनगिनत प्रकार की बीमारियों के लिए आवश्यक दवाएँ भी प्रदान करते हैं। यह सब इस बात को इंगित करता है कि , जिसके लिए कुछ भी नहीं-

तेरी दया का दायरा कम है और तेरे राज्य की विशालता असीम है।

यद्यपि इन सभी पौधों और वृक्षों के खनिज और बीज अंधकार में जमीन के नीचे छिपे और आपस में मिले हुए हैं, फिर भी वे एक विशाल ज्ञान और एक सर्वव्यापी दृष्टि के कारण पूर्ण क्रम में उगाए और तैयार किए गए हैं। ये सभी तथ्य आपके ज्ञान की व्यापकता को इंगित करते हैं, जो सब कुछ को समाहित करता है, और आपकी बुद्धि की सर्वव्यापी प्रकृति, जो सब कुछ पूरी तरह से व्यवस्थित करती है। इसके अलावा, औषधीय पदार्थों की तैयारी और उनमें खनिजों और धातुओं के जमाव के माध्यम से, पहाड़ स्पष्ट रूप से आपके प्रभु-शिप की दयालु और उदार व्यवस्था और प्रावधान की सुंदरता और आपकी परोपकारिता की एहतियाती सूक्ष्मताओं को इंगित करते हैं।

फिर, आपने इन विशाल पर्वतों को इस सांसारिक कारवां-राय में अपने मेहमानों की भविष्य की जरूरतों के लिए आपूर्ति के सुव्यवस्थित गोदामों के रूप में बनाया है और इन मेहमानों के जीवन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण अनंत खजानों के पूरी तरह से व्यवस्थित भंडार के रूप में बनाया है, जो निस्संदेह इस तथ्य की गवाही देते हैं कि एक निर्माता जो इतना उदार और मेहमाननवाज़ है, इतना बुद्धिमान और देखभाल करने वाला है, और इतना शक्तिशाली और पालन-पोषण करने वाला है, उसने निश्चित रूप से एक शाश्वत दुनिया में इन प्यारे मेहमानों के लिए अनन्त उपहारों के खजाने तैयार किए हैं। वहाँ के तारे यहाँ दुनिया में पहाड़ों के कर्तव्यों का पालन करेंगे।

हे वह जो सभी चीज़ों पर पूर्ण शक्ति रखता है!

आपकी शक्ति, ज्ञान और बुद्धि के कारण पहाड़ और उनमें रहने वाले प्राणी आपकी सेवा में समर्पित हैं। वे अपने रचयिता परम पवित्र की स्तुति करते हैं और घोषणा करते हैं कि वह वही है जिसने उन्हें इस प्रकार से समर्पित और कर्तव्यपरायण बनाया है।

हे सर्वदयालु सृष्टिकर्ता एवं दयावान प्रभु!

मैंने ईश्वर के रसूल - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - की शिक्षा और ज्ञानपूर्ण कुरान की शिक्षा से यह समझा है कि जिस प्रकार आकाश, पृथ्वी, समुद्र और पर्वत अपने समस्त प्राणियों और पदार्थों के साथ आपको पहचानते हैं और आपको ज्ञात कराते हैं, उसी प्रकार पृथ्वी के सभी पेड़-पौधे भी अपने पत्तों, फूलों और फलों के साथ आपको जानते हैं और आपको स्पष्ट रूप से ज्ञात कराते हैं।

सभी पौधों और वृक्षों का प्रत्येक पत्ता, जो अपनी आनंदित गतिविधियों के माध्यम से अपने निर्माता को स्मरण करता है, साथ ही प्रत्येक फूल, जो अपने श्रृंगार के माध्यम से अपने निर्माता का वर्णन और परिभाषा करता है, और प्रत्येक फल, जो उसकी दया के प्रकटीकरण के कारण प्रसन्नतापूर्वक मुस्कुराता है, अपने पूर्ण और असाधारण कलात्मक निर्माण के माध्यम से, जिसे संयोग के लिए जिम्मेदार ठहराना पूरी तरह से असंभव है, एक असीम दयालु और उदार निर्माता के अस्तित्व की पूर्ण आवश्यकता की अत्यंत निश्चितता के साथ गवाही देता है; यह अपने निर्माण में पूर्ण संतुलन और अनुपात के माध्यम से भी ऐसा करता है, और उस संतुलन और अनुपात के साथ होने वाले अलंकरण के माध्यम से, और उन कढ़ाईयों के माध्यम से जो इसके अलंकरण में योगदान करते हैं, और कई सुंदर सुगंधों और स्वादों के माध्यम से जो इसके अलंकरण में जोड़े जाते हैं।

समग्र रूप से ये अनिवार्य रूप से विद्यमान निर्माता की एकता (वहीदिया) और एकत्व (अहादिया) के स्पष्ट साक्ष्य हैं। वे दुनिया भर में अपनी आपसी समानता और अपनी रचनाओं में समानता के माध्यम से ऐसा करते हैं।

उनके विकास और उनके लिए प्रावधान के बीच के संबंध के माध्यम से, दिव्य नामों और कृत्यों के अंतर्संबंध के माध्यम से जो उनके अस्तित्व और रखरखाव से संबंधित हैं, और दोष या भ्रम के बिना लाखों किस्मों के असंख्य व्यक्तिगत सदस्यों के प्रशासन और पोषण के माध्यम से।

जिस तरह से ये आपके अस्तित्व और आपकी एकता की परम आवश्यकता को प्रमाणित करते हैं, उसी तरह धरती पर रहने वाले जीवों के असंख्य सदस्यों का पूर्ण और विशिष्ट रखरखाव, जो सैकड़ों हज़ारों "राष्ट्रों" से बना है, आपके प्रभुत्व की महिमा और विशिष्टता को दर्शाता है और आपकी शक्ति की विशालता वसंत को उतनी ही आसानी से पैदा करती है जितनी आसानी से फूल पैदा करती है। इसके अलावा, धरती भर में फैले असंख्य जानवरों और मनुष्यों के लिए अनगिनत प्रकार के भोजन की तैयारी आपकी दया की असीम व्यापकता को दर्शाती है। इसके अलावा, इन सभी कार्यों , जो सब कुछ को अपने में समाहित कर लेता है और के निष्पादन में पूर्ण क्रम, प्रदान करने, प्रशासन करने और पालन-पोषण करने के साथ-साथ, सबसे छोटे कण या परमाणु तक सब कुछ की अधीनता और आज्ञाकारिता,

आपके कार्य और आदेश, आपके प्रभुत्व की सर्वव्यापी प्रकृति का स्पष्ट प्रमाण प्रदान करते हैं। इसी तरह, यह तथ्य कि प्रत्येक पत्ती, फूल, फल, जड़, शाखा या टहनी के अस्तित्व, विकास और पोषण से संबंधित जो कुछ भी है, वह निश्चित ज्ञान और अंतर्दृष्टि पर आधारित है, जिसमें कई बुद्धिमान उद्देश्य और लाभ ध्यान में रखे गए हैं, वे सभी आपके ज्ञान और बुद्धि की सर्वव्यापी प्रकृति की ओर स्पष्ट रूप से इशारा करते हैं। असंख्य भाषाओं के साथ, ये सभी आपकी असीम रूप से परिपूर्ण कला की सुंदरता और आपकी असीम रूप से सुंदर उदारता की पूर्णता की प्रशंसा और गुणगान भी करते हैं।

इसके अलावा, इस अस्थायी गेस्टहाउस में पेड़ों और पौधों के हाथों से, ऐसे अमूल्य उपहार और उपहार पेश किए जाते हैं, ऐसे असाधारण खर्च किए जाते हैं, और ऐसी अद्भुत उदारता दिखाई जाती है कि वे स्पष्ट रूप से संकेत देते हैं, वास्तव में, इस तथ्य की गवाही देते हैं: शक्तिशाली और उदार सर्व-दयालु ने अपनी दया के अनन्त खजाने से, फल देने वाले पेड़ों और फूलों के पौधों की एक सेना तैयार की है जो स्वर्ग के शाश्वत उद्यानों के लिए उपयुक्त हैं, उन सेवकों के लिए जिन्हें वह अनन्त राज्य में अनन्त जीवन के साथ अनुग्रहित करेगा। वह ऐसा इसलिए करता है क्योंकि, अपने द्वारा प्रदान की गई कृपाओं के माध्यम से खुद को ज्ञात और प्यार करने की अपनी इच्छा के अनुसार, वह नहीं चाहता कि उसके प्यारे दोस्त यह कहते हुए शिकायत करें: "उसने हमें उनका स्वाद चखाया है और अब हमें उनका पूरा आनंद लेने में सक्षम हुए बिना अनंत अस्तित्व में भेज दिया है।" न ही वह प्रभुत्व के अनंत मूल्य को कम करना चाहता है

उसकी दिव्यता का अपमान करना या उसके प्यारे दोस्तों को उसकी अनंत दया से वंचित करना, इस प्रकार उनके प्रेम को शत्रुता में बदलना। इस दुनिया में सभी फलदार पेड़ और फूलदार पौधे अपने शाश्वत समकक्षों के उदाहरण मात्र हैं, और इस दुनिया में केवल उन लोगों के लिए प्रदर्शन के लिए हैं जो उन्हें अनंत काल के लिए "खरीदना" चाहते हैं।

जिस तरह पेड़-पौधे आपकी महिमा करते हैं और आपकी स्तुति करते हैं, तथा अपने पत्तों, फूलों और फलों के शब्दों के माध्यम से आपको सर्व-पवित्र घोषित करते हैं, उसी तरह इनमें से प्रत्येक शब्द भी आपकी परम पवित्रता की घोषणा करता है। फलों द्वारा अपनी प्रकृति की मूक वाणी के माध्यम से की गई महिमा-अर्थात् उनके आकर्षक आकार, उनके अनेक भिन्न-भिन्न और मनमोहक रंग, उनके अनंत प्रकार के खाद्य भागों और उनके अद्भुत बीजों के माध्यम से, तथा पेड़ों या पौधों के हाथों से इस सांसारिक कारवां सराय के अतिथियों को भेंट किए जाने के माध्यम से-स्वयं को बोले गए शब्दों के रूप में प्रकट करती है। वे सभी आपकी शक्ति, इच्छा, परोपकार, दया और बुद्धि के माध्यम से आपके क्षेत्र में वशीभूत हैं, और वे आपकी सभी आज्ञाओं का पूरी तरह से पालन करते हैं।

हे सर्वज्ञ रचयिता और सर्वदयालु सृष्टिकर्ता! जो अपनी अभिव्यक्ति की तीव्रता के कारण गुप्त हैं और अपनी महानता के कारण आवृत हैं!

सभी वृक्षों, वनस्पतियों, उनके पत्तों, फूलों, फलों की आवाजों के साथ, तथा उन सब की संख्या के अनुसार मैं आपकी स्तुति करता हूँ, आपका गुणगान करता हूँ, तथा घोषणा करता हूँ कि आप सर्वथा श्रेष्ठ हैं, तथा दोष, नपुंसकता और साझी से रहित हैं।

हे सर्वशक्तिमान सृजक, सर्वज्ञ प्रशासक, सर्व दयालु पालनकर्ता!

मैंने ईश्वर के सबसे महान रसूल - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - की शिक्षा और ज्ञानपूर्ण कुरान की शिक्षा से समझा है, और मेरा मानना है कि जिस तरह पौधे और पेड़ आपको पहचानते हैं और आपके पवित्र गुणों और सुंदर नामों को बताते हैं, उसी तरह कोई भी जानवर या इंसान ऐसा नहीं है जो आपके अस्तित्व और आपके गुणों की पूर्ण आवश्यकता की गवाही न दे। वे अपने पूर्ण रूप से और कलात्मक रूप से बनाए गए शरीरों के माध्यम से गवाही देते हैं, जो बेहद नाजुक और अच्छी तरह से काम करने वाले "उपकरणों" से सुसज्जित हैं जिनमें बेहतरीन क्रम और संतुलन है; वे अपने सभी आंतरिक और बाहरी अंगों के माध्यम से सबूत देते हैं, जो पूर्ण संवेदनशीलता और व्यवस्थितता के साथ काम करने के लिए बनाए गए हैं, और अपने सदस्यों और इंद्रियों के माध्यम से जो उनके शरीर में पूर्ण संतुलन के साथ और अत्यंत महत्वपूर्ण उद्देश्यों के लिए व्यवस्थित हैं।

क्योंकि यह पूर्णतया असम्भव है कि कोई यादृच्छिक शक्ति, अचेतन "प्रकृति" या अंधा संयोग ऐसी कलात्मकता में योगदान दे जो इतनी नाजुक और बुद्धिमत्तापूर्ण हो, या ऐसी बुद्धिमत्ता में योगदान दे जो इतनी सावधानी और चेतना की मांग करती हो, या एक पूर्ण संतुलन में योगदान दे जो इतना संवेदनशील और उद्देश्यपूर्ण हो।

जहाँ तक इस धारणा का सवाल है कि वे खुद को बनाते हैं; खैर, यह सौ गुना अधिक असंभव और अकल्पनीय है। क्योंकि उनके आत्म-निर्माण के लिए उनके प्रत्येक कण या परमाणु में ईश्वर-जैसा ज्ञान और शक्ति होनी चाहिए। अन्यथा, प्रत्येक कण खुद को पूरी तरह से कैसे जान पाएगा और खुद को अस्तित्व में कैसे ला पाएगा, खासकर तब जब उसे उन सभी अन्य परमाणुओं का भी निर्माण करना होगा जिनके साथ वह जुड़ता है और संबंध रखता है, साथ ही ब्रह्मांड के सभी अन्य तत्वों का भी जो उसके अस्तित्व और संचालन में भूमिका निभाते हैं-

क्या आप जानते हैं?

उनके प्रशासन और रखरखाव में समग्र रूप से देखी जा सकने वाली एकता, प्रत्येक प्रजाति के सदस्यों के बीच तथा स्वयं प्रजातियों के बीच पूर्ण समानताएं, एकता की छाप जो देखी जा सकती है

उनकी रचना और पालन-पोषण में, और यह तथ्य कि उनमें से प्रत्येक के पास आँखें, कान, मुँह, इत्यादि हैं, और प्रत्येक समान लक्ष्यों की ओर निर्देशित है - ये सभी और एकता के ऐसे ही अन्य उदाहरण आपकी पूर्ण एकता के सबसे निर्णायक साक्ष्य हैं। और जिस तरह आपके सभी नाम पूरे ब्रह्मांड में एक साथ प्रकट होते हैं, इस प्रकार आपकी एकता (वहीदिया) को दर्शाते हैं, वे ब्रह्मांड में प्रत्येक प्राणी में भी प्रकट होते हैं, इस प्रकार आपकी एकता या विशिष्टता (अहादिया) को प्रदर्शित करते हैं।

साथ ही, मानव जाति की तरह, दुनिया भर में वितरित सैकड़ों हज़ारों पशु प्रजातियाँ एक सुव्यवस्थित सेना की तरह सुसज्जित, प्रशिक्षित और आज्ञाकारी हैं, और आपके प्रभुत्व की आज्ञाएँ उनके राज्य में एकदम सही क्रम के साथ चलती हैं। जबकि यह आपके प्रभुत्व की भव्यता को इंगित करता है, उनकी प्रचुरता के बावजूद उनका चरम मूल्य, उनकी तीव्र उत्पत्ति के बावजूद उनकी उत्तम संरचना और संगठन, और जिस सुविधा से उन्हें बनाया गया है उसके बावजूद उनमें जो उत्तम, अद्वितीय कला है, वह सब आपकी शक्ति की भव्यता को इंगित करता है। सूक्ष्म जीवों से, जो दुनिया के चारों कोनों में पाए जाते हैं, गैंडे तक, और सबसे छोटी मक्खियों से लेकर सबसे बड़े पक्षियों तक, जिस सटीकता के साथ उन्हें प्रदान किया जाता है और उनका पालन-पोषण किया जाता है, वह स्पष्ट रूप से आपकी दया की अंतहीन व्यापकता को इंगित करता है।

और उनमें से प्रत्येक बिना किसी कमी के अपने महत्वपूर्ण कर्तव्यों का पालन करता है, जबकि पृथ्वी, वसंत में उनके एकत्रीकरण के लिए और शरद ऋतु और सर्दियों में उनके वियोजन के लिए परेड ग्राउंड के रूप में कार्य करते हुए, आपके प्रभुत्व की असीमता को इंगित करती है।

इसके अलावा, हर जानवर ब्रह्मांड के लघु नमूने की तरह है। यह अत्यंत गहन ज्ञान और उत्तम बुद्धि के माध्यम से उत्पन्न हुआ है, इसके किसी भी परमाणु, यौगिक या अंग की नियुक्ति या स्थान में कोई भ्रम नहीं है, एक दूसरे के भीतर, और एक दूसरे के साथ उनके जटिल संबंधों में। फिर से, प्रत्येक जानवर को एक अलग रूप और विशिष्ट विशेषताएं दी गई हैं जिनमें कोई दोष, भ्रम या दोष नहीं है। चूंकि ये तथ्य अस्तित्व में जानवरों की संख्या के लिए आपके सर्वव्यापी ज्ञान और आपकी सर्वव्यापी बुद्धि को इंगित करते हैं, इसलिए कला के चमत्कार और बुद्धि के चमत्कार के रूप में ऐसी कलात्मकता और सुंदरता के साथ प्रत्येक का निर्माण भी आपके आधिपत्य की कला की संपूर्ण सुंदरता को इंगित करता है, जिसे आप प्यार करते हैं और प्रदर्शित करना चाहते हैं। फिर से, उनके नाजुक पोषण और उनकी जरूरतों और इच्छाओं की संतुष्टि के माध्यम से, वे सभी, और विशेष रूप से उनके बच्चे, आपकी परोपकारिता की उदात्त सुंदरता को अंतहीन रूप से इंगित करते हैं।

हे दयालु, दयावान, हे पूर्णतः सत्य!
हे न्याय के दिन के स्वामी!

मैंने आपके महानतम रसूल - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - के निर्देशों और आपके ज्ञानपूर्ण कुरान की शिक्षा से निम्नलिखित बातें समझी हैं:

चूँकि ब्रह्माण्ड का अंतिम परिणाम जीवन है, और जीवन का अंतिम परिणाम आत्मा है, और चूँकि आत्मा वाले प्राणियों में सबसे श्रेष्ठ वे हैं जिनमें चेतना है, और चेतना वाले प्राणियों में सबसे व्यापक मानवता है, और चूँकि पूरा ब्रह्माण्ड जीवन की सेवा करता है, और जीवित प्राणियों को आत्मा वाले प्राणियों की सेवा करने के लिए दुनिया में भेजा जाता है, और चूँकि आत्मा वाले प्राणियों को मानवजाति की सेवा में लगाया जाता है, और चूँकि मनुष्यों में अपने रचयिता के लिए एक मजबूत जन्मजात प्रेम होता है, जो हर तरह से उनसे प्रेम करता है और उनसे प्रेम करवाता भी है, और चूँकि मानवता को दी गई क्षमताएँ और अमूर्त क्षमताएँ मुख्य रूप से शाश्वत जीवन की ओर निर्देशित होती हैं, और उनका हृदय और चेतना अपनी पूरी शक्ति से अनंत काल की कामना करते हैं, और उनकी ज़ुबानें अपने रचयिता से अनंत जीवन के लिए कभी न खत्म होने वाली प्रार्थनाएँ करती हैं—चूँकि यह सब स्वयं-सिद्ध सत्य है, तो यह स्पष्ट है कि वह जो प्रेम करता है और जिसे बहुत प्रेम किया जाता है, वह कभी भी मानवजाति को, जिसे उसने अनंत काल के लिए बनाया है, दुखी नहीं करेगा, उन्हें केवल इसलिए मरने देगा कि वे फिर से जीवित न हो सकें, जो इस प्रकार उनके लिए उनके प्रेम को शाश्वत में बदल देगा। शत्रुता। क्योंकि मानवता को इस दुनिया में दूसरे, शाश्वत क्षेत्र में सुख का शाश्वत जीवन पाने के लिए प्रयास करने और कमाने के लिए भेजा गया है। वहाँ हमें दिव्य नामों की शाश्वत अभिव्यक्तियों का आशीर्वाद मिलेगा, जिन्हें हम इस छोटे और क्षणभंगुर जीवन में प्रतिबिंबित करते हैं।

वास्तव में, शाश्वत परमेश्वर का वफादार मित्र शाश्वत रहेगा; शाश्वत परमेश्वर का चेतन दर्पण शाश्वत होना चाहिए।

जैसा कि प्रामाणिक पैगंबरी परंपराओं से समझा जा सकता है और जैसा कि ईश्वरीय बुद्धि, दया और प्रभुत्व की सच्चाई से अपेक्षित है, जानवरों की आत्माएं भी स्थायी रूप से बनी रहेंगी। इसके अलावा, उनमें से कुछ सदस्य, जैसे कि हुपु जो पैगंबर सुलैमान की सेवा करता था, शांति हो, और उनके बारे में कथाओं में पाई जाने वाली चींटी, साथ ही पैगंबर सालेह की ऊँटनी, शांति हो, और गुफा के लोगों का कुत्ता अपने शरीर और आत्माओं के साथ अनन्त दुनिया में चले जाएँगे, जबकि प्रत्येक पशु प्रजाति कभी-कभार रोजगार के लिए एक एकल, प्रतिनिधि निकाय के रूप में अस्तित्व में रहेगी।15

---

[15] उन्हें स्वर्ग के लोगों द्वारा नियोजित किया जाना चाहिए। प्रासंगिक पैगंबरी कथाओं के लिए, देखें, अल-बघावी, मआलीमुत-तेनज़िल, 3:154; अल-अलुसी, रूहुल-मानी, 15:226।

हे सर्वशक्तिमान और स्वयंभू, जिनसे सबका अस्तित्व है!

सभी जीवित प्राणी, सभी आत्मा वाले प्राणी और सभी चेतना वाले प्राणी आपके प्रभु की आज्ञाओं के अधीन बनाए गए हैं और उन्हें आपकी इच्छा, प्रशासन, दया और बुद्धि के माध्यम से आपके क्षेत्र में उनकी प्रकृति के अनुसार कर्तव्य सौंपे गए हैं। उनमें से कुछ को आपकी शक्ति द्वारा मानव जाति की सेवा में लगाया गया है - मानवता की ओर से किसी शक्ति या प्रभुत्व के कारण नहीं, बल्कि, मानव की जन्मजात से श्रेष्ठ घोषित करके, कमजोरी और नपुंसकता के कारण। अपने निर्माता की महिमा करके और उसे दोष, दोष या साझीदारों से परे पूरी तरह और मौखिक रूप से और अपने स्वभाव और स्वभाव की मूक वाक्पटुता के माध्यम से उसकी प्रशंसा और धन्यवाद करके, प्रत्येक व्यक्ति अपनी पूजा का अपना विशेष रूप करता है।

हे सर्व-पवित्र, आप अपनी अभिव्यक्ति की तीव्रता के कारण छिपे हुए हैं
और उसकी महानता के कारण परदा पड़ा है!

सभी आत्माधारी प्राणियों की महिमा के माध्यम से आपको सर्व-पवित्र घोषित करने के इरादे से, मैं कहता हूँ: हे आप, जिन्होंने जल से प्रत्येक जीवित चीज़ बनाई है, आप सर्व-महिमावान हैं!

हे समस्त लोकों के स्वामी! हे उन सभी के देवता जो इस संसार में आ चुके हैं और उन सभी के देवता जो भविष्य में आने वाले हैं! हे आकाश और लोकों के स्वामी!

ईश्वर के महानतम रसूल - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - की शिक्षा और ज्ञानपूर्ण कुरान की शिक्षा से, मैं निम्नलिखित बातों को समझने और उन पर विश्वास करने लगा हूँ:

जिस प्रकार आकाश और पृथ्वी, वायुमंडल, भूमि और समुद्र, पेड़-पौधे और जानवर अपने सभी अंगों, घटक भागों और परमाणुओं के साथ आपको पहचानते हैं और आपके अस्तित्व और एकत्व की गवाही देते हैं, उसी प्रकार जीवित प्राणी भी, जो ब्रह्मांड का सार हैं, आपके अस्तित्व, आपकी एकता और आपकी एकरूपता की परम आवश्यकता की गवाही देते हैं।

और इस साक्षी के हृदय में मानवता, जीवित प्राणियों का सार है; मानवता के बीच संत, शुद्ध विद्वान और पैगंबर हैं, जो सभी अपनी बुद्धि और हृदय के अवलोकन और अनावरण के माध्यम से और अपनी प्रेरणाओं और आध्यात्मिक खोजों के माध्यम से आपकी एकता की गवाही देते हैं। वास्तव में, उनकी गवाही में सच्चे और विशेषज्ञ ज्ञान वाले विद्वानों के सैकड़ों अलग-अलग समूहों और ज्ञान के प्रसारकों की सैकड़ों श्रृंखलाओं की सर्वसम्मति की निश्चितता है, जिनकी सत्यता और विश्वसनीयता पर संदेह नहीं किया जा सकता है। इसके अलावा, वे अपने चमत्कारों, चमत्कारों और निर्णायक प्रमाणों के साथ जो जानकारी प्रदान करते हैं, उसे प्रमाणित भी करते हैं।

एक भी ऐसी बात नहीं है जो स्वस्थ हृदय में घटित होती है लेकिन वह उस एक की ओर ध्यान आकर्षित नहीं करती जो अदृश्य के पर्दे के पीछे से उसे प्रेरित करता है, और उसके अस्तित्व की परम आवश्यकता, साथ ही साथ उसके गुणों, एकता और एकत्व की गवाही देती है। इसी तरह, सच्ची प्रेरणा का एक भी उदाहरण नहीं है जो उस एक की ओर ध्यान केंद्रित करता है जो प्रेरित करता है लेकिन यह उसी तरह से गवाही देता है। इसके अलावा, कोई भी ऐसा पंथ नहीं है जो अनुभव के आधार पर निश्चितता के साथ आपके पवित्र गुणों और सर्व-सुंदर नामों की खोज करता है लेकिन यह उसी तरह से गवाही देता है, न ही कोई शुद्ध, प्रकाशित हृदय है जैसा कि पैगंबरों और संतों का है और जो अनिवार्य रूप से विद्यमान एक के प्रकाश को भेदने वाली स्पष्टता के साथ देखता है, लेकिन यह वही गवाही देता है।

और ऐसी एक भी प्रबुद्ध बुद्धि नहीं है, जैसी सत्यनिष्ठ, शुद्ध और संत विद्वानों के पास होती है, लेकिन वह निश्चित ज्ञान के साथ सभी चीजों के निर्माता के आवश्यक अस्तित्व और एकत्व के संकेतों की पुष्टि नहीं करती। वास्तव में, कोई घटना नहीं है, कोई सच्ची प्रेरणा नहीं है, कोई निश्चित पंथ नहीं है, कोई शुद्ध और प्रबुद्ध हृदय नहीं है, कोई प्रबुद्ध बुद्धि नहीं है, वास्तव में, ऐसा कुछ भी नहीं है जो आपके अस्तित्व, आपके पवित्र गुणों, आपकी एकता, आपकी एकता और आपके सभी-सुंदर नामों की पूर्ण आवश्यकता को इंगित या प्रमाणित न करे।

विशेष रूप से, उस महानतम रसूल - उस पर शांति और आशीर्वाद हो, जो सभी पैगम्बरों, संतों, शुद्ध विद्वानों और सत्यनिष्ठा में सबसे उन्नत लोगों का नेता और सार है, का एक भी स्पष्ट चमत्कार नहीं है, जो उसके द्वारा लाए गए शुभ समाचार की पुष्टि करता हो; उसके बारे में एक भी महान सत्य नहीं है जो उसकी पूर्ण सत्यता को दर्शाता हो; और चमत्कारी कुरान में, जो सभी पवित्र शास्त्रों और सत्य की पुस्तकों का सार है, एक भी आयत ऐसी नहीं है, जो ईश्वरीय एकता को प्रदर्शित करती हो; और इसमें निहित एक भी पवित्र बात या विश्वास का सत्य नहीं है - इन चमत्कारों, सत्यों, आयतों या मामलों में से एक भी ऐसा नहीं है, जो आपके अस्तित्व, आपके पवित्र गुणों, आपकी एकता, आपकी एकता और आपके सर्व-सुंदर नामों की पूर्ण आवश्यकता को इंगित या साक्ष्य न देता हो।

इसके अलावा, जिस तरह से ये असंख्य सत्यवादी लोग अपने चमत्कारों, अद्भुत कार्यों और तर्कसंगत प्रमाणों के साथ आपके अस्तित्व और एकत्व की गवाही देते हैं, वे भी सर्वसम्मति से आपके प्रभुत्व की महिमा की घोषणा और प्रमाण करते हैं, जिसे सृष्टि की सभी चीज़ों का पूर्ण ज्ञान और नियंत्रण है, चाहे वे बड़ी हों या छोटी - आपके सर्वोच्च सिंहासन से जुड़े सार्वभौमिक मामलों से लेकर हृदय की सबसे गुप्त घटनाओं और उसकी सबसे गुप्त इच्छाओं और प्रार्थनाओं तक: वे आपकी शक्ति की उदात्तता की भी घोषणा करते हैं।

, जो एक साथ अनगिनत चीजों का आविष्कार करता है-

यह हमारी आंखों के सामने तुरन्त ही घटित हो जाता है, तथा सबसे बड़े काम को भी उतनी ही आसानी से पूरा कर देता है, जितनी आसानी से सबसे छोटे काम को, तथा एक काम को दूसरे काम में बाधा नहीं डालता।

ये सभी सत्यवादी अपने चमत्कारों और अन्य प्रमाणों से आपकी दया की असीम व्यापकता को भी प्रदर्शित और प्रमाणित करते हैं, जिसने इस ब्रह्मांड को आत्मा वाले प्राणियों, विशेष रूप से मानवता के लिए एक आदर्श महल बना दिया है, और जो जिन्न और मानवता के लिए स्वर्ग और शाश्वत सुख तैयार करता है, सबसे तुच्छ प्राणी को भी नहीं भूलता है, और सबसे शक्तिहीन हृदय को भी प्रसन्न करता है। ये चमत्कार और प्रमाण आपके प्रभुत्व की अनंत विशालता को भी प्रदर्शित और प्रमाणित करते हैं, जिसने परमाणुओं से लेकर आकाशगंगाओं तक सभी प्रकार के प्राणियों को अपने अधीन कर लिया है, और उन्हें कुछ कर्तव्य सौंपे हैं, ताकि वे आपके आदेशों का पालन करें।

इसके अलावा, ये चमत्कार और प्रमाण आपके ज्ञान की सर्वव्यापी प्रकृति की भी गवाही देते हैं, जिसने ब्रह्मांड को एक ब्रह्मांडीय पुस्तक बना दिया है जो ब्रह्मांड में जितने कण और यौगिक हैं, उतने ही खंडों से बनी है, और जिसने सभी प्राणियों के जीवन में जो कुछ भी होता है उसे प्रकट अभिलेख और प्रकट पुस्तक में दर्ज किया है, जो सर्वोच्च संरक्षित पट्टिका के रजिस्टर हैं। आपके ज्ञान ने सभी वृक्षों के प्रत्येक बीज में उनकी सामग्री और कार्यक्रमों को पूरी तरह से और बिना किसी त्रुटि के अंकित किया है, और सचेत प्राणियों के संपूर्ण जीवन इतिहास को उनकी स्मृतियों में अंकित किया है। ये चमत्कार और प्रमाण आपकी बुद्धि की सर्वव्यापी प्रकृति की भी अत्यंत स्पष्टता से गवाही देते हैं, जो प्रत्येक प्राणी को ज्ञान के अनेक उदाहरण प्रदान करती है, जैसे कि प्रत्येक वृक्ष अपने फलों की संख्या के अनुसार फल देता है, या प्रत्येक जीवित प्राणी को उसके अंगों या वास्तव में यौगिकों और कोशिकाओं के अनुसार उतने ही लाभ प्रदान करता है, या मानव जीभ को उसके सामने आने वाले स्वादों की संख्या के अनुसार क्षमताओं से सुसज्जित करता है, साथ ही उसे कई कर्तव्य सौंपता है। इसके अतिरिक्त, ये चमत्कार और प्रमाण सर्वसम्मति से इस तथ्य के साक्षी हैं कि आपके महात्म्य और कृपा के नाम, जिनकी अनुकरणीय अभिव्यक्तियाँ पूरे ब्रह्माण्ड में देखी जाती हैं, स्वयं को अनंत काल के धाम में और भी अधिक शानदार ढंग से प्रकट करते रहेंगे; कि आपके उपहार और कृपाएँ, जिनकी दयालु अभिव्यक्तियाँ और नमूने इस क्षणभंगुर दुनिया में देखे जाते हैं, अधिक शानदार तरीके से खुशी के शाश्वत क्षेत्र में टिके रहेंगे; और जो लोग उनसे प्रेम करते हैं और जो उन्हें इस संक्षिप्त सांसारिक जीवन में खुशी के साथ पहचानते हैं और प्रेम से उनकी खोज करते हैं, वे अनंत काल तक उनके साथ रहेंगे।

इसके अलावा, उनके पैगम्बर होने के अनगिनत प्रमाणों के आधार पर, जिनमें उनके सैकड़ों स्पष्ट चमत्कार शामिल हैं, और सैकड़ों निर्णायक सबूतों के आधार पर-

जो कि तेरी उतारी हुई सभी किताबों में विद्यमान हैं, मुख्यतः बुद्धिमतापूर्ण क़ुरआन में, तथा उन वादों और धमकियों पर जो तूने उनमें बार-बार दोहराए हैं; तथा तेरे पवित्र गुणों और आवश्यक विशेषताओं जैसे कि शक्ति, दया, अनुग्रह, बुद्धि, महिमा और अनुग्रह पर भरोसा रखते हुए, जिनके लिए पुनरुत्थान की आवश्यकता है, तथा तेरे प्रताप की प्रतिष्ठा और तेरे प्रभुत्व के प्रभुत्व पर, सभी तेजस्वी आत्माओं वाले नबी, जिनमें सर्वप्रथम ईश्वर के सबसे महान रसूल, जिन पर शांति और आशीर्वाद हो, शामिल हैं, जिन्नों और मनुष्यों को मार्गदर्शन प्राप्त करने वालों के लिए शाश्वत सुख की शुभ सूचना देते हैं, तथा सचेत करते हैं कि भटके हुए लोगों के लिए नरक प्रतीक्षा कर रहा है, जबकि वे स्वयं इन पर सबसे पहले ईमान लाने वाले और इनके साक्षी बनने वाले हैं। और ऐसा ही सभी प्रबुद्ध हृदय वाले संत भी करते हैं, जो अपने आध्यात्मिक अनावरणों और दर्शनों पर भरोसा करते हैं, तथा प्रबुद्ध बुद्धि वाले शुद्ध, संत विद्वान भी करते हैं, जो ज्ञान की निश्चितता की डिग्री पर अपने विश्वासों पर आधारित होते हैं।

हे सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ! हे दयालु और दयावान! हे सर्वदयावान जो अपने वचनों का पूर्णतः पालन करने वाला है! हे गरिमा, वैभव और महिमा से परिपूर्ण!

पुनरुत्थान लाने में विफलता का अर्थ होगा आपके अनेक सच्चे मित्रों का विरोध करना, आपकी बार-बार की गई धमकियों और वादों को तोड़ना, और आपके पवित्र गुणों और आवश्यक विशेषताओं को नकारना, जिससे वह अधूरा रह जाएगा जो कि प्रभु के रूप में आपके प्रभुत्व की प्रकृति द्वारा अपेक्षित है; इसका अर्थ होगा आपके उन असंख्य सेवकों की परलोक की आशाओं और प्रार्थनाओं को अस्वीकार करना और व्यर्थ करना, जिन्हें आप प्रेम करते हैं, और जो आपकी पुष्टि और आज्ञापालन करके स्वयं को आपका प्रिय बनाते हैं; इसका अर्थ पुनरुत्थान को अस्वीकार करने में अविश्वास और पथभ्रष्ट लोगों को पुष्ट करना भी होगा, जो अविश्वास और अवज्ञा के माध्यम से और आपके वादों का विरोध करके, आपकी महानता का अपमान करते हैं, आपकी महिमा की गरिमा पर हमला करते हैं, आपकी दिव्यता के सम्मान को ठेस पहुंचाते हैं और आपके प्रभुत्व की करुणा का अनादर करते हैं।

निस्संदेह आप ऐसी असफलता से पूरी तरह मुक्त हैं और उससे असीम रूप से ऊपर हैं! मैं आपके असीम न्याय, अनुग्रह और दया को ऐसी असीमित कुरूपता और अधर्म से पूरी तरह मुक्त घोषित करता हूँ। मैं इस आयत को पढ़ना चाहता हूँ, वह सर्व-महिमावान है, और पूरी तरह से महान है, जो वे कहते हैं उससे बहुत अधिक ऊँचा है (17: 43) जितनी बार मेरे शरीर में कण हैं। वास्तव में, आपके ये असंख्य सत्यवादी संदेशवाहक और आपके प्रभुत्व के संदेशवाहक आपकी दया और परोपकार के अनन्त खजाने और असाधारण रूप से उत्तम के बारे में अपनी गवाही में बिल्कुल सही हैं

ज्ञान पर आधारित निश्चितता, दर्शन पर आधारित निश्चितता, तथा अनुभव पर आधारित निश्चितता के साथ स्थायित्व की दुनिया में आपके सभी सुंदर नामों की अभिव्यक्तियाँ। वे यह भी मानते हैं और दूसरों को भी सिखाते हैं कि आपके नाम की सबसे बड़ी किरण परम सत्य है, जो सभी सत्यों का मूल, सूर्य और संरक्षक है, यही पुनरुत्थान का सबसे बड़ा सत्य है।

ऐ नबियों के रब और नबियों के बाद सत्यनिष्ठा में सबसे आगे रहने वालों!

आपके ये सभी प्रिय मित्र आपकी आज्ञा, शक्ति, इच्छा, प्रशासन, ज्ञान और बुद्धि के माध्यम से आपके अधीन और आपके प्रति कर्तव्यनिष्ठ रहे हैं। आपकी महिमा, स्तुति और एकता की घोषणाओं के माध्यम से, और अपने इस दावे के माध्यम से कि आप दोष, दोष या साझीदारों से सर्वथा परे हैं, उन्होंने इस संसार को स्मरण का सबसे विस्तृत घर और ब्रह्मांड को पूजा का सबसे विस्तृत स्थान दिखाया है।

ऐ मेरे रब, आकाशों और धरती के रब! ऐ मेरे रचयिता और हर चीज़ के रचयिता!

अपनी शक्ति, इच्छा, बुद्धि, संप्रभुता और दया के लिए, जो आकाश को उसके सितारों, पृथ्वी और उसमें मौजूद सभी चीज़ों और सभी प्राणियों को उनकी सभी अवस्थाओं के साथ वश में करती है, मेरी शारीरिक आत्मा को मेरे अधीन कर दे और मेरी इच्छाओं को मेरे अधीन कर दे। लोगों के दिलों को केवल कुरान और ईमान की सेवा के लिए रिसाले-ए-नूर के अधीन कर दे। और मुझे और मेरे भाइयों और बहनों को पूर्ण ईमान और सुखद अंत प्रदान कर। दिलों और बुद्धि को रिसाले-ए-नूर के अधीन कर दे, जैसे आपने समुद्र को पैगम्बर मूसा (उन पर शांति हो) के अधीन किया था, आग को पैगम्बर इब्राहीम (उन पर शांति हो) के अधीन किया था, पहाड़ों और लोहे को पैगम्बर डेविड (उन पर शांति हो) के अधीन किया था, जिन्न और मनुष्यों को पैगम्बर सुलैमान (उन पर शांति हो) के अधीन किया था, और सूर्य और चंद्रमा को पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति हो) के अधीन किया था। और मुझे और रिसाले-ए-नूर के छात्रों को शारीरिक आत्मा और शैतान की बुराइयों से और कब्र और जहन्नम की यातनाओं से बचा; हमें जन्नत के सर्वोच्च क्षेत्र में सुखी बना! आमीन! आमीन!

तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, अत्यन्त तत्वदर्शी है।

और उनका आह्वान इस प्रकार समाप्त होगा कि “सारी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए है, जो सारे संसार का स्वामी है!”

यदि मैंने इस शिक्षा को, जो मैंने अल-जौशनुल-कबीर ("महान ढाल") से ली है, ईश्वर के रसूल - उन पर शांति और आशीर्वाद हो, की प्रार्थना के रूप में अपने दयालु प्रभु के दरबार में पूजा के एक चिंतनशील कार्य के रूप में पेश करके गलती की है, तो हे मेरे प्रभु, मैं आपकी दया को कुरान और अल-जौशनुल-कबीर के लिए मुझे क्षमा करने की प्रार्थना करता हूं।

नर्सी ने कहा

नौवां प्रमाण:
पुनरुत्थान और परलोक के बारे में

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

अतः जब तुम संध्या में प्रवेश करो और जब तुम प्रातः में प्रवेश करो, तो अल्लाह की स्तुति करो और (घोषणा करो कि) आकाश और पृथ्वी में सारी प्रशंसा और कृतज्ञता उसी के लिए है, और दोपहर में भी और जब तुम दोपहर में प्रवेश करो। वही जीवित को मुर्दों में से निकालता है और मुर्दों को जीवितों में से निकालता है और धरती को उसके मर जाने के पश्चात जीवित करता है। इसी प्रकार तुम भी मुर्दों में से निकाले जाओगे।

और उसकी निशानियों में से यह भी है कि उसने तुम्हें धरती से पैदा किया, फिर तुम एक मनुष्य बन गए जो दूर-दूर तक फैले हुए थे। और उसकी निशानियों में से यह भी है कि उसने तुम्हारे लिए तुम्हारी ही संतानों में से जोड़े बनाए, ताकि तुम उनकी ओर झुको और उनमें आराम पाओ। और उसने तुम्हारे बीच प्रेम और कोमलता पैदा की। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सोच-विचार करें। और उसकी निशानियों में से आकाशों और धरती को पैदा करना और तुम्हारी भाषाओं और रंगों का विभिन्नता से निर्माण करना भी है।

इसमें बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो जानते हैं। और तुम्हारी रात और दिन की नींद और उसकी कृपा से जीविका प्राप्त करना भी उसकी निशानियों में से है। इसमें भी बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ध्यान रखते हैं। और उसकी निशानियों में से यह भी है कि वह तुम्हारे सामने बिजली दिखाए जो भय और आशा दोनों को उत्पन्न करे। और यह कि वह आकाश से पानी बरसाता है और उसके द्वारा धरती को उसके मर जाने के पश्चात जिलाता है।

निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो बुद्धि से काम लें। और उसकी निशानियों में से यह भी है कि आकाश और धरती उसके आदेश पर स्थिर हैं। अन्त में जब वह तुम्हें धरती से बुलाएगा तो तुम निकल आओगे। आकाश और धरती में जो कुछ है, वह सब उसी का है। सब लोग उसी की आज्ञा का पालन करते हैं। वही है जो सृष्टि को सबसे पहले आरंभ करता है, फिर उसे फिर से बनाता है, और उसे फिर से भी लाता है। और यह उसके लिए सरल है। आकाश और धरती में जो भी श्रेष्ठता है, वह सब सर्वोच्च स्तर पर उसी की है। और वह अत्यन्त महिमावान, अत्यन्त तत्वदर्शी है। (30:17-27)

इन महान स्वर्गीय आयतों में शामिल एक सबसे महत्वपूर्ण तर्क, जो विश्वास के एक ध्रुव की ओर इशारा करता है, इन महान पवित्र प्रमाणों में जो पुनरुत्थान की वास्तविकता को स्थापित करते हैं, इस रे में समझाया जाएगा। यह एक सूक्ष्म ईश्वरीय कृपा है कि मुहाकमात ("तर्क") के अंत में, जिसे उन्होंने तीस साल पहले कुरान की टिप्पणी के परिचय के रूप में लिखा था, पुराने या पूर्व सईद ने लिखा, "दो अन्य सामान्य प्रमाणों का दूसरा सारांश: यह कुरान की दो आयतों की व्याख्या करता है जो पुनरुत्थान का संकेत देती हैं। ईश्वर के नाम पर, जो अत्यंत दयालु, अत्यंत दयालु है"... और फिर अपनी कलम नीचे रख दी, जारी रखने में असमर्थ। शारीरिक पुनरुत्थान के संकेतों और प्रमाणों की संख्या के लिए मेरे दयालु निर्माता की प्रशंसा और धन्यवाद, उन्होंने मुझे उस कार्य को फिर से शुरू करने में सक्षम बनाया है।

नौ या दस साल पहले, ईश्वर ने मुझे दसवें और उनतीसवें वचन प्रदान किए, दो ऐसी रचनाएँ जिनमें ईश्वरीय आदेश के कई मजबूत प्रमाण और व्याख्याएँ हैं - ईश्वर की दया के निशानों को देखो, कैसे वह पृथ्वी को उसके मरने के बाद पुनर्जीवित करता है। निस्संदेह वह ही है जो मृतकों को पुनर्जीवित करेगा (इसी तरह), और उसके पास हर चीज़ पर पूरी शक्ति है (30:50)। दसवें और उनतीसवें वचन ने उन लोगों को चुप करा दिया जो पुनरुत्थान को नकारते थे। अब, लगभग एक दशक बाद, उसने मुझे ऊपर उद्धृत सर्वोच्च आयतों की व्याख्या प्रदान की है, जो पुनरुत्थान में विश्वास के अजेय किले हैं। इसमें दो बिंदु शामिल हैं।

पहला बिंदु

हम परलोक में विश्वास के अनेक तर्कों में से केवल चार का ही वर्णन करेंगे, क्योंकि यह मानव के सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन का आधार और आधार है, तथा समस्त सुख और उपलब्धियों का आधार है।

पहला तर्क: बच्चे मानवता का एक तिहाई हिस्सा बनाते हैं। वे मृत्यु को सहन नहीं कर सकते, जो उन्हें एक भयानक त्रासदी लगती होगी, जब तक कि यह स्वर्ग के विचार से प्रभावित न हो, जो उनकी कमज़ोर और नाज़ुक आत्माओं को आध्यात्मिक शक्ति देता है। यह उन्हें उनकी प्रकृति की कमज़ोरी के बावजूद, खुशी से जीने की आशा देता है। स्वर्ग को ध्यान में रखते हुए, वे कह सकते हैं: "मेरी छोटी बहन मर गई है और स्वर्ग में एक पक्षी बन गई है। वह वहाँ उड़ रही है और हमसे बेहतर जीवन का आनंद ले रही है।" यदि वे ऐसा नहीं कर सकते, तो उनके आस-पास के लोगों की मृत्यु के बारे में उनकी जागरूकता उन्हें अभिभूत कर देगी: यह उन्हें कुचल देगी

उनकी प्रतिरोध क्षमता और आंतरिक शक्ति को नष्ट कर देता है, उनकी आंखों और सभी आंतरिक क्षमताओं, हृदय, मन और आत्मा को रुला देता है, और उन्हें सबसे दयनीय और व्याकुल प्राणियों में बदल देता है।

दूसरा तर्क: बुज़ुर्गों की संख्या मानवता का एक तिहाई है । वे कब्र को सहन कर सकते हैं, जो उनसे कभी दूर नहीं होती, केवल परलोक में विश्वास करके; यह उन्हें कुछ हद तक सांत्वना देता है, क्योंकि वे अपने जीवन के अपरिहार्य विलुप्त होने को देखते हैं, जिससे वे इतने जुड़े हुए हैं, और यह तथ्य कि उनकी अनमोल और प्यारी दुनिया समाप्त हो गई है। केवल अनंत जीवन की आशा ही उन्हें उस दर्द और निराशा का सामना करने की अनुमति देती है जो मृत्यु और अलगाव की आशंका उनके बच्चे जैसे, नाजुक स्वभाव और आत्मा में पैदा करती है। ऐसी आशा के बिना, हमारे आदरणीय बुजुर्ग जो इतने दया के पात्र हैं, हमारे वे वृद्ध माता-पिता जिन्हें एक शांत और स्थिर हृदय की आवश्यकता है, वे हृदय और आत्मा में इतने व्याकुल और व्यथित हो जाएंगे कि उनकी दुनिया एक अंधेरी जेल और उनका जीवन एक भयानक पीड़ा प्रतीत होगा।

तीसरा तर्क: युवा लोग सामाजिक जीवन का मुख्य आधार और आधार हैं। केवल नर्क का विचार ही उन्हें अपनी भावनाओं और जुनून की तूफानी ऊर्जा, अपनी उग्र, दुष्ट-आदेश देने वाली आत्माओं को विनाशकारीता और उत्पीड़न से नियंत्रित करने और उन्हें समाज के सामूहिक हित की सेवा में मोड़ने में सक्षम बनाता है। इस डर के बिना, और युवावस्था की ऊर्जा के नशे में, वे "शक्ति ही अधिकार है" के सिद्धांत का पालन करेंगे और अपने जुनून और सनक को खुली छूट देंगे। यह दुनिया को कमजोर और शक्तिहीन लोगों के लिए नर्क में बदल देगा; यह मानव जीवन को जानवरों के स्तर तक गिरा देगा।

चौथा तर्क: परिवार हमारे सांसारिक जीवन का सबसे महत्वपूर्ण केंद्र है; यह हमारा सबसे बुनियादी संसाधन है, और हमारे सांसारिक सुख का स्वर्ग , घर और गढ़ है। प्रत्येक व्यक्ति का घर उसकी अपनी छोटी दुनिया है। हमारे घरों और परिवारों की जीवंतता और खुशी ईमानदार और समर्पित सम्मान, सच्ची दयालुता और आत्म-त्याग करने वाली करुणा पर निर्भर करती है। यह सब, बदले में, शाश्वत मित्रता और संगति पर निर्भर करता है; यह एक अमर बंधन पर निर्भर करता है, साथ ही इस विश्वास पर भी कि माता-पिता और बच्चों, भाइयों और बहनों, और पति और पत्नियों के बीच भावनाएँ और संबंध हमेशा के लिए रहेंगे।

उदाहरण के लिए, एक आदमी कह सकता है: "मेरी पत्नी अनंत दुनिया में मेरी शाश्वत साथी होगी। भले ही वह अब बूढ़ी हो गई हो और पहले की तरह शारीरिक रूप से सुंदर न हो, लेकिन उसकी शाश्वत सुंदरता परलोक में खुद को दिखाएगी। अनंत काल में उस साथ के लिए, मैं हर त्याग करूँगा और इस दुनिया में जितना हो सके उतना उस पर दया करूँगा।" इस प्रकार वह अपनी वृद्ध पत्नी को प्यार, देखभाल और करुणा के साथ देख सकता है जैसे कि वह एक खूबसूरत हूरी हो। एक रिश्ता जो शारीरिक निकटता के कुछ घंटों के बाद स्थायी अलगाव में समाप्त हो जाता है-

यह केवल मामूली, क्षणिक और असुरक्षित हो सकता है: यह केवल शारीरिक आकर्षण और यौन इच्छा के आधार पर एक सतही प्रेम और सम्मान पैदा करेगा। अंततः, अन्य हित और शक्तिशाली भावनाएँ उत्पन्न होंगी और उस सम्मान और चिंता को पराजित करके, सांसारिक स्वर्ग को पृथ्वी पर नरक में बदल देंगी।

पुनरुत्थान और परलोक के अनेक लाभों में से एक है-

मानव सामाजिक जीवन से संबंधित है। यदि इन चारों के साथ सादृश्य द्वारा कई अन्य संबंधित पहलुओं और लाभों का अनुमान लगाया जाए, तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि पुनरुत्थान की सच्चाई का एहसास और उसका घटित होना उतना ही निश्चित है जितना कि हमारा अपना
अस्तित्व और हमारी सार्वभौमिक ज़रूरतें। यह इस तर्क से भी ज़्यादा स्पष्ट होगा कि पेट की पोषण की ज़रूरत भोजन के अस्तित्व की गवाही देती है। अगर पुनरुत्थान और परलोक न होता, तो मनुष्य होने का उच्च दर्जा - एक ऐसा दर्जा जो सृष्टि के भीतर इतना महत्वपूर्ण, ऊंचा और महत्वपूर्ण है -

यह उस शव के समान हो जाएगा जिसे सूक्ष्मजीव खा जाएंगे। मानवता के व्यवस्थित जीवन, नैतिकता और समाज से जुड़े लोगों को इस मामले पर ध्यान देना चाहिए।
यदि पुनरुत्थान को नकार दिया गया तो वे इससे उत्पन्न शून्यता को किससे भरेंगे तथा मानवता के गहरे घावों को किससे भरेंगे?

दूसरा बिन्दु

पुनरुत्थान की सच्चाई के असंख्य प्रमाणों के बीच, हमने विश्वास के अन्य स्तंभों द्वारा दिए गए समर्थन को संक्षेप में प्रस्तुत किया है। यह इस प्रकार है:

• सभी चमत्कार जो मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की पैगम्बरी की पुष्टि करते हैं, उनकी पैगम्बरी के सभी प्रमाण और उनकी सत्यनिष्ठा के सभी प्रमाण पुनरुत्थान की सच्चाई की पुष्टि करते हैं और उसकी गवाही देते हैं। क्योंकि सर्वशक्तिमान ईश्वर की एकता के बाद, उस महान व्यक्ति ने अपने जीवन के दौरान जो भी दावे किए, वे सभी पुनरुत्थान पर केंद्रित थे।

• इसके अलावा, अन्य सभी पैगम्बरों के सभी चमत्कार और प्रमाण जो उनकी पैगम्बरी होने की पुष्टि करते हैं और मानवता से इसकी पुष्टि करने का आग्रह करते हैं, इसी सत्य की गवाही देते हैं।

• इसके अलावा, सभी संकेत और प्रमाण जो सभी दिव्य शास्त्रों के ईश्वरीय-लेखकत्व को स्थापित करते हैं और इसलिए रसूलों की गवाही को पूरी तरह से स्पष्ट करते हैं, इस सत्य की गवाही भी देते हैं। • सभी चमत्कार और प्रमाण जो कुरान की वास्तविकता और सच्चाई को स्थापित करते हैं, वे पुनरुत्थान की सच्चाई की प्राप्ति को भी स्थापित और प्रमाणित करते हैं। कुरान का लगभग एक तिहाई हिस्सा आख़िरत से संबंधित है: इसके अधिकांश छोटे सूरे शक्तिशाली आयतों से शुरू होते हैं जो इसे याद दिलाते हैं,

और इसकी सच्चाई सैकड़ों श्लोकों में स्पष्ट या अस्पष्ट रूप से व्यक्त की गई है। उदाहरण के लिए:

जब सूर्य मुड़ा हुआ होगा। (81:1)

ऐ लोगो! अपने रब की अवज्ञा से बचो, क्योंकि अन्तिम प्रलय का प्रकोप बहुत भयानक है। (22:1)

जब धरती बहुत ज़ोर से काँप उठेगी (99:1)

जब आकाश खुल जायेगा (82:1)

जब आकाश फट जायेगा (84:1)

वे एक दूसरे से क्या पूछ रहे हैं? (78:1)

क्या उस भयानक घटना का विवरण तुम्हारे पास पहुँचा है? (88:1)

जिस प्रकार लगभग बीस सूरों की प्रारंभिक आयतें कहती हैं कि पुनरुत्थान का सत्य सृष्टि की सबसे महत्वपूर्ण और अनिवार्य वास्तविकता है, उसी प्रकार कई अन्य आयतें भी उसी सत्य की पुष्टि करती हैं और अन्य प्रमाण प्रदान करती हैं।

यह देखते हुए कि पुनरुत्थान की सच्चाई मनुष्य में स्थापित हो चुकी है-

कुरान की अनगिनत दलीलों और प्रमाणों से यह बात दिन के उजाले की तरह स्पष्ट हो गई है - एक ऐसी किताब जिसकी हर आयत ने धार्मिक और प्राकृतिक विज्ञानों में असंख्य परिणाम दिए हैं - क्या इस सत्य का इनकार करना सूर्य के अस्तित्व को नकारने के समान नहीं होगा? क्या ऐसी बात बेतुकी नहीं होगी?

एक सम्राट कभी-कभी अपनी सेना को सिर्फ़ अपने किसी कथन की सच्चाई साबित करने के लिए युद्ध में भेजता है। तो क्या यह कल्पना की जा सकती है कि उस सबसे पवित्र और गौरवशाली सम्राट के अनगिनत शब्दों, वादों और धमकियों की सच्चाई का खंडन हो? क्या यह संभव है कि वे झूठे हों? उस गौरवशाली सम्राट का एक संकेत - यानी कुरान - पुनरुत्थान की सच्चाई को साबित करने के लिए पर्याप्त है, खासकर यह देखते हुए कि इसने तेरह शताब्दियों से अधिक समय तक असंख्य आत्माओं, बुद्धि, दिलों और आत्माओं पर शासन किया है और उन्हें पूर्ण सत्य और धार्मिकता में शिक्षित किया है। हज़ारों स्पष्ट प्रमाणों के साथ इस सत्य को प्रदर्शित करने के बाद, हम इसके अलावा और क्या कह सकते हैं कि जो लोग इस सत्य को नकारना जारी रखते हैं वे नरक की आग में दंड के पात्र हैं? क्या यह शुद्ध न्याय नहीं होगा?

इसके अलावा, सभी दिव्य शास्त्र और पवित्र पुस्तकें

कुरान, जिनमें से प्रत्येक एक विशिष्ट युग और समय को संबोधित किया गया था, स्वीकार करते हैं

पुनरुत्थान की सच्चाई - एक सच्चाई जिसे कुरान ने हर समय संबोधित करते हुए विस्तार से और स्पष्ट तर्कों के साथ समझाया और स्थापित किया है। यहां तक कि उनके संक्षिप्त और कभी-कभी सांकेतिक स्पष्टीकरण भी इसे इतनी मजबूती से पुष्ट करते हैं कि वे कुरान की शिक्षाओं का एक अटल समर्थन करते हैं।

हम यहाँ प्रार्थना के ग्रंथ, तीसरी किरण से लिया गया एक तर्क प्रस्तुत करते हैं। यह तर्क, जिसमें विश्वास के अन्य स्तंभों द्वारा अंतिम दिन में विश्वास की गवाही शामिल है - विशेष रूप से, ईश्वर के दूतों और पुस्तकों में विश्वास - सशक्त है और सभी संदेह को समाप्त करने के लिए पर्याप्त हो सकता है। इस प्रार्थना में, हम कहते हैं:

> हे मेरे दयालु प्रभु! महानतम रसूल की शिक्षा और बुद्धिमतापूर्ण कुरान की शिक्षा के माध्यम से मैंने यह समझ लिया है कि सभी ईश्वरीय पुस्तकें और पैगंबर - मुख्य रूप से कुरान और आपके महान रसूल - यह दावा करते हैं और प्रमाणित करते हैं कि आपके सभी महिमा और कृपा के नाम, जिनके अनुकरणीय प्रकटीकरण पूरे ब्रह्मांड में देखे जाते हैं, अनंत काल के धाम में और भी अधिक उज्ज्वल रूप में प्रकट होते रहेंगे; कि आपकी कृपा और आशीर्वाद, जिनके दयालु प्रकटीकरण और नमूने इस क्षणभंगुर दुनिया में देखे जाते हैं, अधिक उज्ज्वल रूप में खुशी के शाश्वत क्षेत्र में बने रहेंगे; और जो लोग उनसे प्रेम करते हैं और जो उन्हें इस संक्षिप्त सांसारिक जीवन में आनंद के साथ पहचानते हैं और प्रेम से उनकी खोज करते हैं, वे अनंत काल तक उनके साथ रहेंगे।
>
> साथ ही, उनकी नबी होने के अनगिनत प्रमाणों के आधार पर, जिनमें उनके सैकड़ों स्पष्ट चमत्कार शामिल हैं, और सैकड़ों निर्णायक प्रमाणों के आधार पर जो आपके द्वारा उतारे गए सभी शास्त्रों में मौजूद हैं, लेकिन मुख्य रूप से ज्ञानपूर्ण कुरान में, साथ ही उन वादों और धमकियों पर जो आप उनमें बार-बार दोहराते हैं; और आपके सभी पवित्र गुणों और आवश्यक विशेषताओं जैसे शक्ति, दया, अनुग्रह, बुद्धि, महिमा और अनुग्रह पर भरोसा करते हुए, जिनके लिए पुनरुत्थान की आवश्यकता होती है, और आपकी महिमा की गरिमा और आपके प्रभुत्व के प्रभुत्व पर; सभी प्रकाशवान आत्मा वाले नबी, जिनमें सबसे पहले ईश्वर के सबसे महान रसूल (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) शामिल हैं, और सभी प्रकाशवान हृदय वाले संत और प्रबुद्ध बुद्धि वाले शुद्ध, संत विद्वान, जो अपने आध्यात्मिक उद्घाटनों और अवलोकनों पर भरोसा करते हैं, साथ ही ज्ञान की निश्चितता और दृष्टि या अवलोकन की निश्चितता के बारे में अपने विश्वासों पर भरोसा करते हैं - मानवता के ये सभी प्रमुख सदस्य जिन्न और मानव जाति दोनों को मार्गदर्शन प्राप्त लोगों के लिए शाश्वत खुशी की खुशखबरी देते हैं, और वे चेतावनी देते हैं कि गुमराह लोगों के लिए नरक प्रतीक्षा कर रहा है, जबकि वे स्वयं इस खुशी और नरक पर विश्वास करने वाले और इसके गवाह बनने वाले पहले व्यक्ति हैं।

हे सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ! हे दयालु और दयावान! हे दयालु और दयावान! हे सर्वदयालु जो अपने वादों का पूर्णतः सच्चा है!

हे गरिमा, ऐश्वर्य और महिमा से परिपूर्ण सर्वव्यापक!

पुनरुत्थान लाने में विफलता का अर्थ होगा आपके बहुत से सच्चे मित्रों का खंडन करना, आपकी बार-बार की गई धमकियों और वादों को तोड़ना, और आपके पवित्र गुणों और आवश्यक विशेषताओं को नकारना, जिससे वह अधूरा रह जाता है जो आपके प्रभु के रूप में आपके प्रभुत्व की प्रकृति द्वारा अपेक्षित है; इसका अर्थ होगा आपके उन असंख्य सेवकों की परलोक की आशाओं और प्रार्थनाओं को अस्वीकार करना और व्यर्थ करना जिनसे आप प्रेम करते हैं, और जो आपकी पुष्टि और आज्ञापालन करके स्वयं को आपका प्रिय बनाते हैं; इसका अर्थ यह भी होगा कि पुनरुत्थान को अस्वीकार करने में अविश्वास और पथभ्रष्ट लोगों की पुष्टि करना, जो अविश्वास और अवज्ञा के माध्यम से और आपके वादों में आपका खंडन करके, आपकी महानता का अपमान करते हैं, आपकी महिमा की गरिमा पर हमला करते हैं, आपकी दिव्यता के सम्मान को ठेस पहुँचाते हैं और आपके प्रभुत्व की करुणा का अपमान करते हैं। निस्संदेह आप ऐसी विफलता से पूरी तरह मुक्त हैं और उससे असीम रूप से ऊपर हैं! मैं आपके असीम न्याय, अनुग्रह और दया को ऐसी असीम कुरूपता और अधर्म से सर्वथा ऊपर घोषित करता हूँ।

हम पूरे दिल से मानते हैं कि सभी पैगम्बर - आपके एक लाख से ज़्यादा सच्चे संदेशवाहक और आपके राज्य के संदेशवाहक - और पवित्र, शुद्ध विद्वान और संत आपकी दया और परोपकार के अनन्त खजाने और ज्ञान पर आधारित निश्चितता, और दर्शन पर आधारित निश्चितता, और अनुभव पर आधारित निश्चितता के साथ स्थायित्व की दुनिया में आपके सभी-सुंदर नामों की असाधारण उत्कृष्ट अभिव्यक्तियों के बारे में अपनी गवाही में बिल्कुल सही हैं। उन्होंने जो संकेत दिया है वह सच है और वास्तविकता के अनुरूप है। वे यह भी मानते हैं और आपके अन्य सेवकों को सिखाते हैं कि आपके नाम की सबसे बड़ी किरण परम सत्य है, जो सभी सत्यों का मूल, सूर्य और संरक्षक है, पुनरुत्थान का यह सबसे बड़ा सत्य है।

हे प्रभु! उनकी शिक्षाओं के कारण और उनके सम्मान में, हमें और रिसाले-ए-नूर के सभी छात्रों को पूर्ण विश्वास और हमारे सांसारिक जीवन का सुखद अंत प्रदान करें। और हमें उनकी सिफ़ारिश प्राप्त करने की अनुमति दें। आमीन!

सभी तर्क और प्रमाण जो क़ुरआन और अन्य सभी ईश्वरीय पुस्तकों की सत्यता को स्थापित करते हैं, साथ ही साथ चमत्कार और प्रमाण जो मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और अन्य सभी नबियों की नबूवत को स्थापित करते हैं, वे भी आख़िरत की सच्चाई और वास्तविकता की ओर संकेत करते हैं; वास्तव में, ईश्वर की एकता के बाद, आख़िरत की वास्तविकता वह शिक्षा है जिस पर उन्होंने सबसे अधिक जोर दिया। इसी प्रकार, अधिकांश तर्क

और अनिवार्य रूप से विद्यमान प्राणी के अस्तित्व और एकता के प्रमाण भी सुख के निवास के अस्तित्व और प्रकटन की पुष्टि करते हैं - वह अनंत काल का क्षेत्र जहाँ ईश्वर का प्रभुत्व और दिव्यता सबसे पूर्ण रूप से प्रकट होगी। अनिवार्य रूप से विद्यमान एक के अस्तित्व के लिए, साथ ही साथ उसके अधिकांश नाम, और उसके सभी गुण और उसके आवश्यक लक्षण जैसे कि प्रभुत्व, दिव्यता, अनुग्रह, बुद्धि और न्याय निश्चित रूप से एक शाश्वत क्षेत्र - परलोक - और उचित दंड और पुरस्कार के लिए मृतकों के पुनरुत्थान के अस्तित्व को आवश्यक बनाते हैं।

चूँकि एक सर्व-शाश्वत ईश्वर विद्यमान है, तो निश्चित रूप से एक परलोक भी है, जो उसकी दिव्य संप्रभुता का शाश्वत केंद्र है। चूँकि हम देखते हैं कि पूरे ब्रह्मांड में एक अत्यंत भव्य, बुद्धिमान, देखभाल करने वाला, उद्देश्यपूर्ण और पूर्ण प्रभुत्व विद्यमान है, तो निश्चित रूप से सुख का एक शाश्वत क्षेत्र होना चाहिए, जिसमें प्रवेश दिया जा सके, ताकि उस प्रभुत्व की महिमा समाप्त न हो, उसकी बुद्धि व्यर्थ न हो जाए, और विश्वासघात और उत्पीड़न से उसकी देखभाल नष्ट न हो जाए।

चूँकि ये अनंत दृश्यमान उपहार, आशीर्वाद, दयालुता और उदारता और दया के उदाहरण मृत हृदय और मन को यह तथ्य दिखाते हैं कि अदृश्य के पर्दे से परे एक दयालु और दयालु व्यक्ति मौजूद है, इसलिए एक शाश्वत दुनिया में एक शाश्वत जीवन होना आवश्यक है, क्योंकि यह ऐसी दुनिया का अस्तित्व है जो दिखा सकता है कि उसकी दिव्य कृपाएँ व्यर्थ नहीं हैं, कि उसका दान करने का कार्य वास्तव में छल का कार्य नहीं है, कि उसका अपने सेवकों पर अनुग्रह करना केवल शत्रुता के योग्य नहीं है, कि उसकी दया वास्तव में यातना नहीं है, और कि उसकी उदारता वास्तव में विश्वासघात का कार्य नहीं है। इसके अलावा, अनंत काल और चिरस्थायीता सभी उपहारों और आशीर्वादों को उनके सच्चे और पूर्ण रूप को ग्रहण करने की अनुमति देगी।

और हर वसंत में धरती के संकरे पन्ने पर एक शक्तिशाली कलम हमारी आँखों के सामने एक के अंदर एक अनगिनत किताबें बिना किसी गलती के लिख देती है। उस कलम के मालिक ने बार-बार वादा किया है: "मैं इस जगह से कहीं ज़्यादा विशाल जगह पर एक सुंदर, अविनाशी किताब लिखूँगा और इस संकरी और उलझी हुई वसंत की किताब से कहीं ज़्यादा आसानी से, जो इतने संकरे पन्ने पर लिखी गई है, और मैं तुम्हें इसे पढ़ने की इजाज़त दूँगा।" उसने अपने सभी आदेशों में इस किताब का ज़िक्र किया है। इस लिहाज़ से इसका मसौदा पहले ही लिखा जा चुका है और क़ियामत के दिन इसे इसके सभी परिवर्धनों और फ़ुटनोटों के साथ लिख दिया जाएगा। और लोगों के सभी आमाल इसमें शामिल किए जाएँगे।

इसके अलावा, पृथ्वी का एक विशेष महत्व है। इसके निवासियों की बहुलता और इस तथ्य के कारण कि यह असंख्य जीवों और आत्माओं वाले प्राणियों की निरंतर बदलती प्रजातियों का निवास, उत्पत्ति, कार्यस्थल और प्रदर्शन और पुनरुत्थान का स्थान है, यह ब्रह्मांड का हृदय, केंद्र और मूल है; वास्तव में, यह ब्रह्मांड के निर्माण का मूल कारण है। अपने छोटे आकार के बावजूद, स्वर्गीय आदेश इसे विशाल स्वर्ग के बराबर मानते हैं, भगवान को स्वर्ग का स्वामी बताते हैं और

पृथ्वी। और मानवता है, जो पृथ्वी पर प्रभुत्व रखती है। हम इसके अधिकांश प्राणियों पर प्रभुत्व रखते हैं; हम लगभग सभी सजीव प्राणियों को अपने अधीन रखते हैं और अपने इर्द-गिर्द इकट्ठा करते हैं, और अपनी ज़रूरतों और इच्छाओं के अनुसार अधिकांश सृष्टि को व्यवस्थित, प्रदर्शित और अलंकृत करते हैं। हम सभी चीज़ों को उनकी अद्भुत विविधता में सूचीबद्ध और वर्गीकृत करते हैं, प्रत्येक प्रजाति को उसके अपने स्थान पर, और इस तरह से कि सभी लोग और जिन्न, आकाश और ब्रह्मांड के सभी निवासी, उसे प्रशंसा के साथ देखते हैं; यहाँ तक कि ब्रह्मांड का स्वामी भी उस पर अपनी प्रशंसा भरी नज़र डालता है। इस प्रकार हमारा बहुत उच्च मूल्य और महत्व है, और अपनी कलाओं और विज्ञानों के माध्यम से हम दिखाते हैं कि हम ब्रह्मांड और उसके सबसे महत्वपूर्ण और मूल्यवान फल के निर्माण का कारण हैं। हमें पृथ्वी का प्रशासन करने और अपने निर्माता के नियमों के अनुसार इसे विकसित करने के लिए चुना और नियुक्त किया गया है। चूँकि हम इस दुनिया में अपने निर्माता के चमत्कारी कार्यों को सबसे बेहतरीन तरीके से प्रदर्शित और व्यवस्थित करते हैं, इसलिए हमें हमारे विद्रोह और अविश्वास के बावजूद यहाँ राहत दी जाती है, और हमारी सज़ा स्थगित कर दी जाती है। हमारे द्वारा की गई सेवाओं के कारण हमें अस्थायी प्रवास की अनुमति दी गई है और सफलता का आशीर्वाद दिया गया है।

हालाँकि, इन गुणों से संपन्न होने के बावजूद, हम वास्तव में अपनी प्रकृति और स्वभाव की माँगों को पूरा करने के मामले में बेहद कमज़ोर और नपुंसक हैं: हमारी असंख्य ज़रूरतें हैं और हम असंख्य पीड़ाओं के अधीन हैं। और फिर भी एक सबसे शक्तिशाली, बुद्धिमान और देखभाल करने वाला शासक हमारी ज़रूरतों को हमारी शक्ति और इच्छा से परे तरीके से पूरा करता है। वह ग्रह को हर तरह के खनिज और भोजन से भरा एक भंडार बनाता है जिसकी हमें ज़रूरत है और वह सभी सामान जो हम चाहते हैं। इस प्रकार शासक पोषण करता है और देखभाल करता है

कृपया हमें आशीर्वाद दें और हमारी इच्छाएं पूरी करें।

जो प्रभु यह सब करता है, वह हमसे प्रेम करता है और स्वयं को हमारा प्रिय बनाता है।

वह शाश्वत है और उसके पास शाश्वत संसार हैं। वह सभी काम न्याय और बुद्धि से करता है। लेकिन इस सर्व-शाश्वत शासक की संप्रभुता की महिमा और उसके शासन की शाश्वतता इस क्षणभंगुर, अस्थायी दुनिया के क्षणभंगुर जीवन के भीतर समाहित नहीं की जा सकती। इसके अलावा, बहुत से विशाल अन्याय-

मानवता द्वारा किए गए अपराध, जो ब्रह्मांड के बुद्धिमान क्रम, न्यायपूर्ण संतुलन और सामंजस्यपूर्ण सौंदर्य के प्रतिकूल और प्रतिकूल हैं, इस दुनिया में दण्डित नहीं होते, जैसा कि असंख्य लोगों द्वारा अपने उपकारकर्ता और प्रदाता के प्रति विद्रोह, विश्वासघात, इनकार और अविश्वास के साथ होता है। क्रूर और विश्वासघाती लोग आकर्षक जीवन जीते हुए प्रतीत होते हैं, जबकि उत्पीड़ित और निराश लोग दयनीय जीवन जीते हैं। लेकिन पूर्ण न्याय, जिसके निशान पूरे ब्रह्मांड में देखे जा सकते हैं, अपने स्वभाव से इस धारणा के बिल्कुल विपरीत है कि क्रूर और विश्वासघाती - जो उत्पीड़ित और हताश लोगों की तरह ही मरते हैं - को सर्वोच्च न्यायाधिकरण में अपने अपराधों के लिए कभी भी पुनर्जीवित नहीं किया जाना चाहिए।

चूँकि ब्रह्माण्ड के स्वामी ने ब्रह्माण्ड में से पृथ्वी को चुना है,

धरती से कविता और मानवजाति को चुना है, जिससे दोनों को उच्च पद और महत्व मिला है। मानवजाति में से, उसने पैगम्बरों, संतों और शुद्ध, संत विद्वानों को चुना है - सच्चे मानव जो सृष्टि के भगवान के रूप में उसके उद्देश्यों के अनुरूप हैं और विश्वास और समर्पण के माध्यम से खुद को उसके द्वारा प्रिय बनाते हैं। उसने उन्हें दोस्त और अभिभाषक के रूप में लिया है, उन्हें चमत्कारों और दिव्य समर्थन के साथ सम्मानित किया है, जबकि उनके विरोधियों को ऊपर से क्रोधपूर्ण प्रहारों से दंडित किया है। और इन प्यारे और सबसे मूल्यवान में से

दोस्तों उसने अपने नेता और गर्व के स्रोत को चुना है, पैगम्बर मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। कई शताब्दियों तक उसने अपनी रोशनी से पृथ्वी के आधे हिस्से और मानवता के पांचवें हिस्से को रोशन किया है। मानो ब्रह्मांड केवल उसके लिए बनाया गया था, इसके सभी महान उद्देश्य उसके, उसके धर्म और उसके द्वारा प्रकट कुरान के माध्यम से प्रकट होते हैं। हालाँकि वह अपने द्वारा की गई सेवाओं के अमूल्य मूल्य के लिए अनंत पुरस्कार का हकदार था - ऐसी सेवाएँ जिन्हें करने में आम लोगों को हज़ारों साल लग जाते - उसे मुश्किलों और संघर्ष में बिताए गए साठ-तीन साल से अधिक का संक्षिप्त जीवन नहीं दिया गया। तो क्या यह बिल्कुल भी संभव है कि वह अपने सभी साथियों के साथ पुनर्जीवित न हो -

अन्य पैगम्बरों और साथियों के लिए? या कि उसे अभी भी आत्मा में जीवित नहीं रहना चाहिए? या कि उन्हें मर जाना चाहिए और अनंत विलुप्ति में गायब हो जाना चाहिए? संपूर्ण ब्रह्मांड और वह सत्य जिस पर यह आधारित है, मांग करता है

अपने अस्तित्व को पुनः प्राप्त करो, तथा जो कुछ भी है उसके स्वामी से अपना जीवन मांगो।

सर्वोच्च चिह्न, सातवीं किरण में 33 शक्तिशाली तर्कों ने यह स्थापित किया है कि ब्रह्मांड एक ही सत्ता की कृति और संपत्ति है। उन्होंने स्वयं-सिद्ध रूप से उसकी एकता और एकात्मता को भी प्रदर्शित किया है, जो उसकी सभी परिपूर्णताओं को जन्म देती है। उसकी एकता और एकात्मता के माध्यम से

एकता से सभी प्राणी उसके कर्तव्य-बद्ध सैनिक और पूर्णतः आज्ञाकारी अधिकारी बन जाते हैं। और परलोक के माध्यम से, उसकी पूर्णताएँ हमेशा दोष रहित रहती हैं; आने वाले संसार के अस्तित्व के कारण, उसका परम न्याय कभी भी पूर्ण विश्वासघात में नहीं बदलेगा, उसकी सार्वभौमिक बुद्धि मूर्खतापूर्ण व्यर्थता में नहीं बदलेगी, या उसकी सर्व-समावेशी दया तुच्छ पीड़ा में नहीं बदलेगी। परलोक के कारण, उसकी सर्व-प्रतिष्ठित शक्ति नपुंसकता में बदलने से बच जाती है।

बिना किसी संदेह के, और जैसा कि चर्चा किए गए सार्वभौमिक सत्यों द्वारा आवश्यक है - ईश्वर के अस्तित्व और एकता के प्रमुख सत्य से उत्पन्न होने वाले कई सत्यों में से - पुनरुत्थान होगा। मृतकों को पुनर्जीवित किया जाएगा और सर्वोच्च सभा के स्थान पर एक साथ इकट्ठा किया जाएगा, और पुरस्कार और दंड का क्षेत्र अपने द्वार खोल देगा।

यह सब इसलिए होगा ताकि पृथ्वी का वास्तविक महत्व और केंद्रीयता, तथा मानवता का सही महत्व और मूल्य सही मायने में महसूस किया जा सके। यह इसलिए होगा ताकि सर्वज्ञ शासक, जो हमारा और हमारे ग्रह का निर्माता और स्वामी है, का न्याय, बुद्धि, दया और संप्रभुता पूरी तरह और हमेशा के लिए स्थापित हो। यह इसलिए होगा ताकि सर्व-स्थायी प्रभु के सभी सच्चे मित्रों और उत्साही प्रेमियों को शाश्वत विनाश से बचाया जा सके, और उनमें से सबसे करीबी और प्रिय, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, उन पवित्र सेवाओं के लिए पुरस्कृत हो सकें जिनसे उन्होंने दुनिया को सम्मानित किया है। और सर्व-शाश्वत प्रभु की पूर्णताएं खुद को दोष रहित दिखाएंगी, उनकी शक्ति खुद को अक्षमता से रहित दिखाएगी, उनकी बुद्धि मूर्खता से रहित होगी और उनका न्याय उत्पीड़न से रहित होगा।

संक्षेप में, परलोक इसलिए अस्तित्व में है क्योंकि ईश्वर अस्तित्व में है।

ऊपर बताए गए आस्था के तीन स्तंभ - ईश्वर के अस्तित्व और एकता में विश्वास, पैगम्बरत्व में विश्वास और कुरान तथा ईश्वर द्वारा प्रकट किए गए अन्य धर्मग्रंथों में विश्वास - पुनरुत्थान की सच्चाई और वास्तविकता की गवाही देते हैं। इसी तरह, आस्था के शेष दो स्तंभ - फ़रिश्तों में विश्वास और ईश्वरीय आदेश और नियति में विश्वास - भी पुनरुत्थान की आवश्यकता रखते हैं और उस शाश्वत क्षेत्र की वास्तविकता की गवाही देते हैं। हम इस प्रकार स्पष्ट करेंगे:

सभी प्रमाण जो फ़रिश्तों के अस्तित्व और उनकी पूजा के कर्तव्यों को स्थापित करते हैं, साथ ही उनके बारे में असंख्य मानवीय अवलोकन और उनके साथ की गई बातचीत, आत्माओं की दुनिया, अदृश्य की दुनिया, परलोक, स्थायित्व की दुनिया और खुशी के निवास और नरक के अस्तित्व को भी प्रमाणित करते हैं, जो भविष्य में मनुष्यों द्वारा आबाद किए जाएंगे।

प्राणी और जिन्न। क्योंकि फ़रिश्ते ईश्वरीय अनुमति से इन दुनियाओं को देखने और उनमें प्रवेश करने में सक्षम हैं। सभी फ़रिश्ते जो ईश्वरीय सिंहासन के करीब हैं और जो मानवता के साथ संवाद करते हैं, जैसे कि गेब्रियल, इन निवासों में अपने अस्तित्व और अपनी यात्राओं की रिपोर्ट करने में एकमत हैं। भले ही हम खुद भी इन स्थानों पर हों

उदाहरण के लिए, जो लोग कभी अमेरिका नहीं गए, वहाँ से लौटने वाले यात्रियों की रिपोर्ट हमें इसके अस्तित्व के बारे में कोई संदेह नहीं छोड़ती। इसी तरह, फ़रिश्तों द्वारा दी गई रिपोर्ट, जिनके पास कई निर्विवाद कथनों का अधिकार है, हमें परलोक के शाश्वत क्षेत्र के अस्तित्व के बारे में कोई संदेह नहीं छोड़ना चाहिए-

स्वर्ग और नर्क के विषय में।

छब्बीसवें वचन (ईश्वरीय आदेश और नियति पर) में निहित सभी तर्क जो विश्वास के स्तंभ को स्थापित करते हैं, वे पुनरुत्थान की भी पुष्टि करते हैं, इस दुनिया में हमारे सभी दर्ज किए गए कर्मों के आने वाले संसार में प्रकट होने की, और उन्हें सर्वोच्च तराजू में तौला जाने की। ब्रह्मांड में स्पष्ट व्यवस्था, नियमितता और संतुलन इस तथ्य का संकेत देते हैं कि सभी चीजों का जीवन पहले से दर्ज था और उस शाश्वत कार्यक्रम के अनुसार जीया गया था।

इसके अलावा, प्रत्येक सजीव प्राणी का जीवन इतिहास उसकी स्मृति या उसके बीज और अन्य पट्टिका-जैसे रूपों में अंकित होता है; आत्मा से संपन्न प्रत्येक प्राणी, विशेष रूप से मनुष्य के कर्म, संरक्षित पट्टिकाओं पर दर्ज किए जाते हैं। ऐसा सर्वव्यापी निर्धारण, ऐसा बुद्धिमानीपूर्ण और उद्देश्यपूर्ण आदेश, ऐसा विस्तृत और सटीक अभिलेखन और अभिलेखन केवल न्याय के दिन सर्वोच्च न्यायाधिकरण में स्थायी पुरस्कार या दंड देने में सक्षम होने के लिए मौजूद है। यदि ऐसा न होता, तो ऐसी व्यापक, सावधानीपूर्वक अभिलेखन और पंजीकरण का कोई उद्देश्य या अर्थ नहीं होता; यह भावना और वास्तविकता के विपरीत होता। इसके अलावा, यदि पुनरुत्थान नहीं होता, तो ब्रह्मांड की पुस्तक में दिव्य नियति की कलम द्वारा अंकित सभी सावधानीपूर्वक स्थापित अर्थ नष्ट हो जाते।

यह तो ब्रह्माण्ड के अस्तित्व को नकारने के समान होगा।

संक्षेप में, फिर, आस्था के पाँच स्तंभ या लेख और उनके प्रमाण पुनरुत्थान की गवाही देते हैं और उसे ज़रूरी बनाते हैं: वे चाहते हैं कि आख़िरत का साम्राज्य प्रकट हो और अपने दरवाज़े खोले। ऐसा इसलिए है क्योंकि, अपनी विशालता और उदात्तता के अनुरूप, पुनरुत्थान की सच्चाई में इतने मज़बूत और ज़बरदस्त समर्थन हैं कि चमत्कारी क़ुरआन का लगभग एक तिहाई हिस्सा इसे समर्पित है। क़ुरआन इसे - ईश्वर में आस्था के बाद - अपने सभी सत्यों का आधार बनाता है और इसके आधार पर सब कुछ बनाता है।

दसवां प्रमाण:
ईश्वर पर विश्वास और उससे प्रेम तथा उसकी आराधना

उसके नाम में उसकी महिमा है।
ऐसा कुछ भी नहीं है जो उसकी स्तुति से उसकी महिमा को बढ़ाए।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, उसका कोई साझी नहीं, वही प्रभुतावान है, उसी के लिए प्रशंसा है, वही जीवन देता है और मारता है, वही सर्वव्यापक है, वह कभी नहीं मरता, उसके हाथ में सब भलाई है, वह हर चीज़ पर पूर्ण अधिकार रखता है, और उसी की ओर वापसी है।

सुबह और शाम की प्रार्थना के बाद, ग्यारह वाक्यों से मिलकर बने दिव्य एकता के इस प्रतिज्ञान को पढ़ना बहुत पुण्यकारी है। प्रत्येक वाक्य ईश्वर के महानतम नाम के बराबर है, और प्रभुता की एकता के एक अलग पहलू को प्रदर्शित और प्रकट करके मानवता को शुभ समाचार देता है। यह महानतम नामों में से एक को प्रकट करने, दिव्य एकता की भव्यता की किरण और दिव्य एकता की पूर्णता के बराबर है। इस तरह के एक उदात्त सत्य की पूरी व्याख्या के लिए पाठक को द वर्ड्स16 का संदर्भ देते हुए , मैं इसे नीचे संक्षेप में प्रस्तुत करता हूँ।

परिचय

यह निश्चयपूर्वक जान लें कि ईश्वर में विश्वास सृष्टि का सर्वोच्च लक्ष्य और सबसे उत्कृष्ट परिणाम है, और मानवता का सबसे श्रेष्ठ पद ईश्वर का ज्ञान है। जिन्न और मानवता के लिए सबसे उज्ज्वल खुशी और सबसे मधुर उपहार ईश्वर के ज्ञान में निहित ईश्वर का प्रेम है। मानव आत्मा का सबसे शुद्ध आनंद और मानव हृदय का सबसे बड़ा आनंद ईश्वर के प्रेम में निहित आध्यात्मिक परमानंद है। सभी सच्ची खुशियाँ, शुद्ध आनंद, मधुर उपहार और निर्मल सुख ईश्वर के ज्ञान और प्रेम में निहित हैं। जो लोग वास्तव में ईश्वर को जानते हैं और उससे प्रेम करते हैं, वे अनंत खुशी, उपहार, ज्ञान और रहस्य प्राप्त कर सकते हैं। जो नहीं जानते हैं वे अनंत आध्यात्मिक और भौतिक दुख, दर्द और भय से ग्रस्त हैं। यदि किसी व्यक्ति को इस दुनिया पर शासन करने की अनुमति दी जाए, भले ही वह इस दुनिया में अन्य उद्देश्यहीन लोगों के बीच शक्तिहीन, दुखी और असुरक्षित हो, तो उसका वास्तविक मूल्य क्या होगा?

जो लोग अपने मालिक को नहीं पहचानते और अपने मालिक को नहीं खोज पाते, वे दुखी और भ्रमित रहते हैं। लेकिन जो लोग ऐसा करते हैं, और फिर उसकी दया में शरण लेते हैं और उसकी शक्ति पर भरोसा करते हैं, वे इस उजाड़ दुनिया को आराम और खुशी की जगह में बदल देते हैं, एक ऐसी जगह जहाँ वे,परलोक के लिए विनिमय कर सकते हैं।

[16] सईद नूरसी, द वर्ड्स, तुग़रा बुक्स, न्यू जर्सी, 2010.

ग्यारह वाक्यांश

ईश्वरीय एकता की पुष्टि करने वाला प्रत्येक वाक्यांश विश्वासियों के लिए शुभ समाचार लेकर आता है। प्रत्येक संदेश एक इलाज प्रदान करता है, और प्रत्येक इलाज में आध्यात्मिक आनंद निहित होता है।

पहला वाक्य: ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है

यह मानवीय आत्मा के लिए सहायता का एक अटूट स्रोत प्रदान करता है, जो असंख्य आवश्यकताओं और अनगिनत हमलों का शिकार है, दया के एक ऐसे खजाने का द्वार खोलकर जो उसकी आवश्यकताओं को पूरा कर सकता है। आत्मा को इसमें एक सहारा मिलता है जो उसके स्वामी और मालिक, उसके निर्माता और पूजा के सच्चे उद्देश्य को दिखाता और पहचानता है, जो उसे उसके दुश्मनों की बुराई से सुरक्षित रखता है।

यह वाक्यांश हृदय को निराशा से और आत्मा को दुःख से बचाता है।
निरंतर उत्थान और निरंतर खुशी के माध्यम से।

दूसरा वाक्यांश : (वह) एक है

इसका तात्पर्य यह है कि मानव आत्मा, जो ब्रह्मांड की अधिकांश प्रजातियों से जुड़ी हुई है और जिसके कारण दुख और भ्रम से अभिभूत है, उसे ऐसे दुख और भ्रम से मुक्ति के लिए एक शरण और उद्धारकर्ता मिलता है।

सायन.

मानवता के लिए, इस वाक्यांश का अर्थ है: ईश्वर एक है, इसलिए अन्य चीजों से खुद को मत थकाओ। खुद को नीचा मत समझो और उनके प्रति कृतज्ञ मत बनो, या सुरक्षा के लिए उनके सामने खुद को अपमानित मत करो। उनका अनुसरण करके खुद को परेशान मत करो, और उनके सामने कांपो मत, क्योंकि ब्रह्मांड का स्वामी एक है और सभी चीजों की कुंजी और लगाम उसके पास है। उसका आदेश सब कुछ हल कर देता है। उसे पाने का मतलब है कि आप जो चाहें प्राप्त करें और अंतहीन ऋणग्रस्तता और असंख्य भय से मुक्त हो जाएं।

तीसरा वाक्यांश: उसका कोई साझेदार नहीं है

इसका मतलब यह है कि वह एक है और उसकी दिव्यता और संप्रभुता में कोई भागीदार नहीं है, साथ ही उसके आधिपत्य, कार्य और सृजन में भी कोई भागीदार नहीं है। सिद्धांत रूप में, एक सांसारिक राजा की संप्रभुता में कोई भागीदार नहीं हो सकता है, लेकिन फिर भी उसके अधिकारियों को उसकी संप्रभुता के निष्पादन में उसके भागीदार के रूप में माना जा सकता है, क्योंकि वे उसके और उसके विषयों के बीच मध्यस्थ के रूप में कार्य करते हैं। ईश्वर, शाश्वत संप्रभु, को ऐसी कोई आवश्यकता नहीं है और इसलिए उसकी संप्रभुता में कोई भागीदार नहीं है। एक चीज दूसरी चीज में तभी हस्तक्षेप कर सकती है जब वह इसकी अनुमति दे। इसके अलावा, उसकी एकता उसके और उसके प्राणियों के बीच किसी भी मध्यस्थ को अस्वीकार करती है, और इसलिए हर किसी के पास समय और स्थान की परवाह किए बिना उस तक सीधी पहुंच है।

यह वाक्य मानव आत्मा को सूचित करता है कि कोई भी विश्वासी व्यक्ति को उस महान, सर्व-दयालु, सर्व-शक्तिशाली पूर्ण परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करने से नहीं रोक सकता, जो दया और आनंद के भण्डारों का शाश्वत स्वामी है, और अपनी याचिका प्रस्तुत करता है। उसकी दया को पाना और उसकी शक्ति पर भरोसा करना विश्वासियों को पूर्ण सहजता और खुशी प्राप्त करने में सक्षम बनाता है।

चौथा वाक्य: प्रभुता उसी की है

इसका मतलब है कि वह स्वर्ग और पृथ्वी का मालिक है - जिसमें आप भी शामिल हैं - और आप उसके राज्य में काम करते हैं। इसका यह भी मतलब है: यह मत सोचिए कि आप खुद के मालिक हैं, क्योंकि आप अपने मामलों का प्रबंधन खुद नहीं कर सकते। आप अपनी आत्मा और शरीर की ज़रूरतों को पूरा करके और उन्हें आपदाओं से बचाकर नहीं रख सकते। आप थकावट और बुढ़ापे से बच नहीं सकते, क्योंकि आप समय और अन्य क्षरणकारी कारकों के अधीन हैं। इसलिए, बिना वजह दर्द और पीड़ा न सहें। कोई सर्वशक्तिमान और दयालु व्यक्ति हर चीज़ का मालिक है। उसकी शक्ति पर भरोसा करें और उसकी करुणा पर आरोप न लगाएँ। दु:ख और चिंता को त्यागें और राहत स्वीकार करें। अपनी परेशानियों से छुटकारा पाएँ और शांति पाएँ।

इस वाक्यांश का यह भी अर्थ है: यह दुनिया जिससे तुम प्यार करते हो, जिससे तुम जुड़े हुए हो और जिसे तुम अव्यवस्थित देखते हो और जिसे तुम ठीक नहीं कर सकते, वह एक सर्वशक्तिमान और दयालु व्यक्ति की है। इसलिए इसे उसके मालिक को लौटा दो और उसे उसके भरोसे छोड़ दो। अपना कर्तव्य समझो और उसके कामों में दखल मत दो। जिस पर तुम विजय नहीं पा सकते, उससे परेशान मत हो। निश्चिंत रहो, क्योंकि इसका मालिक इसे पूरी तरह से नियंत्रित करता है और अपनी इच्छानुसार इसे संचालित करता है। वह सर्वज्ञ और दयालु है, और बुद्धिमानी से काम करता है। इसलिए जब भी तुम डरो, तो इब्रा-हिम हक्की ऑफ एर्जुरम17 की तरह कहो: "चलो देखते हैं कि मालिक क्या करता है - वह जो भी करता है वह हमेशा सबसे अच्छा होता है - और उसके कामों को पूरे भरोसे के साथ देखो।"

पाँचवाँ वाक्य : सारी प्रशंसा उसी की है

इसका अर्थ यह है कि केवल ईश्वर ही प्रशंसा और प्रशंसा का पात्र है, कि प्रत्येक वस्तु केवल उसी की ऋणी है। सभी वरदान उसके हैं, क्योंकि वे उसके असीम और अक्षय भण्डार से आते हैं।

इस वाक्यांश का अर्थ है: (जो आप अभी आनंद ले रहे हैं) वह कभी समाप्त नहीं होगा, क्योंकि उसकी दया का खजाना कभी खत्म नहीं होगा। आपका (वर्तमान) आनंद कभी समाप्त नहीं होगा, क्योंकि आपको जो भी आनंद दिया जाता है वह अनंत दया का फल है। और उस दया का पेड़ कभी नहीं मर सकता, क्योंकि प्रत्येक समाप्त फल नष्ट हो जाता है।

---

17 इब्राहीम हक्की ऑफ एर्ज़ुरम (1703-1780) 18वीं सदी के ओट-टोमन तुर्की के सबसे प्रमुख व्यक्तियों में से एक थे। वे पूर्वी तुर्की के एर्ज़ुरम और सिर्ट में रहते थे। वे एक विपुल, विश्वकोश सूफी मार्गदर्शक और लेखक थे, जिन्होंने धर्मशास्त्र, नैतिकता, गणित, खगोल विज्ञान और चिकित्सा जैसे कई विषयों पर लिखा। उनका मारीफ़तनामे ("ज्ञान और कौशल की पुस्तक") बहुत प्रसिद्ध है और अभी भी व्यापक रूप से पढ़ा जाता है। (ट्र.)

एक नए से प्रतिस्थापित किया गया। इसके अलावा, आप जो वर्तमान में आनंद ले रहे हैं उसके लिए धन्यवाद और प्रशंसा अर्पित करने से यह सौ गुना बढ़ जाता है, क्योंकि प्रत्येक आनंद, संक्षेप में, ईश्वरीय दया का एक उपकार है और इसलिए यह अपने आप में आनंद से 100 गुना अधिक आनंददायक है। यदि कोई गौरवशाली राजा आपको एक सेब देता है, तो ऐसे शाही उपकार पर आपकी खुशी 100 या 1,000 सेबों के भौतिक आनंद से बेहतर होगी।

इसी प्रकार, यह वाक्यांश 1,000 गुना मधुर आध्यात्मिक आनंद का द्वार खोलता है, क्योंकि यह आपको उदारता के दान पर विचार करने के लिए प्रेरित करता है, जो आपको दाता को पहचानने और उसकी निरंतर बरसने वाली दयालु कृपाओं पर चिंतन करने के लिए प्रेरित करता है।

छठा वाक्य: वही एकमात्र जीवन देता है

इसमें कहा गया है कि केवल वही जीवन देता है, उसे बनाए रखता है, तथा उसकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है, तथा जीवन के उत्कृष्ट लक्ष्य और महत्वपूर्ण परिणाम उससे संबंधित हैं।

यह वाक्य कहता है: जीवन की भारी जिम्मेदारियों को उठाने की चिंता मत करो, या इस बात से बेचैन मत हो कि दुनिया क्षणभंगुर है, या जीवन के तुच्छ सांसारिक फलों को इस बात का पछतावा मत होने दो कि तुम इस दुनिया में आए हो। बल्कि, तुम्हारे अस्तित्व का "जीवन तंत्र" एक जहाज की तरह है जो सदा-जीवित और सदा-स्व-निर्भर परमेश्वर का है, जो जीवन की सभी जरूरतों और खर्चों को पूरा करता है। इसके अलावा, जीवन के असंख्य लक्ष्य इसे कई महत्वपूर्ण परिणामों की ओर निर्देशित करते हैं, जिनमें से लगभग सभी उससे संबंधित हैं। तुम उस जहाज पर सिर्फ एक पतवार हो, इसलिए अपना कर्तव्य ठीक से निभाओ। अपना वेतन पाओ और उसके परिणामस्वरूप होने वाले आनंद से संतुष्ट रहो। उस जहाज की कीमतीता और उसके मूल्यवान लाभों पर विचार करो, और उसके मालिक की उदारता और करुणा की महानता पर विचार करो। आनन्दित होओ और धन्यवाद दो, क्योंकि अपने कर्तव्य को सही ढंग से निभाने से तुम्हारे जीवन के परिणाम, एक तरह से, अच्छे कर्मों के रूप में दर्ज किए जाएँगे जो अनंत काल में तुम्हारे अमर जीवन को सुरक्षित करेंगे।

सातवाँ वाक्यांश: ...और मृत्यु का कारण बनता है

इसका अर्थ यह है कि वह आपको जीवन के कर्तव्यों से मुक्त कर देता है, इस क्षणभंगुर संसार से आपके निवास को शाश्वत में बदल देता है, तथा आपको सेवा के बोझ से मुक्त कर देता है।

यह वाक्यांश घोषणा करता है: शुभ समाचार! मृत्यु विनाश या अस्तित्वहीनता नहीं है, न ही यह शाश्वत अलगाव है और न ही यह बिना किसी लेखक के एक आकस्मिक घटना है। बल्कि सर्वज्ञ और सर्व-दयालु लेखक आपको सेवा से मुक्त कर रहा है, आपका निवास बदल रहा है, और आपको उस शाश्वत खुशी में भेज रहा है जो आपका सच्चा घर है। मृत्यु अंतर-मध्यस्थ दुनिया के साथ मिलन का द्वार है, जहाँ आप अपने 99 प्रतिशत दोस्तों से मिलेंगे।

आठवाँ वाक्य: वह सर्वव्यापी है और कभी नहीं मरता

इसका मतलब यह है कि पूजा की अमर वस्तु और शाश्वत प्रियतम, जिसकी सुंदरता, पूर्णता और परोपकारिता इस दुनिया में उनके समकक्षों से पूरी तरह श्रेष्ठ है और जो सभी प्राणियों के प्रेम को जगाती है, उसका जीवन शाश्वत है। उसकी सुंदरता की एक अभिव्यक्ति सभी अन्य प्रियजनों की जगह ले लेती है। उसका शाश्वत जीवन समाप्ति या क्षणभंगुरता के किसी भी निशान से मुक्त है, और इसमें कोई दोष या कमी नहीं है।

यह वाक्य सभी चेतन प्राणियों, चाहे वे मनुष्य हों या जिन्न, और सभी प्रेमियों के लिए घोषणा करता है: शाश्वत प्रियतम आपके प्रियजनों से अलग होने के कारण हुए घावों को भर देगा। चूँकि वह मौजूद है और अमर है, इसलिए उन दूसरों के बारे में चिंता मत करो। तुमने उन्हें उनकी सुंदरता और अच्छाई, अनुग्रह और पूर्णता के कारण प्यार किया। लेकिन ये शाश्वत प्रियतम की शाश्वत सुंदरता के केवल धुंधले, छाया-जैसे मानव-रूप हैं, जो कई पर्दों से गुज़र चुके हैं। इसलिए जब वे गायब हो जाते हैं तो शोक मत करो, क्योंकि वे केवल दर्पण हैं। जब दर्पण बदल जाते हैं, तो उस सौंदर्य का प्रतिबिंब नया हो जाता है और अधिक उज्ज्वल हो जाता है। जब आप उसे पा लेते हैं, तो आप सब कुछ पा लेते हैं।

नौवां वाक्य : उसके हाथ में सब भलाई है

इसका मतलब यह है कि सिर्फ़ वही सभी अच्छाइयों का स्वामी है और आपको अच्छाई करने के लिए मार्गदर्शन करता है। साथ ही, वह आपकी ओर से आपके द्वारा किए गए हर अच्छे और धार्मिक कर्म को रिकॉर्ड करता है।

यह वाक्य घोषणा करता है: ऐ असहाय लोगों और जिन्न, जब तुम मरो तो चिल्लाना मत: "हाय, हमारा जो कुछ भी था वह नष्ट हो गया और हमारी मेहनत बेकार हो गई। हम उस विस्तृत, सुंदर दुनिया को छोड़कर इस संकरी कब्र में चले गए हैं!" सब कुछ सुरक्षित है, क्योंकि तुम्हारे सारे कर्म और सेवाएँ दर्ज हैं। महामहिम, जिसके हाथ में सब कुछ अच्छा है और जो सब कुछ अच्छा करने में सक्षम है, तुम्हें तुम्हारी सेवा का इनाम देने के लिए बुलाता है। वह तुम्हें अस्थायी रूप से भूमिगत रखेगा और फिर तुम्हें अपनी उपस्थिति में ले आएगा।

तुम कितने भाग्यशाली हो कि तुमने अपना कर्तव्य और सेवा पूरी कर ली है, क्योंकि तुम्हारा परिश्रम समाप्त हो चुका है और तुम सुख और दया की राह पर चल पड़े हो। परिश्रम करने के बाद, अब तुम्हें अपना वेतन मिल गया है।

सर्वशक्तिमान परमेश्वर, जो पिछले वसंत की गतिविधियों और सेवाओं के अभिलेख के रूप में बीजों और अनाजों को सुरक्षित रखता है और फिर अगले वसंत में उन्हें सबसे चमकदार, प्रचुर और परोपकारी तरीके से प्रकट और प्रकाशित करता है, वह आपके कर्मों के परिणामों को भी सुरक्षित रखता है। इस प्रकार वह आपकी सेवा का भरपूर पुरस्कार देगा।

दसवाँ वाक्य : उसके पास हर चीज़ पर पूरा अधिकार है

इसका अर्थ यह है कि वह एक और अद्वितीय है तथा सब पर उसकी शक्ति है। चूँकि उसके लिए सब कुछ आसान है, इसलिए वसंत का निर्माण करना फूल बनाने जितना आसान है, और स्वर्ग का निर्माण करना वसंत बनाने जितना आसान है। अनगिनत जीव जो वह निरंतर हर पल अस्तित्व में लाता है, असंख्य भाषाओं से उसकी असीम शक्ति की गवाही देते हैं।

इस वाक्य का अर्थ है: हे लोगों, तुम्हारी सेवा और पूजा व्यर्थ नहीं गई है। तुम्हारे लिए पुरस्कार की दुनिया, आनंद का निवास तैयार किया गया है। एक शाश्वत स्वर्ग क्षणभंगुर दुनिया से तुम्हारे आगमन की प्रतीक्षा कर रहा है। उस महान सृष्टिकर्ता के वादे पर विश्वास और भरोसा रखो, जिसे तुम जानते हो और जिसकी पूजा करते हो, क्योंकि वह कभी अपना वादा नहीं तोड़ता। उसकी शक्ति में कोई दोष नहीं है, और नपुंसकता उसके कामों में बाधा नहीं डालती। जैसे वह तुम्हारा छोटा बगीचा बनाता है, वैसे ही वह तुम्हारे लिए स्वर्ग भी बना सकता है। वास्तव में, जैसा उसने इसे बनाया और तुमसे वादा किया है, वह तुम्हें इसमें प्रवेश देगा।

हर साल हम देखते हैं कि वह अनगिनत जानवरों और पौधों की प्रजातियों और समूहों के बावजूद एकदम सही व्यवस्था और सहजता के साथ पृथ्वी को पुनर्जीवित कर रहा है। ऐसा सर्वशक्तिमान महामहिम अपना वादा पूरा करता है। इसके अलावा, चूँकि वह हर साल जन्नत के नमूने बनाता है, जिसका वादा उसने अपनी सभी प्रकट पुस्तकों के माध्यम से किया है; चूँकि उसके सभी कार्य और निष्पादन सच्चाई और गंभीरता के साथ किए जाते हैं; चूँकि उसके सभी कार्यों की पूर्णता उसकी अनंत पूर्णता की ओर इशारा करती है और गवाही देती है, जिसमें कोई दोष या कमी नहीं है; और चूँकि वादा तोड़ना, झूठ बोलना, असत्य और धोखा सबसे बुरे गुण हैं, इसलिए हम निश्चिंत हो सकते हैं कि सर्वशक्तिमान महामहिम, पूर्णता का सर्व-ज्ञानी, कृपालु परम अपना वादा पूरा करेगा।

वह अनन्त खुशी का द्वार खोल देगा और तुम्हें, विश्वास रखने वालों, स्वर्ग में प्रवेश देगा, जो तुम्हारे पूर्वज आदम (और पूर्व माता हव्वा) का मूल घर है।

ग्यारहवाँ वाक्य: और उसी की ओर घर वापसी है

इसका मतलब यह है कि सभी लोगों को इस परीक्षण और परीक्षा की दुनिया में विशिष्ट उद्देश्यों के लिए भेजा जाता है। इन्हें पूरा करने के बाद, वे सर्व-दयालु स्वामी, महान निर्माता की उपस्थिति में लौटते हैं, जिन्होंने उन्हें पहले स्थान पर भेजा था। इस क्षणभंगुर क्षेत्र को छोड़कर, वे कारण-और-प्रभाव चक्रों की अशांति से और साधनों और उपकरणों के अस्पष्ट आवरणों से मुक्त हो जाते हैं।

उसके बाद, वे अपने दयालु प्रभु की उपस्थिति में अनन्त निवास में सम्मानित होंगे और बिना किसी आवरण के, उनके अनन्त साम्राज्य में उनसे मिलेंगे। हर कोई यह जान जाएगा कि उनका निर्माता पूज्य है

एक, भगवान, स्वामी और मालिक। इस प्रकार यह वाक्यांश निम्नलिखित समाचार को दर्शाता है, जो बाकी सभी से कहीं अधिक खुशी की बात है:

हे लोगों, क्या तुम जानते हो कि तुम कहाँ जा रहे हो, तुम्हें कहाँ ले जाया जा रहा है? तुम दया के क्षेत्र में जा रहे हो, महामहिम सर्व-सुंदर की शांतिपूर्ण उपस्थिति के लिए। इस दुनिया में 1,000 वर्षों का सुखी जीवन स्वर्ग में जीवन के एक घंटे के बराबर नहीं हो सकता है, और स्वर्ग में 1,000 वर्षों का जीवन उसकी अत्यंत सुंदर मुखमंडल के एक घंटे के दर्शन के बराबर नहीं हो सकता है। इस दुनिया के प्राणियों में दिखाई देने वाली सारी सुंदरता और सौन्दर्य, जिसमें वे प्रियजन भी शामिल हैं जो तुम्हें इतना मोहित और मोहित करते हैं, वे केवल उसकी सुंदरता और उसके नामों की सुंदरता की एक अभिव्यक्ति की छाया मात्र हैं। स्वर्ग और उसके आकर्षण केवल उसकी दया की अभिव्यक्तियाँ हैं; सभी लालसाएँ, प्रेम और आकर्षण केवल उसके प्रेम के प्रकाश की चमक हैं।

आप उस एक की उपस्थिति में जा रहे हैं जिसकी हमेशा पूजा की जाती है और जो हमेशा से प्रिय है, और आपको स्वर्ग में आमंत्रित किया जाता है, जो उसका शाश्वत भोज स्थल है। इसलिए मुस्कुराते हुए कब्र में प्रवेश करें।

यह वाक्यांश यह भी घोषणा करता है: हे लोगों, चिंता मत करो या सोचो कि तुम विलुप्त होने, अस्तित्वहीनता, शून्यता, अंधकार, विस्मृति, क्षय और विघटन की ओर जा रहे हो। वास्तव में, तुम स्थायित्व, शाश्वत अस्तित्व और उसके प्रकाश की दुनिया की ओर जा रहे हो। तुम अपने सच्चे स्वामी, शाश्वत प्रभु के आसन पर लौट रहे हो। तुम एकता के दायरे में विश्राम करोगे और बहुलता में नहीं डूबोगे। तुम एकता के लिए बंधे हो, अलगाव के लिए नहीं।

ग्यारहवाँ प्रमाण:
ईश्वरीय अस्तित्व और एकता के पक्ष में तर्क

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

अल्लाह इंसानों के लिए मिसालें बयान करता है ताकि वे उन्हें याद रखें और उनसे शिक्षा लें। (14:25)

हम ऐसी ही मिसालें लोगों के लिए पेश करते हैं, ताकि वे सोच-विचार करें। (59:21)

एक बार दो लोग एक तालाब में नहाए और एक तरह की समाधि में चले गए। जागने पर, उन्होंने खुद को एक अद्भुत भूमि पर पाया। इसकी उत्तम व्यवस्था और सामंजस्य के साथ, यह एक देश, या बल्कि एक शहर, या एक महल जैसा था। उन्होंने अत्यंत विस्मय में चारों ओर देखा: एक दृष्टिकोण से, यह एक विशाल दुनिया थी; दूसरे से, एक सुव्यवस्थित देश; फिर भी एक और-

एर, एक शानदार शहर। अगर इसे किसी और नज़रिए से देखा जाए, तो यह एक महल था, हालाँकि यह अपने आप में एक शानदार दुनिया थी। उन्होंने यात्रा की और देखा कि इसके प्राणी एक ऐसी भाषा बोल रहे थे जिसे वे नहीं जानते थे। हालाँकि, उनके हाव-भाव से पता चलता था कि वे महत्वपूर्ण काम कर रहे थे और महत्वपूर्ण कर्तव्यों का पालन कर रहे थे।

उनमें से एक ने कहा: "इस दुनिया का एक प्रशासक होना चाहिए, इस सुव्यवस्थित देश का एक स्वामी होना चाहिए, इस शानदार शहर का एक स्वामी होना चाहिए, और इस कुशलता से बनाए गए महल का एक कुशल निर्माता होना चाहिए। हमें उसे जानने की कोशिश करनी चाहिए, क्योंकि यह वही है जिसने हमें यहाँ लाया है। अगर हम नहीं जानते, तो हमारी मदद कौन करेगा? हम उन नपुंसक प्राणियों से क्या उम्मीद कर सकते हैं जिनकी भाषा हम नहीं जानते और जो हमें अनदेखा करते हैं? इसके अलावा, जिसने एक राज्य, एक शहर या एक महल के रूप में एक विशाल दुनिया बनाई है और इसे अद्भुत चीजों से भर दिया है, इसे हर तरह के अलंकरण से सजाया है, और इसे शिक्षाप्रद चमत्कारों से सजाया है, उसके पास कुछ ऐसा होना चाहिए जो वह हमसे और यहाँ आने वालों से करवाना चाहता हो। हमें उसे जानना चाहिए और सीखना चाहिए कि वह क्या चाहता है।"

दूसरे व्यक्ति ने आपत्ति की: "मैं इस पर विश्वास नहीं करता, कि ऐसा कोई प्राणी है और वह इस संसार को स्वयं संचालित करता है।" उसके मित्र ने उत्तर दिया: "यदि हम उसे पहचान नहीं पाते और उदासीन बने रहते हैं, तो हमें कुछ भी नहीं मिलता और हमें बहुत नुकसान हो सकता है। लेकिन यदि हम उसे पहचानने का प्रयास करते हैं, तो हमें बहुत कठिनाई नहीं होती और बहुत लाभ होने की संभावना होती है। इसलिए उदासीन बने रहना किसी भी तरह से उचित नहीं है?" दूसरे व्यक्ति ने जोर देकर कहा: "मुझे उसके बारे में न सोचने में ही सारी सहजता और आनंद मिलता है। इसके अलावा, मुझे उन चीजों के बारे में नहीं सोचना चाहिए जो मेरे लिए कोई अर्थ नहीं रखती हैं। ये सभी भ्रमित करने वाली चीजें हैं जो संयोग से या अपने आप घटित हो रही हैं। वे मेरी चिंता का विषय नहीं हैं।" उसके चतुर मित्र ने उत्तर दिया: "ऐसी हठधर्मिता हमें और कई अन्य लोगों को परेशानी में डाल देगी। कभी-कभी एक बुरे व्यवहार वाले व्यक्ति के कारण पूरी धरती बर्बाद हो जाती है।"

दूसरे व्यक्ति ने मुड़कर कहा: "या तो यह साबित करो कि तुम जो कह रहे हो वह सच है या मुझे अकेला छोड़ दो।" इस पर, उसके दोस्त ने कहा: "चूँकि तुम्हारी हठ पागलपन की हद तक है और इससे हमें बहुत बड़ी विपत्ति झेलनी पड़ेगी, इसलिए मैं तुम्हें बारह तर्क दिखाऊँगा कि इस महल जैसी दुनिया, इस शहर जैसी स्थिति का एक मास्टर बिल्डर है जो इसे खुद चलाता है और उसमें कोई कमी नहीं है। वह हमारे लिए अदृश्य है, लेकिन उसे हमें और हर चीज़ को देखना चाहिए और सब कुछ सुनना चाहिए।

आवाज़ें। उसके सारे काम चमत्कारी लगते हैं। ये सारे जीव जिन्हें हम देखते हैं
परन्तु जिनकी भाषा हम नहीं समझते, वे ही उसके अधिकारी (उसके नाम पर काम करने वाले) होंगे।

बारह तर्क

पहला तर्क

चारों ओर देखो! एक छिपा हुआ हाथ हर चीज़ में काम कर रहा है, क्योंकि एक बीज की तरह कुछ छोटा और बिना ताकत वाला हज़ारों पाउंड का भार उठा रहा है।18 चेतना के बिना कुछ बहुत बुद्धिमानी और उद्देश्यपूर्ण काम कर रहा है ।19 चूँकि वे अपने आप काम नहीं कर सकते, इसलिए एक शक्तिशाली, छिपा हुआ हाथ उन्हें काम करने के लिए प्रेरित कर रहा है। अगर सब कुछ अपने आप हो रहा होता, तो इस जगह पर किया जा रहा सारा काम अपने आप में एक चमत्कार होना चाहिए, और हर चीज़ चमत्कार करने वाली चमत्कार होनी चाहिए।

दूसरा तर्क

इन मैदानों, खेतों और घरों की सजावट को देखो! हर एक उस छिपे हुए की ओर इशारा करता है। एक मुहर या मोहर की तरह, हर एक उसके बारे में खबर देता है। देखो कि वह कुछ ग्राम कपास से क्या बनाता है।20 देखो कि इससे कपड़े, लिनन और फूलों की कितनी रोलें निकली हैं; कितना मीठा भोजन और अन्य स्वादिष्ट चीजें बनाई जा रही हैं। अगर हजारों लोग इनसे कपड़े पहनें या खाएं, तो भी काफी होगा।

फिर देखो, उसने मुट्ठी भर लोहा, मिट्टी, पानी, कोयला, तांबा, चांदी और सोना लेकर कुछ जीवित प्राणी बनाए हैं।21 देखो और देखो। ये प्रकार के कार्य विशेष रूप से उस व्यक्ति के लिए हैं जो इस भूमि को उसके सभी भागों के साथ अपनी चमत्कारी शक्ति के अधीन रखता है और अपनी इच्छा के प्रति पूरी तरह से समर्पित है।

तीसरा तर्क

इन अमूल्य, चलती-फिरती कलाकृतियों को देखिए!22 प्रत्येक को इस विशाल महल के एक लघु नमूने के रूप में बनाया गया है। महल में जो कुछ भी है वह सब कुछ है।

---

[18] यह उन बीजों को संदर्भित करता है, जिनके सिर पर पेड़ उगते हैं।

[19] यह अंगूर की बेलों जैसे नाजुक पौधों को संदर्भित करता है, जो स्वयं नहीं बढ़ सकते हैं या फलों का भार नहीं उठा सकते हैं, और इसलिए वे अपनी नाजुक भुजाओं को अन्य पौधों या पेड़ों के चारों ओर फैलाते हैं और खुद को लपेटकर उन पर लाद लेते हैं।

[20] उदाहरण के लिए, एक अणु आकार का खसखस, एक खुबानी की गुठली जिसका वजन कुछ ग्राम होता है, या एक खरबूजे का बीज - इनमें से प्रत्येक दया के खजाने से ब्रॉडक्लॉथ से अधिक सुंदर बुने हुए पत्ते, लिनन से अधिक सफेद या पीले फूल, चीनी से अधिक मीठे फल, और जैम से अधिक महीन और स्वादिष्ट उत्पन्न करता है, और उन्हें हमें प्रदान करता है।

[21] इसका तात्पर्य तत्वों से पशु शरीरों तथा शुक्राणुओं से जीवित प्राणियों के निर्माण से है।

[22] यह जानवरों और मनुष्यों को संदर्भित करता है। चूँकि एक जानवर दुनिया का एक छोटा सा सूचकांक है, और मानवता ब्रह्मांड का एक छोटा सा हिस्सा है, इसलिए ब्रह्मांड में जो कुछ भी है उसका एक नमूना है जो प्रत्येक मनुष्य के भीतर समाहित है।

इन छोटी-छोटी चलती मशीनों में पाया जाता है। इस अद्भुत महल के निर्माता के अलावा और कौन एक छोटी सी मशीन में यह सब समाहित कर सकता है? क्या संयोग या कोई उद्देश्यहीन चीज इस बॉक्स के आकार की मशीन में हस्तक्षेप कर सकती है जिसमें पूरी दुनिया समाहित है? आप चाहे जितनी भी कलात्मक रूप से निर्मित मशीनें देखें, उनमें से प्रत्येक उस छिपे हुए की मुहर की तरह है, एक हेराल्ड या उद्घोषणा की तरह। अपने अस्तित्व की भाषा में, वे घोषणा करते हैं: "हम उस व्यक्ति की कलाकृतियाँ हैं जो इस पूरी दुनिया को उतनी ही आसानी से बना सकता है जितनी आसानी से उसने हमें बनाया है।"

चौथा तर्क

मैं तुम्हें इससे भी अजीब चीज़ दिखाऊँगा। देखो। इस देश में सभी चीज़ें बदल रही हैं। हर बेजान शरीर और बेजान "हड्डी" ने कुछ खास उद्देश्यों की ओर बढ़ना शुरू कर दिया है, मानो हर कोई दूसरे पर शासन कर रहा हो।

हमारे बगल में खड़ी इस मशीन को देखिए।23 ऐसा लगता है जैसे यह आदेश दे रही हो और इसकी सजावट और संचालन के लिए ज़रूरी सभी सामग्रियाँ दूर-दूर से इसकी ओर दौड़ी आ रही हों। उधर देखिए।

वह निर्जीव सा दिखने वाला शरीर मानो बुला रहा है, क्योंकि वह बड़े से बड़े शरीरों को अपनी सेवा और अपने लिए काम करने के लिए विवश करता है।24 आप बाकी की तुलना इनसे कर सकते हैं।

ऐसा लगता है कि दुनिया के सभी जीवों को हर चीज़ ने अपने अधीन कर लिया है। अगर आप छिपे हुए व्यक्ति के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते हैं, तो आपको उसके सभी कौशल, कला और पूर्णता का श्रेय पत्थरों, मिट्टी, जानवरों और लोगों से मिलते-जुलते जीवों को देना चाहिए। एक चमत्कार करने वाले व्यक्ति के स्थान पर, उसके जैसे लाखों चमत्कार करने वाले व्यक्ति होने चाहिए, जो एक ही समय में एक दूसरे के विरोधी और समान दोनों हों, और एक दूसरे के भीतर हों, बिना किसी भ्रम और व्यवस्था को बिगाड़े। लेकिन हम जानते हैं कि जब दो शासक किसी मामले में हस्तक्षेप करते हैं, तो परिणाम भ्रम होता है।

जब किसी गांव में दो मुखिया, किसी शहर में दो राज्यपाल या किसी देश में दो राजा या सरकारें हों, तो अराजकता पैदा होती है। इसे देखते हुए, अगर एक ही स्थान पर और एक ही समय में अनंत संख्या में निरंकुश शासक हों, तो क्या होगा?

---

[23] यह फल देने वाले पेड़ों को संदर्भित करता है। मानो अपनी पतली शाखाओं पर सैकड़ों करघे और कारखाने लेकर वे अद्भुत, समृद्ध रूप से सजे हुए पत्ते, फूल और फल बुनते हैं और फिर इन फलों को पकाकर हमें खिलाते हैं। चीड़ और देवदार जैसे राजसी पेड़ों ने काम करने के लिए कठोर, सूखी चट्टान पर अपने काम करने की बेंचें स्थापित की हैं।

24 यह "शरीर" अनाज, बीज और मक्खियों के अंडों को दर्शाता है। एक मक्खी अपने अंडे एल्म के पेड़ की पत्तियों पर छोड़ती है। अचानक, विशाल पेड़ अपनी पत्तियों को एक माँ के गर्भ, एक पालने, शहद जैसे भोजन से भरे भंडार में बदल देता है, जैसे कि यह, हालांकि फल देने वाला नहीं है, लेकिन सजीव फल पैदा करता है।

पांचवां तर्क

महल के आभूषणों और शहर की सजावट को ध्यान से देखो! इस भूमि की व्यवस्था को देखो और इस दुनिया की कलात्मकता पर विचार करो। अगर अनंत चमत्कारों और कौशलों वाले किसी छिपे हुए व्यक्ति की कलम काम नहीं कर रही है, या अगर ये सभी अलंकरण अचेतन कारणों, अंधे संयोग और बहरे स्वभाव के कारण हैं, तो यहां का हर पत्थर और हर घास का तिनका भी चमत्कार करने वाला सज्जाकार और एक अद्भुत लेखक होना चाहिए जो एक पत्र में एक हजार किताबें लिख सकता है और एक ही आभूषण में अनंत प्रकार की कलात्मकता प्रदर्शित कर सकता है।

इन पत्थरों पर लिखे शिलालेखों को देखिए।[25] प्रत्येक में पूरे महल के शिलालेख, शहर की व्यवस्था के लिए कानून और राज्य को संगठित करने के कार्यक्रम हैं। इसे देखते हुए, शिलालेखों को पत्थर में समाहित करना राज्य बनाने जितना ही अद्भुत है। इसलिए प्रत्येक शिलालेख और कला का उदाहरण उस छिपे हुए व्यक्ति और उसकी मुहरों में से एक की घोषणा है। जैसे एक अक्षर अपने लेखक को इंगित करता है, और एक कलात्मक शिलालेख अपने लिखने वाले को ज्ञात कराता है, तो फिर एक लिखने वाला, एक डिज़ाइनर या एक सज्जाकार, जो एक ही अक्षर में एक बड़ी किताब को अंकित करता है और एक ही अक्षर में एक हज़ार अलंकरण प्रदर्शित करता है, अपने शिलालेखों और अलंकरणों के माध्यम से कैसे नहीं जाना जा सकता है?

छठा तर्क

इस विशाल मैदान पर आओ![26] हम आस-पास के क्षेत्र को देखने के लिए उस विशाल पर्वत की चोटी पर चढ़ेंगे। हम दूरबीन का उपयोग करते हैं, क्योंकि इस भूमि पर अजीबोगरीब चीजें घटित हो रही हैं। हर घंटे ऐसी चीजें घटित हो रही हैं जिनकी हमने कभी कल्पना भी नहीं की थी।

देखो! ये पहाड़, मैदान और शहर अचानक बदल रहे हैं ताकि लाखों नई चीजें उनकी जगह ले सकें, एक के बाद एक, एकदम व्यवस्थित तरीके से। सबसे अजीबोगरीब बदलाव हो रहे हैं, जैसे कि अंदर और दूसरों के बीच अनगिनत तरह के कपड़े बुने जा रहे हों। देखो, जानी-पहचानी फूलों वाली चीजों की जगह एक नया रूप ले लिया गया है।

---

[25] यह मानवता, सृष्टि के वृक्ष का फल, तथा उस फल को संदर्भित करता है जो उसके वृक्ष के कार्यक्रम तथा उसके सूचकांक को वहन करता है। क्योंकि ईश्वरीय शक्ति की कलम ने ब्रह्मांड की महान पुस्तक में जो कुछ भी अंकित किया है, वह हमारी रचना में संकुचित हो गया है। ईश्वरीय नियति की कलम ने विशाल वृक्ष में जो कुछ भी लिखा है, वह उसके नाखून के आकार के फल में समाहित हो गया है।

[26] यह वसंत और गर्मियों में धरती के चेहरे को दर्शाता है, जब अनगिनत प्रजातियों के असंख्य व्यक्ति अस्तित्व में आते हैं; वे धरती पर "लिखे" जाते हैं। उन्हें भर्ती किया जाता है और वे बिना किसी दोष और पूर्ण क्रम के साथ परिवर्तन से गुजर सकते हैं। दयालु की हज़ारों मेज़ें बिछाई जाती हैं और फिर उन्हें हटाकर नई मेज़ें रखी जाती हैं। सभी पेड़ थालियाँ उठाने वाले जैसे हैं, और सभी बगीचे कड़ाही जैसे हैं।

समान प्रकृति के लेकिन भिन्न रूप वाले अन्य लोगों के साथ व्यवस्थित ढंग से। हर चीज़ ऐसे हो रही है जैसे कि हर मैदान और पहाड़ एक पृष्ठ है जिस पर बिना किसी दोष या दोष के अनंत अलग-अलग किताबें लिखी जा रही हैं। यह बिलकुल अकल्पनीय है कि ये चीज़ें, जो अनंत कला, कौशल और सटीकता को प्रदर्शित करती हैं, अपने आप ही बन जाती हैं। बल्कि, वे उस कलाकार को दिखाती हैं जो उन्हें बनाता है। जो ये सब करता है वह ऐसे चमत्कार दिखाता है, क्योंकि उसके लिए कुछ भी मुश्किल नहीं है। उसके लिए एक हज़ार किताबें लिखना उतना ही आसान है जितना एक किताब लिखना।

अपने चारों ओर देखो! वह हर चीज़ को इतनी समझदारी से उसके उचित स्थान पर रखता है, ज़रूरतमंदों और योग्य लोगों पर इतनी उदारता से अपनी कृपा बरसाता है, सार्वभौमिक पर्दे और दरवाज़े इतनी उदारता से खींचता और खोलता है कि सभी संतुष्ट हो जाते हैं, और इतनी उदारता से मेज़ें सजाता है कि इस देश के हर एक सजीव प्राणी को एक ख़ास दावत दी जाती है। दरअसल, हर समूह और यहाँ तक कि हर एक व्यक्ति को उसके लिए ख़ास और उपयुक्त मेज़ें परोसी जाती हैं। क्या इससे ज़्यादा अकल्पनीय कुछ और हो सकता है कि इनमें से कोई भी मामला संयोग से हो, उद्देश्यहीन या व्यर्थ हो, या इसके पीछे कई हाथ हों, और इनका निर्माता हर चीज़ पर शक्तिशाली हो, और हर चीज़ उसके अधीन हो? तो, मेरे दोस्त, अपने इनकार पर अड़े रहने के लिए तुम कौन सा बहाना ढूँढ़ सकते हो?

सातवां तर्क

आओ मित्र! इस अद्भुत महलनुमा दुनिया के भागों के आपसी संबंधों पर नजर डालें। देखो! सार्वभौमिक चीजें हो रही हैं और सामान्य क्रांतियां इतनी सही व्यवस्था के साथ हो रही हैं कि मानो इस महल में सभी चट्टानें, मिट्टी और पेड़ इस दुनिया के सामान्य नियमों का पालन कर रहे हैं और जो चाहें करने के लिए स्वतंत्र हैं। सबसे दूर की चीजें एक-दूसरे की मदद के लिए आती हैं। पेड़-पौधों और पहाड़ों जैसे पहाड़ों पर अदृश्य से आ रहे उस विचित्र कारवां[27] को देखो। हर सदस्य अपने सिर पर भोजन की थालियां उठाकर इस तरफ इंतजार कर रहे जानवरों के पास ला रहा है। उस गुंबद में शक्तिशाली बिजली के लैंप[28] को देखो। यह न केवल प्रकाश प्रदान करता है, बल्कि उनके भोजन को भी शानदार ढंग से पकाता है; पकाया जाने वाला भोजन एक अदृश्य हाथ[29] द्वारा एक तार से बांधा जाता है और उसके सामने रखा जाता है। यह भी देखें

[27] यह उन पौधों और वृक्षों के “कारवां” को संदर्भित करता है जो सभी जानवरों का पोषण करते हैं।

[28] सूर्य की ओर संकेत.

[29] डोरी और उससे जुड़ा भोजन पेड़ की पतली शाखाओं और उन पर लगे स्वादिष्ट फलों को दर्शाता है।

ये नपुंसक, कमज़ोर, रक्षाहीन छोटे जानवर हैं। उनके सिर के ऊपर छोटे, झरने जैसे "पंप" हैं जो नाज़ुक भोजन से भरे हुए हैं।30 उन्हें खाने के लिए बस इन पंपों पर अपना मुँह दबाना होता है।

संक्षेप में, इस संसार की सभी वस्तुएँ, मानो आमने-सामने स्थित हों, एक-दूसरे की सहायता करती हैं। मानो एक-दूसरे को देखकर, वे एक-दूसरे का सहयोग करती हैं। एक-दूसरे के कार्य को पूर्ण करने के लिए, वे एक-दूसरे का समर्थन करती हैं और मिलकर काम करती हैं। इस संसार में आश्चर्यों की गिनती नहीं की जा सकती। आप उन्हें उद्धृत उदाहरणों के प्रकाश में देख सकते हैं। यह सब निर्णायक रूप से सिद्ध करता है कि सब कुछ उस अद्भुत महल के निर्माता, इस संसार के वास्तविक स्वामी के अधीन है। सब कुछ उसकी ओर से काम करता है, जैसे एक आज्ञाकारी सैनिक उसकी आज्ञा का पालन करता है। सब कुछ उसकी शक्ति से होता है, उसके आदेश से चलता है, और उसकी बुद्धि से व्यवस्थित होता है। सब कुछ उसकी उदारता से दूसरों की सहायता करता है, और सब कुछ उसकी करुणा के कारण दूसरों की सहायता के लिए तत्पर रहता है। हे मेरे मित्र, क्या तुम इस पर आपत्ति कर सकते हो?

आठवां तर्क

हे मेरे मित्र, जो अपने आपको बुद्धिमान समझता है, जैसा कि मैं स्वयं हूँ! तुम इस भव्य महल के स्वामी को पहचानना नहीं चाहते, हालाँकि सब कुछ उसी की ओर इशारा करता है, उसे दिखाता है, और उसकी गवाही देता है। तुम ऐसी गवाही को कैसे नकार सकते हो? यह देखते हुए, तुम्हें महल को भी नकारना होगा और कहना होगा: "कोई संसार नहीं है, कोई अवस्था नहीं है।" अपने अस्तित्व को भी नकारो और गायब हो जाओ, या फिर होश में आओ और मेरी बात सुनो।

महल में एकसमान तत्व और खनिज हैं जो पूरी भूमि को घेरे हुए हैं।31 ऐसा प्रतीत होता है कि सब कुछ उन्हीं से बना है। इसका मतलब यह है कि जो उनका मालिक है, वह उनसे बनी हर चीज़ का मालिक है, क्योंकि जो खेत का मालिक है, वह उसकी फ़सलों का मालिक है, और जो समुद्र का मालिक है, वह उसकी सामग्री का मालिक है। ये वस्त्र और सजे हुए बुने हुए कपड़े एक ही, समान मूल चीज़ से बनाए गए हैं। जाहिर है, जो इस चीज़ को बनाता है, वह इसे तैयार भी करता है और इसे सूत भी बनाता है, क्योंकि ऐसा काम दूसरों की भागीदारी की अनुमति नहीं देता है।

इसलिए, इसमें कुशलता से बुनी गई सभी चीजें उसके लिए विशिष्ट हैं।

---

[30] माताओं के स्तन.

[३१] तत्व और खनिज वायु, जल, प्रकाश और मिट्टी के तत्वों को दर्शाते हैं, जो कई व्यवस्थित कर्तव्यों का पालन करते हैं: ईश्वरीय अनुमति से, वे सभी ज़रूरतमंद प्राणियों की मदद करने के लिए तत्पर रहते हैं, ईश्वरीय आदेश से हर जगह प्रवेश करते हैं और सहायता प्रदान करते हैं, जीवन की ज़रूरतों को पूरा करते हैं और जीवित प्राणियों को "दूध पिलाते" हैं। वे ईश्वरीय कलाकृतियों की बुनाई और सजावट के लिए स्रोत, मूल और पालने के रूप में भी कार्य करते हैं।

इस तरह की सभी तरह की बुनी हुई चीजें पूरे देश में पाई जाती हैं। वे सभी एक साथ, एक के अंदर या दूसरों के बीच, एक ही तरह से और एक ही पल में बनाई जा रही हैं। इसलिए, वे केवल एक व्यक्ति का काम हो सकते हैं जो एक आदेश के साथ सब कुछ करता है। अन्यथा समय, फैशन और गुणवत्ता के संबंध में ऐसा पत्राचार और अनुरूपता असंभव होगी। इसलिए, प्रत्येक कुशलता से बनाई गई चीज उस छिपे हुए की घोषणा करती है और उसकी ओर इशारा करती है।

ऐसा लगता है जैसे हर तरह का फूलदार कपड़ा, कुशलता से बनाई गई मशीन और स्वादिष्ट निवाला एक मोहर, एक मुहर, उस चमत्कारी व्यक्ति की निशानी है, और अपने अस्तित्व की भाषा में घोषणा करता है: "जो कोई भी मुझे कलाकृति के रूप में अपनाता है, वह उन बक्सों और दुकानों का भी मालिक है, जिनमें मैं पाया जाता हूँ।" प्रत्येक सजावट कहती है: "जिसने मुझ पर कढ़ाई की है, उसने कपड़े का वह रोल भी बुना है, जिसमें मैं स्थित हूँ।" प्रत्येक स्वादिष्ट निवाला कहता है: "जिसने मुझे पकाया है, उसके पास खाना पकाने का बर्तन भी है, जिसमें मैं स्थित हूँ।" प्रत्येक मशीन कहती है: "जिसने मुझे बनाया है, वह उन सभी को भी बनाता है, जो पूरे देश में मेरे जैसे पाए जाते हैं। जो हमें हर जगह पालता है, वह भी वही है। जिस तरह से यह व्यक्ति इस भूमि और इस महल का मालिक है, उसी तरह से उसे हमारा भी मालिक होना चाहिए।" यह ठीक उसी तरह है, जैसे कि राज्य के किसी कारतूस-बेल्ट या बटन के असली मालिक को उन कारखानों का मालिक होना चाहिए, जिनमें वे बनाए जाते हैं। अगर कोई अज्ञानतापूर्वक इसका स्वामित्व दावा करता है, तो इसे छीन लिया जाएगा। ऐसे लोगों को राज्य की संपत्ति का मालिक होने का दिखावा करने के लिए दंडित किया जाएगा।

संक्षेप में, जिस प्रकार इस भूमि में प्रत्येक तत्व सर्वत्र व्याप्त है, उसी प्रकार उनका स्वामी भी वही हो सकता है जो सारी भूमि का स्वामी है। चूँकि इस भूमि में कला-कौशल एक ही प्रकृति का है और कलाकृतियाँ एक-दूसरे से मिलती-जुलती हैं, एक ही छाप प्रदर्शित करती हैं, इसलिए जो कुछ भी इस भूमि में फैला है, वह स्पष्ट रूप से एक ही प्राणी की कला का कार्य है। और, वह एक ही सब पर शासन करता है। इस प्रकार इस भव्य महल-जैसी भूमि में एकता का चिह्न, एकता की छाप है। कुछ वस्तुएँ एकरूप, अद्वितीय और एक ही प्रकृति की हैं, फिर भी सर्वव्यापी हैं। अन्य वस्तुएँ, यद्यपि विविध और प्रचुर हैं, समूह की एकता प्रदर्शित करती हैं क्योंकि वे एक-दूसरे से मिलती-जुलती हैं और हर जगह पाई जाती हैं। ऐसी एकता एकता को प्रदर्शित करती है। इसका अर्थ है कि इस भूमि का निर्माता, मेजबान और स्वामी एक ही होना चाहिए।

ध्यान से देखो! देखो कि कैसे अदृश्य के पर्दे के पीछे से एक मोटी डोरी निकल आई है। देखो कि कैसे हज़ारों डोरियाँ उसमें से लटक रही हैं। देखो

---

[32] "मोटी डोरी" एक फलदार वृक्ष है, डोरियाँ उसकी शाखाएँ हैं, और हीरे से सजे सजावटी सामान, उपहार और उपहार उस पर लटकाए गए विभिन्न फूल और फल हैं।

उनके सिरे, जिनसे हीरे, सजावट, उपकार और उपहार जुड़े हुए हैं। हर किसी के लिए एक खास उपहार होता है। क्या आप इतने मूर्ख हो सकते हैं कि उस व्यक्ति को न पहचानें और उसका धन्यवाद न करें जो अदृश्य के पर्दे के पीछे से ऐसे अद्भुत उपकार और उपहार प्रदान करता है? क्योंकि यदि आप उसे नहीं पहचानते हैं, तो आपको तर्क देना चाहिए: "तार खुद ही इन हीरे और अन्य उपहारों को बनाते और चढ़ाते हैं।" उस स्थिति में, आपको प्रत्येक तार को एक राजा का दर्जा और कार्य देना चाहिए [जिसके पास अपनी इच्छानुसार कुछ भी करने की चमत्कारी शक्ति और ज्ञान है]। जबकि, हमारी आंखों के सामने एक अदृश्य हाथ तार बना रहा है और उनमें उपहार जोड़ रहा है! इसे देखते हुए, इस महल की प्रत्येक चीज खुद की बजाय उस चमत्कारी कार्य करने वाले की ओर इशारा करती है। यदि आप उसे नहीं पहचानते

नौवां तर्क

आओ, हे मित्र! तुम महल के मालिक को न तो पहचानते हो और न ही पहचानना चाहते हो क्योंकि तुम उसके अस्तित्व को असंभव मानते हो। तुम इनकार करते हो क्योंकि तुम उसकी अद्भुत कला और अभिनय के तरीके को नहीं समझ सकते। लेकिन इन सभी बेहतरीन चीजों, इस अद्भुत अस्तित्व को उसे पहचाने बिना कैसे समझाया जा सकता है? अगर हम उसे पहचान लें, तो यह पूरा महल और इसकी प्रचुर सामग्री को समझना उतना ही आसान है जितना कि इसमें मौजूद एक भी चीज को समझना।

अगर हम उसे पहचान नहीं पाते और अगर वह अस्तित्व में नहीं होता, तो एक चीज को समझाना उतना ही मुश्किल होता जितना कि पूरे महल को, क्योंकि हर चीज महल की तरह ही कुशलता से बनाई गई है। चीजें इतनी प्रचुर और किफायती नहीं होतीं। हम जो चीजें देखते हैं, उनमें से कोई भी किसी के पास नहीं हो सकती। उस तार से जुड़े हुए कंजर्व के जार को देखिए।33 अगर यह उसकी छिपी हुई रसोई में चमत्कारिक ढंग से नहीं बनाया गया होता, तो हम इसे किसी भी कीमत पर नहीं खरीद पाते। लेकिन अब हम इसे कुछ सेंट में खरीदते हैं।

हर तरह की लगातार मुश्किलें और असंभवताएँ उसे न पहचानने से आती हैं। एक पेड़ को एक जड़ से, एक नियम के ज़रिए और एक केंद्र से जीवन मिलता है। इसलिए, हज़ारों फल बनाना एक फल बनाने जितना आसान है। अगर यह अलग-अलग, खास केंद्रों और जड़ों और अलग-अलग, खास नियमों पर निर्भर करता, तो हर फल बनाना पेड़ जितना ही मुश्किल होता। अगर सेना का सामान एक ही फ़ैक्ट्री में, एक ही नियम के ज़रिए और एक ही केंद्र से बनाया जाता है, तो यह एक सैनिक को लैस करने जितना ही आसान है। लेकिन अगर हर एक को एक ही केंद्र से बनाया जाता है, तो उसे एक ही केंद्र से बनाया जाता है।

---

[33] संरक्षित बर्तन दया के उपहारों (तरबूज, तरबूज, अनार, और दूध के डिब्बे जैसे नारियल) को दर्शाता है, जिनमें से प्रत्येक दिव्य शक्ति का संरक्षित बर्तन है।

यदि सैनिकों का साज-सामान कई स्थानों से खरीदा जाता है, तो एक सैनिक को सुसज्जित करने के लिए उतनी ही फैक्ट्रियों की आवश्यकता होगी जितनी पूरी सेना के लिए आवश्यक है।

यह बात इस सुव्यवस्थित महल, भव्य शहर, प्रगतिशील राज्य और भव्य दुनिया में भी सच है। अगर इन सभी चीजों का आविष्कार एक ही व्यक्ति को दिया जाए, तो उनकी असीम प्रचुरता, उपलब्धता और उदारता का हिसाब लगाना आसान है। अन्यथा सब कुछ इतना महंगा और कठिन होगा कि पूरी दुनिया भी एक चीज खरीदने के लिए पर्याप्त नहीं होगी।

दसवां तर्क

मेरे दोस्त, हम यहाँ 15 दिन से हैं।[34] अगर हम अभी भी इस दुनिया के शासक और नियमों को नहीं जानते और पहचानते हैं, तो हम सजा के हकदार हैं। हमारे पास कोई बहाना नहीं है, क्योंकि 15 दिनों से हमारे साथ कोई हस्तक्षेप नहीं किया गया है, जैसे कि हमें राहत दी गई हो। लेकिन न ही हमें खुद पर छोड़ा गया है। हम इतने नाजुक, संतुलित, सूक्ष्म, कुशलता से बनाए गए और शिक्षाप्रद प्राणियों के बीच भटक कर अव्यवस्था नहीं फैला सकते। राजसी स्वामी की सजा कठोर होनी चाहिए।

वह कितना राजसी और शक्तिशाली होगा कि उसने इस विशाल दुनिया को एक महल की तरह व्यवस्थित किया है और इसे एक प्रकाश चक्र की तरह घुमाया है। वह इस विशाल देश को एक घर की तरह संचालित करता है, जिसमें कुछ भी कमी नहीं है। एक बर्तन को भरने और फिर उसे खाली करने की तरह, वह लगातार इस महल, इस शहर, इस भूमि को पूर्ण व्यवस्था से भरता है और फिर पूर्ण बुद्धि के साथ इसे खाली करता है। साथ ही, एक मेज को लगाने और फिर उसे हटाने की तरह, वह पूरे देश में, मानो किसी अदृश्य हाथ से, एक के बाद एक बहुत सी खाद्य सामग्री के साथ विविध मेजें बिछाता है, और फिर उन्हें हटाकर नए व्यंजन लाता है।[35] यह देखकर और अपने तर्क का उपयोग करके, आप समझेंगे कि उस भयानक महिमा में एक असीम उदारता निहित है।

जिस तरह ये सभी चीज़ें उस अदृश्य सत्ता की एकता और संप्रभुता की गवाही देती हैं, उसी तरह एक के बाद एक होने वाली ये क्रांतियाँ और परिवर्तन उसकी स्थायित्व की गवाही देते हैं। ऐसा कैसे? क्योंकि चीज़ों के कारण उनके साथ ही गायब हो जाते हैं, जबकि जिन चीज़ों को हम कारणों के लिए जिम्मेदार ठहराते हैं, वे उनके बाद दोहराई जाती हैं। इसलिए किसी भी चीज़ को कारणों के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता; सब कुछ एक अमर सत्ता के काम के रूप में होता है। उदाहरण के लिए, नदी के किनारे चमकते बुलबुले

---

34 यह 15 वर्ष की आयु का संकेत है, जो जिम्मेदारी की आयु है।

35 ये मेज़ें गर्मियों में धरती के चेहरे को दर्शाती हैं, जिसके दौरान दया के रसोइयों में दयालु की सैकड़ों मेज़ें ताज़ा और अलग-अलग तरह से तैयार की जाती हैं, और फिर लगातार रखी और हटाई जाती हैं। हर बगीचा एक खाना पकाने का बर्तन है, और हर पेड़ एक थाली है।

सतह पर आने वाली चीज़ें आती-जाती रहती हैं, लेकिन उनके बाद आने वाली नई चीज़ें भी चमकती रहती हैं। इसलिए, जो चीज़ उन्हें चमकाती है, वह है नदी के ऊपर खड़ी कोई स्थिर चीज़ और जिसमें स्थायी प्रकाश होता है। इसी तरह, इस दुनिया में होने वाले तेज़ बदलाव और गायब होने वाली चीज़ों की जगह लेने वाली चीज़ें, वही विशेषताएँ ग्रहण करके दिखाती हैं कि वे एक स्थायी और अमर चीज़ की अभिव्यक्तियाँ, शिलालेख, दर्पण और कलाकृतियाँ हैं।

ग्यारहवाँ तर्क

आओ, हे मित्र! अब मैं तुम्हें एक और निर्णायक प्रमाण दिखाऊंगा जो पिछले दस प्रमाणों के बराबर शक्तिशाली है। चलो जहाज पर चढ़ो36 और उस प्रायद्वीप पर जाओ, क्योंकि इस रहस्यमय दुनिया की कुंजियाँ वहीं हैं।

इसके अलावा, हर कोई उस प्रायद्वीप की ओर देख रहा है, कुछ अपेक्षा कर रहा है और वहां से आदेश प्राप्त कर रहा है।

हम उतर चुके हैं। वहाँ पर बहुत बड़ी सभा को देखो, मानो देश के सभी महत्वपूर्ण लोग इकट्ठे हुए हों। ध्यान से देखो, क्योंकि इस महान समुदाय का एक नेता है। चलो उसके बारे में जानने के लिए उसके करीब पहुँचते हैं। उसकी शानदार सजावट देखो—एक हज़ार से भी ज़्यादा।37 वह कितनी ज़ोरदार बात करता है।

उनकी बातचीत कितनी सुखद है। इन पंद्रह दिनों में उन्होंने जो कुछ कहा है, उसमें से मैंने थोड़ा-बहुत सीखा है, और आप भी मुझसे सीख सकते हैं। वे देश के शानदार चमत्कार दिखाने वाले सम्राट के बारे में बात कर रहे हैं, जिन्होंने उन्हें हमारे पास भेजा है। देखिए, वे ऐसे चमत्कार दिखा रहे हैं कि हमें मानना ही पड़ता है कि वे सम्राट के विशेष दूत हैं।

ध्यान से देखिए। न केवल प्रायद्वीप के प्राणी उसकी बात सुन रहे हैं, बल्कि वह अपनी आवाज को पूरे देश में अद्भुत ढंग से पहुंचा रहा है।

दूर-दूर तक हर कोई उनका प्रवचन सुनने की कोशिश कर रहा है, यहाँ तक कि जानवर भी।

पहाड़ भी उसकी आज्ञाओं को सुन रहे हैं, इसलिए वे अपने स्थानों पर हिल रहे हैं। वे पेड़ उस स्थान की ओर बढ़ते हैं, जहाँ वह इशारा करता है। वह जहाँ चाहता है, वहाँ पानी लाता है। वह अपनी उँगलियों को भरपूर झरने की तरह बनाता है और दूसरों को उनसे पानी पीने देता है।

---

[36] जहाज़ इतिहास को दर्शाता है, प्रायद्वीप खुशी के युग, पैगंबर के युग के स्थान को दर्शाता है। इस युग के अंधेरे तट पर आधुनिक सभ्यता की पोशाक उतारकर, हम समय के समुद्र पर इतिहास के जहाज़ पर सवार होकर चलते हैं, खुशी के युग में अरब प्रायद्वीप पर उतरते हैं, और सृष्टि के गौरव से मिलते हैं क्योंकि वह अपना मिशन पूरा कर रहा है। हम जानते हैं कि वह ईश्वरीय एकता का इतना शानदार सबूत है कि वह पूरी धरती और समय के दो पहलुओं (अतीत और भविष्य) को रोशन करता है, और अविश्वास और गुमराही के अंधेरे को दूर करता है।

37 एक हजार अलंकरण पैगम्बर के चमत्कारों को दर्शाते हैं, जिनकी संख्या, सावधानीपूर्वक शोध करने वालों के अनुसार, लगभग एक हजार है।

देखो, महल के गुंबद में वह महत्वपूर्ण दीपक उसके इशारे पर दो टुकड़ों में विभाजित हो जाता है।[38] इसका मतलब है कि यह पूरी भूमि और इसके निवासी पहचानते हैं कि वह एक दूत है। मानो यह समझते हुए कि वह एक अदृश्य चमत्कार दिखाने वाले का सबसे प्रतिष्ठित और सच्चा अनुवादक है, उसकी संप्रभुता का संदेशवाहक है, उसके ताबीज का खुलासा करने वाला है, और उसकी आज्ञाओं को संप्रेषित करने वाला एक भरोसेमंद दूत है, वे उसकी बात मानते हैं और उसका पालन करते हैं। उसके चारों ओर, जो समझदार हैं वे जो कुछ भी कहते हैं, उसे स्वीकार करते हैं। उसकी आज्ञाओं का पालन करके और उसके इशारे का जवाब देकर, इस भूमि की हर चीज़, यहाँ तक कि पहाड़, पेड़ और हर जगह को रोशन करने वाला विशाल प्रकाश भी उसकी पुष्टि करता है।[39]

तो हे मित्र, क्या इस सबसे शानदार, भव्य और गंभीर व्यक्ति के शब्दों में कोई धोखा हो सकता है, जो राजा के राजकोष से हजारों सजावटें लाता है, चमत्कार दिखाने वाले राजा और उसके गुणों के बारे में, और उसके द्वारा दिए गए आदेशों में? वह सबसे दृढ़ विश्वास के साथ बोलता है और देश के सभी गणमान्य लोगों द्वारा इसकी पुष्टि की जाती है। यदि आपको लगता है कि उनमें कुछ धोखा है, तो आपको इस महल, उन दीपों और इस सभा के अस्तित्व और वास्तविकता को नकारना चाहिए। आपके आपत्तियों का खंडन प्रमाण की शक्ति से किया जाएगा।

बारहवां तर्क

हे मित्र, आओ, अब तुममें कुछ चेतना आ गई होगी। मैं तुम्हें एक और प्रमाण दिखाऊंगा, जो पिछले ग्यारह प्रमाणों के योग के बराबर है। इस महान् आदेश को देखो, जो ऊपर से उतरा है और जिसे हर कोई विस्मय या श्रद्धा से पूरे ध्यान से देखता है।

हज़ारों अलंकरणों वाला यह प्राणी इसका अर्थ समझा रहा है। इस आदेश की शानदार शैली हर किसी की प्रशंसा को आकर्षित करती है, और मामलों की बात करती है

[38] महत्वपूर्ण दीपक चाँद है, जो उसके इशारे पर दो टुकड़ों में विभाजित हो गया। जैसा कि मौलाना जामी ने टिप्पणी की: "वह अनपढ़ व्यक्ति जिसने कभी नहीं लिखा, उसने अपनी उंगली की कलम से एक अलिफ़ लिखा
[अरबी वर्णमाला का पहला अक्षर] आसमान के पन्ने पर, और एक चालीस को दो पचास में बदल दिया।" दूसरे शब्दों में, चाँद को विभाजित करने से पहले, यह अरबी अक्षर मीम (□(, जिसका गणितीय मूल्य चालीस है) जैसा दिखता था। विभाजित होने के बाद, यह दो ननों (□(, जिसका मूल्य पचास है) जैसे दो अर्धचंद्र बन गए ।

[39] लेखक पैगंबर की पुकार का जवाब देने वाले पहाड़ों और पेड़ों का उल्लेख करता है। सैद नूरसी, द लेटर्स (एनजे: द लाइट, इंक., 2007) (ट्र.) में द नाइन-टीन्थ लेटर के नौवें से बारहवें संकेतों को देखें। विशाल प्रकाश सूर्य है। एक बार पैगंबर अली की बाहों में सो रहे थे, जिन्होंने उनके प्रति गहरे प्रेम और सम्मान के कारण उन्हें नहीं जगाया। जब पैगंबर जागे, तो सूरज ढलने वाला था, और अली ने अभी तक दोपहर की नमाज़ नहीं पढ़ी थी। पैगंबर के आदेश पर, पृथ्वी थोड़ा पीछे की ओर घूम गई और सूरज क्षितिज के ऊपर दिखाई दिया ताकि अली प्रार्थना कर सकें। यह पैगंबर के प्रसिद्ध चमत्कारों में से एक है।

40 यह महान् आदेश कुरान को दर्शाता है और यह मुहर उसकी चमत्कारिकता को दर्शाती है।

इतना महत्वपूर्ण और गंभीर कि हर कोई इसे सुनने के लिए बाध्य महसूस करता है। यह उस व्यक्ति के सभी कार्यों, विशेषताओं और आदेशों का वर्णन करता है जो इस भूमि पर शासन करता है, जिसने इस महल को बनाया है, और इन चमत्कारों को प्रदर्शित करता है। आदेश पर एक शक्तिशाली मुहर है, हर पंक्ति और वाक्य पर एक अद्वितीय मुहर है। अर्थ, सत्य, आज्ञाएँ और ज्ञान के उदाहरण जो यह प्रदान करता है वह उसके लिए अद्वितीय शैली में है, जो एक मोहर या मुहर की तरह भी काम करता है।

संक्षेप में, यह सर्वोच्च आदेश उस सर्वोच्च सत्ता को सूर्य की तरह स्पष्ट रूप से दर्शाता है, ताकि जो अंधा नहीं है वह उसे "देख" सके। अगर तुम होश में आ गए हो, दोस्त, तो अभी के लिए इतना ही काफी है। क्या तुम्हें और भी आपत्तियाँ हैं?

जिद्दी आदमी ने जवाब दिया: "इन सभी सबूतों के सामने मैं केवल इतना कह सकता हूँ: 'सभी प्रशंसा और आभार भगवान के लिए हैं,' क्योंकि मैं इस बात पर विश्वास करने लगा हूँ, एक तरह से जो सूरज की तरह उज्ज्वल और दिन के उजाले की तरह स्पष्ट है, कि इस भूमि में पूर्णता का एक ही भगवान है, इस दुनिया में महिमा का एक ही मालिक है, और इस महल में अनुग्रह का एक ही निर्माता है। भगवान आपसे प्रसन्न हों क्योंकि आपने मुझे मेरी पिछली हठ और मूर्खता से बचाया है। प्रत्येक प्रमाण सत्य को प्रदर्शित करने के लिए पर्याप्त था। लेकिन चूँकि प्रत्येक उत्तरवर्ती प्रमाण के साथ, ज्ञान के अधिक स्पष्ट और बेहतर, अधिक सुखद, सुखद और उज्ज्वल स्तर, पहचान के दृश्य और प्रेम की खिड़कियाँ खुली और प्रकट हुईं, इसलिए मैंने प्रतीक्षा की और सुना।"

अनुक्रमणिका

ए

बी

सी

एन

पी

क्यू

'

आर

एस

शैतान; जिन्न और मानवता में से, 70

टी

में

में

ईश्वर के नामों और गुणों की सूची

एन

पी

आर

एस

टी

में